श्री

जिनेन्द्र पूजासंग्रह

प्रकाशक

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,

सोनगढ़ (सौराष्ट्र) – 364250

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-
कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–२०६

श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय नमः।

श्री

जिनेन्द्र पूजासंग्रह

प्रकाशक

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,

सोनगढ़ (सौराष्ट्र) – 364250

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रथम आवृत्ति प्रत : १०००
वि.सं. २०६१ ई.स. २००५

द्वितीय आवृत्ति प्रत : १५००
वि.सं. २०७० ई.स. २०१४

श्री जिनेन्द्र पूजासंग्रह (हिन्दी)के

✻ स्थायी प्रकाशन-पुरस्कर्ता ✻

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल

जलगाँव

इस शास्त्रका लागत मूल्य रू. 90=00 है। अनेक मुमुक्षुओंकी आर्थिक सहायतासे इस आवृत्तिकी किंमत रू. 50=00 होती है। उनमें स्व. नरेन्द्रभाई नरोतमदास बावीशीके स्मरणार्थ हस्ते स्मिताबेन नरेन्द्रभाई बावीशी, घाटकोपर-मुंबईकी ओरसे आर्थिक सहयोग विशेष प्राप्त होने पर यह शास्त्रका विक्रय-मूल्य रुपये 30=00 रखा गया है।

मूल्य रू. 30=00

मुद्रक :

स्मृति ऑफसेट

सोनगढ-(सौराष्ट्र)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

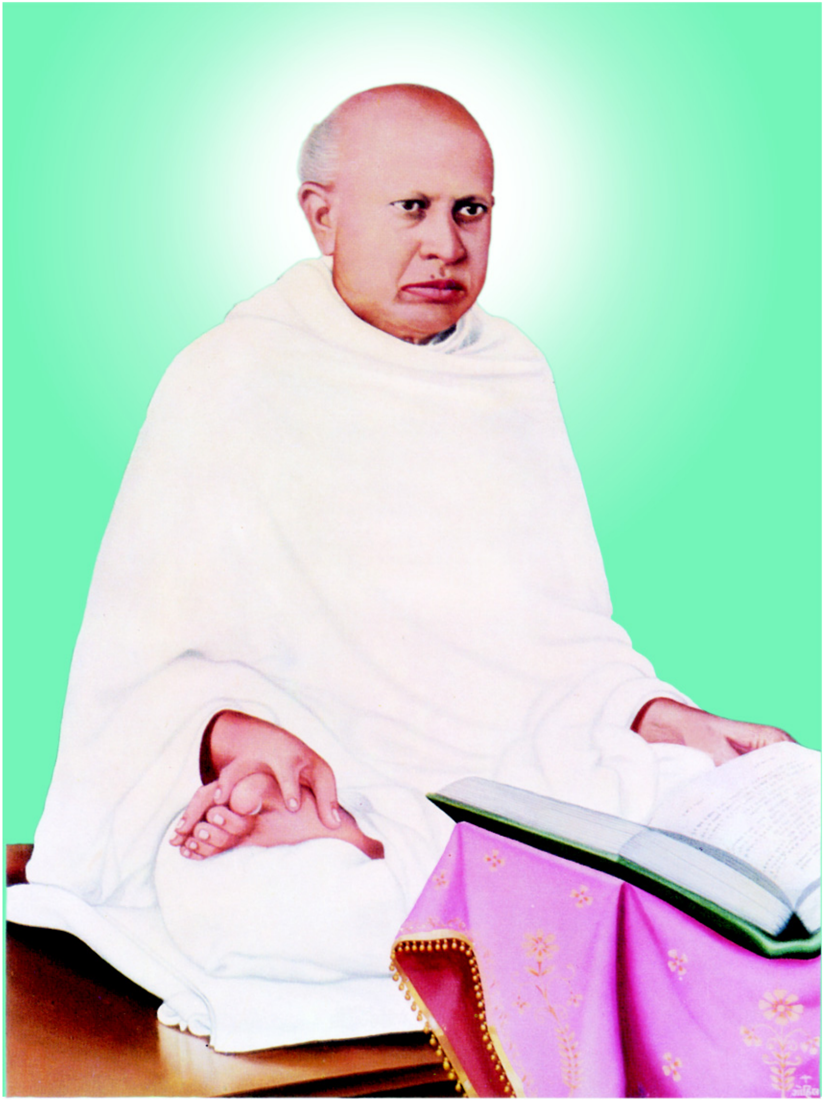

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय निवेदन

णमो अरिहंताणं। जो मुमुक्षु परम पूज्य अरिहन्तदेवको द्रव्यत्व, गुणत्व व पर्यायत्वरूपसे यथातथ जानता है वह अपने शुद्धात्माको जानता हैं। इससे उसका मिथ्यात्वमोह अवश्य क्षयको प्राप्त होता है। इस आगमहार्दको आत्मसात् करके स्वानुभूतिप्रधान दिगम्बर जिनधर्मके सातिशय प्रभावक अध्यात्मयुगप्रवर्तक, स्वात्मानुभवी, सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने द्रव्यदृष्टिप्रमुख अनेकांत सुसंगत अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्धाटनके साथ साथ, तत्प्रदर्शक वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी अनुपम महिमा समझाकर मुमुक्षु समाज पर कोई एक अवर्णनीय उपकार किया है। उनके सातिशय पुनीत प्रतापसे ही सौराष्ट्रके अनेक प्रमुख नगरोंमें तथा अन्यत्र भी भव्य दिगम्बर जिनमंदिरोंका व स्वाध्यायमंदिरोंका निर्माण हुआ है। उनकी कल्याणवर्षिणी मंगल उपस्थितिमें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तथा वेदी प्रतिष्ठाके अनेक भव्य महोत्सव मनाये गये। इतना ही नहीं 'पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी प्रेरित उन दिगम्बर जिनमंदिरोंमें शुद्धाम्नाय अनुसार प्रतिष्ठित अनेक वीतराग निर्ग्रंथ अर्हत्परमेश्वरके वीतरागभाववाही जिनबिम्बोंकी मंगल स्थापना हुई। इस तरह पूज्य गुरुदेवश्रीके शुद्धात्मद्रव्य-महिमा-प्रधान जिनेन्द्रभक्तिके सभर सदुपदेशसे मुमुक्षु समाजमें अन्तर तात्त्विक लक्ष सह जिनेन्द्र पूजा-भक्तिकी प्रवृत्ति सहजरूपसे चली।

शुद्धात्म विद्याके प्रचारकी प्रमुखता सह पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रवर्तित जिनमंदिरोंके निर्माणके सुवर्णयुगका मंगल प्रारंभ विक्रम संवत 1997(इ.स. 1941)में निर्मित सुवर्णपुरीके ''श्री सीमंधरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर'से हुआ। तभीसे वीतराग देव-गुरुके परम भक्त, स्वानुभवविभूषित, प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चंपाबहिनके अन्तरमें निज ज्ञायकदेव और बाह्यमें तद्रुपलब्धिके निमित्त वीतराग देव-शास्त्र-गुरु प्रति, भक्तिप्रेरक मंगल सानिध्य तथा सुयोग्य मार्गदर्शनके प्रतापसे पूज्य गुरुदेवश्रीकी साधनाभूमि अध्यात्मतीर्थधाम सुवर्णपुरीमें प्रतिदिन जिनेन्द्रपूजा-भक्तिके विविध कार्यक्रम चल रहे हैं।

मुमुक्षु समाजको पूजा प्रसंग पर उपयोगी बने इस हेतुसे 'जिनेन्द्रपूजासंग्रह' का यह लघुसंसस्करण गुजरातीमें विक्रम संवत 1997(इ.स. 1941)में प्रकाशित किया था। उसीको अनुक्रमसे संवर्धित कर करीब अब तक ग्यारह संस्करण गुजरातीमें प्रकाशित हो चुके है। हिन्दीभाषी मुमुक्षुसमाजकी इस 'जिनेन्द्रपूजासंग्रह'के हिन्दी संस्करणकी मांगको ध्यानमें रखकर यह संस्करण हिन्दीमें प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत आवृत्ति गुजरातीकी ग्यारहवीं आवृत्ति अनुसार ही है। इस पुस्तकका सुंदर मुद्रणकार्य स्मृति ऑफसेट द्वारा किया गया है।

बहिनश्रीकी 101वीं जन्मजयंती
श्रावण कृष्णा 2
दि. 12-8-2014

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ (सौराष्ट्र)

अभिषेक करनेवालोंको

सूचना

1. जो मुमुक्षु (पुरुष) भगवानका अभिषेक और स्पर्शन करे उसे स्नान करके धुले हुए स्वच्छ कपड़े पहनकर आना चाहिए और जब तक अभिषेक आदि कार्योंसे निवृत्त न हो, तब तक दूसरे कोई अस्वच्छ कपड़े या मनुष्योंको छूना नहीं चाहिए। अभिषेकके लिए स्नान करनेके बाद मुंहका थुंक व नाक कानके मेलको छुना नहि चाहिए। किसी चमड़ेकी वस्तुको भी छुना नहीं चाहिए।

2. भगवानके अभिषेक व पूजा करते समय धुली शुद्ध धोती, बनियान व दुपट्टा पहनना चाहिए। कमीझ, कोट और पघडी आदि घर–बाझारमें चालू पहननेके अशुद्ध वस्त्र पहिनकर अभिषेक व पूजा नहि करना चाहिए। ऊनके बने वस्त्र व उपकरण अभिषेक व पूजा करते समय नहि पहनना चाहिए, क्योंकि ऊन प्राणियोंके बाल होनेसे पूजा व अभिषेक आदि पवित्र कार्यके प्रसंग पर अस्पृश्य है।

3. भगवानके अभिषेकके लिए जल तुरंत ही छानकर लेना चाहिए।

4. जहाँ भगवान विराजमान हो उस पीठिका पर अपने पाँव नहीं रखने चाहिए, अलग मेज आदि स्थान पर खड़े रहकर अभिषेक करना चाहिए।

5. अभिषेक किया हुआ जल (गंधोदक)को पाँवके नीचे नहीं कचरना चाहिए। वह जल किसी बरतनमें इकट्ठा करके निर्दोष जगहमें डालना चाहिए। मंदिरमें पुष्प नहीं लाना चाहिए।

6. भगवानकी प्रतिमा पर कोई अशुद्ध वस्तु जैसे मोरपींछी, केशर,

पुष्प आदि कुछ भी नहि लगाना चाहिए ।

7. अभिषेक करनेके पहले प्रतिमाजीके आसपास जीवजंतु हो तो देखकर मुलायम कपड़ेसे हलके हाथसे दूर करना चाहिए । अभिषेक करनेके पश्चात् प्रतिमाजीको शुद्ध वस्त्रसे बराबर पोंछना चाहिए, पानी न रह जाए उसका खास ध्यान रखना चाहिए ।

8. भगवानकी रथयात्राके प्रसंग पर भगवानको स्पर्श करनेवाले तथा पालखी आदि उठानेवालोको स्नान कर स्वच्छ कपड़े पहनने चाहिए व किसी अन्यको छुना नहीं चाहिए, तथा शैत्रंजी आदिको भी छुना नहीं चाहिए ।

पूजा करनेवालोंके लिए सूचना

1. पूजा करनेवाले मुमुक्षुओंको स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिनकर आना चाहिए ।

2. पूजामें पहननेके वस्त्रके रूपमें पुरुषोंके लिए धुली शुद्ध धोती, बनियान व दुपट्टेका उपयोग होना चाहिए; परंतु बिना धुले कपडे या कमीज, झभ्भा, कोट, पेन्ट, टोपी, पघडी आदि घर-बाजारमें पहननेके चालु वस्त्रका उपयोग नहीं करना चाहिए; ऊनकी बनावटका कोई भी वस्त्र या उपकरण पूजाके प्रसंग पर उपयोगमें नहीं लेने चाहिए ।

3. किसीको अपने पास चमड़ेका पाकिट, घडीका चमडेका पट्टा, चमडेवाली टोपी, चश्मेका चमडेवाला पाकिट आदि अशुद्ध वस्तुएँ नहीं रखना चाहिए ।

4. पूजनकी सामग्री बराबर देखनी चाहिए ।

5. सामग्री धोनेके लिए पानी तुरंत ही छानकर उपयोगमें लेना चाहिए; तथा पूजनकी सामग्री, बरतन, पानी आदि कोई भी

वस्तुओंको नीचे जमीन पर मनुष्योंकी हिलचाल हो वहाँ नहीं रखना चाहिए ।

6. पूजा करनेसे पहले हाथ धोना चाहिए ।

7. पूजा करते समय मुंह, कान, नाक आदिमेंसे किसी भी प्रकारका मेल नहीं निकालना चाहिए ।

8. पूजनकी सामग्रीमें स्वच्छ जल, चंदन, केशर, चावल, लोंग, बादाम, नारियेल (गोला) इलायची, कमलककडी और सुपारी— ये वस्तुएँ निर्दोष व जीवरहित होनी चाहिए । फलोंमें नारियेल, बादाम जैसे अचित्त फल उपयोगमें लेने चाहिए । ये जीवरहित हो–बिगड़े हुए न हो–इस बातका भी ध्यान रखना चाहिए । इनके अलावा अन्य किन्हीं फलों या पकवानोंको पूजाके उपयोगमें नहीं लेना चाहिए ।

(उपयोगमें नहीं लेने योग्य फल भूलसे भी उपयोगमें न आ जाए इस हेतुसे उक्त क्रमांकमें बताये गये फलोंके उपयोग करनेकी समान्य मर्यादा कही हैं । घी आदि शुद्ध मिलना मुश्कील होनेसे पकवान आदि उपयोगमें न लेनेकी सामान्य मर्यादा यहाँके समाज हेतु दी गई है ।

दर्शन करनेवालोंको सूचना

1. जिनमन्दिरमें छोटे बच्चों द्वारा किसी भी प्रकारकी गंदकी न हो, इसलिए उनके साथवाले व्यक्तिओंको इस बातका खास ध्यान देना चाहिए ।

2. बालकोंको निजमन्दिरके पास नहीं ले जाना चाहिए ।

दर्शनार्थीयोंके लिए सूचना

1. दर्शनके लिए मंदिर खुला रखा जाता हो तब वीतराग देवके दर्शनार्थीयोंको स्नानादिसे निपटकर धुले हुए शुद्ध वस्त्र पहिनकर मंदिरमें प्रवेश करना चाहिए ।

2. झुठे मुंह या नशेवाली हालतमें मंदिरमें प्रवेश नहीं करना चाहिए । यदि पान, सुपारी आदि कोई वस्तु खातें हो तो मंदिरके बहार ही कुल्ला करके मुंह साफ करकर मंदिरजीमें प्रवेश करना चाहिए । बीडी, सिगरेट आदिका सेवन या थुंकना, नाक निकालना आदि कार्य मंदिरजीके नजदीकमें नहीं करना चाहिए । मंदिरजीमें किन्हीं अन्योंको नमस्कार, वंदन नहीं करना चाहिए ।

3. पानीसे हाथ-पाँव धोकर मंदिरमें प्रवेश करना चाहिए ।

4. मंदिरजीमें लकड़ी, छत्री, शस्त्रादि कोई भी बिनजरूरी वस्तुएँ नहीं ले जाना चाहिए ।

5. बुट, चंपल या मोजे पहिनकर मंदिरजीमें प्रवेश नहीं करना चाहिए ।

6. मंदिरजीके अंदर आत्मकल्याणको ध्यानमें रखकर ही प्रवर्तन करना चाहिए । लडाई, झगड़े, हंसी-मझाक, या सांसारिक कोई भी बातें वहाँ नहीं करना चाहिए ।

7. जो व्यक्ति मात्र प्रेक्षकके तौर पर मंदिरजीमें जाना चाहता हो उसे मंदिरजीके व्यवस्थापकों द्वारा साथमें ले जाकर मंदिर दिखाना चाहिए ।

8. निम्नस्थितिमें पूजा व शास्त्रस्पर्शादि नहीं करना चाहिए, जैसे :–

(अ) घरके या कुटुम्बके किसी की मृत्यु हो जाये तो बारह दिन तक ।

(आ) घरके या कुटुम्बमें यदि किसी बालकका जन्म हुआ हो तो

दस दिन तक। जिस स्त्रीको बालक हुआ हो उस स्त्रीके लिए 45 दिनों तक।

(इ) जिनके घर कोई गाय, भेंस या कोई पशु जन्मे या मरे तो उसे एक दिन तक।

(ई) रजस्वला स्त्रीके लिए पांच दिन तक।

9. पूजनकी 'स्वाहा' की गई सामग्री (चोखा, बदाम आदि) जैन पुजारी या जैन बालकको भी नहीं लेनी चाहिए, यह किसी अन्य वर्णके लोगोंको दे देना चाहिए।

10. रात्रिको दीपक आदिके प्रकाशमें बहुत त्रस जीवोंकी हिंसा होती है, अतः विवेक रखना चाहिए।

मुमुक्षुको इतना करना योग्य है।

1. किसी भी नामधारी जैनको मद्य, मांस, मदिरा तथा बड़के फल, पीपलके फल, उंमरके फल, अंजीर और फलण इन आठ वस्तुओंका कभी सेवन नहीं करना चाहिए।

2. हमेशा सुबहमें श्री देव-शास्त्र-गुरुके दर्शन, पूजन आदि करना चाहिए। शास्त्रोंके प्रति विनय, सन्मान व यत्नसे प्रवर्तना चाहिए। अविनय या अशातना न हो उसका बराबर ख्याल रखना चाहिए।

03. त्रसका आहार न बने इस हेतुसे अर्थात् त्रस हिंसासे बचनेके लिए निम्न प्रकारके विवेक रखना चाहिए :—

(अ) रात्रिको खाना पीना नहीं चाहिए।

(आ) सड़ा हुआ अनाज उपयोगमें नहीं लेना चाहिए।

(इ) लकडी, गोबरके कंडे आदि वस्तुओंमें त्रस जीव उत्पन्न होनेसे उन्हें जलानेसे पहले देख लेना चाहिए।

(ई) होटल या कंदोईके दुकानोंकी चीजें नहीं खानी चाहिए ।

(उ) बासी अथाने, हरि पत्तीओंकी भाजी, कंदमूल तथा रात्रिको बनाई गई वस्तुएँ नहीं खाना चाहिए ।

(ए) आटा, मसाला आदि व पापड, वडे आदि वस्तुए वर्षाऋतुमें 3 दिन, गर्मीकी ऋतुमें 5 दिन, शरदीकी ऋतुमें 7 दिनसे ज्यादा दिनकी उपयोगमें नहीं लेना चाहिए ।

(ऐ) दहींके लिए दुधको काचली, नींबु या चांदीसे मिलाना चाहिए ।

(ओ) चासणीसे बनी वस्तुएँ एक दिन तक और बिना पानीसे बनी वस्तुकी मर्यादा आटेकी मुदत अनुसार उपयोगमें लेनी चाहिए ।

(औ) गांठिये आदि तली हुई वस्तुकी मर्यादा एक ही दिनकी होती है । दहीं, छाश तैयार होनेके पश्चात् 24 घंटे तक उपयोगमें ले सकते हैं ।

(अं) मल-मूत्रादिसे नीपटनेके बाद हाथ-पाँव धोकर ही शास्त्रादिको या भोजनकी वस्तुको छुना चाहिए । जिनमंदिर आदि धर्मस्थानों जानेके कपड़े साफ होने चाहिए ।

(अः) पूज्य गुरुदेवके आहारदानके प्रसंग पर शुद्धताका खास लक्ष रखना चाहिए । आटा, मिर्च, हलदी, धनिया, जीरा आदि मसाले रसोईके लिए जाता ही उपयोगमें ले । पूज्य गुरुदेवश्रीके आहारदान देनेकी सामग्रीमें किसी भी प्रकारका त्रसका आहार न हो इसका ध्यान रखें ।

(क) तमाकु जैसी किसी भी चीज़का व्यसन मुमुक्षुको नहीं होना चाहिए ।

(ख) रसोई बनाते समय मुंहके थुंकको तथा कान-नाकके मेलको नहीं छुना चाहिए ।

(ग) दूध दोहनेके पश्चात् तुरंत गरम करना चाहिए क्योंकि कच्चे दूधमें दोहनेके अन्तमुहूर्त पश्चात् त्रसकी उत्पत्ति होती है। दो दाल हो ऐसे अनाजको कच्चे दूधमेंस कच्चे दहीं या कच्ची छाशमें मिलाकर नहीं खाना चाहिए, क्योंकि उसमें त्रसकी उत्पत्ति होती हैं।

(घ) अत्तर आदि वस्तुएँ महा हिंसाके कारण होनेसे उनका उपयोग नहीं करना चाहिए।

उपर बताये गए और अन्य भी सर्व प्रसंगोंमें त्रस हिंसाके स्थूल कलुषित परिणामोंसे अपने आत्माको बचाना चाहिए।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
पूजाकी विधि	1
विनयपाठ	2
श्री जिनेन्द्र अभिषेकपाठ	4
गंधोदक लेनेका मंत्र	8
आशिका	8
पूजाकी प्रारंभिक विधि	8
मंगल विधान	10
◆	
श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा	13
देव-शास्त्र-गुरु पूजा(गुजराती)	17
देव-शास्त्र-गुरुपूजा	23
◆	
बीस विहरमान तीर्थंकर-पूजा (सीमंधरादिक शाश्वते)	27
श्री बीस विद्यमान जिनपूजा (पाँचों मेरु विदेह सुथान)	30
श्री सीमंधरादि बीस विहरमान जिनपूजा (जय कमलासन)	35
श्री सीमंधरादि बीस तीर्थंकर पूजा (सीमंधर जिन आदि दे)	39
विदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकर पूजा(संस्कृत)	42
◆	
श्री सीमंधर-जिनपूजा (सीमंधर जिन चरणकमल)	45
श्री सीमंधर-जिनपूजा (सीमंधर भवहारी शिवसुख)	49
श्री सीमंधर-जिनपूजा (परम पूज्य वीतरागको)	52
श्री सीमंधर जिनपूजा (सीमंधर वंदो मन आनंदो)	54
श्री सीमंधर-जिनपूजा (पूजो सीमंधरदेव हिये)	57
श्री सीमंधर-जिनपूजा (तीर्थपति जिनराजजी)	60
श्री सीमंधर-जिनपूजा (सीमंधर जिनराजजी)	63
श्री सीमंधर-जिनपूजा (जगकी भवताप निवार पूजा सुखदायी)	67
श्री सीमंधर-जिनपूजा (जय जय सीमंधर यजत)	71
श्री सीमंधर जिनपूजा (दयानिधि हो, जय जगबंधु)	74
श्री सीमंधर-जिनपूजा (तुम पद पूजो मनवचकाय)	77
श्री सीमंधर-जिनपूजा (तेरी भक्ति बसी मनमांही)	83
श्री सीमंधर-जिनपूजा (हो ज्ञानी तेने जानि लई)	87
◆	
श्री समवसरण-जिनपूजा(अर्घ)	92
श्री समवसरण-जिनपूजा	99
◆	
श्री जिनेन्द्रपूजा	103

विषय	पृष्ठ
श्री चौबीस-जिनपूजा	107
श्री आदिनाथ–जिनपूजा (रीषभदेव चरण पूजा करू)	110
श्री आदिनाथ-जिनपूजा (सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर)	116
श्री अजितनाथ-जिनपूजा	120
श्री संभवनाथ-जिनपूजा	125
श्री अभिनन्दननाथ-जिनपूजा	129
श्री सुमतिनाथ-जिनपूजा	133
श्री पद्मप्रभ-जिनपूजा (श्री पद्मप्रभु भगवंत)	138
श्री पद्मप्रभ-जिनपूजा	141
श्री सुपार्श्वनाथ-जिनपूजा	145
श्री चन्द्रप्रभ-जिनपूजा (श्री चंदनाथ दुतिचंद)	150
श्री चन्द्रप्रभ–जिनपूजा (चंचल चितको)	156
श्री पुष्पदंत-जिनपूजा	161
श्री शीतलनाथ–जिनपूजा	165
श्री श्रेयांसनाथ-जिनपूजा	171
श्री श्रेयांसनाथ–जिनपूजा (जिनश्रेयनाथ महाराज)	175
श्री वासुपूज्य-जिनपूजा	180
श्री विमलनाथ–जिनपूजा	184
श्री अनन्तनाथ–जिनपूजा (अनंतनाथ पाय सेव)	188
श्री अनन्तनाथ–जिनपूजा	193
श्री धर्मनाथ–जिनपूजा	197
श्री शान्तिनाथ–जिनपूजा (रोग शोग आधि व्याधि)	201
श्री शान्तिनाथ जिनपूजा	205
श्री कुन्थुनाथ–जिनपूजा	209
श्री अरहनाथ–जिनपूजा	213
श्रीमल्लिनाथ–जिनपूजा	218
श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनपूजा	222
श्री नमिनाथ-जिनपूजा	226
श्री नेमिनाथ-जिनपूजा (बालब्रह्मचारी जगतारी)	230
श्री नेमिनाथ-जिनपूजा (दाता मोक्षके)	237
श्री नेमिनाथ-जिनपूजा (श्री नेमि जिनेश्वरके पद)	241
श्री पार्श्वनाथ-जिनपूजा	245
श्री पार्श्वनाथ-जिनपूजा (पार्श्वनाथ देव सेव)	250
श्री पार्श्वनाथ-जिनपूजा (संसार विषम विदेशवत)	255
श्री वर्द्धमान-जिनपूजा (श्री वीर हरो भवपीर)	259
श्री महावीर-जिनपूजा (चरम तीर्थंकर)	264
श्री महावीर-जिनपूजा (श्री वीरनाथ जिनेन्द्र)	268
श्री वर्धमान-जिनपूजा (श्री वीर महा अतिवीर)	271
श्री महावीर-जिनपूजा (मंगलके कर्ता)	276
श्री वर्द्धमान-निर्वाणपूजा	279
पीठकादि पूजा	283
निर्वाणकांड भाषा	289
श्री पंच बालयति-तीर्थंकरपूजा	291

◆

विषय	पृष्ठ
श्री तीन चौवीसी-जिनपूजा	296
श्री महापद्म-जिनपूजा	300
श्री धातकी-विदेह-भाविजिनवरपूजा	303
त्रीस चौबीसी-जिनपूजा	307
श्री बाहुबली स्वामीकी पूजा	313
अकृत्रिम चैत्यालय-जिनालय पूजा	317
श्री पंचमेरु-जिनपूजा	322
श्री नंदीश्वरद्वीप-जिनपूजा (तहाँ इन्द्र सुर ही जाय)	325
श्री नंदीश्वरद्वीप-जिनपूजा (नंदीश्वर श्री जिनधाम)	328
श्री सिद्धचक्रपूजा	331
श्री सिद्धपूजा	335
श्री सिद्धपूजा(संस्कृत)	339
◆	
मानस्तंभ–विराजमान श्री सीमंधर-जिनपूजा	343
मानस्तंभविराजमान श्री सीमंधर-जिनपूजा	347
पूर्व दिशामें विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा	348
दक्षिण दिशामां विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा	350
पश्चिम दिशामां विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा	353
उत्तरदिशामां विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा	355
श्री निर्वाणक्षेत्रपूजा	361
श्री जिनवाणी-सरस्वतीपूजा	364
श्री शास्त्रपूजा(संस्कृत)	367
श्री जिनवाणी-जयमाला	370
श्री जिनवाणी-स्तुति	370
श्री गुरुपूजा	372
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवपूजा	375
अकंपनाचार्यादि 700 मुनिपूजा	378
श्री विष्णुकुमार महामुनिपूजा	382
यज्ञोपवीत (जनोई)बदलेका मंत्र	385
सप्त–ऋषिपूजा	386
क्षमावणी पूजा	390
सोलहकारणपूजा	395
दशलक्षणधर्मपूजा	398
दर्शनपूजा	404
सम्यग्ज्ञान पूजा	406
सम्यक्चारित्र पूजा	408
रत्नत्रय पूजा	410
श्री पंचपरमेष्ठी पूजा	412
श्रुतपंचमी पूजा	415
स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा	419
जंबूद्वीप सम्बन्धित समस्त जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब-पूजा	423
भावी मुख्य गणधर पूजा	428
श्री भावि तीर्थंकरनो अर्घ	432
देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ	432
अक्षय तृतीया पर्व पर ऋषभ मुनीद्र पूजा	433
◆	
अर्घावली	437
वर्तमान चौबीस तीर्थंकर भगवान स्तुति और अर्घ	444

विषय	पृष्ठ
समुच्चय अर्घ	454
◆	
आरती–संग्रह	455
श्री सीमंधरजिन–आरती	455
श्री सीमंधरजिन आरती	456
श्री सीमंधरजिन आरती	456
श्री सीमंधर जिन आरती	457
श्री सीमंधरजिन आरती	457
चौवीस तीर्थंकरोंकी आरती	458
श्री पार्श्वनाथजिन आरती	458
श्री वर्द्धमान जिनकी आरती	459
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवकी आरती	459
श्री शास्त्रकी आरती	460
पंच परमेष्ठीकी आरती	460
मुनिराजकी आरती	461
ॐ जय जिनवरदेवा	461
महापद्मजिनकी आरती	462
पंच परमेष्ठीकी आरती	462
ऋषभजिन आरती	463
निश्चय आत्माकी आरती	463
श्री शांतिजिनकी आरती	464
आदि जिणंदकी आरती	464
भावी जिनवरकी आरती	465
पंच परमेष्ठीकी आरती	465
आरती	465
श्री नंदीश्वरद्वीपके जिनबिंबकी आरती	466
श्री सीमंधरजिनकी आरती	467
श्री महावीरजिन आरती	467
श्री सीमंधरजिन आरती (मानस्तंभजी)	468
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवकी आरती	469
आरती (मानस्तंभजी)	479
श्री सीमंधरजिनकी आरती	470
श्री सीमंधरजिन आरती	471
जम्बूद्वीपकी आरती	472
बाहुबली आरती	472
शान्तिपाठ	473
विसर्जन	475
शांतिपाठ	475
विसर्जन	477
विसर्जन	477
शांतिपाठ	478
शांतिपाठ	478
विसर्जन	479
विसर्जन	479
जिन-स्तवन	479
भजन	480
श्री भाविजिनवरकी आरती	480
श्री जिन आरती	481
आराधना पाठ	482

दर्शन - स्तोत्र

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्॥१॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च।
न चिरं तिष्टते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्॥२॥
वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम्।
जन्म-जन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति॥३॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्तनाशनम्।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनम्॥४॥
दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणम्।
जन्मदाहविनाशाय, वर्धनं सुखवारिधेः॥५॥
जीवादितत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशांतरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय॥६॥
चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः॥७॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥८॥
न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति॥९॥
जिनेभक्ति जिनेभक्ति जिनेभक्ति दिने दिने।
सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे॥१०
जिनधर्म विनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोपि, जिनधर्मानुवासितः॥११॥
जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरारोगं, हन्यते जिनदर्शनात्॥१२॥
अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य।
देवत्वदीय चरणांबुज वीक्षणेन॥
अद्य त्रिलोकतिलकं प्रतिभासते मे।
संसारवारिधिरयं चुलकप्रमाणम्॥१३॥

1

ॐ

पूजनकी विधि

1. स्वच्छ खाली थालीमें पूर्ण स्वस्तिक (साथियो) करना।
2. पश्चात् नीचे 'श्री' शब्द लिखना चाहिए।

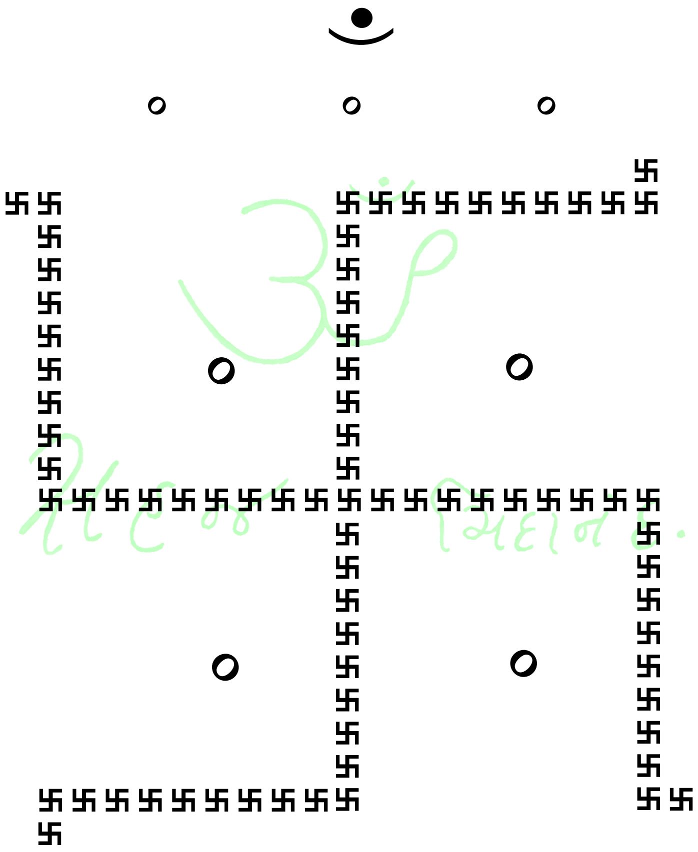

श्री

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।१।।

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज।।२।।

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार।।३।।

हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश।।४।।

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप।।५।।

में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय।।६।।

भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।७।।

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल।।८।।

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय।।९।।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।१०।।

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।११।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।१२।

थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।१३।।

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव।।१४।।

कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।१५।।

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।१६।।

अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार।।१७।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान।।१८।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हाँ, नेक निहार निकार।।१९।।

जो मैं कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार।।२०।।

वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।२१।।

चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।२२।।

❁

श्री जिनेन्द्र अभिषेकपाठ

(वसंततिलका)

श्रीमन्नतामरशिरस्तटरत्नदीप्ति–
तोया विभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशं,
अर्हन्तमुन्नतपदप्रदमाभिनम्य
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेकविधिं करिष्ये। १

(इति अभिषेकप्रतिज्ञां कृत्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्निकामध्याह्निकापराह्निकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजास्तववन्दनासमेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(ईसको पढकर ९ बार णमोकार मन्त्रकी जाप देना चाहिये।)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयंति पुरुहूतमुखादयस्ताः;
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगाः;
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि। २

इति जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत ।

(अनुष्टुप)

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्यकारणम्,
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः। ३

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि ।

श्रीपीठक्लृप्ते विशदाक्षतौघैः
श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे;
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता,
सत्यापयन्तै श्रियमालिखामि। ४

ॐ ह्रीं श्री अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि (सिंहासने श्रीकारलेखनम्)

(वसंततिलका)

भृंगार चामरसुदर्पणपीठकुम्भ
तालध्वजातप निवारकभूषिताग्रे;
वर्धस्व नन्द जयपीठपादावलीभिः
सिंहासने जिनभवन्तमहं श्रयामि। ५

ॐ ह्रीं जय जय इत्युक्त्वा स्नपनपीठे जिनबिंब स्थापयाम्यहम्।

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धिवारिभिरपूरयदर्थकुम्भान्;
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दन भूषिताग्रे। ६

ॐ ह्रीं श्रीचतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

आनन्दनिर्भर सुरप्रमदादिगानै–
र्वादित्रपूर जयशब्दकलप्रशस्तैः;
उद्गीयमान जगतीपतिकीर्तिरेषः
पीठस्थलीं वसुविधार्चनयोल्लसामि। ७

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थितजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(वाद्यघोषणम्-जयशब्दोच्चारणम्)

कर्मप्रबन्धनिगडैरपि हीनताप्तं
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्;
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्वम्। ८

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी–
संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिं,
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै–
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे ९

ॐ ह्रीँ श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर-परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्र आर्यखंडे......देशे ....नाम्निगरे .... चैत्यालये......वीरनिर्वाण.....संवत्सरे......मासानामुत्तमेमासे ......पक्षे ....शुभदिने मुनि–आर्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिंचे।

पानीयचन्दनसदक्षतपुष्पपुंज–
नैवेद्यदीपकसुधूपफलब्रजेन;
कर्माष्टककथनवीरमनन्तशक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्। १०

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा निजयशोधवलीकृताशाः
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानां;
सद्भव्यहृज्जनितपंककबन्धकल्पा,
यूयं जिना सततशांतिकरा भवन्तु। ११

(इत्युक्त्वा शान्त्यर्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघसंचयं मे;
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्,
भूयाद् भवातपहरं धृतमादरेण। १२

इति प्रदक्षिणां नमस्कारं च कृत्वा जिनचरणोदकं शिरसि धारयामि।

(शार्दुलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्र त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदम्;

सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलता संवृद्धिसम्पादकं,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम्। १३

(प्रदक्षिणा देकर श्रीजिनेशको नमस्कार करके अपने उत्तम अंगोमें गन्धोदक लगाना चाहिये।)

(वसंततिलका)

नत्वा मुहुर्निजकरैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः;
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि। १४

ॐ ह्रीँ अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

(इस श्लोक को पढकर निर्ल वस्त्र से जिनबिम्ब के शरीर पर स्थित जलकणों को साफ करना चाहिये।)

स्नानं विधीय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना–
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिं;
जिघृक्षुरिष्टिमिन! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि। १५

(ईति सहस्रनामस्तोत्रं तदृशं वा पठित्वा जिनबिंब सिंहासने स्थापयित्वा पूजनप्रतिज्ञायै पुष्पांजलि क्षिपेत्।)

(श्रीजी को वेदी में बिराजमान करना)

(अनुष्टुप)

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरु दीपसुधूपकैः
फलैरर्घैजिनमर्चे जन्मदुःखापहानये। १६

ॐ ह्रीँ श्री पीठस्थितजिनाय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृतजलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत्;

मदीयाद्भालाटादशुभवसुकर्माटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ। १७

ईतीष्टप्रार्थनां कृत्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

॥ इति अभिषेकविधिः ॥

गंधोदक लेनेका मंत्र

(गंद्योदक लेते समय बोलनेका श्लोक)

निर्मल निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशकं,
जिनगंधोदकं वंदे, कर्माष्टकविनाशकं।

निर्मलसे निर्मल अति, अघनाशक सुखसीर,
वंदूं जिनअभिषेककृत, यह गंधोदक नीर।

आशिका

(आशिका लेनेका दोहरा : प्रभुके आशीर्वाद)

श्री जिनवरकी आशिका लीजे शीश चढाय,
भव भवके पातक कटैं, दुःख दूर हो जाय।

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः

(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

मंगल

चत्ताारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।

ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यबिराजमानसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति०।

ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इसके अलावा दूसरे जो कोई भगवंत बिराजमान हो, उन भगवंतोंके नाम लेकर अर्घ चढ़ाना चाहिये।)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

* मंगल विधान *

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा,
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ।।२।।

अपराजितमंत्रोऽयं सर्व विध्नविनाशनः,
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।।३।।

अेसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।।४।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः,
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।।५।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्,
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।।६।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः,
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।७।।

(पुष्पांजलि चढ़ाना।)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसंततिलका)

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हम्;
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुः,
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ।।१।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय,
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय;
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ।।२।।

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ।।३।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः;
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।।४।।

अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक अेव;
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।५।।

(पुष्पांजलि चढ़ाना)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः।।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।।

श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्धमानः॥

(पुष्पांजलि चढाना।)

*

(उपजाति)

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

(यहाँ पर तथा आगेके प्रत्येक श्लोकके अंतमें पुष्पांजलि चढ़ायें।)

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद् वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंघावलिश्रेणिफलाम्बुतन्तुप्रसूनबीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्निदक्षाः कुशला महिम्नि लधिम्नि शकताः कृतिनो गरिम्नि।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्षर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरंस्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति स्वस्तिमंगलविधानम् पुष्पांजलिं)

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रथम देव अरहंत सुश्रुतसिद्धांत जू,
गुरु-निरग्रंथ महंत मुक्तिपुरपन्थ जू;
तीन रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये,
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये।

(दोहा)

पूजों पद अरहंतके, पूजों गुरुपदसार;
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार।

ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् (सन्निधिकरणम्)

(गीता छंद)

सुरपति उरग नरनाथ तिनकरी, वन्दनीक सुपदप्रभा;
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छबि मोहित सभा।
वर नीर क्षीरसमुद्र घट भरि, अग्र तसु बहु विधि नचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।

मलिन वस्तु हर लेत सब, जलस्वभाव मलछीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वापामीति स्वाहा।

जे त्रिजग–उदार मंझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे;
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।
तसु भ्रमरलोभित घ्राण पावन, सरस चंदन घसि सचूं;
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठइ;
अति दृढ परमपावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुंज धरि त्रयगुण जचूं;
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
तंदुल सालि सुगन्ध अति, परम अखंडित बीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जे विनयवन्त सुभव्यउर अम्बुज प्रकाशन भान हैं;
जे अेक मुख चारित्र भाषत, त्रिजगमांहि प्रधान हैं।
लहि कुन्दकमलादिक पहुप, भव–भव कुवेदनसों बचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
विविध भांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सबल मदकन्दर्प जाको, क्षुधा उरग अमान हैं;
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सुगरूड समान हैं।

उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृतमें पचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने, मोह–तिमिर महाबली;
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशज्योति प्रभावली।
इह भांति दीप प्रजाल कंचनके सुभाजनमें खचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजां रचूं।
स्वपरप्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्मइंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै;
वर धूप तासु सुगन्धिताकरि, सकल परिमलता हंसै।
इह भांति धूप चढाय नित, भवज्वलनमांहि नहिं पचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
अग्निमांहि परिमल दहन, चंदनादि गुण लीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं;
मो पै न उपमा जाय वरणी, सकल फलगुणसार हैं।
सो फल चढावत अर्थपूरण, परम अमृतरस सचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
जे प्रधान फल फल विषैं, पंच करण रस लीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं;
वर धूप निर्मल फल विविध बहु, जनमके पातक हरूं।
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि, करत शिव–पंकति मचूं;
अरहन्त श्रुतसिद्धांत गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं।

वसुविधि अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार;
भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुणविस्तार।

(पद्धरी छंद)

चउ कर्मसु त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि;
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छयालिश गुण गंभीर।

शुभ समवसरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर सीस धार;
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दौं मन वच तन करि सुसेव।

जिनकी धुनि है ओंकाररूप, निरअक्षरमय महिमा अनूप;
दश–अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत।

सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूंथे बारह सुअंग;
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।

गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध;
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपै शिवपद निहार।

गुण छत्तिस पच्चिस आठवीस, भवतारनतरन जिहाज इस;
गुरुकी महिमा वरनी न जाय, गुरु नाम जपों मन वचन काय।

(सोरठा)

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै;
'द्यानत' सरधावान, अजर अमर पद भोगवै।

ॐ ह्रीँ श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(हरिगीत)

सन्मार्गदर्शी, बोधिदाता, कृपा अति वर्षावता,
आश्रय अने करुणा थकी, अम रंकने उद्धारता;
विमळज्ञानी शान्तमूर्ति, दिव्य गुणे दीपता,
जिनराजजी तुम चरणमां, दीन भावथी हो वंदना।

इम सकल सुखकर, दुरित भयहर, विमल लक्षण गुणधरो,
प्रभु अजर, अमर, नरेन्द्रवंदित, विनव्यो सीमंधरो,
निज नादतर्जित, मेघगर्जित, धैर्यनिर्जित मंदरो,
रे भक्तजन हुं चरणसेवक, सीमंधरप्रभु जय करो।
श्री कुंदकुंदप्रभु जय करो।
श्री सदगुरुप्रभु जय करो।

(दोहरो)

पुजुं पद अरहंतना, पूजुं गुरुपद सार;
पूजुं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहरा)

पूजा प्रकार दोय छे, द्रव्य भाव गुणधाम;
सीचुं भावजळे करी, जन्ममरण क्षयठाम।
अविनाशी अरिहंत तुं, अेक अखंड अमान;
अजर अमर अणजन्म तुं, भयभंजन भगवान।

(हरिगीत)

विमुक्त छुं निवृत्त छुं, हुं सिद्ध छुं ने ब्रह्म छुं,
हुं जन्मने जाणुं नहि, सुखथी भरेलो शिव छुं,
ते आत्म ध्यातो, ज्ञानदर्शनमय, अनन्यमयी खरे;
बस अल्पकाळे कर्मथी प्रविमुक्त आत्माने वरे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे जन्मजरामरणविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

शीतल गुण जेमां रह्यो, शीतळ जिन सुख संग;
चंदन घसी घनसारसुं, पूजीजे मनरंग।
वचनामृत वीतरागनां, परमशांतरसमूळ,
औषध जे भवरोगनां, कायरने प्रतिकूळ।

(त्रोटक)

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिनभक्ति ग्रहो तरुकल्प अहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो।

(हरिगीत)

पुण्य-पाप योगथी रोकीने, निज आत्मने आत्मा थकी;
दर्शन अने ज्ञाने टरी, परद्रव्य इच्छा परिहरी।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरा)

अक्षत पद लेवा भणी, अक्षतपूजा सार;
अखंडाक्षत जिन पूजीअे, तो लहीअे जयकार।

(धनाश्री)

आलंबन साधन जे त्यागे, परपरिणतिने भागे रे;
अक्षय दर्शन ज्ञान वैरागे, आनंदघन प्रभु जागे रे।

(हरिगीत)

हुं अेक शुद्ध सदा अरूपी, ज्ञानदर्शनमय खरे;
कंई अन्य ते मारुं जरी, परमाणु मात्र नथी अरे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरा)

जिनवर हितजनता करी, पूजो भाव अमाप;
पुष्पतणी पूजा रची, काम हरो तत्काळ।
अनंत सौख्य, नाम दुःख, त्यां रही न मित्रता!
अनंत दुःख नाम सौख्य, प्रेम त्यां विचित्रता!
उघाड न्याय नेत्रने निहाळ रे निहाळ तुं,
निवृत्ति शीघ्रमेव धारी ते प्रवृत्ति बाळ तुं।

(हरिगीत)

जीती इन्द्रियो ज्ञानस्वभावे अधिक जाणे आत्मने;
निश्चय विषे स्थित साधुओ भाखे जितेन्द्रिय तेहने।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर.......... कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

विविध युक्ति पकवानशुं, लेई चित्त उदार;
अणाहारी पद पामवा, विनवुं वारंवार।

(गझल)

रसे, रूपे अने गंधे, सदा छे भिन्न आ आत्मा,
जराये मोह मायाना, नहीं छे भाव कंई एमां;
खरुं हुं तत्त्व समजीने, रहुं चेतन तणा रसमां,
चिदानंदी स्वरूप मारुं, निहाळुं आज भीतरमां।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर .... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

जगप्रदीप दीप शुभ, करतां भावो तेह;
ज्ञानशक्तिमां जे रह्युं, प्रगट लहुं निज तेह।
जळहळ ज्योतिस्वरूप तुं, केवळ कृपानिधान;
प्रेम पुनित तुज प्रेरजे, भयभंजन भगवान।

मोह स्वयंभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्यां ज्यां क्षीणमोह गुणस्थान जो;
अंतसमय त्यां पूर्णस्वरूप वीतराग थई,
प्रगटावुं निज केवळज्ञान निधान जो;
अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

मति, श्रुत, अवधि, मनः केवळ तेह पद एक ज खरे;
आ ज्ञानपद परमार्थ छे, जे पामी जीव मुक्ति लहे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर .... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

इणि परे धूपपूजा करी, जिन आगळ शुभभाव,
टाळी विभाव परिणति, दूर करो परभाव।
निराकार निर्लेप छो, निर्मळ ज्ञान निधान,
निर्मोहक नारायणा, भयभंजन भगवान।

चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्यां,
भवना बीज तणो आत्यंतिक नाश जो;
सर्वभाव ज्ञाता द्रष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनंत प्रकाश जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

जे सर्वसंगविमुक्त ध्यावे आत्मने आत्मा वडे,
नहि कर्म के नोकर्म चेतक चेतती अेकत्वने।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरा)

फळपूजा करतां थकां, सफळ करो अवतार;
फळ मागुं प्रभु आगळे, तार, तार मुज तार।
आनंदी अपवर्गी तुं; अकळगति अनुमान;
मोक्षफळ हुं मागतो, भयभंजन भगवान।
अेक परमाणुमात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक रहित अडोल स्वरूप जो;
शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरुलघु अमूर्त सहज पदरूप जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

बंधो तणो जाणी स्वभाव, स्वभाव जाणी आत्मनो,
जे बंधमांही विरक्त थाये, कर्ममोक्ष करे अहो।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर..........मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

जळ, चंदन, अक्षत, फूल, दीप, धूप, फळ नैवेद्य,
पूजुं अष्ट समूहथी, भक्तिथी जिनदेव।

(हरिगीत)

जीव चेतनागुण, शब्द-रस-रूप-गंध-व्यक्तिविहीन छे,
निर्दिष्ट नहि संस्थान जीवनुं, ग्रहण लिंगथकी नहीं।
प्रकाश छुं, कृतार्थ छुं, कल्याण छुं ने शांत छुं,
इन्द्रियोथी पार छुं, अगम्य स्वरूप ज्ञान छुं।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वर ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

हे जिनराज तुमारा चरणकमळनी पूजना;
हृदय उल्लसित थाय के भाग्य मानुं घणुं रे। हे जिन।
हे जगनाथ तुमे तो छो त्रिभुवनना नाथ जो;
अनंत गुणनी रत्नधाराअे सोहता रे। हे जिन।

विश्व उपदेष्टा छो जगततारणहार जो;
जन्म जरा विण गुणनिधि लोकेश्वरा रे। हे जिन।
दर्शन ताहरा प्रभु अनंत मोंघा मूलना;
आप कृपाअे वरस्या अमृत मेहुला रे। हे जिन।

परम रहस्य प्रभु आतमज्ञान निधान जो;
रत्नत्रयीमय प्रभु पधार्या आंगणे रे। हे जिन।
धन्य दिवस ने धन्य कृतार्थ हुं आज जो;
जय जय वर्तो जगगुरु तणी पूजना रे। हे जिन।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

देव-शास्त्र-गुरुपूजा

केवल रवि-किरणों से जिसका संपूर्ण प्रकाशित है अंतर,
उस श्री जिनवाणीमें होता तत्त्वोंका सुंदरतम दर्शन;
सद्दर्शन बोध चरण पथ पर, अविरल जो बढते हैं मुनिगण,
उन देव परम आगम गुरुको सम्यक् वंदन, सम्यक् वंदन।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति (आह्वाननम्)

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः (स्थापनम्)

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् (सन्निधिकरणम्)

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यमयी कंचन काया,
यह सब कुछ जडकी क्रिडा है, मैं अबतक जान नहीं पाया;
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर ममतामें अटकाया हूं,
अब निर्मल सम्यक् नीर लीये, मिथ्या मल धोने आया हूं।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्यः मिथ्यात्वमलविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड चेतनकी सब परणति प्रभु अपने अपने में होती है,
अनुकूळ कहे, प्रतिकूळ कहे, यह झूठी मनकी वृत्ति है;
प्रतिकूळ संयोगों में क्रोधित होकर संसार बढाया है,
संतप्त हृदय प्रभु! चंदन सम शीतलता पाने आया है।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्यः क्रोधकषायमलविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल हूं कुंदधवल हूं प्रभु! परसे न लगा हूं किंचित् भी,
फिर भी अनुकूल लगे उन पर, करता अभिमान निरंतर ही;
जड पर झुक झुक जाता चेतन की मार्दव की खंडित काया;
निज शाश्वत अक्षतनिधि पाने, अब दास चरणरजमें आया।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्यः मानकषायमलविनाशनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तनमें माया कुछ शेष नहीं,
निज अन्तरका प्रभु! भेद कहूं, उसमें ऋजुताका लेश नहीं;

चिंतन कुछ, फिर संभाषण कुछ, वृत्ति कुछकी कुछ होती है,
स्थिरता निजमें प्रभु पाउं जो, अंतरका कालुष धोती है।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्य: मायाकषायमलविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अब तक अगणित जड द्रव्योंसे, प्रभु! भूख न मेरी शांत हुई,
तृष्णाकी खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही;
युग–युगसे इच्छा सागरमें, प्रभु गोते खाता आया हूं,
पंचेन्द्रिय मनके षट् रस तज, अनुपम रस पीने आया हूं।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्य: लोभकषायमलविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगके जड दीपकको अब तक समझा था मैंने उजियारा,
झंझाके अेक झकोरे में, जो बनता घोर तिमिर कारा;
अत अेव प्रभो! यह नश्वरदीप, समर्पण करने आया हूं,
तुम्हरी अंतर लौसे निज अंतर,–दीप जलाने आया हूं।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्य: अज्ञानांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रांति रही मेरी,
मैं रागीद्वेषी हो लेता, जब परिणति होती जड केरी;
यों भावकरम या भावमरण, सदियों से करता आया हूं,
निज अनुपम गंध अनलसे प्रभु, पर गंध जलाने आया हूं।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्य: विभावपरिणतिविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमें जिसको निज कहता मैं, वह छोड मुझे चल जाता है,
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है;
मैं शांत निराकुल चेतन हूं, है मुक्तिरमा सहचर मेरी,
यह मोह तडक कर तूट पडे, प्रभु! सार्थक फलपूजा तेरी।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भर निज रसको पी चेतन, मिथ्या मलको धो देता है,
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनंद अमृत पीता है;

अनुपम सुख तब विलसित होता, नित केवलज्ञान चमकता है,
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है;
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु! निज गुणका अर्घ बनाऊँगा,
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अर्हन्त अवस्था पाऊंगा।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

भववनमें जी भर घूम चुका, कण कण को जी भर भर देखा;
मृगसम मृगतृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा। १

झूठे जगके सपने सारे, झूठी मनकी सब आशायें;
तन, जीवन, यौवन अस्थिर है, क्षणभंगुर पलमें मुरझाअे। २

सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षणको टाल सकेगा क्या;
अशरण मृत कायामें हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या। ३

संसार महा दुखसागर के प्रभु दुखमय सुख–आभासों में;
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी कंचन कामिनि प्रसादों में। ४

मैं अेकाकी अेकत्व लिये अेकत्व लिये सबही आते;
तन, धनको साथी समझा था पर ये भी छोड चले जाते। ५

मेरे न हुअे ये में इनसे अति भिन्न अखंड निराला हूं;
निज में परसे अन्यत्व लिये निज समरस पीनेवाला हूं। ६

जिसके शृंगारों में मेरा यह महंगा जीवन घुल जाता;
अत्यंत अशुचि जड कायासे इस चेतनका कैसा नाता। ७

दिनरात शुभाशुभ भावोंसे मेरा व्यापार चला करता;
मानस वाणी और कायासे आस्रवका द्वार खुला रहता। ८

शुभ और अशुभकी ज्वालासे झुलसा है मेरा अंतस्तल;
शीतल समकित किरणें फूटें संवरसे जागे अंतर्बल। ९

फिर तपकी शोधक वह्नि जगे कर्मोकी कड़ियां टूट पड़ें,
सर्वांग निजात्म प्रदेशोंसे अमृतके निर्झर फूट पड़ें। १०

हम छोड चले यह लोक तभी लोकांत विराजे क्षणमें जा;
निज लोक हमारा वासा हो शोकांत बने फिर हमको क्या। ११

जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नयतम सत्वर टल जावे;
बस ज्ञाता–द्रष्टा रह जाउं मद–मत्सर मोह विनश जावे। १२

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी;
जगमें न हमारा कोई था, हम भी न रहें जगके साथी। १३

चरणोंमें आया हूं प्रभुवर, शीतलता मुझको मिल जावे;
मुरझाई ज्ञान लता मेरी, निज अंतर्बलसे खिल जावे। १४

सोचा करतां हूं भोगोंसे बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला;
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावकमें घी डाला। १५

तेरे चरणोंकी पूजासे इन्द्रिय सुखको ही अभिलाषा;
अबतक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुखकी भी परिभाषा। १६

तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जगमें रहते जगसे न्यारे;
अतएव झुके तव चरणोंमें, जगके माणिक मोती सारे। १७

स्याद्वादमयी तेरी वाणी शुभ नयके झरने झरते हैं;
उस पावन नौका पर लाखों प्राणी भववारिधि तिरते हैं। १८

हे गुरुवर! शाश्वत सुख दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है;
जगकी नश्वरताका सच्चा दिग्दर्शन करनेवाला है। १९

जब जग विषयोंमें रच पच कर गाफिल निद्रामें सोता हो;
अथवा वह शिवके निष्कंटक पथमें विषकंटक बोता हो। २०

हो अर्घ निशाका सन्नाटा वनमें वनचारी चरते हों;
तब शांत निराकुल मानस तुम तत्त्वोंका चिंतन करते हो। २१

करते तप शैल नदीतट पर तरुतल वर्षाकी झडियों में;
समतारस पान किया करते सुख दुख दोनोंकी घडियों में। २२

अन्तर ज्वाला हरती वाणी मानों झरती हों फूलझडियां;
भवबंधन तड तड टूट पडें खिल जावें अंतरकी कलियां। २३

तुम सा दानी क्या कोई हो जगको देदी जगकी निधियां;
दिन रात लुटाया करते हो सम शमकी अविनश्वर मणियां। २४

हे निर्मल देव! तुम्हें प्रणाम,
हे ज्ञानदीप आगम! प्रणाम;
हे शांति त्याग के मूर्तिमान,
शिव-पथ-पंथी गुरुवर! प्रणाम।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वीस विहरमान तीर्थंकर-पूजा

(अडिल्ल)

पंच मेरुकी पूर्व अपर दिशिके विषैं,
क्षेत्र विदेह मंझार वीस जिनवर अषैं;
सीमंधर जिन आदि जजनके कारनै,
आह्वानन इस थान करों अघ टारनै।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादि वीस विहरमान जिनेन्द्राः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता)

सीतानदी को नीर प्रासुक हेमझारीमें भरों,
त्रयधार देत जन्म मृत्यु जरादि दुःखको परिहरौं;

सीमंधरादिक शाश्वते जिन वीस क्षेत्र विदेह के,
पूज मन-वच-भावसौं भवि चलौ क्षेत्र अदेह के।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादि वीस विहरमानजिनेन्द्रेभ्यः चरणकमलपूजनार्थं जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतल सुगंधित भ्रमर-गुंजित लेय चंदन बावनौ,
या हेत तुम ढिंग धरत हों संसार-ताप नसावनौ; सी.। चंदनं०

उज्ज्वल अखंडित लेय तंदुल पुंज तुम गुणके धरौं,
मुझ अक्षयपदकी प्राप्ति कीजौ अरज या विधिसौं करौं; सी.। अक्षतं०

प्रासुक सुगंधित फूल बहुविधि धरत तुम ढिंग लायजी,
मनमथविथा हमको सतावै याहि देहु नशाय जी; सी.। पुष्पं०

नैवेद्य उत्तम थालमें धर लेय तुमरी भेंटजी,
मैं करत यातैं क्षुधा अबही आप देओ मेट जी; सी.। नैवेद्यं०

निरमल मनोहरि दीपद्युतिको धरत प्रासुक दीपजी,
मिथ्यात तमके नासनेको आय आप समीपजी; सी.। दीपं०

बावन सुचंदन धूप लेकर अगनघटमें धरत हैं,
आठ रिपु दुखदाय मेरे मनो तुम ढिंग जरत हैं; सी.। धूपं०

बहु भांति प्रासुक मधुर सुंदर घ्रान-दृग-प्रियकार जी,
फल आपको धरि भेंट जांचौं, मोक्षफल द्यो सार जी; सी.। फलं०

वर नीर चंदन विमल तंदुल पुष्प चरु मन भावना,
फिर दीप धूप पवित्र फल ले अर्घ करि गुण गावना; सी.। अर्घं०

कल्याणक

मंगल दिन अति सुखदाता, गरभ धर्यो प्रभु सत्यदेवी माता,
नर-हरि-देव नमे जिनमाता, हम शिर नावत पावत साता।

ॐ ह्रीँ गर्भमंगलमंडिताय श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य घडी धन्य काळ शुभ देखो, हरि अभिषेक कियो प्रभुजी को;
कुसुम सुदेवनने वरसाये, जय जय शब्द किये हरषाये।

ॐ ह्रीँ जन्ममंगलमंडिताय श्रीसीमधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग अनित्य विचारा, इम मनधार तपे तपधारा,
सुर शिबिका धर कानन धाये, धन धन देव अहो धन जाये।

ॐ ह्रीँ तपोमंगलमंडिताय श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल प्रत्यक्ष ज्ञान सु पायो, सकल चराचर वस्तु लखायो;
पशु नर देव सुपूजन आये, हम इत मंजुल मंगल गाये।

ॐ ह्रीँ ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विदेह क्षेत्र में शाश्वते विहरमान जिन वीस।
तिनकी अब जयमालिका कहू नाय निज शीस।

(पद्धरी छंद)

जय सीमंधर तिहुंजगत-भूप, जय जुगमंधर निर्मल अनूप,
जय बाहु जिनेश्वर जगत-भान, जय जय सुबाहु गुणगण-महान। १

संजात सकल नासक अनिष्ट, जय स्वयंप्रभ गुणगण-गरिष्ट,
जय रिषभानन भवजलधि-पोत, अनंतवीर्य आतम-उद्योत। २

जय सूरिप्रभ विनकाज वीर, जय विशालकीर्ति गुण अतुल धीर,
जय जय हि वज्रधर अघनिवार, जय चंद्रानन गुणगण विकार। ३

जय चंद्रबाहु निज आत्मलीन, जय जय हि भुजंगम मोहक्षीन,
जय ईश्वर केवल बोध दैन, जय नेम यतीश्वर मधुर वैन। ४

जय वीरसेन तिहुं जगततात, जय महाभद्र नाशक मिथ्यात,
जय जय हि देवजस जगविख्यात जय अजितवीर्य सब शत्रु नाश। ५

यह बीस जिनेश्वर विहरमान, वर समवसरणयुत क्रिया खान,
विचरे विदेह शुभक्षेत्रमांहि, इक धर्म होत नहिं और चाहि। ६

तिस थान धर्म दुजो न कोय, जिनराज तनो इक धर्म होय,
थिर काल सदा चोथो रहाय, शिवपंथ बंद कबहूं न थाय। ७

तिस थानतनी शोभा अपार, कहि नाहि सकै मति तुच्छधार,
जाचै जु नेम निज नाय शीस, शिवथान देहु जिनराज वीस। ८

(धत्ता छंद)

यह बीस जिनेश्वर नमत सुरेश्वर, चक्रेश्वर आकाशधरं,
जो पूजै ध्यावै भक्ति बढावै, ते शिव पावै परंपरं। ९

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि वीस विहरमानजिनेन्द्रेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बीस विद्यमान जिनपूजा

(छप्पय छंद)

वन्दों श्री जिन विहरमान केवलयुत राजे,
देत धर्म उपदेश सदा जीवन सुखकाजे।
तिनको पूजनहेत भयो चित्त हर्ष अपारा,
धन्य घडी धन्य दिवस आज धन्य भाग्य हमारा।
आह्वानन संस्थापना सन्मुख कर उर ठानके,
बालवचन सम कहत हूं सन्मुख तिष्ठो आनके। १

ॐ ह्रीँ श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरा! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(राग–दरशविशुद्धि भावना भाय)

गंगादिक तीर्थ जल लाय जजौं जिनेश अमर पद पाय,
नमूं करजोड, नितप्रति ध्याऊं भौर हि भौर।

पांचों मेरु विदेह सुथान तीर्थंकर जिन वीस महान,
नमू करजोड, नितप्रति ध्याऊं भौर हि भौर।

(राग–त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवन नामी)

भवअटवी भ्रमत बहुजनम धरत सहि,
मरण विपति अति दुःख पायो।
तातें जलधारा तुम ढिंग धारा,
शांतिसुधारस अब पायो।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो।

ॐ ह्रीँ विद्यमान विशंतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर संग कपूर मिलाय चंदनतैं अरचौं जिनराय,
नमूं करजोड़ नितप्रति ध्याऊं भौर हि भौर। पाँचौं०

परचाह अनल मोहि दहत सतत बहु,
विपति गहत तुम ढिंग आयो।
तातैं लै बावन तुम अति पावन,
दाह बुझावन धसि ल्यायो।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (चंदनं०)

शालि अखंडित सुंदर श्वेत पूजौं पद अक्षयनिधिहेत,
नमूं करजोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं०

बहु जनम धरत अरु मरण करत भव,
भ्रमत भ्रमत अति थकित भयो।
भवभय कर तर्जित अक्षक मर्जित,
ल्याय चढाऊँ सुखित भयो।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (अक्षतं०)

पंचवर्ण के कुसुम अनूप पूजौं जिनवर तिहुंजगभूप,
नमूं करजोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं०

मोहि कामने सतायो, चारों गति भरमायो,
बहु विपति गहायो नानाविधकी।
तातैं ले फूलं तुम निरशूलं,
मोहि विशूलं करो अबकी।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (पुष्पं०)

घेवर मोदक आदि अनूप, पूजूं क्षुधाहरण तुम भूप,
नमूं करजोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं०

मोहि क्षुधाने सतायो, तव याचन करायो,
तोहु पेट न भरायो तातैं अबकी,
चरु भरकर थारी तुम ढिंग धारी,
देहु निराकुल सुख अबही।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (नैवेद्यं०)

दीप रतनमय जोति जगाय, मिथ्या तिमिर सकल नश जाय,
नमूं करजोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं०

भयो मोहतैं अचेत, कियो जगही सों हेत,
भूल्यो आप–पर भेद तुम शरण गही।
दीपक उजियारा तिमिर विदारा,
स्वपरप्रकाशा नाथ सही।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (दीपं०)

अगर तगर कृष्णागर चूर, खेवत होय कर्म चकचूर,
नमूं करजोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं०

कर्मइँधन है भारी, मोहि कियाजी दुखारी,
नेक सुधहु न धारी तुम शरण गही।
तातैं ले धूपं तुम शिवभूपं,
कर शिवरूपं नाथ सही।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (धूपं०)

बादाम सुपारी मेवा मिष्ट, पूजौं पद फलदायक इष्ट,
नमूं कर जोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं।

अंतराय दुखदाई मेरी शक्ति छिपाई,
मोसे दीनता कराई बहु आजलौं प्रभो।
तातैं फल लायो तुम ढिंग आयौ,
मोक्ष महाफल देहु प्रभो।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (फलं०)

जल फल आठों द्रव्य संभाल रत्न जवाहर भर भर थाल,
नमूं करजोड नितप्रति ध्याऊँ भौर हि भौर। पाँचौं।

आठों कर्मोने सतायो मोकू दुख उपजायो,
तातैं तुम ढिंग आयो अब बच जाऊँजी।
वसु द्रव्य सम्हारी कंचन थारी,
हो शिवकारी शिव पाऊँ जी।

श्री बीस जिनेश्वर दयानिधीश्वर जजत महेश्वर मेरी विपत हरो,
भवसंकट खंडो आनंद मंडो मोहि निराकुल सुक्ख करो। (अर्घं०)

जयमाला

(दोहरो)

विहरमान जिनदेवके सुनो अनुपम नाम,
इन्द्र चन्द्र सेवें सदा राजत है सुखधाम। १

(पद्धरी छंद)

पहलो यह जंबूद्वीप जान, ता मध्य सुदर्शन मेरु मान,
सीमंधर युगमंधर जिनेन्द्र, लख बाहु सुबाहु विदेहचंद्र। २

जुग खंड धातकी पूर्व अेह, सोहत विजया नग जुत विदेह,
संजात स्वयंप्रभ महावीर, वंदों ऋषभानन अनंतवीर्य। ३

भाख्यो पश्चिम दिश बाहि द्वीप, शुभ लसे अचल पर्वत महीप,
सूरिप्रभ कीर्ति विशाल इन्द्र, वज्रर धर चंद्रानन मुनींद्र। ४

पुष्कर आधे ही द्वीपमांहि, पूरवमें मंदिर शैल मांहि;
चंद्रबाहु भुजंगम जगतभूर, ईश्वर नेमिप्रभु कर्मचूर। ५

शुभ ताहि द्वीप पश्चिम जु ओर, विद्युन्माली गिर सिर जु मोर;
तहां वीरसेन महाभद्र ईश, लख देव यषोधर जिन सु बीस। ६

श्री विहरमान करुणानिधान, तुमरे पद सेवत देव आन;
हमको पहुंचनकी शक्ति नाहिं, वंदन परोक्ष जिनचैत्यमांहिं। ७

भव भवमें सुखदायक निहार, पूजा ठानी आनंदकार;
अब नृत्य करनको हिये चाव, उमग्यो है मेरे भक्तिभाव। ८

ताथेई थेईथेईथेईथेई तु चाल, फिरिफिरिफिरिफिरिफिरि पग सम्हाल;
टम टम टम टम टंकोर तंट, छम छम छम छम छम छम क्षुद्र घंट। ९

द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मिरदंग गाज, झननन नननन नूपुर सुजात;
तननन नननन नन तान तोर, घननननन घंटा करत घोर। १०

ऐसी विधिसे जस गाय गाय, झुक झुक झुक झुक सिर नाय नाय;
विनती कीनी कर जोड जोड, शिशु भाषत सुनियो तात मोर। ११

संसार विषम दुःख मेट मेट, शिववनिता से कर भेंट भेंट;
तुम चरननको सेवक जुहार, यह जाचत हुँ मैं बारबार। १२

(धत्ता छंद)

जय तीरथ ईशा बीस जिनेशा नमत सुरेशा धरणीशा,
जय जगत खगेसा अरु चक्रेशा तुम पद वेसा नरशेसा। १३

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विहरमान जिनदेवको पुनि पुनि करूं प्रणाम,
स्वर्ग संपदा भोग के, पाऊँ शिवपुर धाम।

॥ इति आशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री सीमंधरादि बीस विहरमान जिनपूजा

(दोहा)

दायक यश जग सुमति सुग, सुख दुतिरूप अपार,
धायक विधि घायकनिके लायक जग उद्धार।
सीमंधर आदिक सकल, वियद बाहु मित अैन,
आह्वानन त्रिविधा करूं, इत तिष्ठहु सुख दैन।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविशंति' जिनेन्द्राः! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविशंति' जिनेन्द्राः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादि-अजितवीर्यपर्यंतविदेहक्षेत्रस्थितवर्तमानविशंति' जिनेन्द्राः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(रुचिरा छंद)

शीतल सलिल अमल तृषहारक, लेय सुधासम भृंगभरं,
जिनपति चरन अग्र त्रय धारा, धरूं ताप त्रय नाशकरं,
जय कमलासन सुंदर शासन, भासन नभद्वय बोधवरं,
श्रीधर श्रीसीमंधर आदिक, यजूं वीस जिन श्रेयकरं।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय पटीर घसित वरकुंकुम, शीतल गंध सुरंग भर्यो,
सारस वरन चरन तव धारत, आकुल दाह अपार हर्यो। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जीरक श्याम सुगंधित तंदुल, श्वेत वरन वर अनियारे,
लहि अक्षत अक्षयपद पावन, धरूं पुंज दृढ मनहारे। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

केतकि कंज गुलाब जुही वर, सुमन सुवासित मनहारी,
धारत चरन लहें समतासर, नशें मदनसर दुखकारी। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विंजन विविध छहों रस पूरित, सद्य सुसुंदर बलकारी,
श्रीपति चरन चढाऊँ चरु वर, निज बलदायक क्षुतहारी। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रजलित ज्योति कपूर मनोहर, अथवा पूरित स्नेह वरं,
करत आरती हरि भव आरति, निज गुन जोति प्रकाशकरं।
जय कमलासन सुंदर शासन, भासन नभद्वय बोधवरं,
श्रीधर श्रीसीमंधर आदिक, यजूँ वीस जिन श्रेयकरं।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विंशति-जिनेन्द्रेभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चूरित अगर पटीरादिक वर, गंध हुताशन संग धरूं,
खेऊं धूप जगेशचरन ढिग, चाहत हूं विधि नाश करूं। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विंशतिजिनेन्द्रेभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल दाडम एला पिकवल्लभ, खारिक आदिक मिष्ट भले,
लेकर चरन चढावत जिनके, पावत हूं फल मोक्ष रले। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विंशतिजिनेन्द्रेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत मनसिजशर, चरु दीपक वर धूप फलं,
भवगदनाशन श्रीपतिके पद, वारत हूं करि अर्घ भलं। जय०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरादिक-विंशतिजिनेन्द्रेभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा) द्वीप अर्ध द्वय मेरु पन, मेरु मेरु प्रति चार,
विहरत विभव अनंत युत, अवनि विदेह मझार।

(चंडी छंद : मात्रा १६)

सीमंधर सुखसीम सुहाये, युगमंधर युग वृष प्रकटाये,
बाहुबाहुबल मोह विदार्यो, जिन सुबाहु मनमथ मद मार्यो। १

संजातक निज जाति पिछानी, स्वयंप्रभु प्रभुता निज ठानी,
ऋषभानन ऋषिधर्म प्रकाशन, वीर्य अनंत कर्मरिपु नाशन। २

सूरप्रभु निजप्रभा परिपूरन, प्रभु विशाल त्रिकशल्य विचूरन,
देव वज्रधर भ्रमगिरि भंजन, चंद्रानन जगजन मनरंजन। ३

चंद्रबाहु भवताप निवारी, ईश भुजंगम-धुनि-मनि धारी,
इश्वर शिवगवरी दुःखभंजन, नेमिप्रभु वृषनेमि निरंजन। ४

वीरसेन विधि अरिजय वीरं, महाभद्र नाशक भव-पीरं,
देव देवयश को यश गावै, अजितवीर्य शिवरमनि सुहावै। ५

ये अनादि विधि बंधनमांही, लब्धियोग निज निधि लखि पाई,
सम्यक् बलकरि अरि चकचूरन, क्रमतें भये परम हुति पूरन। ६

अंतरीक आसन पर सोहै, परम विभूति प्रकाशित जोहै,
चौसठ चमर छत्रत्रय राजै, कोटि दिवाकर दुति लखि लाजै। ७

जय दुंदुभि धुनि होय सुहानि, दिव्यध्वनि जग जन दुखहानि,
तरु अशोक जनशोक नशावै, भामंडल भव सात दिखावै। ८

हर्षित सुमन सुमन वरसावै, सुमन अंगना सुगुन सुगावै,
नव रस-पूरन चतुरंग भीनी, लेत भक्तिवश तान नवीनी। ९

बजत तार तननननननननन घुंघरू धमक झुननन झुननन,
धीं धीं धृकट धृकट द्रमद्रमद्रम, ध्वनत मुरज पुरु ताल तरलसम। १०

ता थेई थेई थेई चरन चलावै, कटिकर मोरि भाव दरसावै,
मानथंभ मानीमद खंडन, जिन-प्रतिमा-युत पाप विहंडन। ११

शाल चतुक गोपुर-युत सोहै, सजल खातिका जनमन मोहै,
द्विजगन कोक मयूर मरालं, शुक-कलरव रव होत रसालं। १२

पूरित सुमन सुमनकी बारी, वन–बंगला गिरिवर छबिधारी,
तूप ध्वजा गन पंक्ति विराजे, तोरन नवनिधि द्वार सु छाजे। १३

इत्यादिक रचना बहु तेरी, द्वादश सभा लसत चहुं फेरी,
गनधर कहत पार नहि पावै, ''थान'' निहारत ही बनि आवै। १४

श्रीप्रभुके इच्छा न लगारं, भविजन भाग्य उदय सु विहारं,
ये रचना मैं प्रगट लखाऊँ, या हित हरषि हरषि गुन गाऊँ। १५

(छंद : धत्ता)

यह जिन गुनसारं, करत उचारं, हरत विकारं, अघभारं,
जय यश दातारं, बुधि–विस्तारं करत अपारं सुखसारं।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विंशति-जिनेन्द्रेभ्य: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जो भविजन जिन विंश यजैं शुभ भावसूं,
करै, सुगुनगनगान भक्ति धरि चावसूं;
लहै सकल संपत्ति अर वर मति विस्तरै,
सुर नर पद वर पाय मुक्ति रमनी वरै।

॥ इति आशीर्वाद: पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री सीमंधरादि बीस तीर्थंकर पूजा

द्वीप अढाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर बीस,
तिन सबकी पूजा करूं, मन वच तन धरि सीस।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरा:! अत्र अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

इन्द फनींद नरेन्द्र वंद्य पद निर्मल धारी,
शोभनिक संसार, सार गुण है अविकारी;
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजो तृषा निवार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार,
श्री जिनराज हो, भव तारणतरण जिहाज।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

तीन लोकके जीव, पाप आताप सताये,
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये।
बावन चंदनसों जजूं (हो), भ्रमत तपत निरवार....सीमं० (चंदनं)

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी,
तातैं तारे बडी भक्तिनौका जगनामी।
तंदुल अमल सुगंधसों (हो), पूजो तुम गुनसार....सीमं० (अक्षतान्)

भविक-सरोज-विकाश, निंद्यतमहर रविसे हो,
जति श्रावक आचार कथनको, तुमही बडे हो;
फूलसुवास अनेकसों (हो), पूजों मदन प्रहार....सीमं० (पुष्पं)

काम नाग विष धाम, नाशको गरुड कहे हो,
क्षुधा महादवज्वाल, तासको मेघ लहे हो।
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूख विडार.... सीमं० (नैवेद्यं)

उद्यम होन न देत, सर्व जगमांहि भर्यो है,
मोह महातम घोर; नाश परकाश कर्यो है।
पूजों दीप प्रकाशसों (हो), ज्ञानज्योतिकरतार....सीमं० (दीपं)

कर्म आठ सब काठ,–भार विस्तार निहारा,
ध्यान अगनि कर प्रकट, सरव कीनो निरवारा।
धूप अनूपम खेवतै (हो), दुःख जलैं निरधार....सीमं० (धूपं)

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभ अहंकार भरे हैं,
सबको छिनमैं जीत, जैनके मेरु खरे हैं;
फल अति उत्तमसों जजों (हो), वांछितफलदातार....सीमं० (फलं)

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनहूतें थुति पूरी न करी है;
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार....सीमं० (अर्घं)

जयमाला

(सोरठा)

ज्ञान सुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो,
भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों।

सीमंधर सीमंधर स्वामी; जुगमंधर जुगमंधर नामी,
बाहु बाहु जिनजगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे। १

जात सुजातं केवलज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं,
ऋषभानन ऋषभानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं। २

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं;
वज्रधार भव-गिरि-वज्ज्रर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं। ३

भद्रबाहु भद्रनिके करता, श्री भुजंग भुजंगम भरता;
ईश्वर सबके इश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं। ४

वीरसेन वीरं जग जानै, महाभद्र महाभद्र बखानै;
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजितवीरज बलधारी। ५

धनुष पाँचसै काय विराजै, आयु कोडिपूरव सब छाजै;
समवसरण शोभित जिनराजा, भवजलतारनतरन जिहाजा। ६

सम्यक् रत्नत्रयनिधि दानी, लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी;
शत इन्द्रनिकरि वंदीत सोहैं, सुर नर पशु सबके मन मोहैं। ७

(दोहा)

तुमको पूजें वंदना, करें धन्य नर सोय;
द्यानत सरधा मन धरे, सो भी धरमी होय।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिक-विंशति-जिनेन्द्रेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकर पूजा

(अनुष्टुप)

मेरुपूर्वापराशासु वैदेहा ये जिनेश्वराः,
तेषां कुर्वे समाह्वानं मामकीनविशुद्धये।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरा अत्रावतरतावतरतेति समाह्वाननकर्म।

सार्द्धद्विमानुषे द्वीपे विद्यमानान् विदेहगान्,
स्थापयाम्यत्र विंशार्हान तीर्थंशान् भावशुद्धये।

ॐ ह्रीँ विदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरा अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनकर्म।

पंचसंख्यविदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरान्,
संदधाम्यत्र सान्निध्ये पूजायै दृष्टिशुद्धये।

ॐ ह्रीँ विदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरा अत्र मम सन्नहिता भवत भवत भवतेति, सन्निधिकरणकर्म।

(वसंततिलकानि)

गंगाप्रमुख्यशुचिनिर्मलनीरजातैः,
स्फाटिक्यकान्तिहिममिश्रितगंधजातैः;
सीमंधरादिजिनविंशतिपादपद्मान,
सन्तर्पयामि जनिमृत्युजरान्तहेतोः।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

कर्पूरकुंकुमसुगन्धितपुष्पसारै-
रेकीकृतैर्मलयजद्रवगंधसारैः;
सीमंधरादिजिनविंशतिपादपद्मान्,
संचर्चयामि भवतापविनाशहेतोः।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं०

स्वच्छाक्षतैर्हृदयमोदकरैरखण्डै–
श्चान्द्रप्रभैरतुषपद्मसुवासितेष्टैः;

सीमंधारदिजिनविंशतितीर्थनाथान्,
सम्पूजयामि विषदाक्षयधामहेतोः।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

अम्भोजचम्पकलतातृणशून्यजाति-
बन्धूककेसरसुगन्धितपुष्पजातैः,
सीमंधरादिजिनविंशतिमारमारान्,
अभ्यर्चयामिमदनज्वरनाशहेतोः।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं०

स्वादिष्टमिष्टरसपायसमोदकाद्यैः,
नैवेद्यकैःशुचितमैश्च सुधासमानैः;
सीमंधरादिजिनविंशतिमुख्यतीर्थान्,
प्रार्चे क्षुधाविषमरोगविमुक्तिहेतोः।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

दीपैः प्रदीपितजगत्रयरश्मिजालैः;
दूरीकृतान्धघनमोहमहत्प्रजालैः;
सीमंधरादिजिनविंशतिपूज्यपादान्,
अर्चे महातिमिरमोहविनाशहेतोः

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधक ारविनाशनाय दीपं०

सौगन्ध्यसारघनसारविशिष्टधूपैः
सौगन्ध्यसारवपुरेकविधानरूपैः;
सीमंधरादिजिनविंशतितीर्थवर्यान्,
प्रार्चेऽष्टकर्मदहनाय सदा समर्च्यान्।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं०

नारंगदाडिमरसालबदामपुंगैः,
श्रेष्ठैः फलै सुफलमोक्षफलैकफुल्लैः;

सीमंधरादिजिनविंशतितीर्थकर्तॄन्,
सम्पूज्ये सुफलमोक्षफलाप्तिहेतोः

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं०

सन्मिश्रितैर्जलसुगंधदक्षताद्यै-
रर्घ्यैरनर्घपदमोक्षसुखादिभावैः;
सीमंधरादिजिनविंशतितीर्थभर्तृन,
प्रार्चाम्यनर्घपदमौक्तिकमुख्यहेतोः

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं०

जयमाला

(शार्दूलविक्रीडितं)

दृष्टिज्ञानसुचारुदीप्तमणिना दीप्ताः सदा शाश्वताः,
तीर्थेशा भवभावपाशरहिताः सीमंधराद्या जिनाः;
भव्यानां जयमालिकैकरणा विद्वेषिणा कर्मणः,
ये तेभ्यः प्रददामि मोक्षगमने यानं महार्घ्यं शुभम्।

ॐ ह्रीँ पंचविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(वसंततिलकम्)

सीमंधरादिभवशान्तिकरा जिनेन्द्राः,
सर्वार्थसाधनगुणप्रणिधानरूपाः;
तेभ्योऽर्पयामि भवकारणनाशबीजं,
पुष्पांजलि विमलमंगलकामरूपम्।

(पुष्पांजलि)

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(राग – मेरी भावना)

श्रेयांसराय सत्यदेवीके नंदन, सीमंधर स्वामी महाराज;
स्वर्गपुरीतैं आप पधारे, मध्यम लोकमांहि जिनराज।
इन्द्र देव सब मिलकर आये, जन्म–महोत्सव करने काज;
आह्वानन सब विधि मिल करके, अपने कर पूजौं प्रभु पाय।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ: तिष्ठ: ठः ठः स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधिको उज्ज्वल जल ले, श्री जिनवर पद पूजन जाय,
जन्म-जरा-दुःख मेटन कारन, ल्याय चढाऊँ प्रभुजीके पाय;
सीमंधर जिन चरणकमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय,
हो करुणानिधि भवदुःख मेटो, यातैं मैं पूजौं प्रभु पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कंचन झारीमें भर ल्याय,
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, भव आताप तुरत मिटि जाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय;
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, अक्षय पदको तुरत उपाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी बेल चमेली, श्री गुलाबके पुष्प मंगाय;
श्रीजीके चरण चढावो भविजन, कामबाण तुरतहिं नसि जाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज लीना तुरत रसभीना, श्री जिनवर आगे धरवाय;
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, जिनगुण गावत मन हरषाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग जगमग होत दशों दिश, ज्योति रही मंदिरमें छाय;
श्रीजीके सन्मुख करत आरती, मोहतिमिर नासै दुखदाय।
सीमंधर जिन चरणकमलपर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय,
हो करुणानिधि भवदुःख मेटो, यातैं मैं पूजौं प्रभु पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर कपूर सुगंध मनोहर, चंदन कूट सुगंध मिलाय;
श्रीजीके सन्मुख खेय धूपायन, कर्म जरें चहुंगति मिटि जाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल और बादाम सुपारी, केळा आदि छुहारा ल्याय;
महा मोक्षफल पावन कारन, ल्याय चढाऊँ प्रभुजी के पाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय;
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर नाचत ताल मृदंग बजाय। सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(नाराच छंद)

सुवीतराग शांतरूप बोधके निधान हो,
निरामये सुनिर्भये निरंश हो सुधाम हो,
प्रसन्न हो सीमंधरनाथ आप ही विशुद्ध हो,
करो विशुद्ध मोही नाथ अनंतज्ञान बुद्ध हो। १

तुम्हीं विमोह हो निरंग साम्यभावरूप हो,
अमूर्तिक पूर्णबुद्ध आप ही स्वरूप हो....प्रसन्न० २

अबंध निष्कषाय हो जु कर्मपास ना रही,
जो संगको प्रसंग नांही शुद्धरूप आप ही....प्रसन्न० ३

अनंत सौख्यके समुद्र अनंत ज्ञानधीर हो,
दुःकर्मको निवारि आप काम-खंड-वीर हो....प्रसन्न० ४

कलंक कर्म धूलिको समीर के समान हो,
नहीं जो शोक, ना विकार, शब्द ना, अमान हो....प्रसन्न० ५

सुज्ञान नेत्र तेज देख लोक वा अलोकको,
जो भिन्न भिन्न जान जीव द्रव्य आदि थोकको....प्रसन्न० ६

मुनीन्द्र इन्द्र वा नरेन्द्र पाद वृन्द पूजि है;
सुशुद्ध सिद्ध ध्यावते जु दुष्ट कर्म धूजि है....प्रसन्न० ७

भये जु जन्म मरण नाशिकै जु त्रिपुरारि हो,
सुशुद्ध काज मांहि प्रभो! आप ही सुसार हो....प्रसन्न० ८

जु और चाह नाहिं मोहि सिद्ध पद दीजिये,
जु आप हो कल्याणरूप मो कल्याण कीजिये....प्रसन्न० ९

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादिजिनेन्द्रदेवचरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(पद्धरी छंद)

जै जै जै सीमंधर जिनंद, पितु श्रेयांस नंद आनंदकंद;
सत्य मात कुमुदमनमोदकाय, भविवृंद चकोर सुखी कराय। १

भवि भीत फोक कीनों अशोक, शिवमग दरशायो शर्मथोक;
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर, तुम आगमनिपुन पुनीत धीर। २

तुम केवलज्योति विराजमान, जै जै जै जै करुनानिधान;
तुं समवसरणमें तत्त्वभेद, दरशायो जातें नशत खेद। ३

तित तुमको चक्री आनंदधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार;
पुनि गद्य पद्यमय सुजस गाय, जै बल अनंत गुनवंतराय। ४

जय शिव शंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष;
जय कुमतमतंगजको मृगेन्द्र, जय मदन ध्वांतको रविजिनेन्द्र। ५

जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध, जय ऋद्धिसिद्ध दाता प्रबुद्ध;
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागर महं सुष्ट थान। ६

तुम भगति करें ते धन्य जीव, ते पावैं दिव-शिव-पद सदीव;
तुमरो गुन देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नर की जु नार। ७

वर भगतिमांहि लवलीन होय, नाचैं ताथेई थेई थेई बहोय;
तुम करुनासागर सृष्टिपाल, अब मोको वेगि करो निहाल। ८

मैं दुःख अनंत वसु करमजोर, भोगे सदीव नहि और रोग;
तुमको जगमें जान्यो दयाल, हो वीतराग गुनरतनमाल। ९

तातैं शरना अब गही आय, प्रभु करो वेग मेरी सहाय;
यह विधन करम मम खंड खंड, मनवांछित कारज मंड मंड। १०

संसार कष्ट चकचूर चूर, सहजानंद मम उर पूर पूर;
निज-पर-प्रकाश बुद्धि देह देह, तजिके विलंब सुधि लेह लेह। ११

हम जांचत हैं यह बार बार, भवसागर तैं मो तार तार;
नहि सह्यो जात यह जगत दु;ख, तातैं विनवों हे सुगुनमुख। १२

(धत्ता छंद)

श्रीसीमंधरजिन जितमदमारं, शीलागारं सुखकारं,
भवभयहरतारं शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरादिजिनेन्द्रेभ्यः चरणकमलपूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

सीमंधर जिनेश, पूजें सुरेश, आयो सुशरन तेरी,
नमो नमो जय श्रेयांसनंदन, यह अरज सुनो मेरी;
जय जय तिष्ठ तिष्ठ देव, कृपा करो घनेरी,
हे जिनेश जय गुणगणमहेश, प्रभु मेटो भवफेरी।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्,

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्,

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

मुनिमम सम पावन, तृषा मिटावन, चरण चढावन, जल लायो,
तुम हो भवतारन, शिवसुखकारन, पाप निवारन, हरषायो;
सीमंधर भवहारी, शिवसुखकारी, शरन तुमारी अघहारी,
भवसागर तारी शिवमगचारी, आनंदकारी बलिहारी।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

आताप निवारी, चंदन भारी, केशर गारी, सुखकारी,
धरि कंचन झारी, परिमलकारी, चरनन धारी, शिवकारी।

सीमंधर० (चंदनं)

मुक्ताफल हारी, दृग सुखकारी, तंदुल भारी, भरि थारी;
करुं पूजा सारी, करुणाधारी, अरज हमारी, सुन भारी।

सीमंधर० (अक्षतान्)

सुरतरु उनहारी, मदनविदारी, अति सुखकारी, पूज करों,
बहु फूल संभारी, परिमलकारी, अलि झंकारी, भेंट धरों।

सीमंधर० (पुष्पं)

४

पकवान जिहाजा, खाजा ताजा, सुंदर साजा, थार भरों,
तुम जग शिरताजा, धर्म जिहाजा, हे जिनराजा भेट धरों।
सीमंधर भवहारी, शिवसुखकारी, शरन तुमारी अघहारी,
भवसागर तारी, शिवमगचारी, आनंदकारी बलिहारी।
(नैवेद्यं)

धरि सुवरन थालं, ज्योति विशालं, अति उजियालं, दीप धरों,
जगमग दुतिसालं विरद विशालं पढिगुनमालं तिमिरहरों।
सीमंधर० (दीपं)

वर धूप सुहाहीं, पावकमाहीं, खेवत जाही कर्म नशे;
जिनपूज रचाऊं, मंगल गाऊं, दास कहाऊं हिय हुलसे।
सीमंधर०(धूपं)

बादाम चढावे, पिस्ता लावे, श्रीफळ भावे, भेट धरे,
वर थार भरावे, चरन चढावे, शिवफल पावे, हर्ष करे।
सीमंधर० (फलं)

जल फल वसु लावे, नाचत जावे, अर्घ चढावे गुन गावे,
जिनपूज रचावे बलि बलि जावे, जिनगुण गावे सुख पावे;
सीमंधर०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्री सीमंधर जिनराजकी, महिमा अगम अपार,
सुर नर मुनि जिनको सदा, नावत वारंवार।

(पद्धरी छंद)

जय जय जय सीमंधर जिनेश, जय जय तुम गुन गावत सुरेश;
जय सीमंधर भवभय करत चूर, जय तुम वंदत अघ नसत क्रुर। १

जय जय जय जिनवर परमदेव, तुम चरननकी हम करत सेव;
जय जय जगतारण जय जिनेश, जय चरनकमल सेवत सुरेश। २

जय तुम गुणमहिमा अगमअपार, जय वरनत किम लहों सुपार;
जय जय जय जिनवर देव सोय, तुम सम नहि दुजो देव कोय। ३

जय भामंडल छवि जगमगाय, जय तीन छत्र सिर पर सुहाय;
जय चमर अमर ढारत अपार, जय जय जय सुधुनि होत सार। ४

जय तुम गुणमहिमा अगम अपार, जय जय मुनिजन पावे न पार,
जय जय जय जग जयवंत देव, तुम चरननकी सुर करत सेव। ५

यह अरज हमारी धार धार, जय भवदधि कर अब पार पार;
जय जय मिथ्यातम हरन सूर, जय ज्ञान दिवाकर तुम हजूर। ६

जयजय कर्म विनाशन सुहार, जय काम मतंगज दलन हार;
जय दरसन से जन होवे खुशाल, जयजयजयजयवंतो त्रिकाल। ७

जय तुम जगवैद्य विराजमान, भव बाधा किम सहियो महान;
अब नंदन तुमरी शरन आय, भव बाधासे लीज्यो छुडाय। ८

(धत्ता छंद)

जय जयतु जिनवरजी, सुनहु अरजी, आयो चरनन की सरन,
नंदन करे पद वंदन, भव विहंडन, नमि नमि नमि करे नमन।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्राय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(दोहा)

परम पूज्य वीतरागको, नमूं चरण चित लाय;
शुद्ध मन से पूजा करूं, उर में अति हरषाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(राग : मेरी भावना)

पंचम उदधि तनो जल लेकर, कंचन झारी मांहि भरू,
जन्म जरा मृतु नाश करनको, सीमंधर पद धार करूं।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

केसर संग घिसूं मलयागिरि, चंदन अधिक सुगंध रचूं;
भव आताप विनाशन कारन, श्री सीमंधर पद चर्चूं। (चंदनं)

उज्ज्वल मुक्ताफल सम तंदुल, धोकर अक्षत थाल भरूं;
अक्षय पदके हेतु विनयसे, सीमंधर ढिंग पुंज करूं। (अक्षतान्)

कमल केतकी चंप चमेली, सुमन सुगंधित लाय धरू,
मदनबाण निरवारन कारन, सीमंधरको भेट करूं। (पुष्पं)

नाना विध पकवान मनोहर, खाजे ताजे षट् रसमय;
क्षुधा रोग विध्वंस करनको, जजू सीमंधर चरन उभय। (नैवेद्यं)

सजों दीप धृत वा कपूरका, जासों दस दिस तम भागे;
नाशन अंतर तमको आरति, करू सीमंधर प्रभु आगे। (दीपं)

अगर तगर कर्पूर धूप दश, –अंगी अग्निमें खेउं;
दुष्ट अष्टविधि नष्ट करनको, श्री सीमंधर पद सेउं। (धूपं)

आम अनार जाम नारंगी, पुंगी खारक श्रीफलको;
मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पन करू सीमंधर को। (फलं)

ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेमथाल भरके लाउं;
पद अनर्घके प्राप्ति हेतु मैं, श्री सीमंधर गुण गाउं। (अर्घ)

जयमाला

(पद्धरी छंद)

जय सीमंधर जिनवर जिनेश, तुम गुनगन सुर गावत अशेष;
जयजयजय आनंदकंद चंद, जयजय भवि पंकज को दिनंद। १

जयजय शिवतियवल्लभ महेश, जय ब्रह्मा शिव शंकर गनेश;
जय स्वच्छ चिदंग अनंगजीत, तुम ध्यावत मुनिगन सुह्यमीत। २

जय गरभागम मंडित महंत, जय जनमनमोदन परम संत;
जय जनम महोच्छव सुखद धार, भवसागर को जलधर उदार। ३

हरि गिरिवर पर अभिषेक कीन, झट तांडव निरत अरंभ दीन;
बाजे बाजत अनहद अपार, को पार लहत वरनत अबार। ४

दृम दृम दृम दृम दृम दृम मृदंग, घननन नननन घंटा अभंग;
छम छम छम छम छम छुद्रघंट, टम टम टम टम टंकार नंट। ५

झननन झननन नूपुर झकोर, तननन तननन तानसोर;
सननननं नननननन गनन मांहि, फिरिफिरिफिरिफिरिफिरिफिरिकी लहांहिं। ६

ताथेई थेई थेई धरत पाँव, चटपट अटपट झट त्रिदशराव;
करिकें सहस्र करको पसार, बहु भांति दिखावत भावप्यार। ७

निज भगति प्रगट जित करत इन्द्र, ताको क्या कहि शकि है कवींद्र;
जहं रंगभूमि गिरिराज पर्म, अरु सभा ईश तुम देव शर्म। ८

अरु नाचत मधवा भगतिरूप, बाजे किन्नर बज्जत अनूप;
सो देखन ही छबि बनत वृंद, मुखसों कैसे वरने अमंद। ९

धन घडी सोय धन देव आप, धन तीर्थंकर प्रकृति प्रताप;
हम तुमको देखत नयनद्वार, मनु आज भये भवसिंधु पार। १०

पुनि पिता सोंपि हरि स्वर्ग जाय, तुम सुख समाज भोग्यो जिनाय;
फिर तपधरि केवलज्ञान पाय, धर्मोपदेश दै भव्य सिद्धि पाय। ११

हम शरनागत आये सीमंधर, हे कृपासिंधु गुन अमल धार;
मो मनमें तिष्ठहु सदाकाल, जबलों न लहों शिवपुर रसाल। १२

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

श्री सीमंधर जिनपूजा

(दोहा)

पुष्कलावती विजयमें, विचरे विदेहीनाथ;
क्रोडाक्रोड मुनिवर जहां, शिवपुर पहुंचे जाय।
तिनको आह्वानन करों, मन-वच-काय लगाय;
शुद्धभाव कर पूजजो, शिव सन्मुख चित्त लाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ: तिष्ठ: ठ: ठ: स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

जल उज्ज्वल लीनो, प्रासुक कीनो, धार सु दीनो हितकारी,
जिन चरन चढाउं, कर्म नशाउं, शिवसुख पाउं बलिहारी;
सीमंधर वंदो मन आनंदो, भवदुःख खंदो चित धारी,
जिन वंदू क्रोडं, भवदुःख छोडं शिवमुख जोडं सुख भारी।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय चरणकमलपूजनार्थे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस लाउं, गंध मिलाउं, सब सुख पाउं हर्ष बडो,
भवबाधा टारो तपन निवारो, शिवसुखकारो मोद बडो। सीमंधर०

(चंदनं)

गजमुक्ता चोखे, बहुत अनोखे, लख निरदोखे पुंज धरूं,
अक्षयपद पाउं, और न चाहूं, कर्म नशाउं चरण पडूं। सीमंधर०

(अक्षतान्)

शुभ फूल मंगाउं गंध लखाउं, बहु उमगाउं भेट धरूं,
मम कर्म नशाओ दाह मिटावो, तुम गुन गाउं ध्यान धरूं। सीमंधर०

(पुष्पं)

नेवज बहु ताजे उज्ज्वल साजे, सब सुख काजे चरन धरूं,
मो भूख नशावे ज्ञान जगावे, धर्म बढावे चैन करूं। सीमंधर०

(नैवेद्यं)

दीपककी ज्योतिं तम क्षय होतं, बहुत उद्योतं लाय धरूं,
तुम आरती गाउँ भक्ति बढाउं, खूब नचाउं प्रेम भरूं। सीमंधर०

(दीपं)

बहु धूप मंगाउं गंध लगाउं, बहु महकाउं दश दिशिको,
घर अग्नि जलाई कर्म खिपाई, भविजन भाई सब हितको। सीमंधर०

(धूपं)

फल प्रासुक लाई भविजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं,
शिवपदकी आशा मनहि हुलासा, कर खुल्लासा मोक्ष करूं। सीमंधर०

(फलं)

वसु द्रव्य मिलाई भविजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं,
पूजाको गाउं हर्ष बढाउं, खूब नचाउं प्रेम भरूं।

सीमंधर वंदो मन आनंदो, भवदुख खंदो चित धारी,
जिन वंदू क्रोडं, भवदुःख छोडं, शिवमुख जोडं सुख भारी।

ॐ ह्रीँ भगवान श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(त्रोटक)

महासुख सागर आगर ज्ञान, अनंत सुखामृत मुक्त महान,
महाबल मंडित खंडित काम, रमा शिव संगसदा विसराम। १

सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद, मुनिंद जजें नित पादारविंद,
प्रभु तुम अंतरभाव विराग, सुबालहितैं व्रत शीलसों राग। २

कियो नहि काज उदाससरूप, सुभावन भावत आतमरूप,
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त, चिदातम नित्य सुखाश्रित वरत। ३

अशर्न नहिं कोउ शर्न सहाय, जहां जिय भोगत कर्म विपाय,
निजातमके परमेसुर शर्न, नहीं इनके विन आपद हर्न। ४

जगत जथा जल बुदबुद येव, सदा जिय अेक लहे फलमेव,
अनेक प्रकार धरी यह देह, भमें भवकानन आनन नेह। ५

अपावन सात कुघात भरीय, चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय,
धरे ईनसों जब नेह तबेव, सुआवत कर्म तबै वसुभेव। ६

जबै तन भोग जगत उदास, धरे तब संवर निर्जर आस,
करे जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब मोक्ष महा सुखरास। ७

तथा यह लोक नराकृत नित्त, विलोक्यते षट्द्रव्य विचित्त,
सुआतम जानन बोधविहीन, धरे किम तत्त्व प्रतीत प्रवीन। ८

जिनागम ज्ञान रु संजमभाव; सबै निजज्ञान विना विरसाव,
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव सबै जिहतें शिवहाल। ९

लयो सब जोग सुपुन्य वसाय, कहो किमि दीजिये ताहि गंवाय,
विचारत यों लौकांतिक आय, नमे पदपंकज पुष्प चढाय। १०

कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार, प्रबोधि सुयेम कियो जु विहार,
तबै सौधर्मतनों हरि आय, रच्यो शिबिका चढि आप जिनाय। ११

धरै तप पाय सुकेवलबोध, दियो उपदेश सुभव्य संबोध,
लियो निजज्ञान महासुखराश, नमें नित भक्त सोई सुखआश। १२

ॐ ह्रीँ भगवान श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(दोहा)

परम पवित्र सुंदर अति विदेहक्षेत्र शुभ थान;
जहां जिनवर बिराजते, पूजों थिर मन आन।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ: तिष्ठ: ठः ठः स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सब छानके,
कनकपात्र में धार देत त्रय आनके,
पूजों सीमंधरदेव हिये हरषायके,
कर मन वच तन शुद्ध, भव वन टारके।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय चरणकमलपूजनार्थे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन दाह निकंदन केशर गारके,
अरचों तुम ढिंग आय शुद्ध मन धारके....पूजों० चंदनं।
तंदुल सोम समान अखंडित आनके,
हाटक थार भराय जजों शिर नायके....पूजो० अक्षतान्।
सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगंधित लायके,
दहन काम पन बाण धरों सुख पायके....पूजों० पुष्पं।
व्यंजन विविध प्रकार पगे धृत खांडके,
अरपत श्री जिनराज क्षुधा ढिंग छांडके....पूजों० नैवेद्यं।
कनक थारमें धार कपूर जलायके,
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके....पूजो० दीपं।
अगर आदि दस वस्तु गंधजुत मेलके,
करम दहन के काज दहों ढिंग शैलके....पूजों० धूपं।
फल उत्कृष्ट सुमिष्ट जे प्रासुक लायके,
शिवफल प्राप्ति काज जजों उमगायके....पूजों० फलं।

जल फलादि वसु दरव लेय युत ठानके,
अर्घ जजों तुम पाय हरष मन आनके,
पूजों सीमंधर देव हिये हरषायके,
कर मन वच तन शुद्ध, भव वन टारके।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(पद्धरी छंद)

जय स्वयं शक्ति आधार योग, जय स्वयं स्वस्थ आनंद भोग;
जय स्वपर विकास आवास भास, जय स्वयंबुद्ध निजपद निवास। १

जय स्वयं बुद्ध संकल्प टार, जय स्वयं शुद्ध रागादि जार;
ज्य स्वयं गुणी आधारधार, जय स्वयं सुखी अक्षय अपार। २

जय स्वयं चतुष्टय राजमान, जय स्वयं अनंत सुगुण निधान;
जय स्वयं स्वच्छ सुस्थिर भोग, जय स्वयं स्वरूप मनोग योग। ३

जय स्वयं स्वच्छ निजज्ञानपूर, जय स्वयंवीर्यरिपु वज्र चूर;
जय महामुनिन आराध्य जान, जय निपुणमती तत्त्वज्ञ मान। ४

जय संतनि मन आनंदकार, जय सज्जन चित वल्लभ अपार;
जय सुरगण गावत हर्ष पाय, जय कवि यश कथन न करि अघाय। ५

तुम महातीर्थ भवि तरण हेत, तुम महाधर्म उद्धार देत;
जय महामंत्र विष विघ्न जार, अघ रोग रसायन कहो सार। ६

तुम महा शास्त्र के मूल ज्ञेय, तुम महातत्त्व हो उपादेय;
तिहुं लोक महामंगल सुरूप, तुम लोकत्रय उत्तम अनूप। ७

तिहुं लोक शरण अघहर महान, भवि देत परमपद सुख निधान;
संसार महासागर अथाह, नित जन्म मरण धारा प्रवाह। ८

सो काल अनंत दियो बिताय, तामें झकोर दुःखरूप खाय;
मम दुखी देख उर दया आन, इम पार करो कर ग्रहण पान। ९

तुमही हो इस पुरुषार्थ जोग, अरु हम अशक्त करि विषय रोग;
सुर नर पशु दास कहे अनंत, उनमेंसे भी इक जान 'संत'। १०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(दोहा)

श्री सीमंधर आदि दे, विहरमान जिनराय;
पूजों पदजुग पद्म सम, सुर-शिवपद सुखदाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्,

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीरदधि सम लीजिये;
हेम झारी मांहि भरके, धार सुंदर दीजिये।
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुपावन दुःख मिटावन, अति सुगंध मिलाईअे;
डाल कर कर्पूर केशर, नीरसों घिस ल्याईअे....तीर्थपति०

चंदनं०

विमल तंदुल ले अखंडित, ज्योति निशिपति सम धरे;
कनक थारी मांहि धरके, पूज कर पायन परे....तीर्थपति०

अक्षतान्०

सुरवृक्ष के सम फूल लेकर, गंधधर मधुकर फिरे;
मदनबाण विनाशनेको, प्रभु-चरण पूजा करे....तीर्थपति०

पुष्पं०

छहों रसकर जुक्त नेवज, कनक थारीमें भरो;
भावसे प्रभु चरन पूजो, क्षुधादिक मनकी हरो।
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

नैवेद्यं०

रतनदीप कपूर बाती, ज्योत जगमग होत है,
मोहतिमिर विनाशवेको, भानु सम उद्योत है....तीर्थपति०

दीपं०

कूट मलयागिरी चंदन, अगर आदि मिलाईअे,
ले दशांगी धूप सुंदर, अगन मांहिं जराईअे....तीर्थपति०

धूपं०

ल्याय केला श्रीफल दाडिम, और फल बहुते घने,
नेत्र रसना लगे सुंदर, फल अनूप चढावने....तीर्थपति०

फलं०

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(पद्धरी छंद)

जय जय जय श्री सीमंधर पूज, तुम सम जगमें नहि और दूज;
तुम महाराज सुरलोक छार, जब गर्भ मात मांही पधार। १

षोडश सुपने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात;
बहु हर्ष धार दंपति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान। २

छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान;
छै मास अगाउ गर्भ आय, धनपति सुवरण नगरी रचाय। ३

तुम मात महल आंगन मंझार, तिहुं काल रतनधारा अपार;
वरसाई पेट नव मास सार, धनि जिन पुरुषन नैनन निहार। ४

जय विदेही जिन देवनसु देव, शत इन्द्र करत तुम चरन सेव;
त्रय ज्ञानयुक्त तुम जन्म धार, आनंद भयो तिहुं जग अपार। ५

तबही ले चहुं विधि देव संग, सौधर्म ईन्द्र आयो उमंग;
शचि गज ले तुम हरि गोद आप वन पांडुकशिल उपर सुथाप। ६

क्षीरोदधितें बहु देव जाय, भरि जल घट हाथोंहाथ लाय;
कर न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे मात नृत्य तांडव कराय। ७

पुनि हर्ष धार हिरदे अपार, सब निर्जर जै जै जै उचार;
तिस अवसर आनंद हे जिनेश, हम कहिवे समरथ नाहिं लेश। ८

जय जिनेश उर वैराग धार, संसार भोग अनित्य जान;
तब ही लौकांतिक देव आय, वैराग्य वर्धिनी थुति कराय। ९

ततछिन शिबिका लायो सुरेन्द्र, आरूढ भये तापर जिनेन्द्र;
सो शिबिका निजकंध न उठाय, सुर नर खग मिल तपवन ठराय। १०

कर लोच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नग्नमुद्रा सुधार;
हरि केश लिये रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि मांही पधार। ११

उपजायो केवलज्ञान भान, आयो कुबेर हरि वच प्रमान;
की समवसरण रचना विचित्र, तहं खिरत भई वाणी पवित्र। १२

मुनि सुर नर खग तिर्यंच आय, सुनि निज निज भाषाबोध पाय;
हे जिन तुम गुण महिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादि सुसार। १३

तुम ज्ञानमांहि तिंहुलोक दर्व, प्रतिबिंबित है चर अचर सर्व;
लहि आतम अनुभव परमऋद्धि, भये वीतराग जगमें प्रसिद्ध। १४

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

हम करत वीनती वार वार, कर जोड सुमस्तक धार धार;
तुम भये भवोदधि पार पार, मोकों सुवेग ही तार तार। १५

अरदास दास यह पूर पूर, वसुकर्मशैल चकचूर चूर;
दुःख सहन दासकी शक्ति नांहि, ग्रही चरण शरण कीजे निवाह। १६

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्राय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(छप्पय छंद)

शुभ अतिशय चोंतीस प्रातिहारिज अधिकाहीं,
अनंत चतुष्टययुक्त दोष अष्टादश नाहीं;
आह्वानन विधि करूं नाय शिर शुद्ध कर मनही,
लोक मोहतम हरन दीप अद्भुत शशि जिनही।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

हिम शैल निरगत तोय शीतल मधुर स्वर्ग थकी परे,
भरि भृंग जिनवर चरण आगे धार दे भव-मृति हरे,
श्री सीमंधर जिनराजजी तुम पदकमल हिरदे धरूं,
तुम पास मोही राखही, मैं शिवलक्ष्मीको वरूं।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय चरणकमलपूजनार्थे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

भवताप दाह दहंत मोकूं, अेक छिन न विसारही;
घनसार मलय थकी जिनेश्वर, पूजिहूं दुःख टारही।
श्री सीमंधर जिनराजजी, तुम पदकमल हिरदे धरूं,
तुम पास मोही राखही, मैं शिवलक्ष्मीको वरूं।

(चंदनं)

संसार उदधि अपार तारन, भक्ति प्रभु तुमरी सही;
शुभ शालिपुंज जिनाग्रकरि, हुं लहूं वसुगुण वसुमही। श्री सीमं०

(अक्षतान्)

अति सुभट मार प्रचंड सरतें, हने सुर नर पशु सबे;
शुभ कुसुमसों पद पूजिहूं, जिन हरो मनमथ दुख अबे। श्री सीमं०

(पुष्पं)

यह क्षुधा मोकूँ दहे नित ही, नैक सुख नहिं पावहीं;
चरु मिष्टतें पद पूजिहूं जिन! क्षुधा रोग नशावहीं। श्री सीमं०

(नैवेद्यं)

अति मोहतम मम ज्ञान ढाँक्यो, स्वपर पद नहि बेवही;
तुम चरण पूजूं रतन दीपक, करो तमको क्षेवही। श्री सीमं०

(दीपं)

शुभ मलय अगर सुगंध सौरभ–थकी अलि बहु आवहीं,
जिन चरण आगे धूप खेये, कर्म वसु जरि जावहीं। श्री सीमं०

(धूपं)

शुभ मोक्षमग अंतराय रोक्यो, मोहि निर्बल जानिके,
जिन मोक्ष दो तव चरण पूजूं, फल मनोहर आनिके। श्री सीमं०

(फलं)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जल गंध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही,
कनथाळ अर्घ बनाय शिवसुख, प्रभु-भक्त लहे सही।
श्री सीमंधर जिनराजजी, तुम पदकमल हिरदे धरूं,
तुम पास मोही राखही, मैं शिवलक्ष्मी को वरूं।

ॐ ह्रीँ भगवान श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(त्रोटक)

प्रभु सोलह सुपने आय बली, गरभागम मंगल मोद भली,
हरि हर्षित पूजत मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्म सीता।

ॐ ह्रीँ श्री गर्भमंगलप्राप्ताय श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विदेहक्षेत्रमें जन्म लियो, सब लोक विषे सुख थोक भयो,
सुरईश जजें गिरशीश तबे, हम पूजत हैं नुतशीश अबे।

ॐ ह्रीँ श्री जन्ममंगलप्राप्ताय श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकांतिक देव तुम चरण परा, तप दुर्द्धर श्रीधर आप धरा,
निज ध्यान विषे लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये।

ॐ ह्रीँ श्री तपोमंगलमंडिताय श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वर केवलभानु उद्योतक कियो, तिहुं लोक तणो भ्रम मेट दियो,
केवल कल्याणक इन्द्र जजे, हम पूजहिं सर्व कलंक तजे।

ॐ ह्रीँ श्री केवलज्ञानमंडिताय श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

५

जयमाला

(धत्ता)

सीमंधर जिनेश्वर परम दिनेश्वर, भविय कमल परकास करूं;
तिहुयर परमेश्वर ज्ञान दिवाकर, सेवक जन मन दुरिय हरूं।

(पद्धरी)

जय जय नाथ निरंजन योगी, जय जय शांति सकल के भोगी;
जय जय त्रिभुवनजन हितकारी, जय जय मुक्तिरमा अधिकारी। १

जय जय काम गियंद विहंडन, जय जय मुक्ति नयरिवर मंडन;
जय जय मान महामद भंजन, जय जय क्रोध महाभट गंजन। २

जय जय दिव्यध्वनि मुख राजे, जय जय सकल घनाघन लाजे;
जय जय त्रिभुवन के दुःख भाजे, जय जय देव दुंदुभि बाजे। ३

जय जय त्रिभुवन जनमन राये, जय जय सूत्र अनेकांत भाखे;
जय जय तत्त्व पदारथ भाखे, जय जय तप संयम भेद दाखे। ४

जय जय भविजन कर्म विहंता, जय जय धर्म रथांग नियंता;
जय जय तोरण ध्वज लहरंता, जय जय सुर नर साद करंता। ५

जय जय दंसण नाण चरित्ता, जय जय निर्मल नित्य पवित्ता;
जय जय अधरिकृत मन राजा, जय जय इन्द्र विकट भय लाजा। ६

जय जय आसोपल्लवकृत छाया, जय जय धृत चामर देवराया;
जय जय सुंदर फल सहकारा, जय जय कोयल करे टहुकारा। ७

जय जय चंपकनां पन सोहे, जय जय त्रिभुवननां मन मोहे;
जय जय सप्तच्छदकृत शोभा, जय जय निर्जित दुर्द्धर लोभा। ८

जय जय निर्जित दुर्जय माया, जय जय हरिहर पाय लगाया;
जय जय सिद्धि निरंजन ध्याया, जय जय अजर अमर पद पाया। ९

जय जय अरिहंत भगवंत देवा, जय जय सुरनर करें तुज सेवा;
जय जय अजर अमर पद दाता, जय जय संसार सागर याता। १०

जय जय अेक अनेक कहाया, जय जय गणधर देव पढाया;
जय जय दर्शन से दुःख नाशे, जय जय सेव करे तुम पासे। ११

जय जय जे नर हृदय धरंता, जय जय मनगुप्ति ते हरंता;
जय जय वयणे स्वतन करंता, जय जय वचनगुप्ति परिहंता। १२

जय जय अष्टांगे जे नमंता, जय जय कायगुप्ति निगमंता;
जय जय धर्मधुरंधर देवा, जय जय जनम जनम करूं सेवा। १३

जय जय प्रभु पद पंकज भृंगा, जय जय नित्य सेव सुरंगा;
जय जय सेवक जन उमंगा, जय जय अर्चन हो मनरंगा। १४

ॐ ह्रीं भगवान श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(सोरठा)

ओ वीतराग देव, मैं तुम चरणकमल रहुं;
पूजहुं तुम जिन गुन, अहनिशि करि उर थापना।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नंदीश्वर श्री जिनधान–राग)

अति शुद्ध सुधा सम तोय, हेमाचल सोहे,
जर-जनम-मरन नहीं होय, सबही मन मोहे;

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

जगकी भवताप निवार, पूजा सुखदायी,
सीमंधर-पूजा सार, सेवक सुख पाई।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

केसर करपूर मिलाय चंदन घिसवाई;
अरचों श्रीजिन ढिग जाय, सुंदर महकाई। जगकी०

(चंदनं)

अति शुद्ध अखंड विशाल तंदुर पुंज धरे;
भरि भरि कंचनमय थाल, पूजो रोग टरे। जगकी०

(अक्षतान्)

गेंदा गुलाब कनेर, पुष्पादिक प्यारे;
सो करि करि ढेर सुढेर, कामानल जारे। जगकी०

(पुष्पं)

अति घेवर फेनी ताप, नैवज स्वाद भरी;
सब भूख निवारन काज, प्रभु ढिग जाय धरी। जगकी०

(नैवेद्यं)

घृतसे भरि सुवरण दीप, जगमग ज्योति थशे;
करि आरती जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे। जगकी०

(दीपं)

कर्पूर सुगंधित पूर, अगर तगर डारो;
श्री चरनन खेवो धूप, करम कलंक जारो। जगकी०

(धूपं)

पिस्ता बादाम सुपारि, श्रीफळ सुखदाई;
मनवांछित फल दातार, ऐसे जिनराई। जगकी०

(फलं)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

सब अष्ट द्रव्य करी त्याग, प्रभु ढिग जोरि धरों;
भक्तन प्रति मंगलकार, शिवपद जाय वरों
जगकी भवताप निवार, पूजा सुखदाई;
सीमंधर पूजा सार, सेवक सुख पाई।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छप्पा छंद)

अहो सीमंधरनाथ, ज्ञायक अंतरयामी,
सकल लोक तिरकाल, लखे जुगपत गुणधामी;
जे चर अचर अपार, अनागत'तीत उपायो,
लोकालोक निहारी, लखे कछु नाहिं छिपायो। १

भाख्या ज्यों करमांहि, सिधारथ धारि निहारे,
अथवा अंगुरि रेख, लखे कर जुत इकवारे;
ऐसो ज्ञान अपार, और कहुं नाहिं सुन्यो है,
दरशनको परताप, तुही जिनमांहिं भन्यो है। २

में दुःख पाये घोर, चतुरगति मांहिं घनेरे,
तुमतें छाने नाहिं कहा भाखुं जिन मेरे;
पय शिशुकी सब बात, ख्यात पितु जननी जाने,
मांग्या विन नहि देहिं, तोय पयधान न खाने। ३

कोउ पुन्य वसाय, बाल तपतें सुर थायो,
हस्ती घोटक बैल, महिष असवारी घायो;
पूरन आयु जु थाय, तबै माला मुरझानी,
अरति तें तजि प्रान, कुसुम भव पाय अज्ञानी। ४

ऐसे दुःख अपार, सहे थिरता नहिं पाई,
क्रोध मान छल लोभ, थकी दिन दिन अधिकाई;
तुम करुणानिधि लेखि, शरन आयो ततकारी,
दुःखको कर निरवार, अहो जगपति जगतारी। ५

जगनायक जगदीश, जगोत्तम दृष्टि निहारो,
मोकूं दास विचारि, करो वपुतें निरवारो;
या वपु संगति पाय, सहे दुःख और न हेती,
यह निश्चैकरि जानि, लखे तुम वानी सेती। ६

करम बिचारे कौन, भूल मेरी अधिकाई,
अगनि सहै घनघात, लोहकी संगति पाई;
ऐसे या वपुसंग सहे, दुःख और न सेती,
धनि वानी तुं देव, सुनी गुरु के मुख ऐती। ७

तुम अनुकंप पसाय, तजूं दुरध्यान विकारो,
वरनादिकतें भिन्न, लखूं चिद्रूप हमारों;
ज्योति स्वरूपी देव, बसे याही घटमांहीं,
ढूंढूं कौन सुथान, लखूँ तुम ध्यान उपाहीं। ८

तेरे ध्यान प्रताप, करम झरि जाय अनंता,
तुम सेवक करि ध्यान, लहे सुख नर गुणवंता;
इह भव सुख अपार, और भव सुरपद पावै,
अनुक्रमतें निरवान, जिनके सुरधर करि गावै। ९

(दोहा)

वसु द्रव्य ले शुद्ध भावते, जजूं तिहारे पाय;
देहु देव शिव मुझ अबै, अहो श्री जिनराय।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(दोहा)

करि निजध्यान प्रचंड बल, जये कर्म अरि चंड;
चिदगुन ज्योति अखंडमें, मिले गगन द्वय खंड।
सो सीमंधर देव वर, दीनबंधु स्वयमेव;
करि करुणा मुझ दीनपै, तिष्ठ तिष्ठ इत देव।

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थ-वर्तमान-सीमंधर परमदेव! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वाननम्; अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्; अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(लीलावती छंद)

जय कमल सुवासित तृष्णानाशित, हिमगिरि सम सित तापहरा,
भरकरि वर झारी भ्रमतम हारी, धारत हूं त्रय धार धरा;
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं,
अघगनकर चूरन हे सुख पूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ-श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कसमीर सुरंगी घसि हरिसंगी, परिमलअंगी तापहरी,
प्रभु चरन चढावत सुख सरसावत, जावत भव आताप टरी;
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल शुभ सुंदर श्वेत सुमनहर, पावन दधिसुतदुतिहारी,
हे जिन करुणान्वित अक्षयपदहित, यजूं चरन तव भरि थारी;
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सु मनहर विविधवरनपर, कुंद गुलाब जु आदि वरं,
लहिकर जिन पदवर पूजत सुखभर, संवर अरिसर नाश करं;
जय जय सीमंधर यजत पुरंदर, धर्मधराधर धरनीशं,
अघगनकर चूरन हे सुख पूरन, गुनपूरन शिवतरुनीशं।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक बलकारन क्षुधा निवारन, दृगमनहारन मिष्ट बने;
निजगुणबलधारन ले सुखसारन, पूजूं जिनपद इष्ट घने,
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम पटल विनाशन ज्योति प्रकाशन, दीपक दिव्य उजास करूं;
भ्रम तिमिर विनाशन प्रभु जगपावन, पावन ऊपरि वार धरूं;
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

लहि चंदन बावन चूरन पावन, अगरादिक करि संग भले,
खेऊं जिन पदतर ये निज मन धरि, निज गुनहर वसु कर्म जले;
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल प्रासुक सुंदर मिष्ट मनोहर, खारिक लौंग बदाम भले;
जिन चरन चढाऊं हर्ष बढाऊं, चाखनकूं फल सुगुन रले।
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल हरि अक्षत अरु सुभग सुमन चरु, दीप धूप फल पुंज सजूं,
मन आनंद अति धरि अर्घ सु लेकरि, श्रीपतिजूके चरन जजूं;
....जय जय०

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शिव शिवमय शिवकर शिवद, शिवदायक शिव-ईस;
शिव सेवत शिवमिलन हित, सीमंधर जगदीश। १

(छंद : चंडी वा रूपचौपाई)

जय जगपति वरगुन वरदायक, केवल सदन मदन मदघायक;
पर्म धर्म धर भ्रमपुर नाशन, शासनसिद्ध अचल अचलास!न। २

अखट अघट रस घट घट व्यापक, अनहत आहत सुगुन प्रकाशक;
धरत ध्यान दुरगति दुख वारन, जगजलतैं जगजंतु उधारन। ३

अशरनशरन-मरन-भय-भंजन, पंकज वरन चरन मनरंजन;
निजसम करत जु मन तुव धारत; ज्यों पावकसंग ईंधन जारत। ४

नृप श्रीहंसतनुज वर आनन, लच्छन वृषभ लसत अघभानन;
पुंडरपुर पुर है मन भावन, सो तुम जनमयोग भयो पावन। ५

लियो जनम जगजन दुखनाशन; शिर अमरेश धरत तुव शासन;
होत विरक्त देव ऋषि आवन, भयो परम वैराग्य दिढावन। ६

शिबिका दिव्य कहार पुरंदर, हो सवार जिन धर्म धुरंधर;
संग सकल तजि व्रत धरि पावन, लगे ध्यान मारग शिव जावन। ७

करि वटमार घातिया चूरन, शक्ति अनंत सजी परिपूरन;
पूरव जनम भाव वर भावत, ता फल ये अतिशय दरशावत। ८

बिन इच्छा विहार सुखकारन, भव्यनकूं भवपार उतारन;
यदपि देव तुम दृष्टि अगोचर, तदपि प्रतीत धरत हम निजउर। ९

जानत हूं तुम हो जगजानन, मैं किम दुःख कहूं चतुरानन;
दीनबंधु दुःख दीन मिटावन, चहिये अपनो बिरद निवाहन। १०

(हरिगीत)

वर वरन भवतपहरन, आनंदभरन दृग मन भावने,
युत सुरस पूरति गंध शुभ, भविवृंद अलि ललचावने,
सर्वज्ञ आगम विटप के शुचि सुमन वरन रसाल ये,
घर सुमति गुन सह 'थान' उर जगभालकी जयमाल ये। ११

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

सीमंधरजिन पूजि करे जो थुति भली,
दहे सकल अघवृंद लहे मनकी रली;
निरआकुल ह्वै हरे मोहके द्वंदकूं,
टारे भ्रम आताप लखे चितचंदकूं। १२

॥ इति आशीर्वादः ॥

श्री सीमंधर जिनपूजा

(हरिगीत छंद)

वसु विधि प्रचंड अखंड ज्वाला, जगत जीवन दुःख करै;
सुर असुर भूचर नर पशूके, सर्व मन तन थरहरै;
तुम चरन शीतल शशिकिरण सम, जगत दाह विनाशियौ,
प्रभु अत्र तिष्ठ श्रेयांसनंदन, शांत रस परकाशियौ।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दरश विशुद्धि भावना भाय–छंद)

शुचि शीतल जलसों जिनराय, पूजत जन्म जरा दुःख जाय,
दयानिधि हो, जय जगबंधु, दयानिधि हो;
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान,
दयानिधि हो, जय जगबंधु, दयानिधि हो।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय मिथ्यात्वमलविनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशरि गंध मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय क्रोधकषायमलविनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अक्षत चंद्र समान, पूजौं जिन अक्षय गुणखान, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय मानकषायमलविनाशाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वरन वरनके फूल मंगाय, पूजौं जिनवर काम नसाय, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय मायाकषायमलविनाशाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक आदि बहुत पकवान, लेकर पूजौं जिन गुणखान, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय लोभकषायमलविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मनोहर तमहर सार, पूजौं जिनवर मोह निवार, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय अज्ञान अंधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति०

कृष्णागर वर धूप रसाल, पूजौं जिनवर बोध विशाल, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय विभावपरिणतिविनाशाय धूपं निर्वपामीति०

रस पूरित फल उत्तम सार, पूजौं जिनवर शिवदातार, दया०
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान, दया०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

जल फल आठों द्रव्य मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय,
दयानिधि हो, जय जगबंधु, दयानिधि हो;
तुम वच शीतल चन्द्र समान, भवतपहरन सदा गुणखान,
दयानिधि हो, जय जगबंधु, दयानिधि हो।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

भव आताप विनाश विधि, शीतल सुधा समान।
विधिबल भंजन स्वबलकर, द्यो सीमंधर भगवान॥

(पद्धरी छंद)

जय जय सीमंधर परमदेव, तुम चरननकी हम करत सेव;
जय जय शिवसुन्दरी के अधीश, सुर असुर नमावें तुमहिं शीस।

जय मोहमहातमको दिनंद, भवि पंकजको आनंदकंद;
जय क्रोध महाभट हनन सूर, जय मान अचलको वज्रपूर।

जय माया तरुवर के कुठार, जय लोभ जहरको सुधासार;
जय दुर्गतिगजगंजन मृगेन्द्र, जय सुमति चकोरनि शरदचंद्र।

जय वसुविधि घनकानन समीर, जय जय अनंत गुणगण गहीर;
जय नंतचतुष्टय धार देव, जय जय प्रातिहारज वसु कहेव।

इत्यादि अनंत विभूति सार, गणधर नहिं पावै करत पार;
तो अल्पमतीजन और कोय, किहिं जिनगुण गाय लहे जु सोय।

ये भक्ति सहित जे थुति करंत, सो दिव शिवसुख निहचै लहंत;
यह वचन आपको सत्य मान, मैंने प्रभु सरन गही जु आन।

तुम सरनागत प्रतिपाल देव, सुर असुर तुम्हारी करत सेव;
प्रभु तारनतरन महान देव, अरु अधम उद्धारक हो स्वमेव।

जय पुण्य उदय अति प्रबल होय, तब दरश तुमारौ मिलै सोय;
मम हृदय सुख पायो अपार, जब प्रभु तुम देखे नयनद्वार।

जबलौं विधि अरि जीतों न सोय, जबलौ निजभाव उदय न होय;
जबलौं तन संग रहै असार, तबलौं तुम भक्ति रहौ अपार।

जगजाल भ्रमणको नासि देव, निज ज्ञायक भाव प्रकाश देव;
मम अरजी यह उर धारि देव, कर जोरि जिनेश्वर करत सेव।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(छंद हरिगीत तथा गीता)

जय जय जिनंद गनिंद इंद, नरिंद गुन चिंतन करै,
तन सुवर्ण मनसम हरत मन, लखत उर आनंद भरै;
नृप श्रेयांसराय वरिष्ट इष्ट, महिष्ट शिष्ट सत्य प्रिया;
तिन नंदके पद वंद वृन्द, अमन्द थापतु जुत क्रिया।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्रावतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल : द्यानतरायजीकृत सोलहकारणभाषा अष्टककी)

उज्ज्वल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकर लाय,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो।
तुम पद पूजौं मनवचकाय, देव सीमंधर शिवमगदाय,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन घसि सार, लीनों भवतपभंजनहार,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

देवजीर सुखदास अखण्ड, उज्ज्वल जलक्षालित सित मंड,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक सुमन सुगंधित सार, गुंजत अलि मकरध्वजहार,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा हरन नेवज वर लाय, हरो वेदनी तुम्हें चढाय,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्वलित दीप भरिकर नवनीत, तुमढिग धारतु हों जगमीत,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविधि गंध हुताशन मांहिं, खेवत क्रूर करम जरि जाहिं,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला आदि अनूप, लै तुम अग्र धरों शिवभूप,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो।
तुम पद पूजौं मनवचकाय, देव सीमंधर शिवमगदाय,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठौं दरब सजि गुन गाय, नाचत राचत भगति बढाय,
दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो। तुम० देव०

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

तुंग अंग धनु पांचसो, शोभा सागर चंद,
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सीमंधर सुखकन्द। १

(छंद कामिनीमोहन)

जैति जिनराज शिवराज हितहेत हो,
परमवैराग आनंद भरि देत हो;
गर्भके पूर्व षटमास धनदेवने,
नगर निरमापि पुंडरगिरि सेवने। २।

गगनसौं रतनकी धार बहु वर्षहीं,
कोडि त्रयअर्द्ध त्रयवार सब हर्षहीं;
तातके सदन गुनवदन रचना रची,
मातुकी सर्वविधि करत सेवा शची। ३

भयो जब जनम तब इन्द्रआसन चल्यो,
होय चकित तुरति अवधितैं लखि भल्यो;

सप्त पग जाय शिर नाय वंदन करी,
चल उमग्यो तबै मानि धनि धनि धरी। ४

सात विधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै,
गंधरव निरतकारी सबै साज लै;
गलित मदगंड ऐरावती साजियो,
लक्ष जोजन सुतन वदन सत राजियो। ५

वदन वसुदन्त प्रतिदन्त सरवर भरे,
तासु मधि शतक पनवीस कमलिनी खरे;
कमलिनी मध्य पनवीस फूले कमल,
कमलप्रति कमलमहं अेकसौ आठ दल। ६

सर्वदल कोडशतवीस परमान जू,
तासुपर अपछरा नचहिं जितमान जू;
तततता तततता वितत्तता ताथेई,
धृगतता धृगतता धृगततामें लई। ७

धरत पग सनन नन सनन नन गगनमें,
नूपुरं झनन नन झनन नन पगनमें;
नचत इत्यादिक कई भांतिसौं मगन में,
केई तित बजत बाजे मधुर पगनमें। ८

केई द्रम द्रम सुद्रम मृदंगनि धुनै,
केई झल्लरी झननन झननन झंझनै;
केई संसागृदि संसागृदि सारंगि सुर,
केई बीनापटह बंशि बाजें मधुर। ९

केई तननन तननन तानै पुरें,
शुद्ध उच्चारि सुर केई पाठैं फूरें;

केई झुकि झुकि फिरे चक्रसी भामिनी,
धृगततां धृगततां परम शोभा बनी। १०

केई छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु,
धरत वैक्रियक परभावसों तन सुभगु;
केई करताल करताल करमें धुनें,
तत वितत धन सुखरि जात बाजे मुनैं। ११

ईन्हें आदिक सकल साज संग धारिकै,
आय पुर तीन फेरी करी प्यार कैं;
सचिय तब जाय परसूत थल मोदमें,
मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें। १२

आन गिरवान नाथहिं दियो हाथमें,
छत्र अर चमर वर हरि करत माथमें;
चढे गजराज जिनराज गुन जापियो,
जाय गिरिराज पांडुकशिला थापियो। १३

लेय पंचमउदधि उदक कर कर सुरन,
सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरन;
सहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबै,
अघघ घघ घघघघघ भभभ भभ भौ तबै। १४

धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है,
भव्य जन हंसके हरष उद्योत है;
भये इमि न्हौन तब सकल गुनरंगमें,
पोंछि शृंगार कीनों शची अंगमें। १५

आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो,
बालवय तरुन लहि राजसुख भोगियो;

६

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

भोग तज जोग गहि चार अरिकों हने,
धारि केवल परम धरम द्वयविधि भने। १६

हे जगतनाथ तुम कृतकृत्यं भये,
ज्ञान दृग शर्म वीरज अनंते लीये;
सो जगतराज यह अरज उर धारियो,
धरमके नंदको भवउदधि तारियो। १७

(धत्ता)

जय करुनाधारी, शिवहितकारी, तारनतरनजिहाजा हो;
सेवक नित बंदै, मन आनंदै, भवभयमेटनकाजा हो। १८

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्री सीमंधर पद जुगल, जजैं पढैं यह पाठ;
अनुमोदैं सो चतुर नर, पावैं आनंद ठाठ। १९

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(खरगा छंद)

सीमंधरगान तो करत मुदठानिकैं धरत मुनिध्यानतें मोक्ष पावैं खरो,
प्रान धारीनको प्रानरक्षक तुही, ज्ञानधारीनमें ज्ञानधारी वरो;
भूरि आनंदके कंद सुखवृंद दे, चूरिये दुंददल महर मोपै करो,
देव सीमंधर जू थापिहुं तोहि मैं, तिष्ट तिष्ठौ इतै कष्ट मेरा हरो।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ अष्टक

(राग पीलू)

तेरी भक्ति बसी मन मांही, मैं तो पूजुं पद हरषाई। टेक
धुनि सुरसरी सम जल प्रासुक, ले भृंगार भराई,
करन नाश परत्राह तृषा त्रय, धारूं धार धराई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि कुंकुम चंदन मलयागिर, घनरस संग घसाई,
ताप महाआकुल कुल बारन, तुमरे चरन चढाई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सित हिमाभ तंदुल अनियारे, धारि रकेबी मांही,
वसु गुनयुत बसुमी क्षिति पावन, पुंज करूं तुम पाहीं,
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

पूरित गंध सुमन गन ऊपर, अलि आवलि मंडराई,
करन सुमन पावन हित हे जिन! भेट धरूं मैं लाई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज मधुर नवल बलकारन, लोचन लेत लुभाई,
करन पुष्ट निजरूप ज्ञानबल, भेट धरूं उमगाई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप कपूर पूरि धृत शुचिकैं, सुंदर जोति जगाई,
आरति हरन आरती तेरी, करिहूं मन मुददाई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कदलीसुत आदिक, चूरि सुधूप बनाई,
श्रीपतिचरनकंज तुमरे ढिंग, खेऊं विधि छयदाई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाडिम दाख आम नारंगी, ले फलराशि सुहाई,
शिवफल हेत भेट तुमरे पद, ढिग धारूं उमगाई;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्पावलि, नेवज ले बलदाई,
दीप धूप फल वसुविध सुंदर, अर्घ धरूं तुमपाही;
तेरी भक्ति बसी मनमांही, मैं तो पूजूं पद हरषाई।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जयमाला

(दोहा)

विधिघन विन चिदरविछटा, दमकि रही दुति अैन,
छकित होत छवि निरखिकै, सुर नर मुनि मन नैन। १

(दोधक छंद)

तारक हो तुम ही जगस्वामी, बारक भौ दुख अंतरजामी,
मौन विकाश दिनेश तुही है, शुभ्र गिरा धर ईश तुही है। २

तू विधि है चतुराननधारी, मर्दन तू मुर मोह मुरारी,
और कषायविषैं बसि सारे, हो तुम द्वेष दोष दुख टारे। ३

यद्यपि मोह तज्यो तुम स्वामी, ना करता हरता शिवधामी,
तद्यपि ध्यान धरैं जिन तेरो, सिद्ध करै मनवांछित मेरो। ४

यह उरमें दृढता हम धारी, तब पद सेव गही त्रिपुरारी,
यह भव कानन भीम गुसाई, शैल विभाव तहां दुखदाई। ५

श्रेय सबै करता तुम त्योंही, ना कछु संशय है विधि योंही,
आस्रव नीर झरें झरने हैं, भूरुह बंधसमूह घने हैं। ६

मोह महा मृगराज गलारै, धीर्य तहां जग जंतु निवारै,
भील मनोज तहां दुखदानी, लूटनकूं शुभ सोंज सुहानी। ७

प्रीति जहां जुर झांसि रही है, द्वेष महाभयदेन अही है,
है तृष्णा जल माल डरानी, च्हेल निगोद धरै दुखदानी। ८

बारण मत्त जु मान जहां है, आरण महिष जु क्रोध तहां है,
मत्सर रींछ जहां घुर्रावे, लोभ दरार अथाह दिखावे। ९

कर्म उदै फल द्वै विध तामें, है हितकारक अेक न जामें,
आरति भाव बुरे वनचारी, पावक वेद कषाय करारी। १०

अक्षविलास पलास बिकासै, आकुलभाव पिशाच जु भासै,
छांह घनी घन हा भ्रम जामें, सूझत ज्ञान दिनेश न तामें। ११

भाव असत्य ढिगां भरमायो, मैं चिरतें शिवपंथ न पायो,
लब्धिबसाय गुरुमुख गाई, दीपशिखा तुमरी ध्वनि पाई। १२

चाहत हूं शिवराह गही मैं, जाचत हूं कछु और नहीं मैं;
पंथसहायक ध्यान तिहारो, संबल दे निजबोध हमारो। १३

बाहन शुद्ध क्रिया कर दीजे, संग सधर्मिनको नित कीजे,
तो चरचा मगमें नित होवें, भक्ति सराय जहां हम सोवें। १४

उद्यम है अथवा मगमांही, राह मिलै शुचि सम्यक् याही,
'थान' लहूं जब लों शिवनीको, ये सब होहु सहाय धनीको। १५

(मेघविस्फूर्जित छंद)

तजैं शंका कांक्षा निजहितरता भाव संवेग धारें।
सजें आनंदौध पुलकितवपू शुद्धस्तुति उचारें;
लहैं सो संबोधं सकलसुखदं कीर्ति भूलोक छावै,
हुवे शक्री चक्री अचल अमलं मुक्ति भूमि लहावै। १६।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

जयो सीमंधर देव देवपति पूज की,
भक्ति महासुख दैन कला शशि दूजकी;
करै सिन्धु सुखवृद्धि सिद्ध सब दायनी,
घायक सकल क्लेश कलंक पलायनी।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(कवित्त छंद)

भास घन चेतनको विशद विकास जास,
त्रासन अरीकी जाहि वीरज अमानतें;
आसन्न कीन्हो है अचलासन अनूपहीकूं,
विजय अनंग कियो अंग अमलानतें;
वीर मोह आदि जगजीततें सुजीत लसें,
रंच न अघात शिवश्यामा सुखदानतें;
सीमंधरजिनेश अेम मगन सुखोदधिमें,
अंत करि अंतको चिरंजीभाव प्रानतें ।।१।।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(राग बरवा)

हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही ।।टेक।।
सलिल स्वच्छ प्रासुक तृट भंजन, भरि भृंगार लहूं जी,
पावन पतित पांव तव पूजूं, भवभ्रमनाश चहूं जी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि बावन कदलीसुत कुंकुम, जलसंग मेलि घसूंजी,
श्रीपतिचरन चढावत तेरे, आकुलताप कसूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीँ विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत श्वेत अमल अनियारे, करि शुचि थाल भरूंजी,
क्षिति दशमी पावन मनभावन, तव पद पुंज करूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सेवती रैण सुगंधादिक, बहु भेट धरूंजी,
उद्दीपन शिवतियको करिकैं, विजय मनोज करूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी सुखदैनी क्षुतखेनी चरु बहु भांति धरूंजी,
भरि वर थार वारि तव पदपै, क्षुत परचाहि हरूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्वलित ललित गलत तमभर वर दीप उद्योत करूंजी,
भारतीश! तुव करत आरती, आरति सकल हरूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर कर्पूर शिलारस, मलयज चूर करूंजी,
दशविध बंधक फंद प्रजारन, दाहकसंग धरूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही।।

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सहकार अनार नारंगी, निंबुक थार भरूंजी,
शिव उरोज श्रीफल फलपावन, ये फल भेट धरूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत सुमन चरुवर दीप उद्योत करूंजी,
धूप दशांग पूररस फलवर, वसुविध अर्घ धरूंजी;
हो ज्ञानी तैंने जानि लई, मेरे दरदकी मैं कहूँ कहाजी,
तो गुन में झलकंत सही॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सीमंधर जिनदेव तुव, पद नीरज नमि भाल,
धरि धीरज जय जय सुखद, भनू विशद जयमाल। १

(दीपकला छंद)

जय सीमंधर सुवीरज अपार, तुमकूं मम प्रणमन बार बार,
सुख आशा धरि चिरतें जिनेश, भवमें हम श्रम ठाने अशेष। २

सुखजाति निराकुलता न जानि, जडसंग किई निजशक्ति हानि,
गुरुके मुखतें अब भेद पाय, निजमें तुम रूप रह्यो सु छाय। ३

तुम समवसरन रचना बखान, नहि बरन सकें धरि च्यार ज्ञान,
निज नरभव पावन करन हेत, मैं बरनूं कछु आनंद उपेत। ४

पुनि तृतीय पीठ नग जटित सार, चव धनुष तुंग रचना अपार,
तिह उपर गंधकुटी रसाल, छविपूरति गंध धरें विशाल। ५

सुरतरुके पुष्पनकी अनूप, लूंबत है माल रसालरूप,
युत पत्र पुष्प किसलय अपार, छवियुत अशोक तरु शोकहार। ६

पदतर चव सिंहनके सुरूप, यह विष्टरसिंह लसैं अनूप,
सब रतनजटित सोहै अपार, सुरधनुसम प्रसरित जोति जार। ७

तिहुपैं चतुरंगल व्योम टार, पदमासन जिन छवि निर अधार,
अनुपम भामंडलको उद्योत, लखि कोटिक रवि छवि छीन होत। ८

भविजनकुं भव दरसात सात, महिमा तिनकी बरनी न जात,
धनसम धुनि सब भाषा जतात, भ्रम बंस अंस रहुं ना रहात। ९

शिर छत्र तीन शशिकूं लजात, प्रभुता तिहुं लोकनकी जितात,
सित चामर गंग तरंग जेम, चवसठि मित सुर ढारें सप्रेम। १०

तुव धुनिबल मनु हरिमदनबान, तुम ढिग डारत सुर मुद महान,
सो पुष्पवृष्टि बरनी न जात, जसकेतुं पराजयकूं जितात। ११

जगजीवनकूं धुनि पूरि ईष्ट, सुरताडित दुंदुभिनाद मिष्ट,
रिपु मोह ज्यो ह्वैके निरोष, मनु तास विजय भाषे सुघोष। १२

क्रीडा चिदचिंतन अतुल जास, कवि कौन कहै बुधिबलविकास,
षट द्रव्य अमित शकती न अंत, तिहुं कालमयी सत्ता अनंत। १३

पर्याय अनंत लिये जु ताहि, झलकैं गुनभाग अनंत मांहि,
अनुभव करिके वरने जु केम, मिसरी चखि मूक भनें न जेम। १४

जिय जातिविरोध वैर छांडि, उर प्रीति धरें आनंद मांहि,
तहं रोग शोक व्यापै न भूर, दुख सकल नशें आअे हजूर। १५

दुख द्वेष दोषवर्जित विराग, तव राग भअे नाशे कुराग,
इम अतिशय असम धरें अपार, मंडित निर आकुल सौख्यसार। १६

यह छवि चितवन उपवन मझार, मेरो मन रमन चहै अपार,
अरजी अब ये सुनिये कृपाल, दूरभाव अविद्या टाल टाल। १७

समरस सुख निज उर मंडिमंडि, पर चाह दाह दुख खंडि खंडि,
प्रकटो उर परुपकारवानि, निशदिन उचरू तुम सुगुन गान। १८

तुम वैन सुधारसपान सार, चाहूं भव भव आनंदकार,
तुम भक्त संतजनको सुसंग, मति होहु कुमतिधरको प्रसंग। १९

परनिंदा परपीडन कुवानि, मति होहु, कभी निज सुगुनहानि,
सद्गुरुचरणांबुजसेव सार, दीजे जगपति भव भव मंझार। २०

तुव दरश करूं परतक्ष देव, यह चाहि हिये वरतै सुमेव,
पावें जब लों नहिं मोक्षथान, तबलों यह देहु दयानिधान। २१

हम जाचत हैं कर जोरि जोरि, अघबंधन मेरे तोरि तोरि,
जिनबोधसुधा-सुख को भंडार, अब 'थान' हिये प्रगटो अपार। २२

(सुन्दरी)

निज स्वरूप हिये दरसावनी, सकल पातिगताप नसावनी,
सीमंधर जयदा जयमालही, धरत कंठ लहें शिवबालही। २३

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ श्रीसीमंधरजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री समवसरण-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

समवसरण जिनराज तनी रचना करी,
आगम उक्ति प्रमाण धनद निज कर करी,
करि रचना बहु भांति परम सुख पायके,
उद्यम पूजन कियो नाथ गुण गायके।

(दोहा)

सीमंधरादि जिन वीस लों, विदेहक्षेत्र जिनराय;
करत आह्वानन जजन पद, तिष्ठ तिष्ठ इत आय।

ॐ ह्रीँ विद्यमान विंशति तीर्थंकरा! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीँ विद्यमान विंशति तीर्थंकरा! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ विद्यमान विंशति तीर्थंकरा! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

समवसरणको विभव घेरि के जो परो,
धूलिशाल सुकोट नाम ताको धरो;
मानुषोत्र गिरि जजहु सुमन हरषायके,
सेवन जिनपदपद्म परो है आय के।

ॐ ह्रीँ श्री धूलिशालसंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमानजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चढि सिवान पर जाय लख्यो सुरपति तहां,
धूलिशाल सुकोट धरे छबिको महा;
विजय नाम दरवाजे भीतर सो गयो,
मानस्थंभ विलोकि महा आनंद भयो।

(त्रिभंगी)

दिश चारि सुहावन अतिही पावन, मन हुलसावन जान कही;
लखि मानस्थंभा होत अचंभा, तहं जिनबिंबा पूज चही।
सुरपति सुर हूजे, जिनपद पूजे, आनंद हूजे मोद लही;
खग नर मुनि आवें, पूज रचावें, जिनगुण गावें दास तही।

ॐ ह्रीँ श्री समवसरणमध्यविराजमानजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे श्रीमानस्तंभमध्यविराजमान श्रीजिनप्रतिमापूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

प्रथम भूमि शुभ मंदिरकी वरणी सही,
समवसरण मंझार महा शोभा लही;
जजन करत हरि जाय जहां शिर नायके,
दास करत आह्वानन शीश नवाय के।

(मेरी भावना)

गंगनदी कर नीर पुनीत, सुनिर्मल थीर भरौ सुथरो,
कै तसु प्रासुक गालि भली विधि, कंचन कुंभन मांहि भरो;
भूमि सुमंदिर चैत्य कही, जहं श्रीजिनराजहि भौन भनो,
पांचहि पांचहि मंदिर बीचन, पूजि जिनेश्वर कर्म हनो।

(त्रिभंगी)

जै जै जिनदेवा, भ्रमण हरेवा, कर्मन छेवा मोक्ष वरी,
भू प्रमथ वखानी मंदिरन मानी, चैत्य कहानी पूज करी;
इषु इषु के मांही जिनगृह आहीं, सुर तहं आहीं भाव धरी,
सुरपति संग पूजो, आनंद हूजो, नहिं सम दूजो दास तरी।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे श्रीचैत्यालयमध्यविराजमान जिनप्रतिमापूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

शुभ नृत्य गान करे तहां, सुर ताल स्वर युत है कही;
हैं उठैं लहरें मध्य खाई, स्वच्छ बहु शोभा लही।
शोभाहु अमित अपार है, है धन्य जिन देखा तहीं;
भगवान तुम सेवक वाणी, के प्रसाद लखियो कही।

ॐ ह्रीं श्री खातिकासंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

बना दूसरा कोट महा छबिवान है,
चारि भाग परमान लिये सौ जान है;
विदिशा में तसु थान वखानो है सही,
भूमि तीसरी पुष्पवाटिका है कही।

(भुजंगी छंद)

कहू बेल चम्पा चमेली कहूं है, कहूं जूही जाही निवारी कहूं है,
कहूं है गुलाब सुझींटी कहूं है, कहूं पैहिना मेंहदी गुल कहूं है।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पवाटिकासंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

लगे वृक्ष तहँ और अनेक सुजानियो,
भूप वृक्ष यह चारि विशेष वखानियो।
प्रथम अशोकवन सप्तपर्णका दूसरा,
तृतिया चंपक जान आम्र चौथे धरा।

(त्रोटक)

वनमांहि लसे बहु शोभ कही, बहु मंदिर पर्वत वाव रही;
तहं राजत ताल भले सुथरे, परिहास करें मिलि देव खरे।

ॐ ह्रीँ श्रीवनभूमिसंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

भूमि पांचमी सुघर ध्वजा की है कही,
तीन ध्वजान के मध्य चिह्न ऐसे लही;
सिंह हस्ति वृष मोर गगन माला कही,
गरुड हंस चक्रवाक कमल के हैं सही।

ऐसे दशविधि चिह्न ध्वजमहीं देखिये,
पवन वेगको पाय लहरती पेखिये;
शोभा अमित अपार पार नहि पावते,
दास धन्य तित जन्म लखन जे जावते।

ॐ ह्रीँ श्री ध्वजभूमिसंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

लसत अरण्य मंझार शोभ बहु धार हैं,
कल्पवृक्ष दिशि चारि महा सुखकार हैं;
बने तहां जिन भौन महा रमणीक हैं,
वापी और तळाव बने बहु ठीक हैं।

(पद्धरी छंद)

तिन वृक्षन डारी रही झूमि, तर चन्द्रकांत शिल काहि चूमि;
जहं ध्यान धरें मुनिराज आय, जे कर्मपुंज नाशक कहाय।

ॐ ह्रीँ श्री कल्पवृक्षभूमिसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

सप्तम भूमि विशाल महा सुखकार है,
बने तूप तामांहि बडे छबिदार हैं;

कहुं लौकांतिक देवन नगर विलोकिये,
बसत जहाँ सुखधार चित्र तसु लोकिये।

(भुजंगी छंद)

बने वेदिकामांहि चित्राम जानो, लसे सुंदराकार नैना लुभानो;
कहीं श्री मुनिराजको संघ राजे, कही ध्यान धारे खडे भाव छाजे,
कहीं पद्म आसीन ठाढे कही हैं, कहीं धर्मवर्षा करे हैं कहीं है;
कहीं ध्यान आरण्यमांही दिये हैं; कहीं मेरुपै ठाढे ध्यानी भये हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीस्तूपभूमिसंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

भूमि आठमी गनहु सभाकी जो कही,
जगमग जगमग ज्योति दिशमें बढीं;
राति दिना को भेद जहां नहि लखाई,
गणधर मुनि आदि सभा शोभा बहु बनी।

ॐ ह्रीँ श्रीसभाभूमिसंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे कुंदकुंदादिमुनिराजचरणकमलपूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

गंधकुटी अति सरस तहां पर जानिये,
तीन पीठ सिंहासन तहं परमानिये;
तीन छत्र शिर फिरत भले ही पेखिये,
बैठे जिनवर देव चार मुख देखिये।

अंतरिक्ष जिनराज बिराजत हैं सही,
गगन विषे भगवान वचन निश्चय कही;
निराधार जिनदेव विराजत हैं तहीं,
दास धन्य तिन भाग्य दरश जिन तहं लहीं।

ॐ ह्रीँ श्रीपीठत्रयसंयुक्तसमवसरण मध्ये अंतरिक्षविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिभंगी छंद)

जय जय जिनराया, कर्मनशाया ज्ञान उपाया बलिहारी,
मिथ्यात्व निवारा धर्म पसारा, करि उजियारा भ्रमटारी।
तुमरे युगचरणा, भवभ्रमहरणा, आनंदकरणा चित्तधारी;
ते होय सुखारी, पुण्यभंडारी, मोक्ष विहारी मुदकारी।

ॐ ह्रीँ श्रीदिव्यवैभवसंयुक्तसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

समवसरणमें आईयो सीमंधरादि जिन वीस;
अष्टोत्तरशत नाम कहि इन्द्र नमायो शीश।

(पद्धरी छंद)

स्वर्गागमसद्योजात नाम, जन्माभिषेक सोवाम नाम;
अतिरूप होत सो काम नाम, आधार नाम शांति प्रणाम। १

केवल लहि जग ईश्वर कहाय, तुम वसनहार शिवसदन जाय;
तुम मोह मल्लको किन्हो चूर, है वीतराग संज्ञा हजूर। २

हो वीर्य अनंतहि धरणहार, तुम हो अनंत सुख के भंडार;
तुम लोक अलोकहि लखनहार, हो अनंतदान दानी उदार। ३

तुम हो स्वामी लाभाहि अनंत, भोगोपभोग तुमरो अनंत;
तुम क्रोध मान माया विदार, तुम लोभशत्रु कीन्हों संहार। ४

तुम विषय कषाय किये विनाश, जितशत्रु नाम तुमरो प्रकाश;
तुम योगीश्वर योगेन्द्र देव, तुम परमयोग योगीन सेव। ५

७

तुम नाम अयोनी योनिक्षेव, तुम परम ऋषीश्वर आप देव;
तुम सब विद्यापति हो अनूप, तुम परमतत्त्व परमात्मरूप। ६

तुम परम प्रतापी दुःख निवार, हो बंध कलंकहि हरणहार;
हो परमधाम के ईश आप, हो परम ज्योति तिमिरांत आप। ७

तुम दोष मोहक्षय करणहार, गति पंचम प्रापति करणहार;
तुम स्वगत स्वव्यापक सर्वमांहि, सर्वज्ञनाम तासों कहाहि। ८

तुम ज्ञान अतीन्द्रियदेवरूप, तुम नाथ अतीन्द्रिय सुक्ख भूप;
तुम मन इन्द्रिय सों रहित देव, काया बंध रहित अकायदेव। ९

तुम लेश्या रहित सुलेश्यधार, तुम भव्याभव्यदशा निवार;
तुम सैनि असैनी रहित देव, तुम निर्मल आत्मस्वरूपदेव। १०

तुम संज्ञा चारि दियो निवार, तुम सदा तृप्त हो निराहार;
तुम भवसागरसों पार देव, तुम जन्मजरामृतु रहित देव। ११

तुम अचल सु पदधारी कहेव, तुम अक्ष अवनिश्वर आप देव;
तुम गुण अनंत धारक वखान, लक्षण वसु अेक सहस प्रमान। १२

कहि अेक सहस वसु नाम सार, तुमरे त्रिभुवन पति जिनउदार,
करि भावभक्ति अतिही ललाम, सुरपति कीन्हों तुम पद प्रणाम। १३

है अेक सहस वसु नाम धार, हे भववारिधि तारण उदार;
परमात्म विभु सेवक सु आप, कर जोरि नमूं द्यो शिव निवास। १४

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री समवसरण-जिनपूजा

(सवैया इकतीसा)

सीमंधर जिनराय, समवसरणके माय,
राजैं सिंहपीठमांही, गंधकुटी जानिये,
तहंकी विभूति वर, वर्णि सकै कौन नर,
रचिय धनद जिहि, निज कर आनिये;
तीन लोककी बखान, लछमी सकल आन,
छाय रही जहां जान, तहां क्या बखानिये,
करत आव्हान दास, जोरी पाणि शीश नाय,
तिष्ठ तिष्ठ देव आय, पूज पद ठानिये।

(दोहा)

सीमंधर जिनवर प्रभु, तीन जगतके नाथ,
पूजन पद हित करत हौं, आव्हानन नय माथ।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमान श्रीजिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

हिमवान के द्रह पद्मसों, निकसी नदी गंगा कही,
तसु नीर थीर गहीर निर्मल गालिके लीजे सही;
श्री समवसरण के मध्य, श्री जिनेन्द्रदेव निहारिके,
मन वचन काय लगाय पूजों, हर्ष बहु हिय धारिके।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर मलय गिरिको शीत चंदन, घसौं कुंकुम मेवही;
तिहिं मिले कदली नंदको भरि, हेम कुंभहि लेवही।
श्री समवसरण के मध्य, श्री जिनेन्द्रदेव निहारिके,
मन वचन काय लगाय पूजों, हर्ष बहु हिय धारिके।

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

झिनवा कमोद सुदेव जीरक, शाल सौरभयुत कही;
अनियार अंड निकार कै, परछाल थाल धरौं तहीं। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली जाहि जूहि, मोंगरा के जानिये;
फल पिता पाटल कमलके, भरि थार कंचन आनिये। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अर्द्धचन्द्र सुहाल फेनी, खाजला खुरमा वरे;
मोदक रसाजैं रसगुला, रसपूर भरु थारा भरे। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीप मणि करपूर के, अथवा घिरत के हैं कहे;
जिनके प्रकाश विकास सों, अंधमोह बाजत हैं तहे। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे दीपं निर्वपामीति०

दश गंध धूप लियाय सुन्दर, अगनि मांहि जराईये;
जसु धूम गंध सुपाय अलिगण, चहूं दिशि सों धाईअे। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लव मोच चोंच जंभीर नारंग, श्रीफलादिक जानिये,
सु अनार औ सहकारयुत, भरि थार कंचन आनिये। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल मलय अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलानही,
करी द्रव्य ईकठो आठहू भरि, थार कंचन आनही। श्री स०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानश्रीजिनेन्द्रदेवाय पूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

समवसरणमें आईये, सीमंधरादि जिन वीश;
अष्टोत्तरशत नाम कहि, इन्द्र नमायो शीश।

(पद्धरी छंद)

तुम लोक हितू हो लोकपाल, तुम लोकपती होंगे दयाल;
तुम लोकमान्य हो लोकईष्ट, तुम लोकपिता परमोतकृष्ट। १

तुम लोकबंधु हो लोकनाथ, तुम लोकोत्तम हो लोकगाथ,
तुम जिनधर्मी तुम जैनधर्म, तुम संचालक हो जैनधर्म। २

तुम जिनपति हो रक्षक दयाल, जिन आत्मा जैनिन पूज्यपाय;
तुम आप आपमें आप लीन, तुम आत्मवृत्ति धारक प्रवीन। ३

तुम हो अचिंत वृत्ति धरणहार, तुम समवसरण लक्ष्मी शिंगार;
तुम तो विंदावर जगत ज्येष्ठ, तुम ज्ञानमांहि स्वयमेव श्रेष्ठ। ४

तुम वदतांवर वदता के ईश धरणेन्द्र नमें तुम चरण शीश;
तुम कामशत्रुके हरण देव, जितमार नाम तुमरो कहेव। ५

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

तुम जन्म जरा मृतु कियो दूर, त्रिपुरारि नाम तासों हजूर;
तुम चार घातिया कर्मनाश, वर केवळज्ञान लह्यो प्रकाश। ६

तुम भव अनंत कीन्हें संहार, तासों अनंत जित नामधार;
तुम जीत्यो दुर्जय काल देव, तुम नाम मृत्युंजय है कहेव। ७

तुम लोकहितू सब कर्मचूर, तासों ईश्वर संज्ञा हजूर;
त्रैकाल चराचर सब लखेव, तुम तीन नेत्रधारक कहेव। ८

तुम मोह अंधको किन्हों हान, तुम नाम अंधकान्तक बखान;
वसु कर्मन में कियो चारि घात, है अर्ध नारीश्वर नाम तात। ९

तुम चार शरण मंगल अगाध, वच केवल अरहंत सिद्ध साध,
तुम उत्तम मंगल शरण देव, पद पंच परम पावन धरेव। १०

ॐ ह्रीँ श्रीसमवसरणमध्यविराजमानसीमंधरादिजिनेन्द्रदेवन्द्रदेवाय पूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्रपूजा

(दोहा)

प्रभु तुम राजा जगतके, हमें देय दुःख मोह;
तुम पद पूजा करत हूं, हमपै करुना होहि।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(दोहा)

मलिन वस्तु उज्ज्वल करे, यह स्वभाव जलमांय;
जलसे जिनपद पूजिये, कृत कलकं मिट जाय।
नीर बुझावे अग्निको, तृषा रोग नहि जाय;
तृषारोग प्रभु तुम हरो, यातें पूजूं पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तपत वस्तु शीतल करे, चंदन शीतल आप;
चंदनसे पूजा करूं, मिटे मोह संताप।
चंदन शीतलता करे, भवाताप नहिं जाय;
भवाताप प्रभु तुम हरो, यातैं पूजूं पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल पवित्र अति, नाम सु अक्षत तास;
अक्षत सों जिन पूजिये, अक्षय गुण परकाश।
अक्षय अक्षय मैं कहूं, सो अक्षय पद नांय;
महा अक्षय पद तुम लियो, यातैं पूजूं पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चापघर पुष्प शर, धारी मनमथ वीर;
यातैं पूजा पुष्पकी, हरै मदनकी पीर।

कामबाण पुष्पे हरो, सो तुम जीते राय;
यातैं मैं पायन पड़ूं, मदन काम नशि जाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम अन्न नैवेद्य विधि, क्षुधाहरण तन पोष;
जो पूजे नैवेदसों, मिटे क्षुधादिक रोग।
भोजन नानाविधि किये, मूल क्षुधा नहि जाय;
क्षुधा रोग प्रभु तुम हरो, यातैं पूजूं पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपापर देखे सकल, निशिमें दीपक ज्योत;
दीपकसों जिन पूजिये, निर्मल ज्ञान उद्योत।
दीपघटा घटमें बसै, ज्ञानघटा घटमांय;
ढूंढत डोलै कर्मको कृतकलंक मिट जाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक दहै सुगंधको, धूप चढावै सोय;
खेवत धूप जिनेशको, अष्ट कर्म क्षय होय।
जब धूपायनमें लगे, ध्यान अग्नि कर वीर;
कर्म काठिया खेईये, त्रिभुवनपति गम्भीर।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जैसी करनी करै, सो तैसा फल लेय;
फलपूजा महाराजकी, निश्चय शिवफल देय।
फलियन फलियन मैं कहूं, सो फलियन फल नाहि;
महा मोक्षफल तुम लियो, यातैं पूजूं पाय।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलधारा चंदन घसी, अक्षत पुष्प नैवेद्य;
दीप धूप फल अर्घ्ययुत, ये पूजा वसुमेव।

ये जिनपूजा अष्टविध, कीजे कर शुचि अंग;
प्रति पूजा जलधारसु, दीजे धार अभंग।

ॐ ह्रीँ श्रीभगवज्जिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

इही विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ;
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ। १

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज;
मुक्तिवधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज। २

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधि शोषणहार;
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार। ३

हरता अघ अंधियारके, करता धर्मप्रकाश;
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुणराश। ४

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान-भानु तुम रूप;
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप। ५

मैं वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव,
कर्म बंधके छेदने, और न कछु उपाय। ६

भविजनको भयकूपतैं, तुम ही काढनहार;
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुणभंडार। ७

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल;
सरल करी या जगतमें भविजनको शिवगैल। ८

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय;
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय। ९

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलैं आपतें आप;
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप। १०

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलविन मीन;
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन। ११

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय;
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव। १२

थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय;
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव। १३

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव;
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव। १४

कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान;
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान। १५

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव;
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव। १६

अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार;
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार। १७

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान;
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान। १८

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार;
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार। १९

जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार;
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार। २०

वंदो पांचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास;
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश। २१

चौवीशों जिनपद नमों, नमो शारदा माय;
शिवमग साधक साधुं नमि, रच्यो पाठ सुखदाय। २२

ॐ ह्रीँ श्री वीतरागपरमेश्वराय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चौबीस-जिनपूजा

(कवित्त छंद)

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपास जिनराय,
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय;
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय,
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्धमान पद पुष्प चढाय।

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

(नंदीश्वरनी चाल)

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा,
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा;
चौवीसों श्री जिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी;
जिन चरनन देत चढाय, भव आताप हरी। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित सोम समान, सुंदर अनियारे;
मुक्ताफल की उनमान, पुंज धरों प्यारे।
चौवीसों श्री जिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वर कंज कदंब करंड, सुमन सुगंध भरे;
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम कलंक हरे। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोदन मोदक आदि, सुंदर सद्य बने;
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे;
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध हुतासन मांहि, हे प्रभु खेवत हों;
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पक्व सरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायो;
देखत दृग–मनको प्यार, पूजत सुख पायो। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों;
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हितहेत,
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत। १

(धत्तानंद छंद)

जय भवतम भंजन जनमन कंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा;
शिवमग परकाशक अरिगण नाशक, चौवीसों जिनराज वरा। २

(पद्धरि छंद)

जय रिषभदेव रिषिगन नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरंत,
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर। ३
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्म दुति तन रसाल,
जय जय सुपास भवपास नाश, जय चंद चंदतनदुति प्रकाश। ४
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत, जय शीतल शीतल गुननिकेत,
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपूज्ज। ५
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुनगन अपार,
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत। ६
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय, जय अर जिन वसुअरि छय करेय,
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्लदल्ल। ७
जय नमि नित वासवनुत सप्रेम, जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम,
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्धमान शिवनगर साथ। ८

(छंद धत्तानंदा)

चौवीस जिनंदा आनंदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी;
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, [1]वासव-वंदा हितकारी।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. वासव = इन्द्र

(सोरठा)

भक्ति मुक्ति दातार, चौवीसौं जिनराज वर;
तिन पद मन वच धार, जो पूजै सो शिव लहै।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री आदिनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

कर्मभूमिकी आदि रिषभ जिनवर भये,
धर्मपंथ दरशाय सकल जग सुख दये;
तिनके पद उर ध्याइ हरष मनमें धरूं,
अत्र तिष्ट जिनराज चरण पूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सुन्दरी छंद)

परम पावन उज्ज्वल लायके, जल जिनेश्वर चरण चढायके;
जनम मरण त्रिदोष सबै हरूं, रिषभदेव चरणपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चंदन गंध सुहावनो, परम शीतल गुण मन भावनो;
जन्मताप तृषादुखको हरूं, रिषभदेव चरणपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद इन्दु समान सुहावनो, अमल अक्षत स्वच्छ प्रभावनो;
सहज रूप सुधी रमणी वरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुमरत्न सुवर्णमई करों, कनक भाजनमें बहुते भरों;
मदनबान महादुखको हरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदन पावक लीजिये, चरु अनेक प्रकार सुकीजिये;
असदवेद्य क्षुधा दुखको हरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीप अमोलक लीजिये, निज सुयोग्य मनोहर कीजिये;
अतुल मोहमहातम को हरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस धूप सुगंध सुहावनी, अगर आदिक द्रव्य सुपावनी;
धूप खेय दुखद विधिको हरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ट फलावलि लीजिये, चरण जिनवर भेट करीजिये;
सहज रूप सुधी रमणी वरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफलादिक द्रव्य मिलायके, कनकथाल सु अर्घ बनायके;
निज स्वभाव अरी विधिको हरूं, रिषभदेव चरनपूजा करूं।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(मोतियादाम छंद)

अषाढ वदी द्वितिया दिन जान, तजो सरवारथसिद्धि विमान;
भयौ गरभागम मंगल सोय, नमूं जिनको नित हर्षित होय।

ॐ ह्रीँ अषाढवदीद्वितियायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचैत वदी नवमी दिन जान, भयौ शुभ ता दिन जन्मकल्यान;
सुरासुर इन्द्र शचीजुत आय, करौ गिरशीस महोत्सव जाय।

ॐ ह्रीँ चैत्रवदीनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी नवमी शुभ चैत बताय, प्रभु ढिंग देव रिषीश्वर आय;
करी बहु भक्ति नवाय सुभाल, लयौ तप तादिन श्री जिन हाल।

ॐ ह्रीँ श्री चैत्रवदीनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी शुभ ग्यारस फाल्गुन जान, सु तादिन घाति हने भगवान;
करौ वर केवलज्ञानप्रकाश, हरो जगको भ्रम मोहविलास।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनवदी अेकादशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी शुभ माघ चतुर्दसि जान, लयौ प्रभुने शिवथान महान;
करौ बहु उत्सव इन्द्र नरेंद्र भरौ मम आश सदा जिनचंद्र।

ॐ ह्रीँ महावदीचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

जयमाला

(दोहा)

आदि धर्म करता प्रभु, आदि ब्रह्म जगदीश,
तीर्थंकर पद जिहि लयौ, प्रथम नवाउं शीश।

(भुजंगप्रयात छंद)

नमो देव देवेन्द्र तुम चर्ण ध्यावे,
नमो देव इन्द्रादि सेवक रहावै;
नमो देव तुमको तुम्ही सुखदाता
नमो देव मेरी हरो दुख असाता। १

तुम्ही ब्रह्मरूपी सुब्रह्मा कहावौ,
तुम्ही विष्णु स्वामी चराचर लखावौ;
तुम्ही देव जगदीश सर्वज्ञ नामी,
तुम्ही देव तीर्थेश नामी अकामी। २

सुशंकर तुम्ही हो तुम्ही सुक्खकारी,
सुजन्मादि त्रयपुर तुम्ही हो विदारी;
धरैं ध्यान जो जीव जगके मझारी,
करै नास विधिको लहैं ज्ञान भारी। ३

स्वयंभू तुम्ही हो महादेव नामी,
महेश्वर तुम्ही हो तुम्ही लोकस्वामी;
तुम्हें ध्यानमें जो लखें पुन्यवंता,
वही मुक्तिको राज विलसैं अनंता। ४

तुम्ही हो विधाता तुम्ही नंददाता,
नमै जो तुम्हें सो सदानंद पाता;
हरौ कर्मके फंद दुखकंद मेरे,
निजानंद दीजै नमों चर्ण तेरे। ५

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

महा मोहको मारि निज राज लीनौ,
महाज्ञानको धारि शिववास कीनौ;
सुनो अर्ज मेरी रिषभदेव स्वामी,
मुझे वास निज पास दीजे सुधामी। ६

(दोहा)

नाभिराय मरुदेवी सुत, सदा तुम्हारी आस;
मनवचकाय लगायके, नमें जिनेश्वरदास। १

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरत के जानिये,
पंचकल्यानक धारि गये शिव थानिये;
जो नर मनवचकाय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपत् ॥

जयमाला

( )

अमरनयरि सम नयरि अयोद्धा, नाभिनरेंद्र वसे जिनबुद्धा,
तस पटराणी मरुदेवी माया, युगपति आदिजिनेश्वर जाया;
सुरपति मेरु शिखर लई चढिया, कनक-कलश क्षीरोदक भरिया । १

चैतमास अभिषेक जु करिया, अष्टोत्तर-शत कुंभ उधरिया;
सुरपति०....२

भविकन जलधारा संचरिया, ललित-कलोल धरणी उतरिया;
सुरपति०....३

जय जय असुरनिकरि उचरिया, इंद्रइंद्राणी सिंहासन धरिया;
सुरपति०....४

अंगअनंग विभूषिण धरिया, कुंडल हार हरित मणि जड़िया;
सुरपति०....५

वृषभ नाम शतसुख विस्तरिया, कमलनयन कमलापति कहिया;
सुरपति०....६

युगला धरम निवारण करिया, सुर नर निकट गंधोदक महिया;
सुरपति०....७

हेम हेमांशु घनसरिया, भूरि सुगंध गंध परसरिया;
सुरपति०....८

रतन कचोळां कुमारीने भरिया, जिन-चरणांबुज पूजित हरिया;
सुरपति०....९

अक्षत अक्षत वात्सल हरिया, रोहिणीकंथ कारण समोसरिया;
सुरपति०....१०

देखत रुचिकर अमर निकरिया, पंचमुष्ठि जिन आगे धरिया;
सुरपति०....११

सुंदर पारिजात मोघरिया, कमल बकुल पांडल कुमुदरिया;
सुरपति०....१२

चरुवर दीप लेई अपछरिया, जिनवर आगे उतारी धरिया;
सुरपति०....१३

अगर कपूर धूप फल फलिया, फल रसाल मधुर रस मलिया;
सुरपति०....१४

कुसुमांजलि सु धरे समुजलिया, पंडितराय अभेवच कहिया;
सुरपति०....१५

त्रिभुवन कीरति पंकज वरिया, रत्नभूषण सुरि महापद कहिया;
सुरपति०....१६

ब्रह्मकृष्ण जिनराज विस्तरिया, जयजयकार करी मनहरिया;
सुरपति०....१७

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ-जिनपूजा

(छप्पय)

बाह्याभ्यंतर संग त्याग थिर शुक्लध्यानमें,
तिरसठको क्षय पाय, अनंत चतुष्टय छिनमें;
समवसरणयुत देव दोष अष्टादश रहिता,
आदिनाथ जिन आय तिष्ठ, सनहित अघ हरता।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद हरिगीत)

हेमझारीमें मनोहर क्षीरजल भर लीजिये,
त्रयदोष नाशन हेतु, श्रीजिन अग्रधारा दीजिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

अतिरम्य शीतल दाहनाशक, मलय चंदन गारिये,
संसारताप विनाश हेतु, जिनेशपद तल धारिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्व०

मणिचंद्रकांति समान श्वेत, अखंड अक्षत लाईअे,
अक्षय अबाधित मोक्षपदकी, प्राप्ति हेतु चढाईअे;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

शुभ अमल कमल सुचारु चंपा, सुमन गंधित ले धरो,
खल काम मद भंजन श्रीजिनवर, देव पद अर्पण करो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

धृत पक्व सुन्दर सद्य मोदक, कनक भाजनमें भरो,
ऋषभ पदाब्ज चढाय चिर दुख, मूल भूख व्यथा हरो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

जिन चन्द्र त्रिभुवन नाथ सन्मुख, रत्न दीप प्रकाशिये,
अति मोद युत करि आरती, अज्ञान तिमिर विनाशिये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

शुचि मलय अगुरु सुवास पूरित, चूरि अनल प्रजालिअे,
सुखधाम शिवरमणी वरो, अरि अष्ट कर्म जलाईये;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

श्रीफल बदाम मनोज्ञ दाडिम, मधुर फल सुख मूल ले,
प्रभु पद सरोज चढाय अनुपम, मोक्षफल अनुकूल ले;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

अत्यंत निर्मल पूर्व आठों, द्रव्य अेकत्रित करो,
अरि अष्ट हनि गुण अष्ट संयुत, शीघ्र मुक्तिरमा वरो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम हैं।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

भवजलनिधि तारण, शिवसुख कारण, प्रतिपालित निर्मल चरणं,
करुणारस सागर, परम गुणाकर, जय जिन सकल भुवन शरणं।

(त्रोटक वृत)

वरदं सरदिंदुशोनिकरं, निजज्ञान कलायुत भानिकरं,
संसार पयोनिधि तारतरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

गतधर्मजलं परमुक्तमलं, पय सदृश रक्त सुनंत बलं;
संहनन प्रथम संस्थान वरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शुभ रूप जितातनु कोटि विभुं, वसु शत मित लक्षण युक्त प्रभु;
पर सौरभता वर कीर्तिधरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

प्रिय वाक्य हितं सुरवृन्द नुतं, यतिराज विराजित नाभिसुतं;
परमं परतर्जित पुष्पसरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शतयोजन इति दुर्भिक्षजयं, गगनांगण लंघन जंतु दयं;
गतभुक्ति जितं उपसर्ग चरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

चतुरं चतुरानन मोहजितं, सकलामल केवल बोधवरं;
विगतं प्रति मंगल नेत्र चरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

समकेस सदा नख पाद करं, सकलार्थ प्रगट कर वाक्य वरं;
भामंडल दर्शित भव प्रवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

शशि लज्जित कर त्रय छत्रवरं, सरणं चरणं जग शांत करं;
तम मोहज भ्रमहर सूर्यवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

मन वचन काय करि हूँ नमनं, मोहि देहु शिवालय प्रति गमनं;
निजस्वरूपको करिहूं प्रवरं, प्रणमामि जिनं शिवसौख्यकरं।

(धत्ता)

यह जयमाला परम रसाला आदीश्वरकी गुणमाला,
जो पढे पढावे पूज रचावे कंठ धरे शिव वरमाला।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव प्रभु नाम, पूजे ध्यावे भाव धरि;
ताघर ऋद्धि महान, होय सकल सुखदायनी।

॥ इति आशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री अजितनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

सकल कर्म हनि अजित जिनं सिव खेत में,
गिरि समेदतें गये तिनोंके हेत मैं;
आह्वानन संस्थापन अरु सन्निधि करूं,
मन वच तन करि शुद्ध बार त्रय उच्चरूं। १

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

गंगा सम नीरं, प्रासुक सीरं, कनक-रतनमय भृंग भरौं,
जर मरन पिपासं, हरि सब त्रासं, मन वच तन त्रय धार करौं;
श्री अजित जिनेश्वर, पुहमिनरेश्वर, सुरनरखगवंदित चरणं,
मैं पूजुं ध्याऊं गुणगण गाउं, सीस नवाउं अघहरनं।

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

मलयागिर ल्यावें, अगर मिलावें, केसरयुत घनसार घसैं,
भवताप निवारन, शिवसुख कारन, पूजि जिनेश्वर पाप नसैं;
श्री अजित०

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय संसारतारविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०

तंदुल सु अखंडित, सौरभमंडित, मुक्तासम जिनपद आगें,
धरि पुंज पियारी भवभ्रम टारी लहे अखैपद भय भागे।
श्री अजित०

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

देखत ही सोहै सब मन मोहै कुसुम कनकमय रतन जडा,
सुर नर पशु सारे काम विदारे पूजत बाण मनोज उडा;
श्री अजित जिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुरनरखगवंदित चरनं,
मैं पूजूं ध्याऊं गुणगण गाउं, सीस नवाउं अघ अघहरनं।

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथभगवजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति मिष्ट मनोहर घेवर गूंजा फेनी मोदक थाल भरूं,
बहु छुधा सतायो पूजन आयो हरो वेदना अरज करूं;
श्री अजित०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि कनक रकाबी, रतनसुदीपक, जोति ललितकरि प्रभु आगै,
सब मोह नसावै ज्ञान बढावै लखि आपौ परबुद्धि भागै;
श्री अजित०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्नागर लेउं जिन ढिग खेउं, गंध दसोंदिसि धावत है,
बहु मधुकर आवें परिमल भावें, अष्टकर्म जरि जावत है;
श्री अजित०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति मिष्ट मनोहर नैननके हर उत्तम प्रासुक फल लावें,
श्रीजिनपद धारे चउगति टारै मोक्ष महाफल बहु पावै;
श्री अजित०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ निरमल नीरं गंधगहीरं तंदुल पहुप सु चरु ल्यावें,
पुनि दीपं धूपं फलसु अनूपं अरघ 'राम' करि गुण गावें;
श्री अजित जिनेश्वर पुहमिनरेश्वर सुरनरखगवंदित चरनं,
मैं पूजूं ध्याउं गुणगण गाउं, सीस नवाउं अघहरनं।

ॐ ह्रीँ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

विजै विमनाथकी चये, विजय गर्भमझार,
जेठ अमावसि अवतरे, जजूं भवार्णवतार।

ॐ ह्रीँ ज्येष्ठकृष्णामावस्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघसुकुल दसमी सुरा, जन्म जिनेस निहार,
सुर गिरि स्नपन करि जजे, मैं पूजूं पदसार।

ॐ ह्रीँ माघशुक्लदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुकल दसमी धर्यो, तप वनमें जिनराय,
सुर नर खग पूजा करी, हम पूजें गुण गाय।

ॐ ह्रीँ माघशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पोह शुक्ल अेकादसी, केवलज्ञान उपाय,
कहो धर्म पदजुग जजे, महाभक्ति उर लाय।

ॐ ह्रीँ पोषशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुकल पंचमि विषें, अष्ट कर्म हनि मोख,
अजित समेदाचल थकी गअे जजूं गुण धोख। ५

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सकल तत्त्व ज्ञायक सुधी, गुण पूरन भगवान,
धरम धुरंधर परम गुरु, नमूं नमूं धरि ध्यान।

(पद्धरि छंद)

जय जय श्री अजित जिनेश देव, तुम चरन करुं दिनरैन सेव,
जय मोक्षपंथ दातार धीर, जय कर्मसैल भंजन सुवीर। १

जय पंच महाव्रत धरनहर, तजि राज्य सब वन ध्यान धार,
जय पंच समितिपालक जिनंद, त्रय गुप्ति करन वसि धरमकंद। २

धरि ध्यान भअे चिद्रूप भूप, गिरि मेरु समानौ अचल रूप,
जय घाति करम को नाश ठान, उपजायो केवलज्ञान भान। ३

तुम समवसरन रचना बनाय, [१]हरि हरिष्यो मन आनंद पाय,
कुछ करीहों वरनन भक्ति भाय, जिम बोलत है पिक अंब खाय। ४

जय पंच रतनमय धूलसाल, चउ गोपुर मनमोहन विशाल,
जय मानसथंभ सुरंग चंग, लखि मानी नावै आय अंग। ५

चउ वापी निर्मल नीर सार, सुभ खेलत जहं चकवा [२]मरार,
जल भरि खातिका [३]गिरद रूप, पुष्पनिकी [४]बाडी अति अनूप। ६

सुभ कोट दिपे जिम तेज भान, नृतसालामें गावें कल्यान,
पुनि वन शोभा वरनी न जाय, राजत वेदी बहु धुज उडाय। ७

१=ईन्द्र २ हंस, ३. चारों ओर। ४. वाटिका।

फिर कोट हेममय सुधर सार, बहु कल्पद्रुम वन सोभकार,
नव रतनराशि शोभित उतंग, ऊंचे मंदिर जहं बहु सुरंग। ८

फिर फटिक कोट शोभा अमान, मंगल द्रव्यादिक धूपदान,
मधि द्वादश बनिय सभा अनूप, मुनि सुर नर पशु बैठे सुभूप। ९

विचि तीन रतनमय तुंग पीठ, वेदी सिंहासन कमल ईट,
जिन अंतरिक्ष आनन सुचार, धर्मोपदेश दे भव्य तार। १०

सित छत्र तीन उद्योतकार, तरु है अशोक जन शोक टार,
गंधोद वृष्टि जुत पुष्प वृष्टि नभि दुंदुभि बाजै मिष्ट मिष्ट। ११

अति धवल चंवर चोंसठ ढुराय, भामंडल छवि वरनी न जाय,
अैसी विभूति जिनराज देव, नमि नमि पुनि पुनि करहों जु सेव। १२

(धत्ता)

श्री अजित जिनेसुर नमत सुरेसुर, पूजें [1]खेचरगण चरणं,
नरपति बहु ध्यावे शिवपद पावे, रामचन्द्र भवभयहरणं। १३

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. विद्याधरोनो समूह।

श्री संभवनाथ-जिनपूजा

(सवैया)

श्रीजिनदेव सदा जयवंत, महंत, मुनि मन मांहि अराधैं;
आपहि की नित जाप जपैं, प्रभु पाय सहाय सुधी शिव साधैं।
आपहिको नित ध्यान करैं सब, संतनको सिधि होई समाधै;
अत्र विराजि प्रभु हमरी सब, दूर करौ विधिबंध उपाधै।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(चाल जोगीरासा)

निर्मल जल शुचि शीतल लेकर उत्तम भाजन धारौं,
पूजि जिनेश्वरके पदपंकज जन्म मरन दुख टारौं।
तारनतरन विरद सुनि जगमें लीनों सरणों आई,
संभवजी जगतार सिरोमणि हूजौ सरन सहाई।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

वज्रागनि अरु वडवानलतैं दाह अधिक दुखदाई,
सो भवताप मिटै प्रभु पूजत चंदनसों नित भाई। तारन०

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०

चन्द्र–किरन सम श्वेत मनोहर अक्षत धोय धरीजे,
अक्षयपद के कारन पूजा श्रीजिनवर की कीजे। तारन०

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुर-तरुके बहु फूल मनोहर सकल सुरासुर लावैं,
समर सूल निरमूल करनको श्रीजिनचरन चढावैं। तारन०

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नव्य गव्य सुचि हव्य मनोरम कंचन थाल भरावैं,
क्षुधारोग निरवारन कारन श्रीजिनचरन चढावैं।
तारनतरन विरद सुनि जगमें लीनों सरणो आई,
संभवजी जगतार सिरोमणि हूजौ सरन सहाई।

ॐ ह्रीँ श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतन अमोलक कंचन भाजन धार महीपति लावें,
मोह तिमिर के नासन कारन श्रीजिनचरन चढावैं। तारन०

ॐ ह्रीँ श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर करपूर सुगंधित द्रव्य अनेक प्रकारी,
धूप दसंगी खेय धनंजय, पूजो जिन हितकारी। तारन०

ॐ ह्रीँ श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्ऋतुके फल प्रासुक उत्तम ले श्री जिनवर पूजौ,
भक्ति सहित जिनराज चरनके भक्त सुधी जन हूजौ। तारन०

ॐ ह्रीँ श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विधि अर्घ बनाय गाय गुन जिनवर चरन चढावै,
पुण्यवंत वह जीव जगतमें नाना विधि सुख पावै। तारन०

ॐ ह्रीँ श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(चाल छंद)

फाल्गुन सुदि अष्टमि जानौं, जिन गर्भकल्याण प्रमानो,
हरि हर्षित पूज रचाई, हम पूजत तिहिं पद भाई।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि पूरणमासी, जिन जन्म लियो सुखरासी,
सुर गिरि अभिषेक करायौ, सुरगण अति हर्ष बढायौ।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर तिथि पूरणमासी, प्रभु जगतैं होय उदासी,
तब देव ऋषीश्वर आये, जिन भाव विराग बढाये।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लपूर्णामायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथी बताई, प्रभु केवल किरन जगाई,
मुनि श्रावक धर्म बतायो, हम तिनको शीर नवायो।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छठि चैत्र सुदीको जानों, प्रभुने पायो सिव थानों,
सुर असुर हरषि गुन गाये, हम हूँ निज हित गुन गाये।

ॐ ह्रीं चेत्रशुक्लषष्ठयां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

संभव भव भय दूर कर, निजानन्द रस पूर,
निज गुण दाता जगतपति, मम उर बसो हजूर।

(छंद तोटक)

जयवंत जगतपति राजत हैं, समवश्रतमें छवि छाजत हैं,
शशि सूरज कोटिक लाजत हैं, जिन देखत ही अघ भाजत हैं।

तहां वृक्ष अशोक महान दिपै, तिहिं देखत ही सब शोक छिपै,
चतुषष्ठिसु चामर छत्र त्रयं, हरि आसन शोभित रत्नमयं।

नभतैं सुरपुष्प सुवृष्टि गिरै, मनु मन्मथ श्रीपति पाय परै,
नभमें सुरदुंदुभि राजत है, मधुरी मधुरी ध्वनि बाजत है।

सुर नारि तहां सिर नावत हैं, तुमरे गुण उज्ज्वल गावत हैं,
पद पंकजको चल रूप कियौ, बहु नाचत राजत भक्त हियो।

घननं घननं घनघंट बजैं, सननं सननं सुर नारि सजैं,
झननं झननं धुनि नूपुरकी, छननं छननं छनमें फिरकी।

दृग आनन ओप अनूप महा, छन अेक अनेकन रूप गहा,
बहुं भाव दिखावत भक्ति भरे, कविपै नहि वर्णन जाय करे।

जिनकी धुनि घोर सुने जबही, भविमोर सुधी हरषैं तबही,
धर्मामृत वर्षत मेघझरी, भवताप तृषा सब दूर करी।

सुर ईश सदा शिर नावत हैं, गुण गावत पार न पावत हैं,
मुनि ईश तुम्हें नित ध्यावत हैं, तबही शिवसुंदरि पावत हैं,

प्रभु दीनदयाल दया करिये, हमरे विधिबंध सबै हरिये,
जगमें मम वास रहै जबलौं, उरमांहि रहौ प्रभु तबलौं।

(दोहा)

शिवमग दरशायौ जगत, करो भर्म तम दूर,
सो प्रभु मम हिरदै करौ, सुखसागर भरपूर।

ॐ ह्रीँ श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिव थानिये;
जो नर मन वच काय प्रभु पूजे सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री अभिनन्दननाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल)

घाति हने लहि ज्ञान बोधि भवगिरि ठये,
हनि अघाति अभिनन्द [1]सिवालै थिर भये;
आह्वानादि विधि ठानि वार त्रय उच्चरूं,
संवौषट् ठः ठः वषट् त्रयविध करूं।

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

उत्तम जल प्रासुक, अमल सुवासित, गंगादिक हिम तृटहारी,
तुम पूजन आयो, अति सुख पायो, हरो जनम मृति दुखकारी;
अभिनंदनस्वामी, अन्तरजामी, अरज सुनो अति दुख पाउं,
भव वास वसेरा, हर प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाउं।

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कुंकुम ल्यावे, चंदन मिलावे, अगर मेलि घनसार घसै,
श्री जिनवर आगे, पूज रचावे, मोहताप ततकाल नसै। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासम तंदुल अमल अखंडित चंद किरन सम भरि थारी,
करि पुंज मनोहर जिन पद आगे, लहौं अखै पद सुखकारी। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. सिवालै = शिवालय, मोक्षस्थान

मंदार जु सुन्दर कुसुम सु ल्यावें, गन्ध लुब्ध मधुकर आवें,
जिनवर पद आगें, पूज रचावें समरबान नसिकें जावें।
अभिनंदनस्वामी, अंतरजामी, अरज सुनो अति दुःख पाउं,
भव-वास-वसेरा, हर प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाउं।

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध चरु लै मिष्ट मनोहर, कनकथाल भरि तुम आगें,
पूजन कूं ल्यायौ, अति सुख पायौ, रोग क्षुधादि सबै भागें। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ मोह सतायो अति दुख पायो ज्ञान हर्यो करिकैं जोरा,
मणि दीप उजारा तुम ढिंग धारा हरो तिमिर प्रभुजी मोरा। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

[१]किसनागर ल्यावें अगर मिलावें, भरि धूपायन प्रभु आगै,
खेये शुभपरिमल तैं मधु आवें, करम जरें निज सुख जागें। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम ल्यावें, प्रासुक मोहन गंध सुगंधे रसवारे,
भरि थाल चढावें, सो फल पावें मुक्ति महा तरुके प्यारे। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करि अर्घ महा, जल, गंध सु लेकरि, तंदुल पुष्प सु चरु मेवा,
मणि दीप सुधूपं, फल जु अनूपं 'रामचंद' फल सिवसेवा। अ०

ॐ ह्रीँ श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. कृष्णागरूनामे गंध धूप

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

अष्टमि सित वैसाख तजि, विजय विमान सुरिन्द,
अवतरि गर्भ सिधारथा, लयो जजूं गुणवृंद।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म माघ सुदि द्वादशी, सुरपति लखि इत आय,
स्नपन करि सुर गिरि जजे, हम जजिहैं गुण गाय।

ॐ ह्रीँ माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत माघ द्वादसि दिना, अभिनंदन धरि धीर,
जगत-राज तृणवत तज्यो, जजूं चरन शिवसीर।

ॐ ह्रीँ माघशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष सुकल चउदसि हने, घाति करम जिनदेव,
कह्यो धर्म केवलि भये, जजूं चरण जुग अेव।

ॐ ह्रीँ पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित षष्टमि वैशाख सिव, गये सेष हनि कर्म,
जजूं चरनजुग भक्ति करि, देहु देव निज धर्म।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लषष्ठयां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जयमाला

(दोहा)

अभिनन्दन आनंदके, दाता जगत विख्यात,
करूं नमन त्रिविधा सदा, मुझ आनंद करि तात। १

(पद्धरी छंद)

जय अभिनन्दन आनंदकंद, जय तात स्वयंवर धर्मवृंद,
जय देवि सिधारथा उदर सार, अवतार अजोध्यापुर मंझार। २

वपु कनक चाप त्रियसै पचास, इक्ष्वाकुव्योममधि रवि उजास,
प्रभु पूरव आयु पचास लख्य, तप धारि हने चउघाति अख्य। ३

केवल उत्सव सुर असुर आय, जय शब्द ठानि कीन्हौं अघाय,
समवादि भूति अद्भुत अपार, रचि थुति आरंभी इन्द्रसार। ४

रसना सहस्र करिकैं भनंत, तब पार लहै नहिं गुण अनंत,
मैं अल्पबुद्धि किम करुं बखान, तुम भक्ति जु प्रेर्यो देव आन। ५

जय तीन जगतपति के सुनाथ, सुगुरु नमूं मैं जोरि हाथ,
जगस्वामिनके तुम स्वामि देव, जग पूज्यनिके तुम पूज्य एव। ६

तुम ज्ञातामें सर्वज्ञ ईश, तपसिनमें तुम तपसी गिरीश,
तुम जोगिनमें जोगी महंत, हो पर्म जिनेसुर जिन कहंत। ७

जय विश्व उधारन दुखनिवार, निरवांछि हितू जगके अधार,
जय उभै श्री राजित अपार, निरग्रंथ महा भुविके मझार। ८

जय सची आदि करि सेव्य पांय, स्तवूं महान ब्रह्मचारणाय,
तुम सकल द्रव्य परजय लखान, जुगपतहि लख्यो निर्मुक्ति ज्ञान। ९

तुम दरसन रविकरि तम अज्ञान, जीत पाप नसैं प्रगटैं कल्यान,
हूं नमूं चरन जुग जोरि पान, गुणसिंधु सरन तुम ताहि आन। १०

हूं धन्य भयो तुम निकट आय, मो जीतव धनि तुम चरन पाय,
तुम धन्य नाथ किरपानिधान, 'चंद्रराम' कहै दे मुक्ति थान। ११

(धत्ता)

इह थुति अभिनंदन पापनिकंदन, जो भवि गावैं सुर धरई,
हवै दिवि अमरेसुर पुहमि नरेसुर, लहु पावइ शिवसुख वरइ। १२

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ-जिनपूजा

(कवित्त रूपक मात्रा ३१)

संजम-रतन विभूषनभूषित, दूषनदूषन श्रीजिनचंद,
सुमतिरमारंजन भवभंजन, संजयन्त तजि मेरुनरिंद;
मातु मंगला, सकलमंगला, नगर विनीता जये अमन्द,
सो प्रभु दयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरि दुखदन्द।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद कवित्त तथा कुसुमलता भी कहा जाता है)

पंचमउदधितनों सम उज्ज्वल, जल लीनों वरगंध मिलाय,
कनककटोरीमांहि धारिकरि, धार देहु शुचि मनवचकाय;
हरिहरवन्दित पापनिकन्दित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय,
तुम पदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागर घनसार घसौं वर, केशर अर करपूर मिलाय,
भवतपहरन चरन पर वारों, जनमजरामृततताप पलाय।
हरिहरवंदित पापनिकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय,
तुम पदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

शशिसम उज्ज्वल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास,
सो लै अखयसंपदाकारन, पुंज धरों तुम चरनन पास। हरि०

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय,
सो लै समरशूलक्षयकारण, जजों चरन अति प्रीत लगाय। हरि०

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नव्य गव्य पकवान बनाउं, सुरस देखि दृग मन ललचाय,
सो लै क्षुधारोगछयकारण, धरौं चरणढिग मन हरषाय। हरि०

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

रतनजडित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय,
दीप धरों तुम चरनन आगे, जातें केवलज्ञान लहाय। हरि०

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि अगनिमें देत जराय,
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम धूम यह तासु उडाय। हरि०

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल मातुलिंग वर दाडिम, आम निंबु फल प्रासुक लाय,
मोक्ष महाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुग पाय। हरि०

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय,
नाचि नाचि शिरनाय समरचों, जयजयजयजयजय जिनराय।
हरिहरवंदित पापनिकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय,
तुम पदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय।

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(चौपाई)

संजयंत तजि गरभ पधारे, सावण सेत दुतिय सुखकारे,
रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया, जजों चरण जय जय जिनराया।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लाद्वितीयादिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल ग्यारस कहं जानों, जनमे सुमति सहित त्रय ज्ञानों;
मानों धर्यो धरम अवतारा, जजों चरणजुग अष्टप्रकारा।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुकल ग्यारस तिथि भाखा, तादिन तप धरि निजरस चाखा,
पारण पद्मसद्म पय कीनों, जजत चरन हम समता भीनों।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकल चैत अेकादशी हाने, घाति सकल जे जुगपति जाने,
समवसरनमंह कहि वृषसारं, जजहुं अनंतचतुष्टयधारं।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुकल ग्यारस, निरवानं गिरि समेदतैं त्रिभुवनमानं,
गुन अनंत निज निरमलधारी, जजौं देव सुधि लेहु हमारी।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

जयमाला

(दोहा)

सुमति तीनसौ छत्तिसौ, सुमतिभेद दरशाय,
सुमति देहु विनती करों, सुमति विलम्ब कराय। १

दयाबेलितरु सुगुननिधि, भविकमोद–गण चन्द,
सुमतिसचीपति सुमतिकों, ध्यावौं धरि आनन्द। २

पंच परावरतन हरन, पंच सुमति सित दैन;
पंचलब्धिदातारके, गुन गाऊं दिनरैन। ३

(छंद भुजंगप्रयात)

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा, जपै नाम जाको सबै दुःख भाजा,
महासूर ईक्ष्वाकुवंशी विराजै, गुणग्राम जाका सबै ठौर छाजै। ४

तिन्होंके महापुण्यसों आप जाये, तिहूं लोक में जीव आनंद पाये,
सुनासीर[1] ताही धरी मेरु धायो, क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथायो। ५

बहुरि तातकों सोंपि संगीत कीनों, नमें हाथ जोरें भलीभक्तिभीनों,
बिताई दशै लाख पूर्व बालै[2], प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै। ६

कछू हेतुतैं भावना बार भाये, तहां ब्रह्मलौकांतके देव आये,
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो, धरे पालकी में सु उद्यान ल्यायो। ७

नमैं सिद्धको केश लोंचे सबै ही, धर्यो ध्यान शुद्धं जु घाती हने ही,
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं, गणाधीश जू अेकसो सोल राजं। ८

खिरें शब्द तामैं छहों द्रव्य धारे, गुनौ पर्ज उत्पादव्ययध्रौव्य सारे,
तथा कर्म आठों तनी थित्ति गाजं, मिलै जासुके नाशतें मोच्छराजं। ९

१. इन्द्र २. बालकपनेमें

धरैं मोहिनी सत्तरं कोडाकोडी, सरित्पत्प्रमाणं थितिं दीर्घजोडी,
अवर्ज्ञानदृग्वेदिनी अंतरायं, धरैं तीस कोडाकोडी सिंधुकायं। १०

तथा नामगोतं कुडाकोडि वीसं, समुद्रप्रमाणं धरैं सत्तईसं,
सु तैंतीसअब्धि धरें आयु अब्धि, कही सर्व कर्मोतनी वृद्ध लब्धि। ११

जघन्यप्रकारै धरैं भेद ये ही, मुहूर्तं वसू नामगोतं गने ही,
तथा ज्ञान दृग्मोह प्रत्यूह आयं, सु अंतर्मुहूर्तं धरैं थित्ति गायं। १२

तथा वेदिनी बार हेंही मुहूर्तं धरैं थित्त अेसैं भन्यो न्यायजुत्तं,
इन्है आदि तत्त्वार्थ भाख्यो अशेषा, लह्यो फेर निर्वानमांही प्रवेशा। १३

अनन्तं महन्तं सुसन्तं सुसन्तं, अमन्दं अफंदं अनंदं अभंतं,
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं, अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं। १४

अवर्णं अघर्णं अमर्णं अकर्णं, अभर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं,
अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं, अखण्डं सुमंडं प्रचंडं तदेकं। १५

सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं, अनन्तं गुनाराम जैवन्त वर्मं,
नमैं दास वृंदावनं शर्न आई, सबै दुःखतैं मोहि लीजे छुडाई। १६

(धत्ता)

तुव सुगुन अनन्ता ध्यावत सन्ता, भ्रमतमभंजनमार्तंडा,
भ्रमतमकरचंडा भविकजमंडा, कुमतिकुबल इन गन हंडा। १७

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद रोडक)

सुमतिचरण जो जजै, भविक जनमन वच काई,
तासु सकल दुखदन्द फंद, ततछिन छय जाई;
पुत्र मित्र धन धान्य, शर्म अनुपम सो पावै,
'वृन्दावन' निर्वान लहै, जे निहचै ध्यावै। १८

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री पद्मप्रभ-जिनपूजा

(धत्ता छंद)

श्री पद्म जिनेश, पूजे सुरेश, आयो सुशरन तेरी;
नमो नमो जय सुशीमानंदन, यह अरज सुनो मेरी;
जय जय तिष्ठ तिष्ठ देव, कृपा करी घनेरी,
हे जिनेश जय गुणगण महेश, प्रभु मेटो भवफेरी।

ॐ ह्रीँ श्री पद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्रावतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नंदीश्वरनी चाल)

निज मन मणिमय भृंगार समरस नीर भरा,
पूजु दुख त्रिविध निवार जामन मरण जरा;
श्री पद्मप्रभु भगवंत गुणातम शुद्ध सही,
तुम ध्यावत मुनिजन संत पावत मोक्ष–मही।

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सहज हि शुद्ध स्वभाव, चंदन घसि लायो;
पूजूं तुम पद धरि चाव, भव तप विनसायो। श्री पद्म०

(चंदनं)

निर्मल निज सहज स्वभाव तंदुल शुद्ध लिये,
गुण अक्षय पद दरसाव, तुम पद भेंट किये। श्री पद्म०

(अक्षतान्)

चेतन निजभाव सुसार, पुष्प सुगंध भरे;
मन्मथके नाशनहार, तुम पद भेंट धरे। श्री पद्म०

(पुष्पं)

आतमरस पूरित मिष्ट, शुद्ध नैवेद्य लिये,
पूजूं परमातम इष्ट दोष क्षुधादि गये;
श्री पद्मप्रभु भगवंत गुणातम शुद्ध सही,
तुम ध्यावत मुनिजन–संत पावत मोक्ष–मही।

(नैवेद्यं)

शुद्ध चेतनमें रुचिभाव, दीप प्रकाश रह्यो;
पूजूं निजगुण दरसाव, शांत स्वरूप गह्यो। श्री पद्म०

(दीपं)

कर्मनकी घातक रूप, धूप सुगंध करी;
खेवतहूं हे शिवभूप, आठौं कर्म जरी। श्री पद्म०

(धूपं)

रत्नत्रय शुद्ध स्वभाव, निजगुण फल लीने;
पूजत शिवफल सरसाव, आतमरस भीने। श्री पद्म०

(फलं)

चिंतामणि सम शुद्धभाव, आठौं द्रव्य लिये;
पूजत अरिगण जु नसाव, निज गुण प्रगट किये। श्री पद्म०
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद सुंदरी)

असित माध सु छट्ठ बखानिये, गरभमंगल तादिन मानिये;
उरध ग्रीवकसौं चय राजजी, जजत इन्द्र जजें हम आजजी।

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकल कार्तिक तेरस को जये, त्रिजगजीव सु आनंद को लये;
नगर स्वर्ग समान कुसुंबिका, जजतु हैं हम संजुत अंबिका।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकल तेरस कार्तिक भावनी, तप धर्यो वन षष्टम पावनी;
करत आतमध्यान धुरंधरो, जजत हैं हम पाप सबै हरो।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकल पूनम चैत सुहावनी, परम केवल सो दिन पावनी;
सुरसुरेश नरेश जजैं तहाँ, हम जजें पदपंकज को ईहां।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित फागुन चौथ सुजानियो, सकल कर्म महारिपु हानियो;
गिरि समेदथकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यान विषै लये।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णचतुर्थीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(मेरी भावना)

श्री जिनपूजा मंगलकारी, भवि कीजो सरधा धारी। ।।टेक।।

अघ गण हरत करत सुख संपत, भरत सुपुण्य भंडारी;
दुर्गत दलत विपत सब नाशै, परम सुरुच करतारी। श्री जिन०

स्वर्ग होत ग्रह आंगनवत् पुन, भूप रमा हो सहचारी;
सुथर होत संसृत श्रेयस जस, निज कर कोट भंडारी। श्री जिन०

मेंढक हू जिन जजत बुद्धि कर, छिन में सुर ऋद्धि धारी,
विधि पूर्वक जज मोक्ष लहैं, तो अचरज काहै विचारी। श्री जिन०
अब अति भाग्य उदय तें अरहत्, भक्ति मिली है तुम्हारी;
सरधा धारी करो जिन अरचा, होय सुपंथ विहारी। श्री जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ-जिनपूजा

(छंद कवित्त)

मात सुसीम सुशील शिरोमणि, धारण तात बिख्यात बताये,
पद्म समान प्रभा तिनकी, पद पद्म सुरासुर पूजन आये;
लक्षण पद्म कह्यो पगमें, पद्माकर पद्म जिनेश बताये,
अत्र विराजि प्रभु परमेश्वर, देव जिनेश्वरके मन भाये।।

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द गीता)

शुचि सरस उज्ज्वल जल मनोहर लाय जिनवर पूजिये,
भवत्रृषाकंद निकन्द कारन आप शीतल हूजिये;
इस विकट काल अकाल माहीं पद्मप्रभु पद ध्याईये,
तिहि भक्ति वस निज लहै पद्मा सुख अनुपम पाईअे।

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप तापित जगत माहीं अनन्तकाल गमाईयौ,
तिहिं दुख निवारन लाय चंदन जिन जजों पद ध्याईयो। ईस०

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चिरकाल भटकौ भवविषें नहिं चरन उत्तम ध्याईयौ,
तुम पद सरोज सहाय लहिकें गुण अछय जिन पाईयौ।
इस विकट काल अकाल माहीं पद्मप्रभु–पद ध्याईये,
तिहि भक्ति वस निज लहै पद्मा सुख अनुपम पाईअे।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुर असुर खग सब करे किंकर पंचशर जगका अरी,
तिहिं मदन भंजन हेत प्रभुकी पुष्प ले पूजा करी। इस०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति प्रबल चंड प्रचंड दुखदा क्षुधा जगमें जानिये,
तुम चरन पूजि महान चरुसों, तासुको बल हानिये। इस०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमोह घन अंधियारमें यह जीव बहु दुख पावही,
शुभ दीप लै जिनचरन पूजत स्वपर भेद लखावही। ईस०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दसविधि अनूप सु धूप लेकर जिनचरन पूजा करौं,
चहुं गति भ्रमण दुखताप विधि अरि ताहि क्षनमें परि हरौं। इस०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि सरस उत्तम फल मनोहर लाय जिनवर पूजिये,
अज अमर अंतकजयी निर्भय शिवरमापति हूजिये। ईस०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्घ लै जिनराज पूजौं, करौं जिनवर सेवही,
कटिजाय विधिके फंद यातें, लहौं सुख अहमेव ही। ईस०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

महावदी तिथि छठि विषे, पद्मनाथ भगवान,
गर्भ विषैं आये तिन्हैं, ध्याउं निज हित जान।

ॐ ह्रीँ माघकृष्णषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

कार्तिक सुदि तेरस दिना, जन्म लियौ जिनराज,
सो जिनवर मम उर वसौ, तारण तरण जिहाज।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

कार्तिक सुदी तेरस दिना, तजौ राजको साज,
लौकान्तिक सुर बोधियौ, तप धारो सिरताज।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

चैत सुदी पूनम तिथि, चार घातिया चूर,
लयौ देव अरहंत पद, नमूं तिन्हें सुख पूर।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लपूर्णमास्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

फागुन मास सुहावनों श्याम चतुर्थी जान,
संमेदाचल शृंगतें, पायो पद निर्वान।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ० अर्घं०

जयमाला

(सोरठा)

पद्मेश्वर महाराज, निज पद्मा मम दीजिये,
तुम्हीं जगत सिरताज, इतनो यश प्रभु लीजिये।

(छंद तोटक)

जय जय प्रभु पद्म जिनेशवरं, अलि भव्यनको सुखपूरकरं,
वर केवलज्ञान प्रकाश कियो, भवि जीवनको भ्रम मेटि दियो;

भवदाह दवानल मेघझरी, गज चार कषायन काज हरी,
दुखभूधर भंजन वज्रकला, भवसागर तारन पोत भला।

समवसश्रतकी छवि छाय रही, तिहिंकी महिम नहिं जाय कही,
तिहिं मध्य विराजित गंधकूटी, बहु रत्न अनूपम मांह जुटी;

तिहिं मध्य सिंहासन सार दिपै, तिहिं जोतिविषैं शशि सुर छिपै;
जिहिं ऊपर पद्म विराजत है, सुर मौलनकी छवि लाजत है।

तहिं ऊपर आप त्रैलोक घनी, पद्मासन सोभ अनूप बनी,
त्रय छत्र फिरैं सिर चंद्रमहा, चतुषष्टि सुचामर वीज्य महा;

इति आदि अनेक विभूतिवरं, प्रगटी सब महिमा तीर्थंकरं,
जिनके पद वंदित इन्द्र सदा, गुण गावत हैं सुरवृन्द सदा।

हमहू प्रभुजी गुण गावत हैं, तुमरे पदको सिर नावत हैं,
विनती सुनिये जिनराज यही, ममवास करो निज पास सही;

जबलों जगमें मम वास रहै, जबलों विधिनायक पास रहै,
जबलों शिवकी उर आस रहे, तबलों तुम भक्ति प्रकाश रहे।

(दोहा)

पद्मनाथ जगमें रहो, जयवंतो त्रय काल,
हरौ कुमति कृत चाल सब, करो प्रगट शिवलाल।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक मानि गये शिवथानिये;
जो नर मन वच काय प्रभू पूजे सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री सुपार्श्वनाथ-जिनपूजा

(चाल सवैया तेवीसा)

श्रीसुप्रतिष्ठ महीपतिके कुल अंबरभानु सुपारस स्वामी,
भव्य सरोजनिको विकसावन मोह महातमको रवि नामी,
स्वस्ति प्रकाशन जीवनको पग स्वस्ति चिह्न परो जगनामी,
अत्र विराजि जिनेश्वरके दुख दूर करौ प्रभु अंतरयामी।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छन्द कुसुमलता)

विधि अरिके भरमाये जगतजन जन्म मरण दुःख पाते हैं,
सो दुख दूर करनके कारन उत्तम जल ले आते हैं;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आतप तपत जगप्राणी विकल भये विललाते हैं,
तिहिं दुख दूर करनके कारन चंदन लेकर आते हैं;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण घातक अरिके वसमें काल अनंत बिताया है,
तिहि अरिफंद निकंद करनको अक्षत लेकर आया है;

जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

समर शूल दुखमूल जगतमें सुर नर वस कर राखे हैं,
तिहिं मदभंजन हेत कुसुमकर श्रीजिनचरन चढाते हैं;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु सब याके वसमें क्षुधा महा दुखकारी है,
तिहिं निरवारनको जगवासी चरुवर द्रव्य समारी है;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहमहातम छायौ जगजन शिवमारग नहिं पाते हैं,
निज उर ज्ञान प्रकाश करनको बहुविधि दीप बनाते हैं;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण घात करनको प्यारे रागद्वेष परधान बडे,
तिनको नास करनको भविजन धूपायन ले आन खडे;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुंगति भ्रमत बहुत दुख पायौ काल अनंत गमाया है,
गमनागमन निवारन कारन उत्तम फल ले आया है;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मचक्र विकराल जगतमें बहुविधि जीव भ्रमाया है,
भवभ्रम हरन करन थिरतापद यातें अर्घ चढाया है;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद सुंदरी)

शुक्ल भादव छट्ठि बखानिये, गरभ मंगल तादिन मानिये,
करत सेव शची जिनमात की, घर प्रमोद हृदय बहु भांतिकी।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

शुकल जेठ दुआदशि जानिये, जन्म मंगल तादिन मानिये,
सुर सुरेश जजें गिरि शीसजी, हम जजें इतही निशदीशजी।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

जन्मकी तिथिको जिनराजजी, तप धरो तजि राज समाजजी,
धरत संजम मनपरजे भयो, सुर असुर सबही आनंद लयौ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

असित फागुन छट्ठि सुहावनी, परम केवलज्ञान लयौ घनी,
जगत जीवनको वृष भाषियौ, हम जजैं वर ज्ञान प्रकाशियौ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

भ्रमर फागुन सप्तमि जानिये, सकल कर्म सु तादिन हानिये,
गिरिसमेद थकी शिवपद लही, हम चहें उर अष्टमि सतमही।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

जयमाला

(दोहा)

तुंग दोयसै पांच तन, सकल गुणांबुधि चंद,
भवतप हर आनंदकर, जय सुपार्श्व सुखकंद। १

(छंद लक्ष्मीधरा)

जयति जिनराज गणराज नित ध्यावहीं,
जयति जिनराज सुरराज गुण गावहीं;
रटत रिषिराज मुनिराज तुम नामको,
कटत सब कर्म भवि लहत शिवधामको। १

गर्भसे पूर्व षटमास मणि वर्षियो,
जन्मके होत तिहुं लोक–जन हर्षियो;
अवधि बल जानि हरि आय सेवा करी,
मेरुगिरि शीस जिन–न्हवनविधि विस्तरी। २

क्षीरसागरतनों नीर निर्मल महा,
सहस अरु आठ भरि कलश हाथै लहा;
शक्र जिनईशके शीश जल ढारियौ,
बजत दुन्दुभि महाशब्द जयकारियौ। ३

अघघ घघ घघघ घघ घघघ धुनि हो रही,
भभभभ भभ भभभ भभ घघघ घघ सोरही,
संख पटहादि बाजे बजैं घोरही,
किन्नरी गीत गावें महा शोरही। ४

न्वहन करि इन्द्र जिनराज गुण गावहीं,
जन्मकल्याण कर देव दिव जावहीं;
बहुरि जिनराज कछु काल करि राजको;
त्यागि ग्रहवास व्रतधारि शिव साजको। ५

ध्यान कर खड्ग लै मोह अरि मारियो,
शेष रज विघ्न चउ घाति संहारियो;
समवसरणादि रचना बनी पावनी,
बाह्य अभ्यन्तरे सर्व सोभा बनी। ६

इन्द्र धरनेंद्र नागेन्द्र तहां आईयौ,
पूजि जिनराजको शीस निज नाईयौ;
धर्म उपदेश दै भव्य जन तारियौ,
शैल संमेदतैं सिद्धपद धारियौ। ७

अधम उद्धारको देव तुम हो सही,
जानि यह टेव तुम चरम सेवक गही;
अरज जिनराज यह आज सुनि लीजिये,
दासको वास प्रभु पास निज दीजिये। ८

(दोहा)

करुनानिधि जगतार तुम, सरनागत प्रतिपाल;
इस दुकखम कलिकालमें निज निधि देहु दयाल।

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक मानि गये शिव—थानिये;

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

जो नर मन वच काय प्रभु पूजे सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री चन्द्रप्रभ-जिनपूजा

(छप्पय)

चारुचरन आचरन, चरन चितहरन चिह्नचर,
चन्द चन्दतन चरित, चंदथल चहत चतुर नर;
चतुर चंड चकचूरि, चारि चिद्‌चक्र गुनाकर,
चंचल चलित सुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर।
चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चकहि चिरनंद शुचि;
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चि रुचि।

(दोहा)

धनुष डेढसै तुंग तन, महासेन नृपनंद;
मातु लछमना उर जये, थापों चन्दजिनंद।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! इति सन्निधिकरणम्।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(चाल द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टककी अष्टपदी तथा होली की तालमें)

गंगाहृदनिरमल नीर हाटकभृंग भरा;
तुम चरन जजों वर वीर मेटो जनम-जरा;
श्रीचंदनाथ दुति चंद चरनन चंद लगै,
मन वच तन जजत अमंद, आतमजोति जगै।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंडकपूर सुचंग, केशर रंग भरी,
घसि प्रासुक जलके संग, भवआताप हरी। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित सोम समान, सम लै अनियारे,
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरद्रुम के सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै,
तासों पद पूजत चंग कामविथा जावै। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज नाना परकार, इन्द्रिय बलकारी,
सो लै पद पूजों सार, आकुलताहारी। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम भंजन दीप संवार, तुम ढिंग धारतु हों,
मम तिमिर मोहनिरवार, यह गुन धारतु हो। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभु खेवतु हौं,
मम करम दुष्ट जरि जांहि, यातैं सेवतुं हौं;
श्रीचंदनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगै,
मन वच तन जजत अमंद, आतमजोति जगै।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तम फल सु मंगाय, तुम गुन गावत हौं,
पूजों तन मन हरषाय, विघन नशावतु हौं। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों,
पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनि गमों। श्रीचंद०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद तोटक वर्ण १२)

कलि पंचम चैत सुहात अली,
गरभागममंगल मोद भली;
हरि हर्षित पूजत मातु पिता,
हम ध्यावत पावत शर्मसिता।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष इकादशि जन्म लयो,
तब लोकविषें सुख थोक भयो;
सुरईश जजें गिरशीश तबै,
हम पूजत हैं नुतशीश अबै।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा,
कलि पौष अग्यारसि पर्व वरा;
निज ध्यानविषै लवलीन भये,
धनि सो दिन पूजत विघ्न गये।

ॐ ह्रीँ पोषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वर केवलभानु उद्योत कियो,
तिहुं लोकतणो भ्रम मेट दियो;
कलि फाल्गुन सप्तमि इन्द्र जजे,
हम पूजहिं सर्व कलंक भजे।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित फल्गुन सप्तमि मुक्ति गये,
गुणवन्त अनन्त अबाध भये;
हरि आय जजे तित मोद धरे,
हम पूजत ही सब पाप हरे।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

हे मृगांक अंकितचरण, तुम गुण अगम अपार,
गणधरसे नहि पार लहिं, तौ को वरनत सार। १

पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय,
तातैं गाउं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय। २

(पद्धरी छंद)

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान, भवकानन हानन दवप्रमान;
जय गरभजनममंगल दिनन्द, भवि जीवविकासिन शर्मकंद। ३

दशलक्ष पूर्वकी आयु पाय, मनवांछित सुख भोगे जिनाय;
लखि कारण ह्वै जगतैं उदास, चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास। ४

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग, हरि शिबिका सजि धायो अभोग;
तापै तुम चढि जिनचंदराय, ता छिनकी शोभा को कहाय। ५

जिन अंग सेत सित समर ढार, सित छत्र शीश गलगुलकहार;
सित रतनजडित भूषण विचित्र, सित चंद्रचरण चरचैं पवित्र। ६

सित तनद्युति नाकाधीश आप, सत शिबिका कांधे धरि सुचाप;
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व, सित चित में चिंतत जात पर्व। ७

सित चंदनगरतैं निकसि नाथ, सित बन में पहुंचे सकल साथ;
सित शिलाशिरोमणि स्वच्छ छांह, सित तप तित धार्यो तुम जिनाह। ८

सित पयको पारणा परम सार,सित चंद्रदत्त दीनों उदार;
सित करमें सो पयधार देत, मानों बांधत भवसिंधु सेत। ९

मानां सुपुण्यधारा प्रतच्छ, तित अचरज पनसुर किय ततच्छ;
फिर जाय गहन सित तप करंत, सित केवलज्योति जग्यो अनंत। १०

लहि समवसरन रचना महान, जाके देखत सब पापहान;
जहं तरु अशोक शोभै उतंग, सब शोक तनो चूरै प्रसंग। ११

सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात, मनु मन्मथ तज हथियार जात;
वानी जिन मुखसौं खिरत सार, मनु तत्त्वप्रकाशन मुकुर धार। १२

जहं चोसठ चमर अमर ढुरंत, मनु सुजस मेघझरि लगिय तंत;
सिंहासन है जहं कमलजुक्त, मनु शिवसरवर को कमलशुक्त। १३

दुंदुभि जित बाजत मधुर सार, मनु करमजीतको है नगार;
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण, मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण। १४

तन प्रभातनों मंडल सुहात, भवि देखत निजभव सात सात;
मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय, भविजन भव मुख देखत सुआय। १५

इत्यादि विभूति अनेक जान, बाहिज दीसत महिमा महान;
ताको वरणत नहिं लहत पार, तौ अंतरंग को कहे सार। १६

अनअन्त गुणनिजुत करि विहार, धर्मोपदेश के भव्य तार;
फिर जोगनिरोधि अघाति हान, सम्मेदथकी लिय मुक्तिथान। १७

वृन्दावन वन्दत शीश नाय, तुम जानत हो मम उर जु भाय;
तातैं का कहौं सु बार बार, मनवांछित कारज सार सार। १८

(छंद धत्तानंद)

जय चंद जिनंदा आनंदकंदा, भवभयभंजन राजे हैं;
रागादिक द्वन्दा हरि सब फंदा, मुक्तिमांहि थिति साजे हैं। १९

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद चौबोला)

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं;
ताके भवभवके अघ भाजैं, मुक्तसार सुख ताहि सजैं।
जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं;
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातें शिवपुरि राज रजैं।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री चन्द्रप्रभ-जिनपूजा

चारित चंद्र चतुष्टय मंडित चारि प्रचंड अरी चकचूरे,
चंद्र विराजत चर्णविषै यह चंद्रप्रभासम हैं गुणपूरे।
चारु चरित चकोरनके चित चोरन चंद्रकला बहु सूरे,
सो प्रभु चंद्र समंत गुरुर्चित चिंतत ही सुख होय हजूरे।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(चाल जोगीरासा)

पद्मद्रह सम उज्ज्वल जल ले शीतलता अधिकाइ,
जन्म जरा दुःख दूर करनको, जिनवर पूज रचाइ;
चंचल चितको रोकि चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभू चित धारो।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर वर बावन चंदन केसरि संग घसाओ;
भव आताप निवारन कारन श्री जिनचरण चढाओ। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र किरन सम श्वेत मनोहर खंड विवर्जित सोहे,
ऐसे अक्षतसों प्रभु पूजों जगजीवन मन मोहे। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के शुचि पुष्प मनोहर वरन वरनके लावो,
कामदाह निरवारन कारण श्री जिनचरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधिके व्यंजन ताजे स्वच्छ अदोष बनावो,
रोग क्षुधा दुःख दूर करनको श्रीजिनचरण चढावो।
चंचल चितको रोकी चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभू चित धारो।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक रतनमय दीप मनोहर उज्ज्वल ज्योति जगावो,
मोह महातम नाश करनको, जिनवर चरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दसविधि धूप हुतासनमांही खेय सुगंध बढावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधिके उत्तम फल लै तनमनको सुखदाइ,
दुःख निवारन शिवफल कारन पूजैं श्री जिनराइ। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्रीजिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद कुसुमलता)

चैत प्रथम पंचम दिन जानों, गर्भागम मंगल गुणखान,
मात लक्ष्मणाके उर आये, तजि दिवलोक चंद्र भगवान;
षट् नवमास रतन वरषाये, इंद्र हुकुमतें घनद महान,
तिनके चरनकमल मैं पूजूं, अर्घ चढाय करूं नित ध्यान।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति०

पूस वदी ग्यारसिको जन्मे, चंद्रपुरी जिन चंद्र महान,
महासेन राजाके प्यारे सकल सुरासुर माने आन;
सुरगिरि पर अभिषेक किया हरि, चतुरनिकाय देव सब आन;
सो जिनचंद्र जयौ जगमांही, अर्घ चढाय करूं नित ध्यान।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूस वदी ग्यारसि तप लीनों, जानों जगत अथिर दुखदान,
राज त्यागि वैराग धरौ वन, जाय कीयौ आतम कल्यान;
सुरनर मिलि खग पूज रचायी, मनमें अतिही आनंद मान,
ऐसे चंद्रनाथ जिनवरको, अर्घ चढाय करूं नित ध्यान।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सप्तमि दिने जानों, चार घातिया घाति महान,
सकल सुरासुर पूजि जगतपति, पायौ तिहि दिन केवळज्ञान;
समवसरन महिमा हरि कीनी, दीनी दृष्टि चरन जिन आन,
ऐसे चंद्रनाथ जिनवरको, अर्घ चढाय करूं नित ध्यान।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सातें सुदि फागुनके महिना, संमेदाचल शृंग महान,
ललितकूट उपर जगपतिने, पायो आतम शिवकल्यान;
सुर सुरेश मिलि पूज रचाइ, गायौ गुण हर्षित चित ठान,
सुगुरु समन्तभद्रके स्वामी, देहु जिनेश्वरको सतज्ञान।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनशुकलसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

अष्टम क्षितिपति तुम धनी, अष्टम तीरथराय,
अष्टम पृथ्वी कारने, नमूं अंग वसु नाय। १

(चाल 'अहो जगतगुरु' की)

अहो चंद्र जिनदेव, तुम जगनायक स्वामी,
अष्टम तीरथराज, हो तुम अंतरयामी। १

लोकालोक मँझार, जड चेतन गुणधारी,
द्रव्य छहूं अनिवार, पर्यय शक्ति अपारी। २

तिहिं सबको इकवार, जानें ज्ञान अनंता,
ऐसो ही सुखकार दर्शन है भगवंता। ३

तीनलोक तिहुं काल ज्ञायक देव कहावौ,
निरबाधा सुखसार तिहिं शिवनाथ रहावौ। ४

हे प्रभु! या जगमांहि मैं बहुते दुख पायौ,
कहन जरूरति नांहि तुम सबही लखि पायौ। ५

कबहूं नित्य निगोद कबहूं नर्क मंझारी,
सुरनरपशुगति मांहि दुकख सहे अतिभारी। ६

पशु गतिके दुख देव, कहत बढै दुख भारी,
छेदन भेदन त्रास शीत उष्ण अधिकारी। ७

भूख प्यासके जोर सबल पशू हनि मारै,
तहां वेदना घोर हे प्रभु कौन समारै। ८

मानुष गतिके मांही यद्यपि है कछु साता,
तोहू दुख अधिकाय क्षण क्षण होत असाता। ९

धन जोबन सुत नारि संपति और घनेरी,
मिलत हरष अनिवार बिछुरत विपत घनेरी। १०

सुरगति इष्ट वियोग पर संपति लखि झूरे,
मरन चिह्न संयोग उर विकलप बहु पूरे। ११

यों चारों गतिमांहि दुःख भरपूर भरौ है,
ध्यान धरो मनमांहि यातैं काज सरौ है। १२

कर्म महादुख साज याको नास करौजी,
बडे गरीबनिवाज मेरी आश भरौजी। १३

समंतभद्र गुरुदेव ध्यान तुमारो कीनों,
प्रगट भयौ जिनबिंब जिनवर दर्शन कीनों। १४

जब तक जगमें वास तब तक हिरदै मेरे,
कहत जिनेश्वरदास शरन गहौं मैं तेरे। १५

(दोहा)

जग जयवंते होहु जिन, भरौ हमारी आस;
जय लक्ष्मी निज दीजिये, कहत जिनेश्वरदास।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(आडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिव थानिये;
जो नर मन वच काय प्रभु पूजे सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

*

श्री पुष्पदंत-जिनपूजा

(छंद–मदावलिप्तकपोल तथा रोडक, मात्रा २४)

पुष्पदंत भगवन्त सन्त सुजपन्त तन्त गुन,
महिमावन्त महन्त कंत शिवतियरमन्त मुन;
काकंदीपुर जनम पिता सुग्रीव रमासुत,
स्वेत वरन मनहरन तुम्हें थापों त्रिवार नुत।

ॐ ह्रीँ श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्रअवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चार होलीकी—ताल जत्त)

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदंत जिनराय, मेरी। ।।टेक।।
हिमवनगिरिवित गंगाजल भर, कंचनभृंग भराय;
करमकलंक निवारनकारन, जजों तुम्हारे पाय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

बावन चंदन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय;
चरचों चरन हरन मिथ्यातम, वीतराग गुण गाय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशि सम द्युति दमकाय,
ताको पुंज धरों चरनन ढिग, देहु अखयपद राय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सुमन सुमन सम परिमलमंडित गुंजत अलिगन आय;
ब्रह्मपुत्रमदभंजनकारण, जजों तुम्हारे पाय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

११

घेवर बावर फेनी गुंजा, मोदन मोदक लाय;
क्षुधावेदनी रोगहरनको, भेंट धरों गुण गाय।
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदंत जिनराय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाय;
तिमिर–मोह नाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

दशवर गंध धनंजयके संग, खेवत हौं गुण गाय;
अष्टकर्म ये दुष्ट जरैं सो, धूम धूम सु उडाय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल मातुलिंग शुचि ×चिरभट, दाडिम आम मंगाय;
तासों तुम पदपद्म जजत हों, विघन सघन मिट जाय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन वच तन हुलसाय;
तुम पद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय। मेरी०

ॐ ह्रीँ श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद स्वयंभू मात्रा ३२)

नवमी तिथि कारी फागुन धरी, गरभमांहि थिति देवा जी,
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवा जी;
रतननकी धारा परम उदारा, परी व्योमतैं सारा जी,
में पूजौं ध्यावों भगति बढावौं, करो मोहि भवपारा जी।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

× फक्त खरबूजा।

मगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं, जनमे तीरथनाथाजी;
तब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निज माथाजी;
सुरगिरि नहवाये मंगल गाये, पूजे प्रीति लगाई जी,
मैं पूजौं ध्यावौं भगति बढावौं, निजनिधि हेत सहाई जी।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षशुक्लाप्रितपदादिने जन्ममंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं०

सित मगसिरमासा तिथि सुखरासा, अेकमके दिन धारा जी,
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकारा जी;
सुरमित्र सुदानी के घर आनी, गो–पय–पारन–कीना है,
तिनको मैं बन्दौं पापनिकन्दौं, जो समतारसभीना है।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदादिने तपोमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित कार्तिक गाये दोईज धाये, घातिकरम परचंडा जी,
केवल परकाशे भ्रमतम नाशे, सकल सारसुख मंडा जी;
गनराज अठासी आनंदभासी समवसरण वृषदाता जी,
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजें जगत्राता जी।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आसिन सित सारा आठें धारा, गिरि समेद निरवाना जी,
गुन अष्टप्रकारा अनुपम धारा, जै जै कृपा–निधाना जी;
तित इन्द्र सु आये पूज रचाये, चिह्न तहां करि दीना है,
मैं पूजत हों गुन ध्याय महीसौं, तुमरे रसमें भीना है।

ॐ ह्रीँ आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

लच्छन मगर सुश्वेत तन, तुंग धनुष शत अेक;
सुरनरवंदित मुकतिपति, नमों तुम्हें शिर टेक। १

पहुपरदन गुनवरन जिम, सागरतोय समान;
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान। २

(छंद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी, मात्रा १६)

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते, पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते;
ज्ञानध्यान अमलान नमस्ते, चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते। ३

भवभयभंजन देव नमस्ते, मुनिगनकृतपदसेव नमस्ते;
मिथ्यानिशिदिनिइन्द्र नमस्ते, ज्ञानपयोदधिचन्द्र नमस्ते। ४

भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते, रागदोषमदहंद नमस्ते;
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते, धर्मसुधारसपूर नमस्ते। ५

केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते, सकल चराचरभास नमस्ते;
विघ्नमहीधर–विज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते। ६

जय मकराकृतपाद नमस्ते, मकरध्वजमदवाद नमस्ते;
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते, जय जय अधम उधार नमस्ते। ७

दयाधुरंधर धीर नमस्ते, जय जय गुनगंभीर नमस्ते;
मुक्तिरमापति वीर नमस्ते, हरता भवभयपीर नमस्ते। ८

व्युतपतिथितिधार नमस्ते, निज अधार अविकार नमस्ते;
भव्यभवोदधितार नमस्ते, वृंदावन–निसतार नमस्ते। ९

(धत्ता)

जय जय जिनदेवं, हरिकृतसेवं, परमधरमघनधारी जी;
मैं पूजौं ध्यावौं गुनगन गावों, मेटो विथा हमारी जी। १०

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद–मदाविलिप्त कपोल)

पुष्पदंत पद संत, जजै जो मन वच काई,
नाचै गावै भगति करै, शुभपरनति लाई;
सो पावै सुख सर्व, ईंद अहमिंद तनों वर,
अनुक्रमतें निरवान लहै, निहचै प्रमोद धर। ११

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री शीतलनाथ-जिनपूजा

शीतल जुग क्रम नमूं धर्म दशधा इम भाख्यो,
उतिम छिमा सु आदि अन्त ब्रह्मचर्य सु आख्यो;
सुनि प्रतिबुध ह्वै भवी मोछि–मारगकूं लागे,
आह्वानन विधि करूं चरण जुगकरि अनुरागे।

ॐ ह्रीँ श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

ऋतु शरद इन्द्र समान अंगसु स्वच्छ शीतल अति घणो,
भरि हेम झारी धार देवै, नीर हिमवन गिरि तणो;
भवि पूजि शीतलनाथ जिनवर, नशें भवके ताप ही,
आतंक जाय पलाय शिव तिय, होय सनमुख आप ही।

ॐ ह्रीँ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

कर्पूर नीर सुगंध केसरि, मिश्र चंदन बावना,
जिनराज पूजे दाह नासे, होय सुख रलियावना।
भवि पूजि शीतलनाथ जिनवर, नशें भवके ताप ही,
आतंक जाय पलाय शिव तिय, होय सनमुख आप ही।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

उत्तम अखंडित सालि उज्ज्वल, दुरित खंडनकार ही,
करि पुंज श्रीजिनचरण आगे, अखै पद करतार ही। भवि पूजि०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

निरदोष सद्य अनेक विधिके, कुसुम पावन ल्याय ही,
जिन चरणचरचि उछाह सेती, समरबाण नसाय ही। भवि पूजि०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

पकवान सुंदर सुरहि घिव करी छह सुरसके मिष्ट ही,
धरि कनक भाजन पूजि जिनवर, छुधा नासै दुष्ट ही। भवि पूजि०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणि दीप जोति उद्योत सुंदर, कनक भाजन धारिये,
जिन पूजि भविजन मोह नासै, स्वपर तत्त्व निहारिये। भवि पूजि०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

श्रीखंड अगर कपूर उत्तम, कनक धूपायन भरें,
भवि खेय श्रीजिन चरण आगे दुष्ट कर्म सबै जरें। भवि पूजि०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल लेहि उत्तम मिष्ट मोहन, लौंग श्रीफल आदि ही,
जिन चरण पूजै मुक्तिके फल, लहै अचल अनादि ही। भवि पूजि०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अति दीप ही,
करि अर्घ धूप समेत फल ले, 'रामचंद्र' अनूप ही। भवि पूजि०

ॐ ह्रीँ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

चैत्र कृष्ण अष्टमि चये, अच्युततैं भगवंत,
उदर सुनंदा अवतरे, जजूं मोक्षके कंत।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्ण द्वादशी माघकी, जनमे श्रीजिनराय,
उत्सव करि [1]वासव जजे, मैं जजिहूं जुग पाय।

ॐ ह्रीँ माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित माघ द्वादसि तजी, तृणवत भूति महान,
नगन दिगंबर वन वसे, जजूं दसम भगवान।

ॐ ह्रीँ माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष चतुरदसि श्याम ही शुक्लध्यान असि धारि,
हने कर्म चउ घातिया, जजूं देव मुझ तारि।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमि सित आसोज की, गये मोक्ष भगवान,
वसु विधि पदपंकज जजूं, मोहि देहु शिवथान।

ॐ ह्रीँ आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१ इन्द्र

जयमाला

(दोहा)

सीतल तुम पद कमलजुग, नमूं सीस धरि हाथ,
भवदधि डूबत काढि मो, कर अवलंब दे हाथ। १

(चाल मंगल की)

सीतल पद जुग नमूं उभै कर जोरही,
[1]भिदलापुर अवतरे अच्युतपद छोरिहि;
दिढरथ तात विख्यात सुनंदा मायजी;
चैत कृष्ण वसु गर्भ लिये सुखदायजी।

सुखदाय गर्भकल्याण काजे आंय सुरपति सब मिले,
जननी सुसेवा राखि धनपति आप सुरलोकें चले;
षट्मास ले नवमास दिनमें वार त्रिय मणि वर्षये,
गर्भकल्याण महंत महिमा देखि सब जन हर्षये। २

पूर्वाषाढ नछित्र माघ वदि द्वादसी,
जनमे श्रीजिननाथ नभोगण सब हंसी;
चतुरनिकाय मझारि घंटादि बजे भले,
नये मौलि फुनि पीठ सव हरिके चले।

चले पीठ अवधितें जिन जन्म निश्चै हरि लखो,
डगि सप्त चलि नुति ठानि बासव मेरु चलनेकूं अखो;
जिन लेय पांडुक–वनविषैं अभिषेक करि पूजा करी,
पित मात दे जन्मा कल्याणक ठानि थल चालो हरी। ३

हेम वरण तन तुंग निवै धनुको सही,
लच्छिन श्रीवछ आयु पूर्व लखकी कही;

१ भेलसा--विदिशा

नीति निपुण करि राज तजौ तृणवत तबै,
लौकांतिक सुर आय संबोधि चले सबै।

संबोधि आये माघ द्वादसि कृष्ण श्रीजिन वन गये,
नमः सिद्धेभ्यः कहि लौंच कीनों उपधि तजि कर मुनि भये;
सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवलमंगल गायही,
निःकर्मकल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पायही। ४

षष्टम धरि निज ध्यान विषै प्रभु थिर भये,
पूरन करि अनिकाज सेयपुरमें गये;
क्षीरदान जुत भक्ति पुनर्वसुजी दिये,
हरिष देव आश्चर्य पंच ततखिण किये।

आश्चर्य कीये रत्न वर्षे अर्घ द्वादश कोडि ही,
धरि ध्यान शुक्ल उपाय केवल घाति चारों तोडि ही;
चर अचर लोक अलोक जुगपति देखि सबही वर्निये,
सुनि इन्द्र ज्ञानकल्याणक उत्सव पौषवदि चउदसि किये। ५

योजन साढा सात लसै समवादि ही,
लखि मुनिमै गणदेव इकासी आदि ही;
पूरव सहस पचीस हीन बृष तीन ही,
विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही।

भई छीन समेदगिरितैं आश्वनी सित अष्टमि सही,
असि ध्यान सुकल थकी अघाते हनै मुक्तितिया लही;
सब ईन्द्र आय कियो महोत्सव मोक्ष मंगल गायही,
हूं नमूं सीतलनाथ के पद अमल गुणगण ध्यायही। ६

वसु खित वसु क्रम हानि वसे वसु गुणमई,
ज्ञानावरणज घाति विश्व जान्यो सही;

देखो लोक अलोक हने दर्शनावलि;
वेदनिको करि नाश अबाध भये वली।

पुनी बली शुद्ध चरित्रमें थिर मोह नाशथकी भये,
अवगाह गुण छय आयुतें निरकाय नाम गये थये;
गुण अगुरुलघु छय गोतके अंतराय छय बलनंत ही,
सिध भये सीतलनाथजी तिरकाल बंदे संत ही। ७

वसु गुण ये विवहार नियत अनंत ही,
जाणे गणधर पै न बखानत अंत ही;
ज्यों जलनिधि विस्तार कहें करतें इतो,
बाल न मरम लहंत न जानत हैं कितो।

कितनौ न जानै उदधि है, जिम तुहें गुण वरणन करूं,
मैं भक्तिवश वाचाल ह्वै कछु शंक मन नाहीं धरूं,
गुण देहु तेरी करूं विनती अहो सीतलनाथजी,
'चंद्रराम' सरनि तिहार आयो जोरि करिके हाथजी। ८

(दोहा)

सीतलके पद कमल जुग, त्रिविध नमूं सुख पाय,
भवदुःख ताप मिटाईयो, अहो दसम जिनराय। ९

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

✾

श्री श्रेयांसनाथ-जिनपूजा

(हरिगीत)

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयांसनाथ जिनन्दजी,
सिंहपुर जनमे सकल हरि, पूजे धरि आनन्दजी;
भवबंधध्वंसनहेत लखि मैं, शरन आयो येवजी,
थापौं चरन जुग उर कमलमें, जजनकारन देवजी।

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीत)

कलधौतवरन उतंग हिमगिरि पदमद्रहतैं आवई,
सुरसरितप्रासुक उदकसों भरि भृंगधार चढावई;
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवननंद आनन्दकन्द हैं,
दुखदन्दफंदनिकन्द पूरनचन्द जोति अमन्द हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसों सही,
भवतापभंजनहेत भवदधिसेत चरन जजों सही। श्रे०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

सितशालि शशिदुतिशुक्ति सुंदर मुक्तिकी उनहार हैं,
भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं। श्रे०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सदसुमन सुमनसमान पावन, मलयतैं मधु झंकरैं,
पदकमलतर धरतैं तुरति सो मदनको मद क्षय करैं। श्रे०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

यह परममोदक आदि सरस संवारि सुंदर चरु लियौ,
तुव वेदनीमदहरन लखि, चरचों चरन शुचिकर हियौ।
श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवन्द आनन्दकन्द हैं,
दुखदन्दफंदनिकन्द पूरनचन्द जोति अमन्द है।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

संशयविमोहविभरम तम भंजन दिनंद समान हो,
तातैं चरनढिग दीप जोऊं देहु अविचलज्ञान हो। श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाईया,
दहि अमरजिह्व विषै चरनढिग करमभरम जराईया। श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावनें,
लै भगतिसहित जजौं चरन शिव परमपावन पावनें। श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल मलय तंदुल सुमन चरु अरु दीप धूप फलावली,
करि अरघ अरचों चरन जुग प्रभु मोहि तार उतावली। श्रे०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद आर्या)

पुष्पोत्तर तजि आये, विमला उर जेटकृष्ण आठें कों,
सुर नर मंगल गाये, मैं पूजों नासि कर्मकांठे कों।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमें फागुन कारी, अेकादशि तीन ग्यानदृगधारी,
इक्ष्वाकवंशतारी, मैं पूजों घोर विघ्नदुखटारी।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतनभोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तपधारा,
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजौं पाद अष्टपरकारा।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुजान, माघवदी पूर्ण तित्थको देवा,
चतुरानन भवभानन, बंदौ ध्यावौं करौं सुपदसेवा।

ॐ ह्रीँ माघकृष्णामावस्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको,
कुलिशायुध गुन गायो, मैं पूजों आप निकट आवनको।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द लोलतरंग, वर्ण ११)

शोभित तुंग शरीर सु जानों, चाप असी शुभ लच्छन मानो;
कंचन वर्ण अनुपम सोहे, देखत रूप सुरासुर मोहै। १

(छन्द पद्धरी)

जै जै श्रेयांस जिन गुनगरिष्ट, तुम पद जुग दायक फल सु मिष्ट,
जै शिष्ट शिरोमनि जगतपाल, जै भविसरोजगन प्रातकाल। २

जै पंचमहाव्रत गज सवार, लै त्यागभाव दलबल सु लार;
जै धीरजकों दलपति बनाय, सत्ता छितमहं रनको मचाय। ३

धरि रतन तीन तिहुं शक्ति हाथ, दश धरम कवच तप टोप माथ;
जै शुक्लध्यानकर खडग धार, ललकारे आठों अरि प्रचार। ४

तामै सबको पति मोह चंड, ताकों ततछिन करि सहस खंड;
फिर ज्ञानदरस प्रत्यूह हान, निजगुनगढ लीनों अचल थान। ५

शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्य सार, हुव समवसरण रचना अपार;
तित भाषे तत्त्व अनेक धार, जाको सुनि हिये विचार। ६

निज रूप लह्यो आनन्दकार, भ्रम दूर करनको अति उदार;
पुनि नय प्रमान निच्छेप सार, दरसायो करि संशय प्रहार। ७

तामैं प्रमान जुगभेद अेव, परतच्छ परोछ रजै सुमेव;
तामैं प्रतच्छके भेद दोय, पहिलो है सविवहार सोय। ८

ताके जुगभेद विराजमान, मति श्रुति सोहै सुंदर महान;
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ, है भेद जुगम तामांहि दच्छ। ९

इक अेकदेश इक सर्वदेश इकदेश उभैविधिसहित वेश;
वर अवधि सु मनपरजै विचार, है सकलदेश केवल अपार। १०

चरअचर लखत जुगपत प्रतच्छ, निरद्वंद रहित परपंच पच्छ;
पुनि है परोच्छमहं पंच भेद, समिरति अरु प्रतिज्ञानवेद। ११

पुनि तर्क और अनुमान मान, आगमजुत पन अब नय बखान,
नैगम संग्रह व्यौहार गूढ, रिजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ। १२

पुनि अेवंभूत सु सप्त अेम, नय कहे जिनेश्वर गुन जु तेम;
पुनि द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव, निक्षेप चार विधि इमि जनाव। १३

इनको समस्त भाख्यो विशेष, जा समुझत भ्रम नही रसन लेश;
निज ज्ञानहेत ये मूल मंत्र, तुम भाखे श्रीजिनवर सु तंत्र। १४

इत्यादि तत्त्वउपदेश देय, हनि शेष करम निरवान लेय;
गिरवान जजन वसु दरव ईश, वृंदावन नितप्रति नमत शीश। १५

(धत्तानंद छंद)

श्रेयांस महेशा सुगुनजिनेशा, वज्रधरेशा ध्यावतु है;
हम निशदिन वंदै पापनिकंदै ज्यों सहजानंद पावतु है। १६

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

जो पूजै मन लाय; श्रेयनाथ पदपद्मको;
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरे।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री श्रेयांसनाथ-जिनपूजा

सिंहपुरी विमलेश्वर नृपके जिनश्रेयांस लयौ अवतार,
शीलसिरोमणि विमला माता तादिन हर्ष लयौ अनिवार।
भविजन कमलदिवाकर स्वामी केवलज्ञानप्रकाश अपार,
मोह महातम नास कियो प्रभु अत्र तिष्ठ मम सुख विस्तार।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(चाल नंदीश्वरर पूजाकी)

जल पद्मद्रहको सार कंचन भृंग भरा,
जिन चरनन देत चढाय मेटौ जन्म जरा;
जिनश्रेयनाथ महाराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजे निज निधि साज मम उर आस भरो।

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

भवताप अधिक दुखदाय सो तुम नाश करौ,
मैं पूजूं चंदन लाय स्वगुण प्रकाश करो; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

शुचि अक्षत स्वच्छ महान, जिनपद अग्र धरौं,
निज अक्षय गुन पहिचान, स्वहित प्रकाश करौ; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०

जिन जीते काम करूर, तिन पद श्रेय करूं,
प्रभु यह गुण देहु जरूर, पुष्प सुभेंट धरूं; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

शुचि नेवज विविध बनाय, जिनपद अग्र धरू,
सब दोष क्षुधा निरवार, निजगुण प्रगट करू; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

तुम ज्ञान जोति परकाश, लोकालोक लखै,
मैं पूजूं दीपक धार, दीजे ज्ञान अखै; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

बहु धूप सुगंध अनूप, प्रभु सनमुख लावौ,
दहि कर्मकाष्ठ दुखरूप, शिव सुंदरि पावौ; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

तुम शिवफलदायक सार, मुनिजन इम गावें,
जिन चरन अग्र फल धार, भविजन शिव पावें; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ बनावत हैं,
पद पूजत श्रीजिनराय, दिव शिव पावत हैं; जिन०

ॐ ह्रीँ श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

पुष्पोत्तर तजिके प्रभु, विमला माता सार,
जेठ वदी आठें दिना, भयो गर्भ अवतार।

ॐ ह्रीँ ज्येष्ठकृष्णअष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

फागुनवदि ग्यारस तिथी, तीन ज्ञान गुणधार,
जन्म लयौ जिनराजने, नमों चर्ण हितकार।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

फागुनवदि ग्यारस तिथि, तजो राजको भार,
सकल सुरासर पूज्य प्रभु, धरे महाव्रत सार।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

माहवदी मावस विषें, चार घातिया चूर,
पायौ ज्ञान महान मम, करौ कर्ममल दूर।

ॐ ह्रीँ माघकृष्णअमावस्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सावनसित पूनम दिना, सम्मेदाचल शीस,
जोग निरोध गये प्रभु, शिवमंदिर जगदीश।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

कंचन वरण शरीर शुभ, निरखत थकित सुरेश,
निज स्वरूप मम दीजिये, श्री श्रेयांस जिनेश।

(छंद पद्धरी)

जय जय श्रेयांस जिनेश सार, तुम गुण गणराज लहै न पार,
श्रुतपारग इन्द्रादिक समस्त, अरु रिषि महंत मुनिजन प्रशस्त।

तुम सब चरणाम्बुज सेव देव, निज जन्म सफल जानत स्वमेव,
तुम पदयुग दायक इष्ट शिष्ट, तुम पद शिवदायक गुणगरिष्ट।

तुम तप तुरंग असवार होय, अरु पहर विरागी कवच सोय,
दश धर्म चक्र अति प्रबल सार, रत्नत्रय तीक्षण खडग धार।

सत्‌ज्ञान सरासन स्वबल तान, धरि ध्यान महा तीक्षण सुबान,
व्रत समिति गुप्ति भट लेय लार, रण चारि तरंगमहीं निहार।

असहाय आप बहु अरिन बीच, अरि मारि गिरायो महा नीच,
फिर विघ्न अरीरज अेकसाथ, हनि भअे आप त्रैलोक्यनाथ।

सब समवसरन लक्ष्मी अपार, जय बजै दुन्दुभि घोष सार,
वसु प्रातिहार्य महिमा अनंत, द्रग ज्ञान वीर्य सुख नंत नंत।

इत्यादि अतुल शोभानिधान, पद्मासन आप विराजमान,
सुर असुर शीस नावै त्रिकाल, मुनिवर गावै गुण नमत भाल।

धर्मोपदेश दै भव्य तार, पहुंचे सम्मेदाचल मझार,
सब जोग रोध शिव लहो जाय, मैं तिनकूं बंदू शीस नाय।

भव काननहानन दव महान, दुख गजको विकटानन समान,
विधि अरि सिर छेदन प्रबलमान, प्रभु मोको दीजो अभयथान।

सुख सागरको नक्षत्र ईश, मम वास देहु प्रभु जगत शीस,
यह अरज हमारी सुनो सार, संसार खारतें करौ पार।

(दोहा)

श्रेयमार्ग दाता तुम्हीं श्रेयनाथ भगवान,
अरज जिनेश्वरकी सुनो, देहु परम कल्याण।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक मानि गये शिव–थानिये;
जो नर मन वच काय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सहज चिदानंद

श्री वासुपूज्य-जिनपूजा

(छंद कुसुमलता)

श्रीमत् वासपूजपद जिनपद, भक्ति सहित निज शीस नवाय,
बालब्रह्मचारी जगतारी, जिनकी पाटल देव्या माय।
अरुन वरन मनहरन जिन्होंका, दिव्य देह लखि सुर हर्षाय,
सो जिन वासपूज सुखदाई, अत्र तिष्ठ मम करौ सहाय।

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद शिखरिणी)

महा गंगा नीरं विमल गुणणं शीत अधिको,
करौं पूजा स्वामी मम दुख हरौ ताप त्रषको;
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको,
सुनों वासंपूजे हरो दुख स्वामी मरनको।

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

सुगंधें गंभीरं मलय चलजातं अनूपमं,
करौं भक्ति सेती तुम चरन पूजा स्वहितदं। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

महास्वक्षै सुभ्रै अछत शुचि आगे सुजिनके,
करौं पूजा भक्ति अखय गुण गावैं सुतिनके। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सहा जाता नाहीं अतन दुख भारी जगतमें,
प्रभुको पूजों मैं कुसुम वर लेके भगतिसें। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

क्षुधा मोको पीडै जगत वस याके सुनि प्रभु,
तुम्हें चरुसों पूजों विपति सब मेरी हरि प्रभु,
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको,
सुनो वासंपूजै हरो दुख स्वामी मरनको।

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दुखी हुआ भारी चतुर गति मांही भ्रमणसे,
सुदीपं ले पूजों चरम तुमरे श्रेष्ठ मनसे। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

भ्रमायो जग भारी चतुर्गतिमाहीं करमने,
चढाउं मैं धूपं चरन प्रभु आगे स्वहितने। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

सुनो स्वामी मेरे मुक्ति फल दाता जगतमें,
करुं पूजा थारी सुफल कर ले भक्ति भरकें। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

करो पूजा चित दै अर्घ कर लैके सुजिनजी,
हरो बाधा मेरी अरज यह मानो सुप्रभुजी। सुरा०

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

वदि अषाढ छठिके विषे, भयो गर्भ कल्याण,
चंपापुर नगरी विषै वरषै रत्न महान।

ॐ ह्रीँ अषाढकृष्णषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

फागुन वदि चौदस दिवस, वासपूज महाराज,
जन्म लयौ त्रय ज्ञानयुत, नमुं चरन हितकाज।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

जन्म दिवस जिनराजने, तजौ राजको साज,
लौकान्तिक सुर बोधियो, तप लीनो हितकाज।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

भादव वदिके दोज दिन, घाति कर्म कर दूर,
पायो केवलज्ञान प्रभु, सुखी भये भरपूर।

ॐ ह्रीँ भाद्रपदकृष्णद्वितीयायां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

सुदि चौदस भादवतनी, चंपापुर उद्यान,
सुर नर पूजत देवने, पद पायौ निरवान।

ॐ ह्रीँ भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

जयमाला

(छंद विद्युन्माला)

पूजै ध्यावै जो त्रयकाला, निश्चै रच्चै भक्ति विशाला,
उरतैं राग द्वेष निकाला, सोई पावै मुक्ति रशाला।

(छंद मोतियादाम)

जयौ जगमें जिनराज महान, जयौ तुम देव महाव्रत दान,
सुजन्मविषें सुर चार निकाय, कियौ बहु उत्सव पुन्य बढाय।

सुरेन्द्र नरेन्द्र नमावत शीस, मुनेंद्र तुम्हें नित ध्यावत ईश,
सु बालहितें प्रभु शीलसरूप, विराग सदा उर भाव अनूप।

भये जब जोबनवंत महान, न काम विकार भयौ गुनखान,
कियो नहिं राज, धरे व्रतसार, सुरासुर पूज कियो तिहिंवार।

सुघाति महारिपु चार प्रकार, भये वर केवलज्ञान अपार,
समोश्रतकी विधि इन्द्र बनाय, भअे सुर हर्षित चार निकाय।

कहा जिनधर्म स्वरूप महान, गहा भवि जीव सुधासम जान,
रहौ नहि किंचित दुक्ख विकार, लहौ भवि जीवन सुक्ख अपार।

सुलक्षण धर्मतनों दश भेद, करौ प्रभुने धुनि दिव्य अखेद,
महा अरि क्रोध तजौ दुखदाय, क्षमा उर धारहु शांत स्वभाव।

सुकोमल भाव करौ सुखदाय, तजौ विषमान महा दुखदाय,
सजौ रिजुभाव त्रिजोगन मांहि, तजौ छलछिद्र दगा मनमांहि।

कहा सतवैन गहौ उर तोष, चहौ नित संजम भाव अदोष,
करौ तपसार तजौ पर भाव, अकिंचन होई लखौ निज भाव।

सुवस्तु स्वभाव करौ पहिचान, करो निज आतम ध्यान महान,
यही शिवमारग रत्न महान, गहो भवि जीव सदा हितदान।

इत्यादि अनेक सुभेद बताय, सुभव्य दिये शिवपंथ लगाय,
सुजोग निरोध कियौ शिववास, करौ हमरो निज पास निवास।

(दोहा)

चंपापुर जिनके भये पंचकल्यानक सार,
जिनपदपद्म सरोजको, प्रणमूं बारम्बार।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये।
जो नर मनवचकाय प्रभु पूजे सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री विमलनाथ-जिनपूजा

(रोला छंद)

परम सरूपी व्रती विवेकी, ज्ञानी ध्यानी,
प्रानी हित उपदेश देय मिथ्यात जघानी;
शिवसुखभोगी विमल पाय वंदु जुग करके,
आह्वानन विधि करुं त्रिविध त्रयवार उचरिकें।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्री विमलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(द्रुतविलंबित)

विमल सीतल सजल सुधारया, जनम मृत्यु जरा छय कारया,
सकल सौख्य विधानकनायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

अगर कृष्ण कपूर सुकुंकुमं, रिणित भृंगघटावलि गंधनं,
अखिल दुःख भवादिकनासनं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

अछित उज्ज्वल खंडन तीक्षणं, लसत चंद समान मनोहरं,
विगत दुःख सुथान सुदायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

कपलवृक्ष भवेन सुगंधनं, कुसुम चारु हरै चखि पावनं,
प्रबल बाण मनोद्भव नाशनं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सरस मोदक मिष्ट मनोहरं, सुभग कांचन पात्र सुथापितं,
असम दुःख छुधादि विध्वंसनं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणि उद्योत महातम नाशनं, लसत दीप सुकांचन पात्रकं,
अखिल मोह विध्वंसन कारणं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर चंदन धूप सुगंधितं, मधुप कोटि रवंत दिगालयं,
अशुभ कर्म महा दुठ जारनं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहना धूपं नि०

सुपक मिष्ट रसामृत पावनं, सुभग श्रीफल आदि फलौधकं,
परम मोक्षमहाफलदायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

सलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं, चरु सुदीप सुधूप फलौधकं,
परम मुक्ति सुथान विधायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

श्यामादे उर अवतरे, सहसरारतैं आय,
दशमी जेठ असेत ही, जजिहूं हरष उपाय।

ॐ ह्रीँ ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

माघ सुकल तिथ चौथिको, जनमे सुरपति आय,
सुरगिरि स्नपन करि जजे, मैं जजिहूं गुण गाय।

ॐ ह्रीँ माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

तज्यो राज कंपिलापुरी, श्री जिनवर वन जाय,
चोथि माघ सित तप धर्यो, जजिहूं तूर बजाय।

ॐ ह्रीँ माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

माघ शुक्ल षष्ठी विषै, हनै घातिया जान,
कह्यौ धर्म केवलि भये, जजिहूं ज्ञानकल्यान।

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठयां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमी साढ असेत ही, हने अघाति शिवथान,
गये विमल सुर नर जजे, जजिहूं मोक्षकल्यान।

ॐ ह्रीं अषाढकृष्णाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विमल विमल मति दिजिये, हो करुणापति मोहि,
करूं विनती जोरि कर, नमूं नमूं पद तोहि।

(चाल – अहो जगतगुरुदेव की)

अहो विमल जिनदेव, सुनिज्यो अरज हमारी,
इह संसार मझारि, और न सरनि निहारी। १

सुनिये हरि हर देव, काल सबै ही खाये,
उनको सरनो कौन, आपुनही थिर थाये। २

तुम निरभै तजि मोह, ध्यान शुक्ल प्रभु ध्यायो,
उपज्यो केवलज्ञान, लोकालोक लखायो। ३

समवसरनकी भूति, दोष यातैं लखि भागे,
सुपनन तो ढिग थाय, असुरनके संग लागे। ४

धरो जनम नहिं फेरि, मरन नहिं निद्रा नासी,
रोग नाहि नहि शोक, मोहकी तोरी फांसी। ५

विस्मय नहिं लेश, धीर भयप्रकृति विदारी,
जरा नांहि नहि खेद, पसेव न चिंता टारी। ६

मद नाहीं नहिं वैर, विषय नहिं रति नहिं कातैं,
प्यास हनी हनि भूख, अष्टदश दोष न यातैं। ७

नमू सीस धरि हाथ, ख्यात देवनके देवा,
छयालीस गुणभंडार, करुं प्रभु तेरी सेवा। ८

नमूं दिगंबर रूप, नमूं लखि निश्चल आसन,
मुद्रा शांत निहारि, नमूं नमिहूं तुम शासन। ९

नमूं कृपानिधि तोहि, नमूं जगकरता थे ही,
असरन कूं तुम सरन, हरो भवके दुःख ये ही। १०

जामन मरन वियोग, सोग इत्यादि घनेरे,
फेरि न आवें निकट, करो प्रभु ऐसी मेरे। ११

तुम लखि दीनदयाल, सरनि हम यातें आये,
ऐसे देव निहारि, भागितैं तुम प्रभु पाये। १२

''रामचंद'' कर जोरि, अरज करि है जिन ऐसी,
विपति यहै जगमांहि,सबै तुम जानत तैसी। १३

यातै कहनी नांहि, हरो जिन साहिब मेरे,
विन कारन जगबंधु, तुही अनमतलब केरे। १४

सरन गहेकी लाज, राखि जगपति जिनस्वामी,
करुणा करि संसार, विमल जिन अंतरजामी। १५

(दोहा)

विनती विमल जिनेशकी, जो पढिसी मन लाय,
जनम जनम पाप सब, ततछिन जाय पलाय। १६

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल)

बाह्य अभ्यंतर त्यागि परिग्रह जति भये,
बहुजन हित शिवपंथ दिखायो हरि नये;
अैसे अनंत जिनेश पाय नमिहूं सदा,
आह्वानन विधि करुं त्रिविध करिके मुदा।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(नाराच छंद)

क्षीर नीर हीर गौर सोम शीत धारया,
मिश्र गंध रत्न भृंग पाप नाश कारया;
अनंतनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्यदाय है,
अनंतकाल श्रम ज्वाल पूजतैं नशाय हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

कुंकुमादि चंदनादि गंध शीत कारया,
संभवेन अंतकेन भूरि ताप हारया। अनंतनाथ०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

श्वेत इन्दु कुंद हार खंड ना अखित्त ही,
दुर्तिखंडकार पुंज धारिये पवित्त ही। अनंतनाथ०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्यावही,
गंधलुब्ध भृंगवृंद शब्द धारि आवही। अनंतनाथ०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

मोदकादि घेवरादि मिष्ट स्वादसारही,
हेमथाल धारि भव्य दुष्ट भूख टारही।
अनंतनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्यदाय है,
अनंतकाल श्रम ज्वाल पूजतैं नशाय हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

रत्नदीप तेजभान हेमपात्र धारिये,
भवांधकार दुःखभार मूलतैं निवारिये। अनंतनाथ०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

देवदारु कृष्णसार चंदनादि ल्यावही,
दशांग धूप धूम्र गंध भृंगवृंद धावही। अनंतनाथ०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफलादि खारकादि हेमथाल में भरे,
सुष्ट मिष्ट गंधसार चक्षु नासिका हरे। अनंतनाथ०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

(छप्पय)

सलिल शीत अति स्वच्छ मिष्ट चंदन मलयागर;
तंदुल सोम समान पुष्प सुरतरुके ला वर।
चरु उत्तम अतिमिष्ट पुष्ट रसना–मनभावन;
मणि दीपक तमहरन धूप कृष्णागर पावन।

लहि फल उत्तम कनकथालभरि, अरघ रामचंद्र इम करै;
श्री अनंतनाथके चरणजुग, बहुविधि अरचै शिव वरै।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

पुष्पोत्तर तैं चय लियो, सूर्यादे उर आय;
कार्तिक पडवा कृष्ण ही, जजहुं तूर बजाय।

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ असित द्वादशि विषै, जनम सुराधिप जान;
स्नपन करि सुरगिर जजै, जजहुं जनम कल्यान।

ॐ ह्रीँ जेष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जगतराज्य तृणवत तज्यो, द्वादशि जेठ असेत;
लौकांतिक सुरपति जजै, मैं जजहूं शिवहेत।

ॐ ह्रीँ जेष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावसि अरि हने, घातिकर्म दुखदाय;
कह्यो धर्म केवलि भये, जजू चरण सुखदाय।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णामावस्यायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावसि शिवगये, हनि अघाति भगवान;
सुर नर खगपति मिलि जजे, जजहुं मोक्ष कल्यान।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

काल अनंतानंत भव, जीव अनंतानंत;
जिन उत्पत्ति व्यय ध्रुव कही, नमू अनंत भगवंत।

(चाल–त्रिभुवनगुरु स्वामीजी की)

जय अनन्त जिनेश्वरजी, पुष्पोत्तरतैं चवियाजी,
सिंहसेन–नरपतिके मंदिर सुत भये जी;
'सूर्यदे' माताजी, जगपुण्य विख्याताजी,
तिनके जगत्राता गर्भ विषैं थयेजी। १

कार्तिक अंधियारीजी, परिवा अविकारीजी,
साकेत मंझारी कल्याणक हरि कियोजी;
षट्मास अगारीजी, मणि स्वर्ण घनेरेजी,
वरषे नृपकेरे मंदिर घन ज्योजी। २

द्वादशि अंधियारीजी, जनमें हितकारीजी,
प्रभु जेठ मंझारि सुरासुर आयकै जी;
सुरगिरि ले आयेजी, भविमंगल गायेजी,
अभिषेक रचाये पूजे ध्यायबै जी। ३

फिर पितु घर लायेजी, नचि तूर बजायेजी,
लची अंग नमाये मातपिता तबैजी;
तन हेम महा छबिजी, पंचास धनू रविजी,
लख तीस कहे कवि आयु भई सबैजी। ४

नृप पदवी धारीजी, लखि पणदह सारीजी,
सब अनीति विचारी तपोवनकुं गयेजी;
वदि जेठ दुवादसिजी, तप देखि स्वरारिषिजी,
पद पूजि नये नसि पाप सबै गयेजी। ५

षष्टम कर पूरोजी, भोजनहित सूरोजी,
पुर धर्म सनूरो आवत देखिकैजी;
नवभक्ति थकी पयजी, विसाख तहां दयजी,
मणिवृष्टि अखय करी सुरगण पेखिकैजी। ६

धरि ध्यान सुकल तबजी, चउ घाति हनै जबजी,
सुर आय मिले सब ज्ञानकल्याणहिजी;
वदि चैत अमावसिजी, जखिभक्ति तुहे वसिजी,
समवादि रच्यौ तसु उपमा भी नहीं जी। ७

समवादि जिते भविजी, सुनि धर्म तरे सबजी,
प्रभु आयु रही जब मास तणी तबै जी;
संमेद पधारेजी, सब जोग संवारेजी,
समभाव विथारी वरी शिवतिय जबैजी। ८

वसु गुण जुत भूषितजी, भव छारि बसे तितजी,
सुख मगन भये जित मावस चैतकीजी;
सुर सब मिलि आयेजी, शिवमंगल गायेजी,
बहु पुण्य उपाय चले तुम गुण तकीजी। ९

गुणवृन्द तुम्हारेजी, बुध कौन उच्चारेजी,
गणदेव निहारे पै वच ना कहैजी;
''चन्दराम'' करै थुतिजी, वसु अंगथकी नुतिजी,
गुण पूरन द्यो मति मर्म तुहे लहैजी। १०

प्रभु अरज हमारीजी, सुनिज्यो सुखकारीजी,
भवमें दुःख भारी निवारौ हो घणीजी;
तुम सरन सहाईजी, जगके सुखदाईजी,
शिवदे पितु माई कहो कबलौं घणीजी। ११

(धत्ता)

इति गुणगणसारं, अमल अपारं,
जिन अनंत के हिय धरई;
हनि जरमरणावलि नासि भवावलि,
शिवसुन्दरि ततछिन वरई।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ-जिनपूजा

(कवित्त छंद)

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या, जनम लियो सुर्या उर आय,
सिंहसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय;
गुन अनन्त भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय,
थापतु हों त्रयवार उचरिकै, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेनन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद गीता तथा हरिगीता)

शुचि नीर नीरमल गंगको लै, कनकभृंग भराईया,
मलकरम धोवन हेत मन वच, काय धार ढराईया;
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनो,
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रंततन्त नशावनो।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

१३

हरिचंद कदलीनंद कुंकुम, द्वंदताप निकंद है,
सब पापरुज संतापभंजन, आपको लखि चंद है।
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों,
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रंततन्त नशावनो।

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

कनशालदुति उजियाल हीर, हिमालगुलकनितैं घनी,
तसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पुष्कर अमरतरु जनित वर, अथवा अवर कर लाईया,
तुम चरण पुष्करतर धरत, सब समरशूल नशाईया। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

पकवान नैना घ्राण रसना को, प्रमोद सु दाय है,
सो ल्याय चरण चढाय रोग, क्षुधाय नाश कराय है। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

तममोहभावन जानि आनंद, आनि शरण गही अबै,
वर दीप धारौं वार तुम ढिग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

यह गंध चूरि दशांग सुंदर, धुम्रध्वजमें खेय हों,
तसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निज सुधातम वेय हों। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि०

रसथक्क पक्क सुभक्क चक्क सुहावनें मृदुपावनें,
फलसारवृन्द अमन्द ऐसो, ल्याय पूज रचावनें। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

शुचि नीर चंदन शालिचंदन, सुमन चरु दीवाधरों,
अरु धूपजुत फल अर्घ करि, करजोर जुग विनती करों। जग०

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(छन्द सुन्दरी तथा द्रुतविलंबित)

असित–कातिक अेकम भावनों, गरभको दिन सो गिन पावनों,
किय सची तित चर्चन चावसौं, हम जजैं इत आनंद भावसौं।

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णाप्रतिपदा गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी, सकलमंगल लोकविषैं वसी,
हरि जजे गिरिराज समाजतैं, हम जजैं इत आतमकाजतैं।

ॐ ह्रीँ ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भवशरीर विनश्वर भाईयो, असित जेठ्दुवादशि गाईयो,
सकल इन्द्र जजे तित आईकैं, हम जजैं इत मंगल गाईकैं।

ॐ ह्रीँ ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित चैत अमावस को सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही,
लहि समोसृत धर्म धुरंधरो, हम समर्चित विघ्न सबै हरो।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णामावस्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित चैत तुरी तिथि गाईयौ, अघत घाति हने शिव पाईयौ,
गिरि समेद जजैं हरि आयकैं, हम जजैं पद प्रीति लगाय कैं।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

तुम गुनवरनन येम जिम, खं विहाय करमान,
तथा मेदिनी पदनि करि, कीनों चहत प्रमान।

जय अनंत रवि भव्यमन, जलजवृन्द विकसाय,
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय। २

(छंद—नयनमालिनी तथा चंडी तथा तामरस)

जै अनंत गुनवन्त नमस्ते, शुद्धध्येय नितसंत नमस्ते,
लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुणथोक नमस्ते। ३

रत्नत्रयधार धीर नमस्ते, करमशत्रुकरिकीर नमस्ते,
च्यार अनन्त महन्त नमस्ते, जै जै शिवतियकन्त नमस्ते। ४

पंचाचार विचार नमस्ते, पंचवर्णमदहार नमस्ते,
पंच पराव्रत चूर नमस्ते, पंचमगति सुखपूर नमस्ते। ५

पंचलब्धि धरनेश नमस्ते, पंच भाव सिद्धेश नमस्ते,
छहों दरबगुनजान नमस्ते, छहों काल पहिचान नमस्ते। ६

छहों कायरक्षेश नमस्ते, छह सम्यक्‌ उपदेश नमस्ते,
सप्तविशनवनवन्हि नमस्ते, जय केवल अपरन्हि नमस्ते। ७

सप्ततत्त्वगुन भनन नमस्ते, सप्तशुभ्रगत हनन नमस्ते,
सप्तभंग के ईश नमस्ते, सातों नयकथनीश नमस्ते। ८

अष्टकरममलदल्ल नमस्ते, अष्ट जोगनिरशल्ल नमस्ते,
अष्टम धराधिराज नमस्ते, अष्ट गुननि सिरताज नमस्ते। ९

जै नवकेवल प्राप्त नमस्ते, नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते,
दशों धरमघरतार नमस्ते, दशों बन्धपरिहार नमस्ते। १०

विघ्न–महीधर–बिज्जु नमस्ते, जै उरघगति रिज्जु नमस्ते,
तनकनकं दुति पूर नमस्ते, इक्ष्वाकुजगनसूर नमस्ते। ११

घन पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिन्धु गुन शुच्च नमस्ते,
सेही अंक निशंक नमस्ते, चितचकोर मृगअंक नमस्ते। १२

रागदोषमदटार नमस्ते, निजविचार दुखहार नमस्ते,
सुर सुरेश गन बन्द नमस्ते, 'वृन्द' करो सुखकन्द नमस्ते। १३

(धत्ता)

जय जय जिनदेवं, सुरकृतसेवं नितकृतचित हुल्लासधरं,
आपदउद्धारं समतागारं वीतरागविज्ञान भरं। १४

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोडक छंद)

जो जन मनवचकाय लाय, जिन जजै नेह धर,
वा अनुमोदन करै करावे पढै पाठ वर।
ताके नित नव होय, सुमंगल आनन्द दाई,
अनुक्रमतैं निरवान लहै सामग्री पाई।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री धर्मनाथ-जिनपूजा

(छंद माधवी तथा किरीट)

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभानके आनि आनंद बढाये,
जगमात सुव्रतिके नंदन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढाये।
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश है, दासनिको शिवस्वर्ग मंढाये,
तिनको पद पूजनहेत त्रिवार, सुथारतु हों यह फूल चढाये।

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद जोगीरासा)

मुनि मन सम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरि झारी,
जनम जरामृत तापहरनको, चर्चो चरण तुम्हारी;

परमधरम–शम–रमन धरम–जिन, अशरन शरन निहारी,
पूजौं पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी।

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

केशर चंदन कदली नंदन, दाहनिकंदन लीनों,
जलसंग घसि लसि शशिसम शमकर, भव आताप हरीनों। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो,
पुंज धरत आनंद भरत भव, –द्वंद हरत हरषायो। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

लुमन सुमनसम सुमन थाल भर, सुमनवृन्द विहषाई,
सुमनमथ–मदमंथन के कारन, चरचों चरन चढाई। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

घेवर बावर अर्द्ध चन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजैं,
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजैं। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

सुंदर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै,
नेह सहित गाउं गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर तगर कृष्णागर तरदिव, हरिचंदन करपूरं,
चूर खेय जलजवनमाहिं जिमि, करम जरै वसु कूरं। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

आम्र काम्रक अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई,
सो लै तुम ढिग धरहुं कृपानिधि, देहु मोक्ष ट्कुराई। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई;
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई। परम०

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

(राग : टप्पा की चाल

पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों, पूजों हो। टेक
आठैं सित वैशाख की हो, गरभ दिवस अविकार;
जगजनवंछित पूजों; पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों०

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

शुक्ल माघ तेरस लह्यो हो, धरम धरम अवतार;
सुरपति सुरगिर पूजों, पूजों हों अबार। धरम०

ॐ ह्रीँ माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघशुक्ल तेरस लह्यो हो, दुर्द्धर तप अविकार;
सुरऋषि सुमननि पूजों, पूजों हो अबार। धरम०

ॐ ह्रीँ माघशुक्लात्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पौषशुक्ल पूनम हने अरि, केवल लहि भवि तार;
गनसुर नरपति पूजों, पूजों हो अबार। धरम०

ॐ ह्रीँ पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ नि०

जेठशुक्ल तिथि चौथकी हो, शिव समेदतैं पाय,
जगतपूज पद पूजों, पूजों हो अबार। धरम०

ॐ ह्रीँ ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत,
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अंत। १

(छंद पद्धरी)

जय धरमनाथ जिन गुणमहान, तुम पदको मैं नित करों ध्यान,
जय गरभ जनम तप ज्ञानजुक्त, वर मोक्ष सुमंगल शर्मभुक्त। २

जय चिदानन्द आनंदकंद, गुनवृन्द ध्यावत मुनि अमन्द,
तुम जीवनि के विनु हेत मित्त, तुम ही हो जग में जिन पवित्त। ३

तुम समवसरण में तत्त्वसार, उपदेश दियो है अति उदार,
ताकों जे भवि निज हेत चित्त, धारैं ते पावैं मोक्ष वित्त। ४

मैं तुम मुख देखत आज पर्म, पायो निजआतमरूप धर्म,
मोकों अब भौभयतैं निकार, निरभयपद दीजे परमसार। ५

तुम सम मेरो जगमें म कोय, तुमहीतें सबविधि काज होय,
तुम दयाधुरन्धर वीर धीर, मेटो जगजन की सकल पीर। ६

तुम नीतिनिपुन विन रागदोष, शिवमग दरशावतु हो अदोष,
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव, जगजीव लहें शिव-दिव-सुराव। ७

तातैं मैं तुमरी शरण आय, यह अरज करतु हों शीस नाय,
भवबाधा मेरी मेट मेट, शिवराधासों करि भेट भेट। ८

जंजाल जगतको चूर चूर, आनंद अनुपम पूर पूर,
मति देर करो सुनि अरज अेव, हे दीनदयाल जिनेश देव। ९

मोकां शरणा नहि और ठौर, यह निहचै जानों सुगुन-मौर,
''वृन्दावन'' वंदत प्रीति राय, सब विघन मेटिये धरम-राय। १०

(घत्ता)

जय श्रीजिनधर्मं शिवहितपर्मं श्रीजिनधर्मं उपदेशा,
तुम दयाधुरंधर, विनतपुरंदर, कर उरमंदिर परवेशा। ११

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद मदाविलिप्तकपोल)

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव,
ताके दुख सब मिटहिं, लहै आनंदसमाज सब।
सुर–नरपति–पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै,
''वृन्दावन'' यह जानि धरम जिनके गुन ध्यावै।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री शान्तिनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

शान्ति जिनेश्वर नमूं तीर्थ वसुदुगुण ही,
पंचमचक्रि अनंग दुविधषट सुगुण ही;
तृणवत् ऋद्धि सब छांडि धारि तप शिव वरि,
आह्वानन विध करूं वार त्रय उच्चरी।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद नाराच)

शैल हेमतैं पतंत आपिका सुव्योमही,
रत्नभृंग धार नीर सीत अंग सोमही;

रोग सोग आधि व्याधि पूजते नशाय है,
अनंत मुक्तिसौख्य शान्तिनाथ सेय पाय है।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदनादि कुंकुमादि गंध सार ल्यावही,
भृंगवृंद गुंजतैं समीर संग ध्यावही। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

इन्दु–कुंद हारतैं अपार स्वेत साल ही,
दुर्ति खंडकार पुंज धारये विसाल ही। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पंचवर्ण पुष्पसार ल्याईये मनोज्ञ ही,
स्वर्णथाल धारियो मनोज नाश योग्य ही। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

खंड घृतकारु चारु सद्य मोदकादि ही,
सुष्ट मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वाद ही। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीप ज्योतिको उद्योत धूम होत ना कदा,
रत्नथाल धारि भव्य मोह ध्वांत ह्वे विदा। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर चंदनादि द्रव्यसार सर्व धारही,
स्वर्ण–धूपदान में हुतासंग जारही। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

घोटकेन श्रीफलेन हेमथालमें भरैं,
जिनेशके गुणौघ गाय सर्व अेनकूं हरैं। रोग सोग०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

(छप्पय छंद)

शरद इन्दुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृषहारी,
चंदन दाह निकंद शालि तैं द्युति है भारी;
सुरतरु के वर कुसुम सद्य चरु पावन धारैं,
दीपरतनमय जोति धूपतैं मधु झंकारैं।
लहि फल उत्तम करि अर्घ शुभ 'रामचंद्र' कनथालभरि;
श्री शान्तिनाथके चरणयुग वसुविधि अरचैं भाव धरि।

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

सर्वारथ सिधितें चये, भादव सप्तमि श्याम;
अैरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम।

ॐ ह्रीँ भादववदीसप्तमी गर्भमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जेठ चतुरदशि कृष्णही, जन्मे श्रीभगवान;
स्नपन करि सुरपति जजै, मैं जजहूं धरि ध्यान।

ॐ ह्रीँ जेष्ठवदीचौदश जन्ममंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जेष्ठ असित चौदसि धर्यो, तप तजि राजमहान;
सुरनर खगपति पद जजैं, मैं जजहूं भगवान।

ॐ ह्रीँ जेष्ठवदीचौदश तपोमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

पौष शुक्ल ग्यारस हने, घाति कर्म धरि ध्यान;
केवल लहि वृष भाषियो, जजूं शान्तिपद ध्याय।

ॐ ह्रीँ पौषसुदीग्यारस ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

कृष्ण चतुर्दस जेष्टकी, हनि अघाति सिवथान;
गये समेदाचलथकी, जजौं मोक्ष कल्याण।

ॐ ह्रीँ जेष्ठवदीचौदसि मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(छप्पय छंद)

भये आप जिनदेव जगतमें सुख विस्तारे,
तारे भव्य अनेक तिनों के संकट टारे;
टारे आठों कर्म मोक्षसुख तिनको भारी,
भारी बिरद निहार लही मैं शरण तिहारी।
तिहारे चरणन को नमूं, दुःख दारिद संतापहर;
हर सकल कर्म छिन अेकमें, शान्ति जिनेश्वर शान्तिकर। १

(दोहा)

सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस;
हाटक वर्ण शरीर द्युति, नमू शान्ति जग ईश। २

(छंद भुजंगप्रयात)

प्रभो आपने सर्वके फन्द छोडे, गिनाऊं कछू मैं तिनों नाम थोडे,
पडो अंबुधे बीच श्रीपालराई, जपो नाम तेरो भये थे सहाई। ३
धरो रायने शेठको सूलिका पै, जपी आपकी नामकी सार जापै;
भये थे सहाई तबै देव आये, करी फूलवर्षा सुविष्टर बनाये। ४
जबैं लाख के धाम वह्नि प्रसारी, भयो पांडवों पैं महाकष्ट भारी,
जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करीथी विदुरने वही राह दीनी। ५
हरी द्रौपदी धातुकीखंड मांही, तुम्हीं व्हां सहाई भला और नाहीं;
लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहांतें सबै दुःख टालो। ६
जबै जानकी रामने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी;
रटानाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीडा सु क्षण ना लगाई। ७
व्यसन सात सेवे करें तस्कराई, सुअंजन से त्यारे घडी ना लगाई;
सहे अंजना चंदना दुःख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते। ८
घडे बीचमें सासने नाग डारो, भलो नाम तेरो जु सोमा संभारो;
गई काढने को भई फूलमाला, भई है विख्याता सबै दुःख टाला। ९

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

इन्हें आदि देके कहां लों बखानें, सुनो बिरद भारी तिहूं लोक जाने;
अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बडी नाव तेरी रती बोझ मेरो। १०

गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूं क्या अबै आपनी मैं पुकारा;
सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे, करो देर नाहीं मेरे शान्ति प्यारे। ११

(धत्ता)

श्री शान्ति तुम्हारी कीरत भारी सुर नरनारी गुणमाला;
बख्तावर ध्यावे रतन सु गावे मम दुःख दारिद सब टाला।

ॐ ह्रीँ श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजा

(दोहा)

पंच परम गुरु सुमरके, शारद मात मनाय,
शान्तिनाथ जगनाथके अष्टक रचे बनाय।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीता)

गंगादि नीरसु हेमझारी जतनसों भर लाइये,
चरणारविंद जिणंद आगे प्रीतिसौं जु चढाइये;
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौ भावसौं मन लायकैं,
शान्त करियो कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्रीखंड मलयागिरी चंदन काशमीरी घिस धरौं,
भगवंतजूके जुगल चरणन नित्य अर्चन हौं करौं।
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौ भावसौं मन लायकैं,
शान्त करियो कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

रायभोग कमोद वासी स्याम जीरक जो लये,
जिनके जु तंदुल करिय उज्ज्वल पुंज प्रभु सन्मुख दये। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली कमल केती मुचकुंद पूजौं मालती,
बेला गुलाल गुलाब मरुवो केवरो शुभ सेवती। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पेडा सुफेनी घेवरं विविध भांति मिठाइयाँ,
पकवान नेवज बहुत विध जग भूपकौं अरपाइयाँ। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप कंचनके करे करपूर बत्ति प्रजालिये,
करत आरति हरत आरत मोह–तिमिर न घालिये। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंड कृष्ण गोशीर चंदन धूप दस गरभित करी,
तासु लै अंगार उपर दहन कर प्रभु ढिंग धरी। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अेला लवंग सु जायफळ बादाम पुंगी श्रीफले,
भेला नारंगी वरतुलंगी और सुंदर जे भले। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
तुम करहु भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै।
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौ भावसौं मन लायकैं,
शान्त करियो कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

श्री पांचौं पद उर धरौं सिद्ध साध गुणगान,
सारद देवी वीनऊं गुरुचरण चित्त आन।

(चौपाई छंद)

तुम मानतुंग मुनिकी जंजीर, सब काटी पलमें हरी पीर,
हरि वादिराज तनकी जु कुष्ट, सब दूर करी तन भयो है पुष्ट। १

श्रीपाल भयौ सागर जु पार, गुनमाल वरी सुनि जन पुकार,
मुनि समंतभद्र स्वयंभू पढंत, नंदीश्वर शिवपिंडी कढंत। २

भूपाल नृपति जब थुति करंत, तब दये नैन दुःखको हरंत,
जब शेट सुदर्शन शूलि दीन, तिहिकौं जु सिंघासन देय दीन। ३

जिनराज जपैं जब प्रभहिचंद्र, आमावस के दिन करव चंद,
हरि सेठ अरज चित्तमें जु लीन, तरवार काठकी सारी कीन। ४

पशु जीव छुडाये तुरत आय, ग्रहनारी तजि गिरिनारि जाय,
तब अंजन तरियौ फल मंझार, सुरलोक गयो नहि लगी वार। ५

नृपनारि करी अरजी जिनिंद, तब रतनबिंब दरसे नरिंद,
विनती करियौ गुणधर सुआय, निधि दीनी पद्मावती जु आय। ६

जिन जु लखियौ तब जुगल नाग, धरणेन्द्र भये गये दुःख भाग,
पशु जु लयौ कूपहि बचाय, वरसाय फूल आनंद कराय। ७

चलनी जल खेंचो नीर नारि, निज प्रेही प्रति राखो विचारी,
जब राम तियासौं सोह लीन, तब सीतल अगनि जु कुंड कीन। ८

द्रौपदि सुमरे हरिको दिढाय, प्रभु अंबर लौं अंबर बढाय,
गजकी जु सुनी जिनने पुकार, पर ग्राह छुडाये पल मंझार। ९

सुरलोक लियौ स्वानहि जु आप, परमेष्ठी नामको है प्रताप,
दिढव्रत सुमरे दीनन दयाल, तब भई सरपतैं पहुपमाल। १०

जनकी अनेक विनती सुनंत, पायौ गिनती कौ नहीं अंत,
प्रभु 'जसहिकरण' अरजी सुनेह, मनवांछा पूरण करहु मोह। ११

(दोहा)

पढै गुनैं सीखै सुनैं, हुलसै आनंद चित्त,
सुख संपत्ति प्रभु देयंगे, सुखसौं रहो सु नित्त।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ-जिनपूजा

(सवैया)

श्रीमत कुन्थ कृपाल सदा, जग जीवनके रखपाल बताये,
मोह महीधर दामिनिदण्ड, अनंग गजेन्द्र मृगेन्द्र कहाये;
स्वर्ग विमान तजो प्रभुजी, भवि भाग उदै हथिनापुर आये,
अत्र विराजि गरीबनिवाज, सुधारहु काज प्रभु मन भाये।

ॐ ह्रीँ श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! सन्निधिकरणम्!

(छंद त्रिभंगी)

गंगा ह्रद पानी, निर्मल आनी केवलज्ञानी पद पूजौं,
भवतृषा मिटावो, स्वपर लखावो, शांत स्वभावी नित हूजौं;
श्री कुन्थु कृपाला हर अघ जाला, ज्ञान त्रिकाला मम दीजौ,
मैं तुमपद ध्याउं, गुणगण गाउं पूज रचाउं जस लीजौ।

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

आताप निकंदन, कदली नंदन, बावन चंदन घसि लीजै,
जिन चरन चढावो, स्वपर लखावौ, पुन्य बढावौ हित कीजै;
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

सुखदास कमोदं, स्वक्ष सरोजं, अक्षत योजं भरि थारी,
जिनवर पद पूजौं, निज पर सूजौं, शिव थल पावौं सुखकारी;
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

१४

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

वर कुसुम सुवासित, गंधविकासित, स्वपरप्रकाशित जिनपूजौं,
अरि मदन विदारौं, दुख परिहारौं, ब्रह्मविचारौं शुचि हूजौं;
श्री कुंथु कृपाला, हर अघ जाला, ज्ञान त्रिकाला मम दीजौ,
मैं तुमपद ध्याउं, गुणगण गाउं, पूज रचाउं जस लीजौ।

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

चरु उत्तम लावौं, गुणगण गावौं, पुन्य बढावौं सुखदाई,
रसनाके प्यारे, क्षुधा निवारे; आगे धारे गुणगाई;
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक मणिजोतं, तमक्षय होतं, हृदय प्रमोदं सुख काजै,
तुम चरम चढावौं, प्रीति बढावौं, जिन गुण गावौं हित साजै;
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

शुचि धूप बनावो, गंध मिलावो, मन हरषावो भक्ति भरो,
जिन चरण चढावो शिवफल पावो, धूप धूममिस कर्म जरो।
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल उत्तम लाना, शक्तिसमाना, जिनवरबाना नित पूजो,
यातें शिव पावो, कर्म नसावो, सुखी रहावो सुध हूजो।
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

वसु द्रव्य मिलावो, अर्घ बनावो, आगे लावो जिनजीके,
प्रभु पूज रचावो, जिनगुण गावो, वांछित पावो सबजीके।
श्री कुंथु०

ॐ ह्रीँ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

सावनवदि दसमी दिना, गर्भ कल्याणक जान,
सुर नर मिलि पूजा करी, हरष हृदय में आन।

ॐ ह्रीँ श्रावणवदीदशम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सुदि अेकम वैशाखकी, जन्मे श्रीभगवान,
सुर गिरिपै उत्सव कियो, सुर नर ईन्द्र महान।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दिवस जिनराजने, व्रत धारो हितकाज,
परिग्रह पोट उतारिके, धरो दिगम्बर साज।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्ल प्रतिपदायां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी तृतीया दिना, कुन्थुनाथ भगवान,
मोह महारिपु नासिके, पायो केवलज्ञान।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लतृतीयां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि अेकम वैशाखकी, शिखर ज्ञानधर कूट,
पंचम गति पाई प्रभु, गये बंध सब छूट।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

छठवें चक्रपती प्रभु, सत्रहवें तीर्थेश,
करौ कृपा मुझ दीन पर, हरौ कर्म परमेश।

(छंद पद्धरी)

जै जै जिनकुन्थु दयाल देव, तुम चरननकी हम करत सेव,
तुम ब्रह्म चिदंग अनंगरूप, तुम बुद्ध विदित संवर स्वरूप।
जै जै पद अज अंकित महान, तुम हौ जगतारन तरन जान,
तुम असरन सरन सहाय देव, तुम कृपासिंधु सुखदाय देव।
तुम तत्त्वप्रकाशी रवि महान, तुमही प्रभु अनुपम चंद्र जान,
जिनवचन चंद्रिका सुखद सार, भवताप निवारन सुधासार।
तुम कल्पवृक्ष दाता महान, बिनजाचत द्यो निजको निधान,
तुम चिंतामणिसे अधिक देव, बिन चिंतत भविजनको स्वमेव।
शिवदान देहु दानी अनूप तुम पद पूजें त्रैलोक्य भूप,
अरिमोह करीको हरिसमान, तुम विघ्न विदारण अचल जान।
तुम पद सरोजकी भक्ति सार, नित करै सुरासुर बुद्धि उदार,
ऋषि मुनि महंत तुम नाम धार, भवसागरतें होवै सुपार।
इत्यादि अतुल गुणगण अनंत, गणधर नहि पावैं कहत अंत,
तौ अल्पमती नर और कोय, तुम गुणसमुद्र किम पार होय।
मैं सरनागत आयो कृपाल, भवसागरतें मोकुं निकाल,
मैं डूबत हूं भवसिंधुमांहि, जिनराज कृपाकर गहो बांह।
जबलौं जगवास रहे जिनेश, जबलौं अरिकर्म करैं कलेस,
तबलौं तुम चर्न हृदै हमेश, मम वास रहौ सुनिये महेश।
यह अरज हमारी सुनों सार, मैं नमत सदा कर शीश धार
तुम जगनायक सिरदार सार, संसार खारतैं करौ पार।

(दोहा)

कुन्थुवादि जग जीवके, रक्षक तुम जिनराज,
करो जिनेश्वर पै कृपा, तारनतरन जिहाज।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक मानि गये शिव–थानिये;
जो नर मन वच काय प्रभु पूजे सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

श्री अरहनाथ-जिनपूजा

अरहनाथ महाराज सुरासुर पद जजैं,
गर्भ जन्म तप ज्ञान विषै सुरनर सजैं;
करुणानिधि महाराज अरज सुन लीजिये;
अत्र तिष्ठ जिनराज स्वहित मम कीजिये।

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्र! अत्रावतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्!

(गझल)

पद्मद्रह नीर शुचि लीजे रतनझारीमें धारा है,
चरन जिनराजके पूजों मरण दुःख सर्व टारा है;
अरह महाराज भवतारी चरनको शीस नाता हूं,
हमें प्रभु धान शिव दीजे, सुगुन निसि धौस गाता हूं।

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

सुगंधित गंध अलि आवैं, सरस चंदन मंगाया है,
जन्मको ताप अनिवारी, अरह जजिकैं हटाया है।
अरह महाराज भवतारी चरनको शीस नाता हूं,,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुन निसि द्यौस गाता हूं।

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

सरदशशि स्वेत सुखकारी, अक्षतके पुंज शुभ दीजे,
सुगुन अक्षय प्रकाशनको, जिनेश्वरके चरन पूजे। अरह०

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

कुसुमवर देवतरु लाके, प्रभुके चरन ध्याता हूँ,
कुसुमसर मानमर्दनको, अनुपम सुगुन गाता हूँ। अरह०

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

प्रभुके चरन अर्चनको, सरस पकवान कर लीजै,
क्षुधादिक दोष नासनकौं, प्रभुका नाम भज लीजै। अरह०

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

प्रभुके चर्न पूजनको, रतनमय दीप कर धारो,
महातममोहनासनको, प्रभुके चर्न तर वारो। अरह०

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर तगरादि शुचि लेके, बनावो धूप सुखकारी,
कर्म अरि नास करनेको, जजों जिनराज हितकारी। अरह०

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

सरस फल सार शुचि लेके, प्रभुके चर्न चित दीजे,
महाफलमुक्ति पा लीजे, सुगुन जिनराज भजि लीजे। अरह०

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जलादिक द्रव्य शुचि लीजे, अरघ उत्तम बनाया है,
सभी विधि बंध नासनको, प्रभु पदमें चढाया है।
अरह महाराज भवतारी चरनको शीस नाता हूं,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुन निसि द्यौस गाता हूं।

ॐ ह्रीँ श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

फाल्गुन सुदि तृतिया दिना, भयो गर्भ कल्यान,
चर्न नमों जिनराजके, दीजो शिवफल दान।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

मगसिर सुदि चौदस दिना, जन्म अरह महाराज,
सुर सुरेश पूजन करी, पावै निजहित साज।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

मगसिर सुद चौदश दिना तजो राजको साज,
लौकांतिक सुर आइके, सिर नायो सिरताज।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

कार्तिक सुदि बारस विषें, चार घातिया चूर,
पायो केवळज्ञान युत, नंत चतुष्टय पूर।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

चैत सुदी ग्यारस विषै, संमेदाचल शीस,
सुर सुरादि पदपूज्य प्रभु, शिव पाई जगदीश।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लअेकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

(त्रिभंगी छंद)

जै जै गुणसागर जगत उजागर, हे नरनागर चक्रपति,
तुम पद नित ध्यावै, जिनगुन गावै, पूज रचावै विश्वपति।

(चाल मंगल)

जै जै जै जिनराज अहो जगदीशजी,
तुम पद कमल विशाल नमें सुर ईसजी,
गजपुर नगर मझार लयौ अवतारजी,
मंगल गावैं हर्ष सहित सुरनारजी।

सुरनार कुंडल रुचिकवासी अरु कुलाचलवासिनी,
विबुधांगना जिनमातुजीकी रहैं नित प्रति सासनी;
जिनके गरभ कल्याणमांही सब सुरासुर आईयो,
जिन मातपितुको हर्षयुत शुचि नीर न्हवन कराईयो।

जिनवर जन्ममझार महोत्सव हरि कियो।
कनकाचलके शीस न्हवन उत्सव कियो;
सुर किन्नर गंधरव सुगुण धुनि बाजही,
जै जै शब्द अनुपम दुन्दुभि बाजही।

वाजंति बाजे नचहि सुरतिय भक्ति हिरदे विस्तरी,
निज जन्म मनमें सफल जानों जबहि जिनधुनि उच्चरी;
सुरपति सहसकर कनक कलसा आठ अधिक सुहावने,
भरि क्षीर सागर नीर निर्मल भक्तियुत हरि पावने।

श्रीजिनवरके शीस कलस धारा ढरी,
दुन्दुभि शब्द गहीर सुरन जै जै करी;
पांडुक वनके मांहि न्हवनजल विस्तरो,
उमगो वारिप्रवाह सुनंदन वन परयो।

वन भद्रसालविषै सु पहुंचो जल पवित्र अनूप है;
सुरनर पवित्र सुकरन उज्ज्वल तीर्थ सम शुचि रूप है।
करि जन्म उत्सव सकल सुर खग हरषयुत निजथल गअे,
जिनराज अशह अनंतबल षटखंडपति चक्री भअे।

कछु कारनकों पाय प्रभु वैरागियो,
तजो राजको साज जाय बन तप लियो।
घाति करम कर नास प्रभु केवल लियो,
समवसरनविधि रची इन्द्र हरषित भयो।

अति भयो हरषित इन्द्र मनमें देखि जिनवर देवजी,
वसु प्रातिहारज सहित राजै करत सुरनर सेवजी;
जगतरनतारन सरन मैंने लई तुम पद–कमलकी,
करि कृपा हमपै यह जिनेश्वर सुविधि द्यो निज अमलकी।

(दोहा)

रिद्धि सिद्धि दायक सदा, अरहनाथ महाराज,
तुम पद मेरे उर बसो सदा सुधारो काज।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये;
जो नर मनवचकाय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्रीमल्लिनाथ-जिनपूजा

मलि सनाह सजि सील मदन दुसतर हरयो,
अनुप्रेक्षा सर संधि मोहभट जय करयो;
प्रवज्या सिवका साजि वरांगन शिव वरी,
आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी।

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नाराच छंद)

इन्दु कुंद छीरतैं अपार स्वेत वारही,
मिश्र गंध भृंग धारिकैं निकारि धारही,
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदस्यौं,
अनर्घ द्रव्य ल्याय मल्लिनाथ पूजि मोदस्यौं।

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

गंध चंदनादि ले भवादि दाहकूं हरै,
सरद हूवै सनेह उस्न बूंद अेक जो परै। अनेक०

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

राय भोग्यके मनोग्य तंदुलौध सारही,
सरल चित्तहार स्वेत पुंज भव्य धारही। अनेक०

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सुरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्याईये,
जिनेन्द्र अग्र धारिकैं मनोजकूं नसाईये। अनेक०

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

मोदकादि घेवरादि धृत्त खंडतैं करैं,
स्वर्णथाल धारतैं, क्षुध्यादि रोगकूं हरैं।
अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदस्यौं,
अनर्घ द्रव्य ल्याय मल्लिनाथ पूजि मोदस्यौं।

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

रत्न दीप तेज भान हेम थालमें भरैं,
जिनेन्द्र अग्र धारि भव्य मोह ध्वांतकूं हरै। अनेक०

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

दसांग धूप चंदनादि स्वर्ण पात्रमें भरैं,
हुतास संग धारि कर्म ओघ भव्यके जरै। अनेक०

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

मिष्ट सुष्ठ श्रीफलादि घ्राण चक्खिकूं हरैं,
मनोग्य चित्तहार पूज जोग्य थालमें भरैं। अनेक०

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

(छप्पय)

सलिल सुच्छ सुभ गंध मलयतैं मधु झंकारै,
तंदुल शशितें स्वेत कुसुम परिमल विस्तारैं;
छुधा हरन नैवेद रतन दीपक तम नासै,
धूप दहै वसु कर्म मोखमग फल परकासै।

ईम अर्घ करै सुभ द्रव्य ले, रामचंद्र कन थाल भरि,
श्री मल्लिनाथके चरण जुग, वसु विधि अरचैं भाव धरि।

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

चैत सुकल प्रतिपद चये, अपराजिततें इंद,
प्रजावती उर अवतरे, जजू मल्लि गुणवृंद।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अगहन सुदि अेकादसी, सुरपति चतुरनिकाय,
सुरगिरि सनपन करि जजे, मैं जजहूं गुण गाय।

ॐ ह्रीँ मार्गशुक्लअेकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

भवभय करि तृणवत तज्यौ, जगतराज धर धीर,
सित अगहन अेकादशी, जजूं धरयो तप वीर।

ॐ ह्रीँ मार्गशुक्लैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पौष कृष्ण दोयज हने, घातिकर्म दुखदाय,
केवल लै वृष भाखियो, जजूं ज्ञान गुण गाय।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

फागुन पंचमी सुकलही, शेष कर्म हनि मोख,
गये समेदाचलथकी, शिवहित पद गुण धोख।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

बालपनै मल्लिनाथजी; विषय अरनि दुखकार,
प्रगट भस्म तप अग्नितैं करैं नमूं पद सार। १

(पद्धरी छंद)

जय तीन जगतपति मल्लिदेव, भव उदधि तार तुम शरन अेव,
जय धर्मतीर्थ करता जिनेश, जगबंधु विना कारन महेश। २

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जय तीर्थराज किरपानिधान, जय मुक्तरमा–भरता सुजान,
जय स्वयंबुद्ध शंभू महान, जय ज्ञानचक्षु करि विश्व जान। ३

जय स्वपर हितू मदमोह सूर, दीक्षा कृपाण गहि तुरत चूर,
जय तेरह चारित अनल धार, हत राग द्वेष वय अति कुमार। ४

तुम ज्ञान पोत लहि भवि अनेक, भवसिंधु तरे संशय न एक,
तुम वचनामृत तीरथ महान, ह्वै पावन जे करि हैं [1]सनान। ५

दुःकर्म पंक छिन ना रहाय, तुम वैन मेघ करिकें जिनाय,
तुम ज्ञान भान करिकैं ममेस, ह्वै तिमिर मोहको छय असेस। ६

शिवपंथ भव्य निर्विघ्न जाय, तेरी सहाय निर्वान पाय,
बहु जोगीश्वर तुम शरन थाय, निर्वान गये जासी अधाय। ७

जय दर्शन ज्ञान चरित्त ईश, धर्मोपदेश दाता महीश,
जय भव्यनिकर तारन जिहाज, भवसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज। ८

त्वं नाम मंत्र जो चित धरेय, सर्वारथसिधि शिवसौख्य लये,
मैं विनऊं त्रिविधा जोरि हाथ, मुझ देहु अछैपद मल्लिनाथ। ९

(धत्ता)

श्री मल्लिजिनेश्वर नमत सुरेश्वर, वसुविधि करि जुग पद चरचै,
दुह जर मरणावलि नसै भवावलि, रामचंद शिवतिय परचै। १०

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१ सनान = स्नान

श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनपूजा

(सवैया)

श्री मुनिसुव्रतदेव नमें, जिन सुव्रतधारी वरी शिवनारी,
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र जपैं, तुम नाम बढो जगमें सुखकारी;
सुव्रतवृत्ति प्रकाशनको, जिनवानि सुधाशसिरश्मि प्रचारी,
अत्र विराज विराज जिनेश्वर, थापत हूं ईत मैं त्रयवारी।

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा)

कंचन मणिमय भाजनमांही उज्ज्वल जल भरि लीजे,
श्रीजिन चरन चढाय गाय गुन, जन्म मरन-तज दीजे,
श्रीमुनिसुव्रतके पदपंकज सरन गही सुखकारी,
सरनागत प्रतिपाल तुम्ही हो, करुनानिधि जगतारी।

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

भव आताप निवारन कारन, बावन चंदन लावो,
मन वच काय लगाय भावसों, श्रीजिनचरन चढावो। श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

देवजीर सुखदास सुअक्षत, सुन्दर धोय धरीजे,
अक्षय गुनपरकाशन कारन श्रीजिनचरन जजीजे। श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

फूल मनोहर नाना विधिके वरन वरनके लावो,
काम बाण निरवारन कारन श्रीजिनचरन चढावो; श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सरस मनोहर व्यंजन नाना, षटरसजुत बनवावो,
क्रूर क्षुधा दुख दोष हरन को, श्रीजिनचरन चढावो।
श्रीमुनिसुव्रतके पदपंकज, सरन गही सुखकारी,
सरनागत प्रतिपाल तुम्हीं हो, करुनानिधि जगतारी।

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणिमय दीप अमोलक लेकर, जिन पद अग्र धरीजे;
नासन मोह महातमको, निज ज्ञान सुधारस पीजे। श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

कृष्णागर वर धूप मनोहर, गंध अनुपम लावो;
कर्म महा रिपु नाशन कारन, श्रीजिनचरन चढावो। श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

नानाविधिके फल उत्तम ले, श्रीजिनचरन चढावो,
मुक्ति महाफल पाय चतुर नर, फिर न जगतमें आवो। श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जलफल आदिक द्रव्य मिलाकर, अर्घ करो सुखकारी,
वलि वलि जाय जिनेश्वर पदकी, पूजा करि हितकारी। श्री०

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याण अर्घ

(चाल छंद)

सावन वदि दूज बताई, जिनगर्भ कल्याणक भाई,
सुर नर मिलि जिनवर पूजैं, हम पूजत निज सुख हूजै।

ॐ ह्रीँ श्रावणकृष्णद्वितीयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अ०

वैशाख अशित शुभ जानों, दशमी तिथि जन्म प्रमानो,
सुर असुर मिले सब आये, सुरगिरि पर पूज रचाये।

ॐ ह्रीँ वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख प्रथम दश जानो, जिन तपकल्यान महानो,
सुर असुर मिलै सब पूजैं, हमहू पूजत सुख हूजै।

ॐ ह्रीँ वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अ०

वैशाख वदी नवमीको, प्रगटो केवल जिनजीको,
हम पूजत हर्ष बढाई, निजरिद्धि मिलै सुखदाई।

ॐ ह्रीँ वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि फागुन बारस जानो, मुनिसुव्रत मुक्ति बखानो,
सुर असुर खगादिक ध्यावैं, हम हूं प्रभु तुम गुण गावैं।

ॐ ह्रीँ फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(धत्ता)

मुनिसुव्रतस्वामी शिवसुखधामी निजगुणनामी प्रभु दीजै;
प्रभु तुम गुण गाउं चरन नमाउं शिवसुख पाउं जस लीजै।

(छंद त्रोटक)

जय केवलज्ञान महानधरं, भवसागर नागर पोतवरं;
वसुकर्म अरीगणनासकरं, भविजीवनको गुन खासकरं।

भवताप–दवानल मेघझरं, अशु काम महाविष मंत्रपरं;
अरिविघ्न गयंदनको हरि हो, सुखसंपत्तिको क्षणमें भरि हो।

समवश्रतमांहि विराजत हैं, प्रतिहारजकी छवि छाजत हैं;
त्रय छत्र सु चौसट चंवर ढरैं, नभमें सुर दुन्दुभि घोर करैं।

चहुं ओरनतैं सुर आवत है, बहु भक्ति भरे गुनगावत हैं;
जिनके पदको सिर नावत है, तिनके नित मंगल गावत हैं।

गणराज तुमें नित ध्यावत हैं, सुरराज सुपूज रचावत हैं;
उपशांत स्वभाव पशू वरतें, अरिभाव करै न कभी परतें।

तुमरे पदपंकजमें वसिकें, अरु इन्द्रिय मनतनको कसिकें;
विधिकर्म अरीदल मैं घसिकें, निजराज लियो निजमें वसिकें।

तुम दीनदयाल कहावत हो, करुनानिधि नाम लहावत हो;
हमरे उरमांहि रहावत हो, फिर क्यो जगमें भरमावत हो।

जगमें तुमही ईक मालिक हो, सरनागत के प्रतिपालक हो;
तुमरे पदकी हम आस गही, मम वास करो निज पास सही।

(दोहा)

मुनिसुव्रतनाथ महाराजजी, सदा तुमारी आस,
मन वच शीस नवाईकें, नमैं जिनेश्वरदास।

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये,
जो नर मनवचकाय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिवसुख पायलहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

१५

श्री नमिनाथ-जिनपूजा

(गीता छंद)

संसार पारावारमें, दुख खार नीर अपार है,
जामें चतुरगति भ्रमण भारी, पूर पर असार है,
क्रोधादि जलचर जीव बहुविधि, जगत जीवन दुःख करें,
नमिनाथ जिनके चरन सेवत, भविकजन भवजल तरैं।

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद कुसुमलता)

पद्मद्रहको उज्ज्वल जल ले, रत्न कटोरी मांहि धरों,
जन्म जरादुःख दूर करनको, श्रीजिन सन्मुख धार करों,
श्रीनमिनाथ चरनको नमिके, जिन पदपंकज ध्यान धरों,
अव्याबाध अनंत गुणातम, मुक्तिरमानिधि आप वरों।

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलयागिरिको चंदन लेकर, केसर गंध मिलाउंगा,
भव आताप निवारण कारण श्रीजिनचरण चढाउंगा। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

सालि सुगंध मनोहर लेकर, अक्षत धोय बनाय धरों,
अक्षय पद प्रापतिके कारन, जिन पद आगें पुंज करों। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पारीजात मंदिर आदिके, फूल मनोहर लाते हैं,
समर सूलको मूल निवारें, जो प्रभु अग्र चढाते हैं। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

षट्रसके बहु व्यंजन लेकर, जिनमंदिरमें आते हैं,
श्रीजिनवर पद पूजें प्राणी, बहुविधि पुन्य बढाते हैं।
श्री नमिनाथ चरनको नमिके, जिन पदपंकज ध्यान धरों,
अव्याबाध अनंत गुणातम, मुक्तिरमानिधि आप वरों।

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

बहुविधि रत्न अमोलक लेकर, उत्तम दीप बनावों सार,
श्रीजिनवरकी पूजा करके, उत्तम ज्ञान लहों अविकार। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

कृष्णागर करपूर मिलाकर, धूप सुगंध मिलाय धरैं,
खेवें श्रीजिनवरके आगे, गंध धूप सब कर्म जरैं। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

लोंगलायची किसमिस पिस्ता, बहुविधिके फल लावत हैं,
भक्तिवंत भविजन या जगमें,श्रीजिन पूज रचावत हैं। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जलफल आठों दरब मिलाकर, उत्तम अर्घ बनाया है,
कर्म महा अरिदल भंजनको, जिनवर चरन चढाया है। श्रीनमि०

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

दोजवदी आसोजकी, गर्भागम सुखकार;
अर्घ चढाय नमूं सदा, जिनवरके पद सार।

ॐ ह्रीँ आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अ०

वदि असाढ दसमी दिना, जन्म लियो जिनराय;
सकल सुरासुर आईके, सुरगिरि पूजें पाय।

ॐ ह्रीँ अषाढकृष्णदशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अ०

जन्म दिवस जिनराजने, तप लीनों अविकार;
लौकांतिक सुर बोधियो, धन्य दिवस वह सार।

ॐ ह्रीँ अषाढकृष्णदशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अ०

मगसिर सुदि ग्यारस लियो, पंचम ज्ञान महान;
सुरसुरेश सब आयकें, पूजें पद सुख दान।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अ०

वदि वैशाख चतुर्दशी, संमेदाचल शीस;
देव आय पूजे प्रभु, सिद्ध भये जगदीश।

ॐ ह्रीँ वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अ०

जयमाला

(धत्ता)

जय जय गुणसागर जगत उजागर, इकवीसम तीर्थेशपति;
मैं तुम पद ध्याउं शीस नवाउं, नित ध्याउं शिवशर्मअती।

(पद्धरी छंद)

जै जै जिनराज दयानिधान, जै पद पूजत सुर महान;
जय गर्भ महोत्सव सुखदसार, हरि ततक्षण आयो राजद्वार।

जय जनम समय आनंदधार, कनकाचल देव जुरे अपार;
अरु विद्याधर बहुभक्ति धार, निज मुखसे जै जै रव उचार।

वसु अधिक सहस कलसा महान, जल क्षीरोदधिको शुद्ध जान;
सुरपतिने जिनपतिको सनान, अति भक्ति सहित सुर करै गान।

इन्द्रानी जिनवरको शृंगार, बहु करैं हर्ष मनमें अपार;
त्रैलोक्य तिलकके तिलकदेव, निज जन्म सफल माना सुतेव।

सिर मुकुट हृदयमें हार सार, ताकी महिमा को कहे पार;
अरु कानन कुंडल जगमगाय, जिनकी दुति सूरजशसि छिपाय।

केयुर कटक आभर्णसार, जिन तन संयोग सोहै अपार;
अरु वस्त्र विविध पहराय सार, पूरववत आयो गृहमझार।

जय करत नृत्य सुरईस आय, गुणवरनन बहुविधि करत लाय;
कर उत्सव सुरपति शीस नाय, सब निज निज थल पहुंचे सुजाय।

फिर पाय राज कछु काल सोय, ग्रहवास बसे व्रतदेश जोय;
फिर तपधरि केवलरिद्धि पाय, शिवपुर पहुंचे तुम हे जिनाय।

निरवान थान संमेद जान, मैं नमन करुं उर हर्ष मान;
तुम जग जयवंते होहु देव, हम शीस नाय नित करत सेव।

(दोहा)

श्री नमिनाथ अनाथजिन, अधमउधारक सार;
कृपा जिनेश्वरपै करो, तुम त्रिलोक सरदार।

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये;
जो नर मनवचकाय प्रभू पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री नेमिनाथ-जिनपूजा

(जोगीरासा)

श्री हरिवंश उजागर नागर नेमीश्वर जिनराई,
बालब्रह्मचारी जगतारी श्याम शरीर सुहाई;
जादववंश महानभ पूरन चंद्रकला सुखदाई,
अत्र विराज हरो दुख हमरो शिवसुख द्यो जिनराई।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्!

(गीता छंद)

पद्मद्रहको नीर मनोहर कंचन झारी मांहि धरों,
जनम जरा दुःख दूर करनको, श्री जिन सन्मुख धार करों;
बालब्रह्मचारी जगतारी नेमिश्वर जिनराज महान,
मैं नित ध्यान धरूं प्रभु तेरा, मोकुं दीजो अविचल थान।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलयागिर करपूर मिलाया केशर रंग अनूपम जान,
भव आताप रहित जिनवरके चरनकमलको पूजे आन। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

चंद किरनसम उज्ज्वल लीजे, अक्षत स्वच्छ सरल गुणखान;
अक्षयपदके नायक प्रभुको, पूजैं हर्ष सहित हित मान। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

वरन वरनके कुसुम मंगावैं, कुसुमायुध अरि जीतन काज;
कुसुमायुध विजयी जिनवरके, चरनकमलको पूजें आज। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

मनमोहन पकवान बनावो, हरष सहित प्रभुके गुण गाय;
क्षुधा रोगके नाश करनको, श्री जिन चरनन देत चढाय।
बालब्रह्मचारी जगतारी नेमीश्वर जिनराज महान,
मैं नित ध्यान धरूं प्रभु तेरा, मोकूं दीजो अविचल थान।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणिमय दीप अमोलक लेके, रतन रकेबीमें धर लाय;
मोह महातम नासक प्रभुके, चरणाम्बुजमें देत चढाय। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

कृष्णागर करपूर मिलाकर, धूप सुगंध मनोहर आन;
कर्मकलंक निवारक प्रभुके, चरमकमल ते पूजौं आन। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल लोंग सुपारी पिस्ता, अेला केला आदि महान;
मुक्ति श्रीफलदायक प्रभुके, चरणाम्बुज पूजे गुणखान। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुन, रतनथार भरिये सुखदान,
अष्टकर्मके नासक प्रभुको, पूजौं निज गुणदायक जान। बाल०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(चाल छंद)

छठि कार्तिक सुत सुखदाई, गर्भागम मंगल भाई,
इन्द्रादिक पूज रचाई, हम पूजें अर्घ चढाई।

ॐ ह्रीँ कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सित श्रावण छठि शुभ जानौं, जन्में जिनराज महानों,
पितु समुदविजय सुख पायो, जिनको हम शीस नवायो।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सावन सुदि छठि शुभ जानों, तजि राज महाव्रत ठानों,
शिव नारि हरष बहु कीनों, हम तिनके पद चित दीनों।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सित अेकें आश्विन भाई, चउ घाति हने दुखदाई,
वर केवलज्ञान सुलीनों, जिनके पदमें चित दीनों।

ॐ ह्रीँ आश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सित साढ सप्तमी जानों, जब जोग निरोध प्रमानों,
गिरनार सिखर शिव पाई, वन्दौं मैं शीस नवाई।

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

बालब्रह्मचारी प्रभू, नेमीश्वर महाराज,
मेरो नेम निभाईयो, यह अरजी सुनि आज।

(चाल ख्यालकी)

हरि पार न पावैं जिनकें गुण गावैं सुर नर शेषजी। टेक
श्याम शरीर धनुष दस ऊंचौ शंख चिह्न पगमांही;
समुद्रविजय राजाके प्यारे मात शिवा सुखदाय,
श्री यदुवंश अकाश चंद्रमा नेमीश्वर जिनराय।

(रेखता)

जाके चरन आराधैं बलिहरि देवजी, जिनके गर्भ जन्म सुर आई,
धारा रतनकी बरसाई, जाके चरन आराधैं बलिहरि देवजी।

भविजन सरस चकोर चंद्रमा सुखसागर भरपूर,
स्वहित निश दिन बढावैंजी जिनके गुण गावैं सुर नर शेषजी।

मति श्रुति अवधि सहित प्रभु जन्मे बल अनन्त तन धार,
बाल समैं मकरध्वज मारौ सूरनमैं सिरदार,
मिलि हरि पांडव भूप झुलाये कर अंजुलिमें सार।

(रेखता)

बलको न पायो सुरनर शेषजी,
हरिको सुरसें शंख बजायो, शय्या दलि मलि धनुष चढायो,
बलको पार न पायो सुरनर शेषजी।

धनु टंकोर सुनत बलि केशव जिनवरके ढिग आय,
विनयकर शीस नवायोजी, जिनके गुण गावैं सिरनर शेषजी।

बालब्रह्मचारी जगतारी सदा विराग सरूप,
व्याह समें पशु दीन निरखिकैं राज तजो दुखकूप,
बारह भावना भावैं नेमिजी भये दिगम्बर रूप।

(रेखता)

जिनके हिरदेमें आई करुना जीवकी, छोडी राजमतीसी नारी,
जाके तप लीनों गिरनारी, जिनके हिरदे में आई करुना जीवकी।

छप्पन दिन छद्मस्थ रहे जिन चार घातिया चूर,
ज्ञान लहि सर्व लखायोजी जिनके गुण गावैं सुर नर शेषजी।

समवसरनकी महिमा राजै श्रीमंडप सुखकार,
रतन सिंहासन ऊपर प्रभुजी पद्मासन निरधार,
तीन छत्र सिर ऊपर राजैं चोसठि चामर सार।

(रेखता)

जिनके हाजिर ठाढे इन्द्र नरेन्द्र नभमें दुंदुभिकी धुनि भारि,
वरषें फूल सुगंध अपारी जिनके हाजिर ठाढे इन्द्र नरेन्द्रजी।

वृक्ष अशोक शोक सह नासै वाणी दिव्य प्रकाश,
स्वहित वृष निज निधि पावैजी जिनके गुण गावै।
श्री गिरनार सिखरतें स्वामी पायो पद निरवान,
कर्म कलंक रहित अविनाशी सिद्ध भये भगवान,
पंच कल्याणक पूजा कीनी सकल सुरासुर आन।

(रेखता)

अपने बिरद निवाहो दीनदयालजी, मोकों दीजै निजकी माया,
कारज कीजै मन ललचाया, अपनो बिरद निवाहो दीनदयालजी।
अरज जिनेश्वरकी सुन स्वामी, नेमीश्वर महाराज,
हृदयमें तुम पद ध्याऊंजी जिनके गुण गावोजी।

(दोहा)

चरणन शीस नवाईके, पूजा कर गुन गाय,
अरज करूं यह अेक मैं भवभव होहु सहाय।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं नि०

(अडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक मानि गये शिव–थानिये;
जो नर मन वच काय प्रभू पूजैं सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही।

॥ ईत्याशीर्वादः पूष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुणनिधिधाम,
शंख चिह्न पदमें निरखि, पुनि पुनि करें प्रनाम। १

(छंद पद्धरी)

जै जै जै नेमि जिनंद चन्द, पितु समुद देन आनंदकन्द,
शिवमात कुमुदमनमोदकाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय। २

जय देव अपूरव मारतंड, तम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड,
शिवतियमुखजलजलिविकाशनेश, नहिं रह्यों सृष्टि में तम अशेश। ३

भविभीत को कीनों अशोक, शिवमग दरशायो शर्मथोक,
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर, तुम आगम निपुण पुनीत धीर। ४

तुम केवलजोति विराजमान, जै जै जै जै करुणानिधान,
तुम समवसरनमें तत्त्वभेद, दरशायो जाते नशत खेद। ५

मित तुमकों हरि आनंदधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार,
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनन्त गुनवंतराय। ६

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष,
जय कुमतिमतंगनको मृगेन्द्र, जय मदनध्वांतको रवि जिनेन्द्र। ७

जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध, जय रिद्धिसिद्धि दाता प्रबुद्ध,
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागरमहं सुष्टु यान। ८

तुव भगति करैं ते धन्य जीव, ते पावैं दिव शिवपद सदीव,
तुमरो गुन देव विविध प्रकार, गावत नित किन्नरकी जु नार। ९

वर भगतिमाहि लवलीन होय, नाचैं ताथेई थेई थेई बहोय,
तुम करुनासागर सृष्टिपाल, अब मोकों वेगि करो निहाल। १०

मैं दुख अनंत वसुकरमजोग, भोगे सदीव नहीं और रोग,
तुमको जगमें जान्यो दयाल, हो वीतराग गुनरतनमाल। ११

तातें शरना अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय,
यह विघन करम मम खंडखंड, मनवांछित कारज मंडमंड। १२

संसारकष्ट चकचूर चूर, सहजानंद मम उर पूर पूर,
निज पर प्रकाशबुधि देह देह, तजिके विलंब सुधि लेह लेह। १३

हम जांचत है यह वार वार, भवसागरतें मों तार तार,
नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख, तातें विनवों हे सुगुनमुक्ख। १४

(धत्ता)

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं सुखकारं,
भवभयहरतारं शिवकरतांर, दातारं धर्माधारं।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि०

(मालिनी)

सुख धन यशसिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धि,
सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि रिद्धि;
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी,
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोक्ष नारी।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

Hemant Mistri

श्री नेमिनाथ-जिनपूजा

(छंद लक्ष्मीधरा)

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी, धर्म अवतार दातार सो चैनकी,
श्री शिवानंद भौफंद निकंदनं, ध्यावें जिन्है ईन्द्र नागेन्द्र औ मैनकी,
पर्म कल्यानके देनहारे तुम्हीं, देव हो अेव तातें करौं अैनकी,
थापि हौं वार त्रय शुद्ध उच्चार कें, शुद्धता धार भौपार कूं लैनकी।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल होली)

दाता मोक्षके श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ।।टेक।।
निगम नदी कुश प्रासुक लीनों कंचन भृंग भराय,
मनवचतनतैं धार देत ही, सकल कलंक नशाय। दाता०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

हरिचंदन जुत कदलीनंदन, कुंकुम संग घसाय,
विघनताप नाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय। दाता०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

पुण्यराशि तुम जस सम उज्ज्वल, तंदुल शुद्ध मंगाय,
अखय सौख्य भोगनके कारण, पुंज धरों गुण गाय। दाता०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पुंडरीक तृण द्रुम को आदिक, सुमन सुगंधित लाय,
दर्प्पक मनमथ भंजनकारन, जजहुं चरन लव लाय। दाता०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरत मंगाय,
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुं चरन उमगाय। दाता०

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

कनकदीप नवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय,
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि, जजहुं चरन हुलसाय।
दाता मोक्षके श्री नेमिनाथ जिनराय।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

दशविध गंध मंगाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय,
दशों बंध जारनके कारन, खेवों तुम ढिंग लाय। दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

सुरस वरन रसना–मनभावन, पावन फल सु मंगाय,
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुम पाय। दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरव मिलाय,
अष्टम छितिके राज करनकों, जजों अंग वसु नाय। दाता०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

सित कातिक छट्ठ अमंदा, गरभागम आनंदकंदा,
शचि सेय शिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सित सावन छट्ठ अमंदा, जनमे त्रिभुवनके चंदा,
पितु समुद महा सुख पायो, हम पूजत विघन नशायो।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

तजि राजमती व्रत लीनों, सित सावन छट्ठ प्रवीनो,
शिवनारि तबै हरषाई, हम पूजें पद शिरनाई।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सित आसिन अेकम चूरे, चारों घाती अति क्रूरे,
लहि केवलमहिमा सारा, हम पूजें अष्ट प्रकारा।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदादिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सितषाढ अष्टमी चूरे, चारों अघातिया क्रूरे,
शिव उर्ज्जयंततैं पाई, हम पूजे ध्यान लगाई।

ॐ ह्रीं अषाढशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(जोगीरासा छंद)

उर्ज्जयंत गिरिराज मनोहर, देखत ही मन मोहे,
राजुलपति शिवथान बिराजै, उत्तम तीरथ जो है;
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचुर मुनि, पंचमगति तहंपाई,
तास तनी महिमा को वरने, श्रवण सुनत हरखाई।

(पद्धरी छंद)

जै जै जै नेमि जिनंदचंद, सुर नर विद्याधर नमत इन्द,
जै सोरठ देश अनेक थान, जूनागढ पै शोभित महान।

तहां उग्रसेन नृपराजद्वार, तोरण मंडप शुभ बने सार,
जै समुदविजय–सुत व्याह काज, आये हर बल जुत आन साज।

तहं जीव बंधे लख दया धार, रथ फेर जंतु बंधन निवार,
द्वादश भावन चिंतवन कीन, भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन।

तज परिग्रह परिणय सर्व संग, ह्वै अनगारी विजयी अनंग,
धर पंच महाव्रत तप मुनीश, निज ध्यान धरो हो केवलीश।

इस ही सुथान निर्वाण थाय, सो तीरथ पावन जगतमाय,
अरु शंभु आदि प्रद्युम्नकुमार, अनिरुद्ध लही पदमुक्ति धार।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

पुनि राजुल हू परिवार छांड, मन वचन काय कर जोग मांड,
तप तप्यो जाय तिय धीर वीर, संन्यास धार तजकें शरीर।
तिय लिंग भेद सुर भयो जाय, आगामी भवमें मुक्ति पाय,
तहं अमरगण उर धर अनंद, नितप्रति पूजत हैं श्रीजिनंद।
अरु निरतत [१]मघवायुक्त नार, देवनकी देवी भक्ति धार,
ताथेई थेई थेई थेई करन जाय, फिरि फिरि फिरि फिरि फिरिकी लहाय।
मुहचंग बजावत तारबीन, तननन तननन तन अति प्रवीन,
करताल ताल मिरदंग और, झालर घंटादिक अमित शोर।
आवत श्रावकजन सवै ठाम, बहु देश देश पुर नगर ग्राम,
हिलमिल सब संघ समाज जोर, हय गय वाहन चढ रथ बहोर।
जात्रा उत्सव निशिदिन कराय, नर नारिउ पावत पुण्य आय,
को बरनत तिस महिमा अनूप, निश्चय सुर शिवके होय भूप।

(धत्ता)

श्री नेमिजिनंदा आनंदकंदा, पूजत सुरनर हित धारी,
तिस नमत 'जवाहर', जुगकर शिरधर, हर्ष धार गढ गिरनारी।

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रसे निर्वाणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथ शंभुप्रद्युम्नअनिरुद्ध और बहत्तरकोटि सातसौ मुनिभ्य: मोक्षपदप्राप्तेभ्य महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१. इन्द्र

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री नेमिनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल)

घणे जंतु रव कर्यो नेमि सुनि गिर गये,
तजि रजमति भव अनिति पेखि मुनिवर भये;
ध्यान खडग गहि हने कर्म शिव तिय वरी,
आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद त्रिभंगी)

निर्मल ल्याय महातीर्थोदक, कनक रतनमय भरि झारी,
मनवचतन सुध करि जिनपद पूजे, नसै जन्म मृति दुखकारी;
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

शुभ कुंकुम ल्यावैं अगर मिलावें, चंदनतें घनसार घसै,
तसु परसि समीर चलै अति सीतल, महा दाह ततकाल नसै।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

शुभ शालि अखंडित सौरभ मंडित, शशि सम उज्ज्वल अनियारे,
भूपन कूं औसर मुक्तासी दुति, पुंज करैं भवि मनहारे।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०

कुसुम मनोहर ध्राणनके हर, पंचवरन अति सुखकारी,
सुरतरुके पावन चखि ललचावन, अति मृदुतैं भवि भरि थारी।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

अति मिष्ट मनोहर घेवर फेनी, मोदक गूझा भरि थारी,
रसना के रंजन रसके पूरे, क्षुधा निवारन बलकारी।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीप रतनमय जोति मनोहर, कनक रकाबी में धारैं,
तम मोह नसै जिम पवन थकी घन, स्वपर लखै गुण विस्तारैं।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

शुभ धूप दशांग हुताशनके संग, लै धूपायन मांहि भरैं,
तसु सौरभतैं मधु गुंजत आवैं, अष्टकर्म ततकाल जरैं।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

पूंगी दाख बदाम छुहारा, अेला श्रीफल जुत ल्यावें,
भरि कनक थाल में मनके रंजन, मोच्छ महाफल लहु पावैं।
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दशांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी।

श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पशुवनकी रव सुनिके करूणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निः

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

षष्ठी कार्तिक कृष्ण ही, अपराजित अहमिंद,
चय शिवदेव्या उर लयो, जजूं चरण गुणवृंद।

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जनमें श्रावण षष्ठि सित, वासव चतुरनिकाय,
स्नपन करि सुर गिरि जजे, मैं जजहूं गुणगाय।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

षष्ठी श्रावण सुकल ही, तजि विवाह सुकुमार,
उर्जयंत गिरि तप धरयो, जजू चरण अवतार।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सुदि अश्विन प्रतिपद हने, घातिकर्म दुखदाय,
घाति कर्म केवल भये, जजूं चरण गुण गाय।

ॐ ह्रीँ आश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सकल साढ सप्तमि गये शेष कर्म हनि मोख,
सिव कल्याण सुरपति कर्यो, जजूं चरण गुणघोख।

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(रोला छंद)

लखि अनित्य भव तज्यौ राज तृणवत तप धार्यो,
करि बहु विधि उपवास सकल आगम विसतार्यो;

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

मुनि सुप्रतिष्ठित नमूं भावना षोडस भाये,
करि समाधि अहिमिंद भये तीर्थंकर थाये। १

(पद्धरी छंद)

जय समुद्रविजै शिवदेवि माय, श्री नेमि जिनेश्वर गर्भ आय,
तिष्ठे कार्तिक सुदि षष्ठि देव, गर्भहि कल्याण आये स्वमेव। २

हरिवंस व्योम मधि सुष्ठु भान, सित श्रावण षष्ठी जनम थान,
सौरीपुरतैं सुरमेरु लेय, जन्माभिषेक करि गण भनेय। ३

जय देव महाबल धरन बाल, द्रह प्रचुर नीर मनु कुसुम माल,
जय धीरधुरंधर मेरु शृंग, अति पावन लावनि सकल अंग। ४

जय दोष निराकृत धर्म धोख, भवतारक संभव करन मोख,
जय मोहन मूरति सिष्ट पाल, पितु मात पद्म रवि प्रातकाल। ५

बहु नृत्य ठानि पितु आतु देय, जय वृद्ध भये गिन राज हेय,
सित श्रावण षष्ठी जंतु पेखि, भयभीत भये भवतैं विसेखि। ६

तप धारि तज्यौ परिगह पिसाच, नुति सिद्धोंको करि त्याग वाच,
गहि ध्यान खडग चउधाति मार, लहि केवल शिव प्रतिपद कुआर। ७

धन देव रच्यौ समवादिसार, जिन अंतरीक करिकैं विहार,
वन ग्राम नगर पुर सर्वदेश, कहि धर्म भव्य तारे महेश। ८

भवकूप इहै अघको भंडार, तिसमैं दुख है सुख ना लगार,
तुम तारण विरद निहारि देव, मैं सरन गही मुझि तारि देव। ९

दिन सप्तमि सित आषाढ मोखि, जिन प्रकृति पिचासी शेष सोखि,
गिरनारि शिखर निर्वानथान, चंदराम नमै निति धारि ध्यान। १०

(धत्ता)

इह पंच कल्याने सुरपति ठाने, नरपति खगपति निति ध्यावैं,
जो पढें पढावैं सुर धरि गावैं, तो शिवके सुख लहु पावैं। ११

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री पार्श्वनाथ-जिनपूजा

(अडिल्ल)

पारस मेरु समान ध्यानमें थिर भये,
कमठ किये उपसर्ग सबै छिनमें जये;
ज्ञानभान उपजाय हानि विधि शिव वरी,
आह्वानन विधि करूं प्रणमि त्रिविधा करी।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

सरद इदु समान उज्ज्वल स्वच्छ मुनि चित सारसौ,
शुभ मलयमिश्रित भृंग भरिहूं सीत अति ही तुषारसौ;
सो नीर मनहर तृषा नासन, हिमन उद्भव ल्याय ही,
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हिदै हरष उपाय ही।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

घनसार अगर मिलाय कुंकुम, मलय संग घसाय ही,
अतिसीत होय सनेह उस्न जु बूंद अेक रलाय ही,
सो गंध भवतपनाश कारन, कनक भाजन ल्याय ही। श्रीपार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि०

सरित गंगा अंबु सींची, शालि उज्ज्वल अति घनी,
दुति धरै मुक्ताकी मनोहर, सरल दीरघ जुत अनी;
सो अछित औघ अखंड कारन, अखय पदकूं ल्याय ही। श्रीपार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

कनकनिर्मय रतन जडिये, पंच वरन सुहावने,
प्रसून सुंदर अमर तरुके, गंधजुत अति पावने;
सो लेय समरनिवारकारण, घ्राण चकिख सुहाय ही,
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजुं हिदै हरष उपाय ही।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

लछिम निवास सरोज उद्भव, तथा सोमथकी झरे;
आमोद पावन मिष्ट अति चित; अमी भुंजनको हरे;
सो चारुरस नैवेद कारण, छुधा नासन ल्यायही। श्रीपार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

कनक दीप मनोग मणिमय, भानभासुर मोहने,
तम नसै ज्यौं घन पवन नासै, धूमवर्जित सोहने;
मम मोह निविड विध्वंस कारण, लेय जिनगृह आयही। श्रीपार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

श्रीखंड अगर दशांग धूप, सु कनक धूपायनि भरैं,
आमोदतैं अलिवृन्द आवें, गुंजतैं मनकूं हरैं;
वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण, अग्निसंग जराय ही। श्रीपार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि०

अति मिष्ट पक्व मनोग्य पावन चक्खि घ्राणनकूं हरे,
अलि गुंज करत सुगन्ध सेती, सुधाकी सरभरि करे;
सो फल मनोहर अमरतरुके स्वर्णथाल भराय ही। श्रीपार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

सलिल सुच्छ सु अगर चन्दन अछित उज्ज्वल ल्यायही,
वर कुसुम चरुतैं छुधा नासै, दीप ध्वांत नसायही;
करि अर्घ धूप मनोग्य फल लै "राम" शिवसुख दायही,

श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार,
दोज असित वैशाख ही, लयो जजू पद सार।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पौष कृष्ण अेकादसी, तीन ज्ञानजुत देव,
जनमें हरि सुरगिरि जजे, मैं जजहूं करि सेव।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

दुर्धर तप सुकुमार वय, काशी देश विहाय,
पोष कृष्ण अेकादशी, धर्यो जजूं गुण गाय।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

कृष्ण चौथि सुभ चैतकी, हने घाति लहि ज्ञान,
कह्यो धर्म दुविधा मुदा, जजू बोध भगवान।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

सप्तमि श्रावण सुकल ही, शेष कर्म हनि वीर,
अविचल शिवथानक लयो, जजूं चरण धर धीर।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरणकमल जुगसार,
प्रचुर भवार्णव तुम हर्यो, मुझ तारौ भव तार। १

(चाल–ते साधु मेरे उर वसो मेरी हरहु पातक पीर)

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र बन्दूं, शुद्ध मन वच काय,
धनि पिता अश्वसेनजी, धनि धन्य वामा माय;
धनि जनम काशी देशमें बानारसी शुभ ग्राम,
प्रभु पास द्यौ मुझ दासकी सुनि अरज अविचल ठाम। १

अतिशय मनोहर सजल जलद समान सुंदर काय,
मुख देखिकैं ललचाय लोचन नैक तृपति न थाय;
पदकमलनखदुतिकवल चपला कोटिरविछवि खाम। प्रभु पास० २

है अधोमुख पंचाग्नि तपतो कमठ कोचर क्रूर,
तित अगनि जरते नाग बोधे देय वच वृष पूर;
वे भये हैं धरनेंद्र पदमा भवनत्रिक रिधि धाम। प्रभु पास० ३

इम उरग मरत निहारिकैं सब अथिर सरन न जोय,
संसार सो भ्रमजाल है जिम चपल चपला होय;
हूं अेक चेतन सासतो शिव लहूं तजिकैं धाम। प्रभु पास० ४

इम चितवतां लोकांतके सुर आय पूजे पाय,
परिणाम करि संबोधि चाले चितवते गुण ध्याय;
धनि धन्य वय सुकुमारमें तप धर्यो अतिबल धाम। प्रभु पास० ५

बंदूं समै जिन धरी दिछया विहरी अहिछिति जाय,
तित ठये वनमें दुष्ट वो सुर कमठ कोचर आय;
अतिरूप भीषण धारिकैं फुंकार पन्नग स्याम। प्रभु पास० ६

है तुंग वारण सिंह गरज्यौ उपलरज बरसाय,
करि अगनि बरषा मेघ मूसल तडित परलय वाय,
प्रभु धीर वीर अत्यंत निरभय असुरको बल खाम। प्रभु पास० ७

वाही समै धरणेंद्रको नय मुकुट कंप्यो पीठ,
हरि आय सिंघासन रच्यो फणमंड कीनों इठ;
तब असुर करनी भई निरफल अचल जिन जिम धाम। प्रभु पास० ८

धरि ध्यान जोग निरोधकैं चउघाति कर्म उपारि,
लहि ज्ञान केवलतैं चराचर लोक सकल निहारि;
समवादि भूति कुबेर कीनी कहै किम बुधि खाम। प्रभु पास० ९

हरि करी नुति कर जोरि विनती धन्य दिन इह बार,
धनि घडी या प्रभु पासजी हम लहैं भवकी पार;
धनि धन्य वानी सुनी मैं अघनासनी पुनि धाम। प्रभु पास० १०

वसु कर्म नासि विनासि वपु शिवनयनि पाई वीर,
वसु द्रव्यतैं वह थान पूजैं टरे सबही पीर;
सो अचल हैं सम्मेदपै मम भाव है वसु जाम। प्रभु पास० ११

कर जोरिकें 'चंदराम' भाषैं अहो धनि तुम देव,
भवि बोधिकैं भवसिंधु तारे तरनतारन टेव;
मैं नमत हूं मो तारि अबही ढील क्यों तुम काम। प्रभु पास० १२

निति पढें ये नरनारि सबही हरैं तिनकी पीर,
सुरलोक लहि नर होय चक्री काम हलधर वीर;
पुनि सर्व कर्म जु घाति कैं लहि मोख सब सुख धाम,
प्रभु पास द्यौ मुझ दास की सुनि अरज अविचल ठाम। १३

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ-जिनपूजा

(गीता छंद)

वर स्वर्ग प्राणतकों विहाय, सुमात वामासुत भये,
विश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये;
नव हाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसै,
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसैं।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद नाराच)

क्षीर सोमके समान अंबुसार लाईअे,
हेमपात्र धारिकैं सु आपको चढाइअे;
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये;
आप चर्न चर्च मोहतापको हनीजिये। पार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदन नि०

फेन चंदके समान अक्षतान् लाईकैं;
चर्नके समीप सार पुंजको रचाइकैं। पार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

केवडा गुलाब और केतकी चुनायकैं;
धार चर्नके समीप कामको नसाइकैं। पार्श्व०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्यमें सनै;
आप चर्न चर्चते क्षुधादि रोगको हनैं।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

लाय रत्नदीपको सनेह पूरके भरूं;
वातिका कपूर बारि मोह ध्वांतको हरूं। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

धूपगंध लेयकैं सुअग्निसंग जारिये;
तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

खारिकादि चिरभटादि रत्नथालमें भरूं;
हर्ष धारिकैं जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरूं। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये;
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये। पार्श्व०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(चाल छंद)

शुभ प्राणतस्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये;
वैशाख तनी दुति कारी, हम पूजें विघ्न निवारी।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

जनमें त्रिभुवन सुखदाता, अेकादशि पोष विख्याता;
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

कलि पौष इकादशि आइ, तब बारह भावन भाई;
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजें चरन जजीना।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

कलि चैत चतुर्थी आइ, प्रभु केवलज्ञान उपाई;
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

सित सातैं सावन आइ, शिवनारी वरी जिनराइ;
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजें मोक्ष कल्याना।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

जयमाला

(छंद)

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौनभखी जरतें सुन पाये;
कर्यो सरधान लह्यो पद आन, भयो पद्मावति शेष कहाये।
नाम प्रताप टरैं संताप सु भव्यनको शिवशरम दिखाये;
हो विश्वसेनके नंद भले, गुण गावत हैं तुमरे हरखाय। १

(दोहा)

केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ;
लक्षण उरग निहार पग, बंदौं पारसनाथ। २

(मोतियादाम छंद)

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुं गोपुर शोभ अपार;
सु कोटतनी रचना छवि देत, कंगूरनपै लहकै बहु केत। ३

बनारसकी रचना जु अपार, करी बहुभांति धनेश तैयार;
तहां विश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार। ४

तज्यो तुम प्रानत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन;
तबै सुरइंद नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सु जाय। ५

पिता–घर सौंपि गये निज धाम, कुबेर करै वसु जाम सु काम;
बढैं जिन दोज मयंक समान, रमै बहु बालक निर्जर आन। ६

भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महासुखकार;
पिता जब आन करी अरदास, करौं तुम ब्याह वरै मम आस। ७

करी तब नाहीं रहे जगचंद, किये तुम काम कषाय जु मंद;
चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग। ८

लख्यो इक रंक करै तपघोर, चहूं दिशि अगनि बलै अतिजोर;
कहैं जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै बहु जीवनकी मत घात। ९

भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाइ सजीव;
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मरिषीसुर आय। १०

तबहि सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिबिका निज कंध मनोग;
कियो वनमांहि निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंदकंद। ११

गहे तहं अष्टमके उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास;
दयो पयदान महासुखकार, भयी पनवृष्टि तहां तिहिं बार। १२

गये तब काननमांहि दयाल, धर्यो तुम योग सबहि अघ टाल;
तबैं वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठाचरको सुर आन। १३

करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरव वैर विचार गहीर;
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर। १४

रह्यो दशहूं दिशिमैं तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहि जाय;
सु रुंडनके विन मुंड दिखाय, पडै जल मूसलधार अथाय। १५

तबै पदमावति–कंथ धनिंद, चले जुग आय जहां जिनचंद;
भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यौ तब केवळज्ञान विशाल। १६

दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार;
सुवर्णभद्र जहं कूट प्रसिद्ध, वरी शिव नारि लही वसु रिद्ध। १७

जजूं तुम चरन दुहूं कर जोर, प्रभु लखिये अब ही मम ओर;
कहै बखतावर रत्न बनाय, जिनेश हमें भव पार लगाय। १८

(धत्ता)

जय पारस देवं सुरकृत सेवं, वंदत चर्न सुनागपती;
करुणाके धारी पर उपगारी, शिवसुखकारी कर्महती। १९

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(छप्पय)

जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुःख सब जाय भीत व्यापै नहिं कितही;
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रमसों शिव लहै, रतन इमि कहै पुकारे। २०

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

श्री पार्श्वनाथ-जिनपूजा

(छंद कुसुमलता)

प्राणत देवलोक तजि स्वामी बनारस हर्ष महान,
अश्वसेन नृप तात प्रभूके वामा उर जन्मे सुखदान;
हरितवरन मनहरन दिव्य तन, सकल सुरासुर मानैं आन,
पारसनाथ अनाथनके पति, अत्र बिराजो भ्रम तम भान।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छंद गीता)

शशि रश्मि सम शुचि स्वच्छ शीतल, नीर सुर सरिता तनों,
दुख त्रषारहित जिनेन्द्र के पद, पूज निज दुख नासनों;
संसार विषम विदेशवत, कलिकाल वन विकराल है,
तहां भ्रमत भविको सुखद, पारस नाम धाम कृपाल है।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

भव भ्रमत काल अनादि वीतौं दुख दवानलमें दह्यो,
गोसीर चंदन लाय प्रभु तुम चरन पूजि सुखी भयौ। सं०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

हिम हीर नीरज रश्मि शसि सम स्वच्छ अक्षत लीजिये,
जिनचरन पूजि अपूर्व निजगुन भाव प्रकाशित कीजिये। सं०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

जग मदन सरकी विकट ज्वाला हरि हरादिक वश परे,
तिहिं मदन भंजन देव पदयुग पुष्पसे पूजा करे। सं०

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

विधि विष्णु शंकर सुर असुर नर जास वश दुख पावहीं,
तिहि क्षुधारोग निवार कारन चरु जिनेश चढावहीं।
संसार विषम विदेशवत, कलिकाल वन विकराल है,
तहां भ्रमत भविको सुखद, पारस नाम धाम कृपाल है।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

भव वन अज्ञान महान तममें स्वहित मग नहि पावहीं,
निज ज्ञानभानु प्रकाश कारन दीप ले जिन ध्यावही। सं०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

वसु विध प्रचंड अखंड वैरी बहुत विधि दुख देत है,
जिन चरन पूजित धूप सेती कर्म नाशत हेत है। सं०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

चहुं गति भ्रमत नहिं पार पायौ काल बहुत गमाइयौ;
तिहिं भ्रमण भंजन हेत प्रभु ढिंग सुफल लेकर आईयौ। सं०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

शुचि जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ उत्तम कीजिये;
भवभ्रमण भंजन हेत प्रभुकों पूजि शिवसुख लीजिये। सं०

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

दोज वदी वैशाखकी, गर्भागम सुखकार,
नमों तिन्हें मन वचनतें, अर्घ चढाऊं सार।

ॐ ह्रीँ वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

पौष वदी ग्यारस दीना, जन्म लियो जिनराज,
सुरगिरिपै सुरपति जजें, हम पूजें हितकाज।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जन्मदिवस जिनराजने, तप लीनों हितकाज,
तिहिं विधि मुहि फल दीजिये, सुनो गरीबनिवाज।

ॐ ह्रीँ पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

चैत वदी तिथि चौथकी, चतु प्रचंड चकचूर,
पंचम ज्ञान लयो प्रभु, पूजत हैं सुखपूर।

ॐ ह्रीँ चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

सावन सुदि सातें दिना, पायो शिवपुर थान,
सकल सुरासुर पूज पद, नमूं तिन्हें हित मान।

ॐ ह्रीँ श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अ०

जयमाला

(दोहा)

श्री जिन पारसनाथजी, अशरन शरन आधार,
करुनाकर निज निधि हमें, देहु परम दातार।

(छंद त्रोटक)

जयौ जगमें जिन पारसनाथ, जयौ जिनकों हरि नावत माथ,
जयौ जिन गर्भकल्यान मँझार, जयौ सब देव करें जयकार।

जयो जिन जन्मसमय हरिसार, जयौ सब आवत राज दुआर,
प्रदिक्षण तीन सु दे पुर मांहि, शचि पहुंची जिनके ग्रह मांहि।

सु मातहिको सुखनिद्र अनाय, लये जिनराज सु गोद उठाय,
दये हरिगोद शची जिनराय, सु देखत रूप न इन्द्र अघाय।

करे द्रग अेक सहस्त्र अनूप, भयो नहिं तृप्ति तदा सुरभूप,
गजेन्द्र ईरावतपै असवार, सुछत्र इशान दियो तिहिं वार।

सुरासुर सर्व सुदर्शन शीस, यथाविधि न्होन कियो जगदीश,
सुभक्ति करी बहु आय सुरेश, गअे निजथानक थापि जिनेश।

१७

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

अणुव्रत आप लहै तिहि ठांहि, रहे कछु देव ग्रही पद मांहि,
लयौ कछु कारन होय विराग, भयौ शिवसुंदरिसों अनुराग।

धरो तप दुद्धर श्री जिनराय, डरो अरि मोह महा दुखदाय,
महावनमें प्रभु ध्यान लगाय, खडे प्रभुजी अति निश्चल काय।

लखे कमठासुरने जिनराय, भवांतर वैर जगौ दुखदाय,
करो उपसर्ग महा घनघोर, सुदामिनि दंड फिरै चहुं ओर।

चलै अति वायु महादुखदाय, हलै गिरि शीस गिलै थहराय,
भयानक पन्नग कालस्वरूप फिरै चहुं ओर महा दुखकूप।

अनेक भयानक रूप बनाय, करौ उपसर्ग तहां सुर आय,
जिनेश्वर ध्यान विषैं अतिधीर, चलो मन नांहि हलो तन वीर।

तबै धरणेंद्र सु थानक आय, करी प्रभुकी बहु भक्ति सहाय,
टर्यो उपसर्ग हने चहुं घाति, लयो प्रभु पंचम ज्ञान विख्यात।

रचौ समवश्रत देवनि आय, करी हरि पूजन श्री जिनराय,
दियौ उपदेश गअे शिवथान, नमू जिनको उर हर्ष महान।

तुम्हीं करुनानिधि दीनदयाल, तुम्हीं भवसागरमांहि कृपाल,
जिनेश्वर वंदित शीश नवाय, करौ हमरी प्रभु आप सहाय।

(दोहा)

जगदीश्वर जिनराज तुम, तारनतरन जिहाज,
तेवीसम अवतरा मम, सदा सुधारो काज।

ॐ ह्रीँ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये;

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

जो वर मनवचकाय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री वर्द्धमान-जिनपूजा

(गीता छंद)

श्रीवीर अतिबलधीर जग अशरीर जग अरि वस करो,
फिर धारि संयम पाय केवल जगतजन भ्रमतम हरों;
गुननंतनंत चतुष्टमंडित भविकजन भव तारियो,
प्रभु अत्र तिष्ट विशिष्ट फल द्यो यह अरज चित धारियो।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक अष्टाह्निका

गंगाहृद निर्मल नीर, प्रासुक शीतमहा,
जिन चरन चढावत धीर, मेटो जन्मजरा;
श्रीवीर हरो भवपीर, शिवसुखदायक हो,
मम अरज सुनों गुणधीर, तुम जगनायक हो।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

अति उत्तम गंध मिलाय, चन्दन घसि लावो;
पूजौं जिनवरके पाय, शांत सुधा पावो।
श्रीवीर हरो भवपीर, शिवसुखदायक हो,
मम अरज सुनों गुणधीर, तुम जगनायक हो।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

सित सरल अखंड अनूप अक्षत धोय धरूं,
पूजौं पद जिनवर भूप शिवतिय सार वरूं। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

नानाविधि फूल अनूप, गंधित अलि आवै,
पद पूजौं तिहुं जगभूप, कामविथा जावै। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

चरु उत्तम सरस बनाय, बहुविधि थार भरौं,
जिन चरनन देत चढाय, दोष क्षुधादि हरौं। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

बहु विधिको दीप बनाय, जगमग जोति करैं,
जिन चरनन देत चढाय, भ्रमतम मोह हरैं। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

दश विधिको धूप महान, जिनवर पद पूजौं,
वसुकर्म अरी विनसाय, शिवतियपति हूजौं। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि०

अति उत्तम फल सुखदाय, सरल सुगंध भरैं,
जिनवरपद पूज रचाय, स्वगुण प्रकाश करै। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

जलफल वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ बनाय महा,
जिनवरपद पूजौं जाय, शिवसुखदाय कहा;
श्रीवीर हरो भव पीर, शिवसुखदायक हो,
मम अरज सुनों गुणधीर, तुम जगनायक हो।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(छंद सुंदरी)

सित अषाठतनी छठि जानिये, गर्भ मंगल तादिन मानिये,
शचि कियो जननीपद पूजजी, हम जजैं ईत शिवसुख हूजजी।

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अ०

शुक्ल चैत त्रयोदसि जानिये, जन्म मंगल तादिन मानिये,
सुरसुरादि जजैं गिरि जाय कें, हम जजैं इत मस्त नायके।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अ०

असित मगसिरकी दसमी कही, स्वहित कारन जिनदीक्षा लई,
सकल इन्द्र जजैं तहां जायकें, हम जजैं इत प्रीति लगाईकै।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अ०

शुक्ल वैशाखी दसमी कही, कर्मघाति चतुष्ट हने सही;
जगतपतिजिन केवल पाईयौ, हम तिन्हैं नित मस्तक नाईयौ।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अ०

असित कार्तिक मावस जानिये, परम शिवकल्याण प्रमानिये;
सकल इन्द्र जजें सिर नायके, हम जजें नित भक्ति बढायके।

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अ०

जयमाला

(छंद त्रिभंगी)

जय जय जगतारी शिवहितकारी अनिवारी वसुकर्म हरो,
मम अरज सुनीजै ढील न कीजै, शिवसुख दीजै दया करो।

(छंद कुसुमलता)

जयवंतौ जगमांहि जगतपति, तुम गुण पार न पाया है;
गणनायक रिषि मुनि सब हारे, सहस चक्षु ललचाया है।
जिनके गर्भ जन्म तपमांही, सुर समूह सब आया है;
साधि नियोग योग सब करिके, निज निज शीस नवाया है। १

बाल समय मदभंजन मदको, कोटि अनंग लजाया है,
दिव्य सरूप निरखि सुर सुरपति, शिवतिय मन ललचाया है;
हित मित वचन सुधासम जिनके, सुनत श्रवण सुख पाया है,
दिव्य सुगंध अंगकी शोभा, निरखि द्रगन मन भाया है। २

भविजन कमल प्रकाशन सूरज, वज्र स्वरूपी काया है,
वचन किरणकरि भ्रम तम नाशौ, वृष मारग दर्शाया है;
विधि अरिके वस परौ जगत लखि मन करुनामें आया है,
मोह अरीके नास करनको, वीररूप दरशाया है। ३

निज परणति दल साजि स्वबल करि, विधिको मार गिराया है,
केवलज्ञान सुथान आपनो, वीर वीर पद पाया है;
समवसरन विधि रची शचीपति, सुरसमूह सब आया है,
भूचर खेचर नर पशु सबही, जिन दरशनको धाया है। ४

धर्मामृत वरषाय जगतको, विधि विष विषम नसाया है,
मोह जनित निद्राको हरिकें, भवि शिव पंथ लगाया है;
करि विहार पावापुर वनतें, शिव मन्दिरको धाया है,
ऐसे वर्द्धमान जिनवरको, सुर नर शीस नवाया है। ५

श्रीमत सन्मति शुभदाता, तुम गुण पार न पाया है,
वर्द्धमान महावीर वीर अति, नाम बहुत श्रुत गाया है;
करुणानिधि प्रतिपाल जगतके, अधम उधार कहाया है,
अरज सुनों यह अेक जिनेश्वर, देहु स्वगुण शिव भाया है। ६

(दोहा)

कुमति गजनि केहरि प्रबल, जिनमति मति चक्रेश,
मोकों निज पद दीजिये, नमत सदा सुर शेष।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये,
जो नर मनवचकाय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री महावीर-जिनपूजा

(वसंततिलका)

हे देव! पूज्य वर्धमान यहां पधारो,
आह्वानन मैं करत तिष्ठ सुतिष्ठ तारो,
कीनों पवित्र वीरको उपदेश सारो,
पूजों सदा तव पदाब्ज भवाब्धि तारो।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

अघभेदन दच्छं, शशि सम स्वच्छं, तर्पित अच्छं, नीर भरो,
तसु धारा धारो, तृषा निवारो, कर्म विदारो, पूज करो;
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

अघ कर्म निवारण; शीतल कारण; गंधसे पूजन, नित्य करों,
जय अधम उधारण, हे भवतारण, करुणाकारण, अर्ज करों। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

भरि अक्षत थारी, अक्षनहारी, तुम पद धारी, सो अर्चो,
अक्षयपदधारी, भवभवतारी; अति सुखकारी, सो पिरचों। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

मदमदन विभंजन, भवभयभंजन, शिववधुरंजन, विश्वयते,
शुभ कमल चढाऊं, कमला पाऊं, अमला ध्याऊं, जगदिदते। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सब मोदन मोदक रसना मोहन, कर्म विमोचन, सद्य करो,
नैवेद्य चढाऊं, पूज रचाऊं, गुणगण गाऊं, पूज करो।
चरम तीर्थंकर, जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मिथ्यान्ध निवारा, अति उजियारा, दीपक धारा, पूज करों,
करुं तुम पद आरति, नाशे आरति, भासे भारति, ज्ञान धरों। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

बहु धूप अनलमें कर्म जलनमें, लयो शरणमें, चरणनमें,
हे दूरीकृतमद, देहु मोक्षपद, पूजत तुम पद सेवनमें। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

बादाम सुश्रीफल, बहु पुंगीफल, ले अनेक फल सों अर्च्यो;
बहु थार भराऊं, तुम यश गाऊं शिवसुख पाऊं सोभर्च्यो। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

असित साढतिस छट्ठ लियो तिथि, गरभ धरो प्रभु मात भवानी,
(त्रिशलादेवी)
नर हरि देव नमे जिनमाता, हम शिर नावत पावत साता।

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

असित सु चैत जये तेरसको, हरि अभिषेक कियो प्रभुजीको;
कुसुम सु देवनने वरसाये, जय जय शब्द किये हरषाये।
ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

भव तन भोग अनित्य विचारा, इम मन धार तपे तपधारा;
सुर शिबिका धर कानन धाये, धन धन देव अहो धन जाये।
ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

असित सु वैशाख ज्ञानसि पायो, सकल चराचर वस्तु लखायो,
पशु नर देव सु पूजन आये, हम ईत मंजुल मंगल गाये।
ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

असित कार्तिक अमावस्या दिन, शिवरमणी वरके सुख पायो;
हरि हरादि जजे पावापुर, जजत जिनेश नशे भवफासा।
ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(दोहा)

सनमति सनमति द्यौ मुझे, हो सनमति-दातार,
इहै भक्ति पावन जगत, होय अमल विसतार। १

(पद्धरी छंद)

जय महावीर दुति अमल भान, सिद्धारथ चित अंबुज कुलान,
जय त्रिशला चखि कुमुदनि अनूप, प्रफुलावनकूं मुख चंदरूप। २

जय कुंडलपुर जिन जन्मथान, हरिवंस व्यौममधि सुष्टु भान,
जय कनक वर कर सप्त काय, हरि चिन्ह बहत्तर बरस आय। ३

जय इन्द्र कह्यो अति वीर सूर, सुनि देव चल्यौ है सर्प क्रूर,
फुंकार ज्वाल विकराल देख, क्रीडत कुमार भाजे विशेख। ४

प्रभु धीर महा पनंग अज्ञान, करि क्रीड हर्यौ मदको वितान,
है प्रगट भयो प्रभु पूजि पाय, परसंसि कह्यो महावीर राय। ५
लखि पूरव भव अनुप्रेक्ष चिंत, भयभीत भये भवतैं अत्यंत,
लौकांत आय थुति पूजि पाय, निज थान गये सुर असुर आय, ६
रचि शिबिका करि उत्सव अपार वन जाय धरे प्रभु तजि सिंगार,
नुति सिद्ध लौंच कच नगन थाय, धरि षष्टम लय चिद्रूप लाय। ७
तप द्वादश द्वादश वर्ष ठान, चउ घाति हने गहि खडग ध्यान,
जय नंतचतुष्टय लब्ध देव, वसु प्रातिहार्य अतिसे सुमेव। ८
जय भव्यनिकर भवसिंधु तार, मैं प्रणमूं जुग कर सीस धार,
जय समर विटप जारन-हुताश, जय मोहतिमिर नासन-प्रकाश। ९
जय दोष अठारा रहित देव; मुझ देहु सदा तुम चरण सेव,
हूं करूं विनंती जोरि हाथ, भवतारनतरन निहारि नाथ। १०

(घत्ता)

श्री वीर जिनेश्वर नमत सुरेश्वर वसुविधि करि जुग पद चरचं,
बहु तूर बजावैं गुणगण गावैं, 'रामचंद' मन अतिहरषं। ११
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं नि०

श्री महावीर-जिनपूजा

(अडिल्ल)

बोध सुद्ध परकासक ईक प्रभु भान ही,
लोक अलोक–मझारि और नहिं आन ही;
प्रणमूं श्री वर्द्धमान वीर के पाय ही,
आह्वानन विधि करूं विमल गुण ध्याय ही।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

कर्पूर वासित शरद शशि सम धवल हार तुषारतैं,
मुनि चित्तसौ अति विमल सौरभि, रवै मधुकर प्यारतैं;
सो हिमन उद्भव कुंभ मणिमय, नीर भरि तृट छेयही,
श्री वीरनाथ जिनेन्द्रके जुग चरण चरचूं ध्येय ही।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलय नीर कपूर शीतल, वरन पूरन इंद ही,
आमोद बहुल समीरतैं, दिग रवै मधुकर वृंद ही;
सो द्रव्य भवतपनाशकारन कनक भाजन लेयही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

हिमन उद्भव सरित सींची, सालि सित शशि दुति धरैं;
दीरघ अखंडित सरल पिंडन, मुक्तसी मनकूं हरैं,
करि पुंज कारन अखै पदके, उभै करमें लेय ही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

मंदार मेरु सुपारि तरुके, सुमन गंधासक्त ही,
मधुवृंद आवें भविनके, चखि लखै होय पवित्त ही;
सो समरबाण विध्वंसकारन, कुसुम उत्कर लेय ही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

पदमा–निवास सरोज आश्रित, सुधाकी आमोदस्यौं,
चिता सुधा–भुंजनको तृपति ह्वै, रवै मधुकर मोदस्यौं;
सो ही पियूष छुधा विध्वंसन, चारु चरु कर लेय ही,
श्री वीरनाथ जिनेन्द्रके जुग चरण चरचूं ध्येय ही।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

त्रैलोक्यमांहि जिनेन्द्र महिमा, तेजतैं दरसाय ही,
पाप तम दिग दसौं निवड सु, मूलतैं नसि जाय ही;
सो दीप मणिमय तेज भास्कर, कनक भाजन लेय ही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

धूप संग हुतास जारैं, धूम्र वृज दिगमें हवै,
दिग्पाल चिंतै मनो छिति घर, नीलसे आवें इहै;
सो मलय परिमल घ्राणरंजन, सुरनिको अति प्रेय ही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

शुभ फलोत्कर पक्क मधुरे, स्वर्णसे मन कूं हरैं,
आमोद पावन पुंज करहूं, मनोवांछित फल करैं;
भरि थाल कणमय अमर तरुके, लखे चखिकूं प्रेय ही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीर गंध इत्यादि द्रव्य ले, कमलपद सनमति तने,
जो जजैं ध्यावैं वंदि सतवैं, ढानि उत्सव अति घने;
सुर होय चक्री काम हलधर, तीर्थ पदको श्रेय ही,
सुख 'रामचंद्र' लहंत शिवके, अर्घ करि प्रभु ध्येय ही। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

(दोहा)

षष्टी सुकल अषाढ ही, पुष्पोत्तरतैं देव;
चय त्रिशला उर अवतरे, जजूं भक्ति धरि एव।

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

चैत सुकल तेरसि सुरां, कीनो जन्मकल्यान;
छीर उदधितैं मेरुपै, मैं जजहूं धरि ध्यान।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

अगहन दसमी कृष्नही, तप धार्यो वन जाय;
सुरनरपति पूजा करी, मैं जजहूं गुण गाय।

ॐ ह्रीँ मार्गकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

दसमी सित वैशाख ही, घाति कर्म चकचूर;
केवलज्ञान उपाइयो, जजूं चरण गुण भूर।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

कार्तिक वदि मावस गये, शेष कर्म हनि मोख;
पावापुरतैं वीरजी, जजूं चरण गुण धोख।

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला

(चोपाई)

वंदों श्री महावीर जिनंदा, पाप निकंदन आनंदकंदा;
जिन परताप भये बहुनामी, जै जै जै श्री गौतमस्वामी। १

भयो जहां प्रभु केवलज्ञान, समोसरण इन्द्रादिक ठान;
खिरी दिव्यध्वनि नहिं भगवान, गणधर नहिं कोई गुणवान। २

कब विद्यारथि भेष बनाई, [1]वासव गौतमके ढिग जाई;
पूछत अर्थ सूत्र यों भाषित, षट द्रव्य पंचास्तिकाय भाषित। ३

यह सुनि गौतम वचन उचारे, तोसों करूं वाद क्या प्यारे;
चलि अपने गुरु वीर नजीका, करिहें शास्त्रार्थ तहं नीका। ४

१. इन्द्र

ऐसी कह ततकाल सिधारे, समोसरणमें आप पधारे;
देखत मानथंभको ज्योंही, खंडित भयो मान सब त्योंही। ५

भूल गये सब वादविवादा, कीनी थुति सब छांडि विषादा;
सोई गणधर भये प्रधाना, धन्य धन्य जयवंत सुजाना। ६

वंदौं श्री महावीर जिनंदा, तिन लखि हर्ष होत अतिशा;
पूजनीक अति ठाम अपारा, दुखदारिद्र नशावनहारा। ७

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणक-प्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वर्धमान-जिनपूजा

श्रीमत वीर हरैं भव पीर, भरैं सुख शीर अनाकुलताई,
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरिपंकति मौलि सुआई;
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरखाई,
हे करुणाघनधारक देव! इहां अब तिष्ठहु शीघ्र हि आइ।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्–अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नंदीश्वर श्री जिनधाम–अे राग)

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचनभृंग भरों,
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों;
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलयागिर चंदनसार, केसररंग घसों,
प्रभु भव-आपात निवार, पूजत हिय हुलसों।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय भवातापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित शशि सम शुद्ध, लीनों थार भरी;
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरुके सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे;
सो मनमथभंजन हेत, पूजौं पद थारे। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी;
पदजज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम खंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों;
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा;
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थार भरों,
शिवफल हित हे जिनराय, तुम ढिग भेट धरों। श्री वीर०

ॐ ह्रीँ श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय मोक्षप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु सजि हिमथार, तनमन मोद धरों;
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजन पाप हरों।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

मोहि राखो हो सरणा, श्री वर्धमान जिनरायजी, मोहि राखो०
गरभ साढ सित छट्ठ लिओ तिथि त्रिशला उर अघ हरना;
सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजों भवतरना मोहि राखो०

ॐ ह्रीं अषाढशुकलषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घं०

जनम चैतसित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना;
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना। मोहि राखो०

ॐ ह्रीं चैत्रशुकलत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घं०

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना;
नृप–कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना। मोहि राखो

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशमी तपोमंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घं०

शुकल दशैं वैशाख दिवस अरि, घात चतुक क्षय करना;
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना। मोहि राखो०

ॐ ह्रीं वैशाखशुकलदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घं०

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं वरना;
गनफनिवृंद जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना। मोहि राखो०

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१८

जयमाला

(छंद हरिगीता २८ मात्रा)

गनधर असनिधर, चक्रधर, हलधर, गदाधर, वरवदा,
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा;
दुःखहरन आनंदभरन तारन तरन, चरण रसाल है,
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है।

(छंद धत्ता)

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन, चंदवरं,
भवतापनिकंदन, तनकन मंदन, रहित सपंदन नयनधरं।

(छंद त्रोटक)

जय केवलभानुकलासदनं, भविकोक विकाशन कंजवनं;
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञानदृगावर चूरकरं। १

गर्भादिक मंगलमंडित हो, दुखदारिदको नित खंडित हो;
जगमांहि तुम्हीं सतपंडित हो, तुमही भवभावविहंडित हो। २

हरिवंश सरोजनकों रवि हो, बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो;
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजति यो। ३

पुनि आपतने गुणमांहि सही, सुर मग्न रहैं जितने सबही;
तिनकी वनिता गुण गावत हैं, लय माननिसों मन भावत है। ४

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुव भक्ति विषै पग एम धरी;
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं। ५

घननं घननं घनघंट बजै, द्रमदं द्रमदं मिरदंग सजै;
गगनांगन गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता। ६

धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है;
सननं सननं सननं नभमैं, इकरूप अनेक जु धारी भ्रमैं। ७

कइ नारि सुवीन बजावति है, तुमरो जस उज्ज्वल गावति है;
करताल विषै करताल धरै, सुरताल विशाल जु नाद करैं। ८

इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करैं प्रभुजी तुमरी;
तुमही जगजीवनके पितु हो, तुमही विनकारनतैं हितु हो। ९

तुमही सब विघ्न विनाशन हो, तुमही निज आनंदभासन हो;
तुमही चितचिंततदायक हो, जगमांहि तुम्हीं सब लायक हो। १०

तुमरे पनमंगलमांहि सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सबही;
हमको तुमरी शरणागत है, तुमरे गुन में मन पागत है। ११

प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसुकर्म नहीं नसिये;
तबलों तुम ध्यान हिये वरतौ, तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतौ। १२

तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभभाव सुगाहतु हों;
तबलों सतसंगति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो। १३

जबलों नहि नाश करों अरिको, शिवनारि वरों समता धरिको;
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु है इतनी सुनजी। १४

(धत्ता)

श्री वीर जिनेशा, नमित सुरेशा, नागनरेशा भगतिभरा;
'वृंदावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै, शर्म वरा। १५

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्री सनमतिके जुगलपद जो पूजै धरि प्रीत;
'वृंदावन' सो चतुर नर लहै मुक्ति नवनीत।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री महावीर-जिनपूजा

हे करुणानिधि सकल गुणाकर, त्रिशलानंदन भवहारी,
तुम पूज रचाउं बलि बलि जाउं, हो अनंत गुण गुणधारी;
उर निज ध्याउं, शीश नमाउं, गाउं गुण मंगलमय वीर,
भवदुःखहर हो, अनुपम सुखकर हो, आनंदकारी श्री महावीर।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद त्रिभंगी)

कुंकुम मिश्रित तीरथ जल करी, भरि ल्यायो कंचन झारी,
जन्म–जरा–मृत नाशन कारण, धारात्रय जिनपद ढारी;
इन्द्र–नरेन्द्र–खगेन्द्र पूज्यपद पूजत हौं जिन मनहारी,
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलय सुचंदन केलीनंदन, कृष्णा घसि संग सुखकारी,
जिनके पद पूजत भव तप धूजत, भृंग करत झूं झूं प्यारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् नि०

अखित अखंडित सौरभ मंडित, चंद्रकिरणसे भरि थारी,
जिनके पद आगै पूंज करत ही, अक्षय पदके करनारी। ईन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

पंचवरणमय कुसुम मनोहर, गंध सुगंधे अति प्यारी,
पूजे जिनपद मन्मथ नासै, भृंग भ्रमत चउ उर भारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

खज्जक फेनी इन्द्र चन्द्रिका, मोदक सुवरण भरि थारी,
क्षुधा वेदनी नाश करनको, जिनपद पूजुं सुखकारी;
इन्द्र–नरेन्द्र–खगेन्द्र पूज्यपद, पूजत हौं जिन मनहारी,
मंगल के कर्ता सब दुःख हर्ता, महावीर आनंदकारी।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

सर्व दिशामें करत प्रकाशजु, दीपक अद्भुत ज्योति धरैं,
ज्ञान उद्योतर मोह विध्वंशक, पूजत भ्रमतम नाश करै। इन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

मलयागिरि चंदन चूर मनोहर, स्वर्ण धूपायन मांहि धरै,
धूप धूम्र मिसि करम उडत मनु दसूं दिशामें गमन करै। इन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल लोंग बिदाम सु खारिक, कदली दाडिम सहकारं,
स्वर्णथाल भरि जिनपद चहोडे, मुक्ति रमासूं है प्यारं। इन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल गंधाक्षत पुष्प जु नेवज, दीप धूप फल भरि थारी,
अर्घ चढावे जिन चरननकू जाकी है शिव तिय प्यारी। इन्द्र०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(गीता छंद)

जिनवीर मुक्त विमुक्त भवस्थिति युक्त मुनिपद ये सदा,
समवादिसण विभूति मंडित, गुन अखंडित गत मुदा;
भरतक्षेत्रे सुवर्णधामे वीर जिनवर राजही,
तिनको कहो जयमाल भविजन पढत सब दुःख भाजही।

(पद्धरी छंद)

जय जिन घाते घातिया चार,
फुनि किय अघातियनको प्रहार;
जय चिदानंदमय है सुछन्द,
जगजीवनको आनंदकंद।
अष्टोत्तर शत लक्षण सुअंग,
जिनपति लखि लाजत अनंग;
ये कोटि सूर्य द्युति धरन धीर,
युत प्रातिहार्य वसु गुण गंभीर।
सुर नर धरणीधर पूज्य पाय,
गणधर मुनिवर जिन नमत धाय;
सुर मोक्षादिक पद दान दक्ष,
शुद्ध ध्यान लीन शोभे अलक्ष।
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत,
महा सर्म वीर्य जिनको न अंत;
ये अनंत चतुष्टय करि संयुक्त,
महाधीरय धर वसु कर्म मुक्त।
वसु गुण करि मंडित शोभमान,
जयवंत वर्तो जग प्रधान;
जय त्रिशलानंदन जिनेन्द्रवीर,
आनंदकरण भवहरण पीर।
जय वीर जिनेश्वर गुण गंभीर,
कल्पद्रुम सम दाता सुधीर'
जय महावीर वर सिद्धिदाय,
तुम चरणनमें बलि बलि सुजाय।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

(गीता छंद)

ये सर्व अतिशय युक्त परम आह्लाद कर पूरन खरे,
ये त्रिजगतापति पाद पूजित, शिवमहल मग पग धरे।
ये द्रव्य गुण नय अर्थ देसक, सुभग शिव त्रिय कंत ते,
जय जय प्रताप सु वीर जिनवर, होहु जग जयवंत वे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वर्द्धमान-निर्वाणपूजा

(दोहा)

प्रथम चरम जिन चरन जुग, नाथवंश वर पाय,
सिद्धारथ त्रिशला तनुज, हम पर होहु सहाय। १

ॐ ह्रीँ श्रीजिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(अडिल्ल छंद)

पुष्पोत्तर तज धवल, छट जु अषाढ की,
उत्तरा फागुन माहि, बसे उर माय की।
अवधि अमरपति जान, रतन बरसाईयौ,
कुण्डलपुर हरि आय, सुमंगल गाईयौ। २

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

(दोहा)

दिवस पंच दस मास वसु, बरस पचत्तर सार,
रहे चतुर्थम काल के, वीर लयो अवतार। ३

(सुंदरी छंद)

शुकल चैत्र चतुर्दशि के दिना, नक्षत उत्तरा फागुन सुरगना,
सजि गजेन्द्र गिरेन्द्र न्हवाईयौ, लखि जिनेन्द्र सुमंगल गाईयौ। ४

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(दोहा)

पंचानन[१] पग चिह्न तसु, तन उतंग कर सात,
वरन हेम[२] जिनबिम्ब नित, पूजहु भव्य प्रभात। ५

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

(अडिल्ल छंद)

आयु बहत्तर बरस, कुंवरपद तीस जू,
सो लखि अथिर, उदास भअे जगदीस जू।
तब लौकान्तिक देव, सु थिरकर थल गये,
रचि सुर तुरत नवीन, प्रभु शिविका[३] लये। ६

पुरतें निकट न दूर, मनोहर वन गये,
चंद्रकान्ति मणिमई, शिला लखि सुर ठये।
शिविकातें पधराय, तहां सुरगन खडे,
दुविधि परिग्रह त्याग, प्रभु समरस बढे। ७

(सुन्दरी छंद)

प्राची[४] दिशि सन्मुख, पद्मासन मांडिकैं,
नमः सिद्ध कहि, पंचमुष्टि कच[५] काढिकैं।
निज आतम सम देव, सिवग[६] सब साख दै,
त्रोदश विधि चारित्र, धरयौ अभिलाख दै। ८

मागसिर मास दसै सुदि, जनम नखत परौ,
ता दिन परम दिगंबर पद प्रभुजू धरौ।
साल विटप तर बैठि, बेर अपराहिनी,
दीक्षा सखी मिलाय वधू शिवदायनी। ९

---

१. सिंह, २. सोना, ३. पालकी,
४. पूर्वदिशा, ५. बाल, ६. सिद्धोकी ।

(दोहा)

जिन शिर केश पवित्र अति, रतन पिटारे धार,
क्षीरोदधि पधराय हरी[1], निजथल गए नृतकार। १०

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

(दोहा)

तन ममत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट नर पाय,
आरूढे तप धरत ही, चौथो ज्ञान उपाय। ११
अजर अमर अव्यक्त जो, अजपा ताको ध्याय,
ध्यान सिद्धि के अर्थ प्रभु, अचल मेरु सम थाय। १२

(अडिल्ल)

गुप्ति तीन गढ[2] तुल्य भये तिनके महा,
संजम बख्तर तुल्य भअे कहिना कहा।
कर्म–शत्रु जीतन की रुचि लागी तबै,
गुन अनेक सेना भट होत भअे तबै। १३
अनशनादि तप धारि द्वादश माहिं जी,
ध्यान विषै सुविशेष शुद्धता पाय जी।
अष्टावीस मूलगुन अग्रेसुर कढे,
कर्म प्रबल अरि तिनहि जीतने प्रभु चढे। १४

(गीतिका छंद)

चढे शुक्ल गजेन्द्र लेश्या, भूप अनुप्रेक्षा ढुकै,
धाय धर्म–कृपान[3] गहि, अरि मोहसेना पर झुके।
उत्कृष्ट निज परिनाम कटकतनी सुरक्षा कारनै,
वर ज्ञानरूप प्रधान अग्रेसुर कियो जगतारनै। १५

---

१. इन्द्र, २. किला ३. तलवार

(अडिल्ल)

अति विशुद्ध परिणाम सेनपति छाइयौ,
रागादिक अरि प्रबल हनन उद्यम कियौ।
ध्यान जतन कर मूल प्रगट कर तंत्र के,
करे चलाचल वीर जिनेश्वर सत्रके। १६

अधःकरनके भाव जो प्रथमहिं भायकैं,
हौं परनाम न अन्य क्षपक दिश जायकैं।
सुकल ध्यान अस प्रथम ध्यान ता करम लै,
मोह प्रबल करि घात जाय बारम[१] थलै। १७

(गीतिका छंद)

ता थलै दूजे सुकल बल त्रय[२] घातिया हनि जय लयौ,
चढि तेरमें गुणस्थान श्रीजिन समोसरन विभो ठयौ।
रचि कोट वेदी भूमिपर मघ थंभ तपादिक(?) जहीं,
जोजन प्रमान जु सोभगी निरवान पद पूजत तहीं। १८

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

(ढार मंगलकी)

करत विहार जिनेश भविक उपदेशते,
सकल संघ कर जुक्त चर्म तीर्थेशते।
नाना विधि अतिशय कर जुक्त प्रभू तहां,
आनि विराजे विपुलाचल पर्वत जहां। १९

जहं दिव्यधुनि प्रति शब्द जय जय सभामंडप भवनमें,
धर्मोपदेश सो आईयो तिन निकट निर्वानक समै।
तव सुर असुर नर इन्द्र करि अर्चित सिवग वर जानकैं,
पावापुरी उद्यान सार तहां पधारे आनकैं। २०

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

(इत्युच्चार्य कर्णिकायां परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।)

---

१. बारहवा क्षीणमोह गुणस्थान, २. ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय

पीठकादि पूजा

(दोहा)

महावीरने जा समै, गमन कियो शिवखेत,
सोई समय विचारिकैं, पूजौं सुधी स्वहेत।

ॐ ह्रीँ महावीर अतिवीर सन्मति वर्द्धमाआदिकानेकनामसंयुक्त भगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्, आह्वाननम्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(चोपाई)

मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समै पूजौ भवि धीर,
दस अतिशय जनमत जिन पाय, केवलग्यानमांहि दस गाय।
तिनि जिनवर प्रति चरनन ओर, दे जलधार जुगल कर जोर,
मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समै पूजौं भवि धीर।

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन के सुरकृत चौदह सार, ये अतिसै चौंतीस चितार,
तिन जिनवरप्रति पूजनधारि, भ्रमर लुब्ध वर चंदन गारि। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहारज जुत देव, जिनकी इन्द्र करैं सत सेव,
तिन जिनवरप्रति को अवलोक, ले वर शालि[१] अखंडित पोख। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. चावल

जिनके नंत चतुष्टय सार, ये गुन छ्यालिस है जग तार,
तिन जिनवरप्रति पूजन सार, ले वर सुमन विविध परकार।
मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समैं पूजौं भवि धीर।

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषादि आठदस दोष, हरत सिवग वर भवदधि सोष,
तिनि जिनवर प्रतिबिंब निहार, पूजनकों भरि नेवज थार। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक भेद जिन गाय, जीव अजीव तत्त्व दरसाय,
तिन प्रतिबिंब निरख निज हेत, दीपक लै निर्मल भवि चेत। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या भ्रमकर भ्रमै अनादि, जगत जीव जगमें बहु वादि,
तिनको शिवगति सार बताय, तिनप्रति धूप दशांग चढाय। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवृष उपदेसौ हितकार, चलो जात अबतांई सार,
परमत खंडन मंडन लोक, तिनप्रति ले फल चरनन ढोक। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके समोसरन में साध, चौदा सहस अेक दस बाध,
अैसे जगत प्रभु पद पाय, लै जलादि पूजौ जिनराय। मंगल०

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(राग बिलावल)

प्रकृति सात महावीर प्रभु, जिन प्रथम विदारी,
तीन आठ जे भानिके, नव छत्तीस सिधारी।
दसमें लोभ द्वादसे सोलह तहां जु टारी,
त्रेसठ प्रकृति खिपाईयो तिन जिन बलिहारी। १

(दोहा)

सैंतालीस प्रकृति हनी, कर्म घातिय कीर,
नाम तीनदस आयु त्रय, नाशि भये महावीर। २

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

पंच[1] नामधर ते सुगुरु, पावापुर वन आय,
शेष करम रिपु जीतने, शिव मग चलन उपाय। १

(छंद मात्रिक)

आये जहँ त्रिजगपति, ध्यान दीनो महा,
त्रितिय पद शुकल मांडो, सु हानि तहां।
तब प्रभु दिव्यधुनि, शब्द रहिते भये,
अंतके दिवस बाकी, चतुर्दश रहे। २

प्रभु गये उल्लंधि, तेर गुणस्थानतैं,
चढि अजोगे शुकल तुरिय[2] पद ध्यानतैं।
जोग सु निरोध करि चरन जुग समय जे,
हनि बहत्तर चरम समय त्र्योदस जजे। ३

१. वीर, महावीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्धमान | २. चौथे

चौदमें अंत सु अधातिया जय लई,
चेतनाशक्ति दैदीप्य परगट भई।
भांति इह अष्ट अरि कर्म दल हनि गये,
ऊर्ध्व जिन गमन कर शिवपुरी थिर भये। ४

पक्षवर भ्रमर, कार्तिक चतुर्दश दिना,
स्वातिवर नखत परभात समया गिना।
लोकके शिखर जिनदेव आरूढियौ,
सुख अनन्तौ निरन्तर जहां पूरियौ। ५

मोह अरि बीसवसु प्रकृति जुत क्षय कियौ,
प्रथम क्षायकसम्यक्त्व गुन प्रगटियौ।
पंच भट सहित ज्ञानावरन चूरियौ,
तब अनंतौ दुतिय ग्यान गुन पूरियौ। ६

दरशनावरन नव प्रकृति जुत दलमलौ,
तब अनन्तौ सुदर्शन त्रितिय गुन मिलौ।
अन्तराय जु करम पंच भट जुत हनौ,
तब तुरिय वीर्य जिन अनन्तौ बनौ। ७

(पद्धरी छंद)

इक तीत्रक[१] भट जुत नाम मार, पंचम सूक्ष्म गुन प्रगट सार,
चव कटक सहित कर आयु नाश, छटमा अवगाहन गुन प्रकाश। ८

हनि गोत करम को जोर ताय, सातम जु अगुरु लघु गुन उपाय,
जिन जुगल वेदनी घाति पाय, गुन अष्टम अव्याबाध थाय। ९

इन आदि अनन्ते गुन समाज, पायौ प्रभु मुक्तिपुरी स्वराज,
तब ही सुरेश बल अवधि पाय, निज सेन साज सब देव आय। १०

१. ९३ प्रकृति

तादिन वह पुरी प्रकाशरूप, दीपन समूह करके अनूप,
धरती अकाश सब दिशनि मांहि, दीपकमाला प्रजुलित लखाहिं। ११

तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मंगल पंचम लखि सुर गहीर,
शुभ गंध पहुप आदिक मनोग, वसु द्रव्यनिकर पूजा नियोग। १२

फिर चन्दन अगरादिक लियाय, तब उतंग सुर सर (?) रचाय,
जिन तन मंगलमय तहं रचाय, तब अग्निकुमारन शीश नाय। १३

तिन मुकटनि करि ज्वाला उठाय, भस्मीकृत सर (?) सब हो तहांय,
सब सुर जय जय कर तासु ओर, उर आनंद परम सु भक्ति सोर। १४

तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, कर भस्म वंदना सीस नाय,
कहते यह पुरुषोत्तम महान, वर धर्म तीर्थनायक सुजान। १५

सो देखो अस्त भयो दिनेश, सब मिथ्यातम भ्रम कर प्रवेश,
ये प्रानी वृषतें विमुख होय, करके निज इच्छा मार्ग सोय। १६

जगमें सु प्रवर्तेंगे विसाल, इमि पश्चित (?) सुरनर भक्ति माल,
अवनी पवित्र लखि अमरराय, पुनिकर पूजा निज थान जाय। १७

ता दिनतें अब या भरत खेत, दीपकमाला[१] प्रगटी उपेत,
प्रतिवर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वाण समय उत्सव सु पाय। १८

पाछे सुनि नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज,
अति आनंद मंगल निरत सोय, कीनो तिन अति ही कह सु कोय। १९

ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुनासागर विमल मेह,
भटके बहु काल अनंत बादि, तुम बिन कृपालु जगमें अनादि। २०

(अडिल्ल)

या भव–वनके माहिं, बहुत दुःख पाईयौ,
जानो ग्यान प्रसाद, तुमहिं तट आईयौ।

---

१. दीपमालिका, दीवाली

तातें कहने मांहि कछू आवे नहीं,
वांछितार्थ पद तुम कर पाऊं प्रभु सही। २१

ॐ ह्रीँ निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीतिका छंद)

या भांति निर्वानक सु पूजन, समयकी जो विधि कही,
सो नय प्रमानके न्याय करि, भव्य तुम जानो सही।
यह समय लखि जिन पूज उत्सव, करत भक्ति जु वश सही,
दुर्गति हरन सुख हेत भवि, करिये परम रुचि करम ही। २२

(दोहा)

तीन बरस वसु मास दिन, पंद्रह रहे सु सार,
महावीर शिवपुर बसे, चौथे काल मझार। २३

(त्रिभंगी छंद)

श्री वीर जिनेश्वर नमत सुरेश्वर, वसु विधिकर जुग पद चरचं,
बहु तूर बजावैं जिनगुन गावैं, ध्यावैं पावैं मुक्ति पदं। २४

(इत्याशीर्वाद)

(जाप्यं १०८ अष्ठोत्तरशतं दीयते)

॥ ॐ ह्रीँ निर्वाणमंगलमंडित महावीरजिनेन्द्राय नमः ॥

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

कविवर भैया भगवतीदासजी रचित—

निर्वाणकांड भाषा

(दोहा)

वीतराग वंदो सदा, भावसहित शिर नाय,
कहूं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय। १

(चौपाई १६ मात्रा)

अष्टापदआदीश्वरस्वामि, वासुपूज्य चम्पापुर नामी,
नेमिनाथस्वामी गिरनार, वंदों भावभगति उरधार। २

चरम तीर्थंकर चरमशरीर, पावापुरी स्वामी महावीर,
शिखरसमेद जिनेश्वर वीस, भावसहित वंदों जगदीस। ३

वरदतराय रु ईंद मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृंद,
नगरतारवर मुनि उठ कोडि, वंदौ भावसहित कर जोडि। ४

श्रीगिरनारशिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात,
संबु प्रदुम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुद्धआदि नमूं तसु पाय। ५

रामचन्द्रके सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर,
पांच कोडि मुनि मुक्तिमझार, पावागिरि वंदौं निरधार। ६

पांडव तीन द्रविड राजान, आठकोडि मुनि मुक्ति पयान,
श्रीशत्रुंजयगिरिके शीश, भावसहित वंदौं निशदीस। ७

जे बलिभद्र मुक्तिमें गये, आठकोडि मुनि औरहि भये,
श्रीगजपंथशिखरसुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहूं काल। ८

राम हनू सुग्रीव सुडील, गवगवाख्य नील महानील,
कोडि निन्यानवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान। ९

नंग अनंग कुमार सुजान, पंच कोडि अरु अर्घ प्रमाण,
मुक्ति गये सोनागिर सीस, ते वंदौं त्रिभुवनपति इश। १०

१९

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

रावणके सुत आदि कुमार, मुक्ति गये रेवातट सार,
कोडि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास। ११

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट,
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वंदौं भवपार। १२

बडवानी बडनगर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग,
इन्द्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसागरतर्ण। १३

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरिवर शिखरमझार,
चलना नदी तीरके पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास। १४

फलहोडी बडगाम अनूप, पश्चिमदिशा द्रौणगिरिरूप,
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहां, मुक्ति गये वंदौं नित तहां। १५

बालि महाबालि मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय,
श्रीअष्टापद मुक्तिमँझार, ते वंदौं नित सुरत संभार। १६

अचलापुरकी दिशा इशान, तहां मेढगिरि नाम प्रधान,
साढेतीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय। १७

वंशस्थल वनके ढिग होय, पश्चिमदिशा कुन्थुगिरि सोय,
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करुं प्रणाम। १८

दशरथराजाके सुत कहे, देश कलिंग पांचसौ लहे,
कोटि शिला मुनि कोटिप्रमान, वंदन करुं जोर जुगपान। १९

समवसरण श्रीपार्श्वजिनन्द, रेसन्दीगिरि नयनानन्द,
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरमजिहाज। २०

मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामीजी निर्वाण,
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल। २१

तीन लोकके तीरथ जहां, नितप्रति वन्दन कीजे तहां,
मन वच कायसहित सिरनाय, वंदन करहिं अधिक गुण गाय। २२

संवत सत्तरहसौ इकताल, अश्विनसुदि दशमी सुविशाल,
'भैया' वन्दन करहि त्रिकाल जय निर्वाणकांड गुणमाल। २३

इति निर्वाणकांड भाषा

❀

श्री पंच बालयति-तीर्थंकरपूजा

(दोहा)

श्री जिन पंच अनंग जित, वासुपूज्य मलि नेमि,
पारसनाथ सवीर अति, पूजुं चित धरि प्रेम।

ॐ ह्रीँ श्री पंच बालयति–तीर्थंकरा:! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्री पंच बालयति–तीर्थंकरा:! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्री पंचबालयति-तीर्थंकरा:! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(नंदीश्वर श्री जिनधाम–राग)

शुचि शीतल सुरभि सुनीर लायो भर झारी,
दुख जामन मरन गहीर, याको परिहारी;
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अती,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचो बालयती।

ॐ ह्रीँ श्री वासुपूज्यजी, मल्लिनाथजी, नेमिनाथजी, पारसनाथजी, महावीरस्वामीजी, श्री पंचबालयतितीर्थंकरेभ्य: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चन्दन केशर करपूर, जलमें घसि आनौं;
भवतप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानौं। श्री वासुपूज्य०

(चंदनं)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे;
बहु देशदेशके लाय तुमरी भेंट धरे,
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अती,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयती।

(अक्षतान्)

यह काम सुभट अतिसूर, मनमें क्षोभ करो;
मैं लायो सुमन हजूर, याको वेग हरो। श्री वासुपूज्य०

(पुष्पं)

षट रसपूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी;
द्वय करम वेदनी छेद, आनन्द है भारी। श्री वासुपूज्य०

(नैवेद्यं)

धरि दीपक जगमद ज्योति, तुम चरनन आगे;
मम मोह तिमिर क्षय होत, आतम गुण जागै। श्री वासुपूज्य०

(दीपं)

ले दशविधि धूप अनूप, खेऊं गंधमई,
दश बंध दहन जिनभूप, तुम हो कर्म जई। श्री वासुपूज्य०

(धूपं)

पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने;
तुम चरन जजू गुणधाम, द्यौ सुख मोक्षतने। श्री वासुपूज्य०

(फलं)

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं;
वसु कर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं। श्री वासुपूज्य०

(अर्घं)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जयमाला

(दोहा)

बालब्रह्मचारी भये, पांचों श्री जिनराज;
तिनकी अब जयमालिका, कहूं स्वपर हितकाज। १

(पद्धरी छंद)

जयजयजयजय श्री वासुपूज्य, तुम सम जगमें नहि और दूज;
तुम महालक्ष सुरलोक छार, जब गर्भ मातमांही पधार। २

षोडश स्वप्ने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात;
अति हर्षधार दंपति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान। ३

छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान;
छह मास अगाउ गर्भ आय, धनपति सुवरन नगरी रचाय। ४

तुम मात महल आंगन मझार, तिहुँ काल रतन धारा अपार,
वरषाअे षट नव मास सार, धनि जिन पुरषन नयनन निहार। ५

जय मल्लिनाथ देव सुदेव, शत इन्द्र करत तुम चरणसेव,
तुम जन्मत ही त्रय ज्ञान धार, आनन्द भयो तिहुं जग अपार। ६

तबही से चहुं विधि देव संग, सौधर्म इन्द्र आयो उमंग,
सजि गज ले तुम हरि गोद आप, वन पांडुक शिल उपर सुथाप। ७

क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय,
करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे मात नृत्य तांडव कराय। ८

पुनि हर्ष धार हिरदय अपार, सब निर्जर जयजयजय उचार,
तिस अवसर आनंद हे जिनेश, हम कहिवे समरथ नाहिं लेश। ९

जय जादोपति श्री नेमिनाथ, हम नमत सदा जुग जोरि हाथ,
तुम व्याह समय पशुअन पुकार, सुनि तुरत छुडाये दयाधार। १०

कर कंकण अरु शिरमौरबंद, सो तोड भये छिनमें स्वच्छन्द,
तब ही लौकांतिक देव आय, वैराग्यवर्धिनी थुति कराय। ११

ततक्षिण शिबिका लायो सुरेन्द्र, आरूढ भये तापर जिनेन्द्र,
सो शिबिका निज कंधन उठाय, सुर नर खग मिल तपवन ठराय। १२

कचलौंच वस्त्रभूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार,
हरि केश लये रतनन पिटार, सो क्षीर उदधिमांही पधार। १३

जय पारसनाथ अनाथ नाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ,
जुगनाग जरत कीनी सुरक्ष, यह बात सकल जगमें प्रत्यक्ष। १४

तुम सुर धनु सम लखि जग असार, तप तपत भये तनममत छार,
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन सुमेरु नहि डगमगाय। १५

तुम शुक्लध्यान गहि खडग हाथ, अरि च्यारिघातिया कर सुघात,
उपजायो केवलज्ञान भान, आयो कुबेर हरि वच प्रमान। १६

की समोसरण रचना विचित्र, तहां खिरत भई वाणी पवित्र,
मुनि सुरनर खग तिर्यंच आय, सुनि निज निजभाषा बोध पाय। १७

जय वर्द्धमान अन्तिम जिनेश, पायो न अन्त तुम गुण गणेश,
तुम च्यारि अघाति करम हान, लियो मोक्ष स्वयंसुख अचल थान। १८

तब ही सुरपति बल अवधि जान, सब देवनयुत बहु हर्ष ठान,
सजि निज वाहन आयो सुतीर, जहं परमौदारिक तुं शरीर। १९

निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिरि चंदन कपूर,
बहु द्रव्य सुगंधित सरस सार, तामें श्री जिनवर वपु पधार। २०

निज अगनिकुमारनि मुकुट नाय, तिहं रतननि शुचि ज्वाला उठाय,
तिस सर मांही दीनी लगाय, सो भस्म सबन मस्तक लगाय। २१

अति हर्षथकी रची दीपमाल, शुभ रतनमई दश दिश उजाल,
पुनि गीत नृत्य बाजे बजाय, गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय। २२

सो थान सबै जगमें प्रत्यक्ष, नित होत दीपमाला सुलक्ष;
हे जिन! तुम गुणमहिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादिक सुसार। २३

तुम ज्ञानमांहि तिहुंलोक दर्व, प्रतिबिम्बित हैं चर अचर सर्व;
लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि, भये वीतराग जगमें प्रसिद्ध। २४

ह्वै बालयती तुम सबन अेम, अचिरज शिवकांता वरी केम;
तुम परम शान्ति मुद्रा सुधार, किम अष्टकर्मरिपुको प्रकार। २५

हम करत विनती वारंवार, कर जोर स्व मस्तक धार धार;
तुम भये भवोदधि पार पार, मोकों सुवेग ही तार तार। २६

'अरदास' दास यह पूर पूर, वसुकर्म शैल चकचूर चूर;
दुख सहन दासकी शक्ति नाहिं, गहि चरणशरण कीजे निवाह। २७

(चौपाई)

पांचो बालयती तीर्थेश तिनकी यह जयमाला विशेष;
मनवचकाय त्रियोग सम्हार, जे गावत पावत भव पार। २८

ॐ ह्रीं श्रीपांचबालयतितीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

ब्रह्मचर्यसों नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ;
पांचो बाल यतीनकौ, कीजे नितप्रति पाठ।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

श्री तीन चौवीसी-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

भूत वर्त भविषत् सु तीन चौवीसिका,
जंबू भरतखेत तीन जग ईशका;
निरवाणादि अतीत वर्त वृषभादि हैं,
महापद्मादि अनागत कर अरि वादि हैं।

ये तीनों चौवीस बहत्तर नाथकों,
थापि जजूं मन वचन काय नाय निज माथको,
आह्वानन संस्थापन मम सनहितयुता,
भावभक्ति अति आनि हान नति भ्रमयुता।

ॐ ह्रीँ श्री अतीत वर्तमान अनागत त्रयचतुर्विंशति जिनाः अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्,–अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

गंग क्षीर सुनीर निर्मल स्वर्ण झारीमें भरैं,
जन्म जरा मरणादि हारन अचल पद प्रापति करै;
भरत जंबूद्वीपके त्रय काल त्रय चोवीसका,
पूजुं सदा मन वचन तनतैं, दाय पद जगदीशका।

ॐ ह्रीँ जंबूद्वीप–भरतक्षेत्रोत्पन्न अतीत वर्तमान अनागत त्रयचतुर्विंशति–जिनेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर केशर मिलित चंदन अगर आदि सुगंधतैं,
भरि स्वर्ण झारी धार देते छूटे भव तप बंधतैं। भरत०

(चंदनं)

अक्षि श्वेत सारे सुरभि मंडित तंदुलोध सुथालमें;
भरि जजत जिनके चरणयुगको, अक्षय पद अद्भुत में,
भरत जंबूद्वीपके त्रय काल त्रय चौवीसका,
पूजुं सदा मन वचन तनतैं, दाय पद जगदीशका।

(अक्षतान्)

सुमन स्वर्ण स्वरूपमय शुभ स्वर्ण थाल भराईये,
अरि अनंत भंग सु करन कारण शील सार बढाईये। भरत०

(पुष्पं)

पकवान मेवा आदि चरुवर कनक भाजनमें भरैं;
क्षुधा वेदनि नाश कारण रसन प्रिय तन बल करैं। भरत०

(नैवेद्यं)

दीप मणिमय ज्योतिभर धर ध्वान्त ध्वसंनि रवि समा,
ते धारि थारी कनक निर्मित पूजये भ्रम हन तमा। भरत०

(दीपं)

धूप मेलि सुगंध नाना कीजिये भ्रम नाशनी;
सो कनक धूपायन हि खेवत अष्ट कर्म विनाशनी। भरत०

(धूपं)

नारियल दाख बदाम पिस्ते फल अनेक सु लाईये,
सो कनक भाजन भरि सुपूजन मोक्ष महा फल पाईये। भरत०

(फलं)

जल गंध तंदुल सुमन चरुवर दीप धूप फलौघ ही,
करि अर्घ द्रव्य अनर्घ लेके नसैं भव–अघ ओघ ही। भरत०

ॐ ह्रीँ जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रे उत्पन्न अतीत, वर्तमान, अनागत तीन चौवीसी जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

ये तीनों चौवीसिका, सकल सुखनिको मूल;
कहूं तास जयमालिका, नाम प्रथम युत थूल। १

(चौपाई)

तामे प्रथम भूत चौवीस, नाम जपौं भ्रमहरन रवीस,
निर्वाण रु सागर महासाध, विमल विमल प्रभ शुद्ध अराध। २

श्रीधर दत्त नाथ विमलेश, उघरन अगनिनाथ शुभ भेश,
संजम पुष्पांजलि शिवगुणा, उत्साह रु ज्ञानेश्वर देव। ३

परमेश्वर विमलेश्वर सार, और यथारथ जसोधर सार,
कृष्ण ज्ञानमति विशुद्ध मतीय, भद्र रु शांत युक्त शिव पीय। ४

ये चौवीस अतीत जिनेश, बंदौ दायक पद परमेश,
आगे वर्तमान जिन ईश, नाम जपौं पद कर जगदीश। ५

ऋषभ अजित संभव सुख बीज, अभिनंदन सुमत भव ईश;
पद्म प्रभु रु सुपारसनाथ, चंद्रप्रभु चंद्र सम गात। ६

पुष्पदंत शीतल तपहार, श्रेय रु वासपूजि सुखकार;
विमल अनंत धर्म जिनराज, शान्ति कुंथ दायक सुख साज। ७

अरि मलि मुनिसुव्रत जगनाथ, नमि अरु नेमनाथ सुख साथ;
पार्श्व रु वीराधिप महावीर, कर्म चूरि पहुंचे भवतीर। ८

ये चौवीस कही वरतमान, भव तारन जगगुरु भगवान;
आगे कहूं अनागत जिना, चतुर्विंश संख्या तिन भना। ९

महापद्म पुनि सूर सुदेव, सुप्रभ स्वयंप्रभु गहि सेव;
सर्वायुध जगदेव जिनेश, उदयदेव उदयंक सुभेश। १०

प्रश्नकीर्ति जयकीर्ति उदार पूर्ण बुद्ध निकषाय जु सार;
विमल प्रभु जिन बहल सु भले, चित्र समाधिगुप्त निर्मले। ११

स्वयंभूव कंदर्प जिनेश, जयनाथ जिन विमल प्रभेश;
दिव्यवाद जिन अनंत सुवीर, अनंतवीर्य चौवीस समधीर। १२

ये चौवीस अनागत जिना, भव उधरन कारण शिव सना;
भूत वर्त भविषित चौवीस, कीनी थुति भवहरन जगीश। १३

तिन सबके बहत्तर जिनराज, बंदो भवदधि तरन जहाज,
त्रय चौवीसनिके परसाद, गिरि कैलास विषै सुख साध। १४

निर्मापित भरत चक्रीश, पूजैं तासु शक्र चक्रीश,
ये ही कर्मनाशके कार, ये ही शिवरमणी भरतार। १५

ये ही परम पूज परमेश, ये ही सकल सुखनिके वेश,
ये ही मो मनवांछितकार, या भव परभव अर्थ उदार। १६

ये ही जनम जरा मृतु हरैं, ये ही परम थान कों करैं,
जाकै शरण और नहि कोय, ताके शरण सु ये हैं जोय। १७

कोई होय करण ते संघ, ये विन कारण सब जगबंध,
ये जिन बहत्तरकी गुणमाल, जे पहरैं निज कंठ विशाल। १८

ते भव भव जग विभव अनेक, लाभैं परभव होय शिवेश,
पूजुं ताकौं अर्घ सु देय, मन वच तन बहु भक्ति सुलेय। १९

(दोहा)

ये चौवीसी तीनकी, समुच्चय करी सुपूज,
आगैं भिन्न भिन्न करत हौं, भक्ति अधिक मम हूज। २०

ॐ ह्रीँ श्री जंबूद्वीप भरतक्षेत्रे उत्पन्न भूत वर्तमान भावि तीन चौवीसी जिनेन्द्रेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महापद्म-जिनपूजा

(जोगीरासा छंद)

भरते धर्मोन्नतिकर युगमें प्रथम जिनेश्वर भाई,
'महापद्म' मंगल नामांकित, जिनवर शिवसुखदाई;
स्वर्णपुरीके शुभ प्रांगणमें नंदीश्वर मनहारी,
यहां बिराजे भावि जिनवर आनंद मंगलकारी।

ॐ ह्रीँ जम्बूभरते भविष्यत् महापद्म तीर्थंकरदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्; अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्!

(चाल नंदीश्वरकी)

कंचन मणिमय भृंगार तीरथ नीर भरौ,
करी प्रासुक निरमल धार, जिनपद पूज करौ;
आगामी आदिजिणंद 'स्वर्ण' सु राजत हैं,
महापद्म–चरणअरविंद उर-अलि पागत हैं।

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन मलयागिर लाय, केशरसर गारौ,
जिन चरण यजो सुख पाय, भवदुख निरवारौं। आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल जल विमल पखारी, जिनपद पुंज धरौ,
अक्षय मारग पग धार, पुण्य भंडार भरौ; आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय क्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु प्रफुल्लित कुसुम सु आनि वरण वरण केरे,
नहि लगे कुसुम सरबान, पूजत पद तेरे;
आगामी आदिजिणंद 'स्वर्ण' सु राजत हैं,
महापद्म–चरण अरविंद उर-अलि पागत है।

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

धृति पूरित बहु पकवान, तुरत बनाय करौ,
जिन चरण यजों जुग जानि, रोग क्षुधा जु हरौ। आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु दीप रतनमय ल्याय, थाली मांही धरौ,
करि आरति जिनगुण दाय, मिथ्या तिमिर हरौ। आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

लै अगर कपूर सुगंध, दशविध धूप वरौ,
सब कटें कर्मको फंद, खेवत जिन सु धरौ। आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारियल सदा फल सेव, श्री जिनचरण धरौ,
तुम तुरत अखैपद लेहु, मन वच शुद्ध करौ। आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, तन मन मोद धरो,
करि पूजा अष्ट प्रकार नरभव सफल करौ। आगामी०

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(कुसुमलता : छंद)

जै जै महापद्म जगत्राता, जन्म असाता दूर करो,
जै जै जै भवताप निकन्दन, भवाताप मम चूर करो।

जै जै जै जग सरण सहायक, मम सहाय भरपूर करो,
जै जै जै सुखकन्द सूर्यप्रभ, मम उरवास जरूर करो।

जै जै कर्मकसूर घाति, चकचूर क्रूर बल दूर करो,
जै जै जै वर वीरवृत्ति कर, मम शरीरबल पूर करो।

जै जै केवळज्ञान भानुप्रभ, मोह महातम दूर करो,
जै जै जै बहु शक्ति अंश मम, उर प्रकाश भरपूर करो।

आननचन्द्र वचन अमृतसे, कुमति ताप मम दूर करो,
वसुविधि हरण करण अनुपम सुख, सुमति प्रकाश हजूर करो।

जगहितविधि उपदेशक बानी, दिव्यरूप बहुरूप करो,
सुरनर पशुगण सभानिवासी, सबै स्वयं सुखरूप करो।

जिनवर चरणनखावली उपमा, कहत शक्र अकुलाये हैं,
गणधर ऋषि मुनि भक्ति भरे उर, इकटक नेत्र लगाये हैं।

जिनकी प्रभा शचीपति शिरके, मुकुटरत्न चमकाये है,
जिनवरचरण–सरोजनखावली, केशर मम उर आये हैं।

जडता भ्रमतम कुमति विनाशो, सुमति प्रकाशो सुखदाता,
महापुण्यसे या जगमांहि, कदाकाल कोई भवि पाता।

आजकाल सुखसाज मिल्यो, जिनराज सुजस यातैं गाता,
ख्यातिलाभकी चाह न मेरे, आत्मलाभ मम मन भाता।

(दोहा)

महापद्म भगवानकी, वरणी यह जयमाल;
पढे सुने जो कंठ धरि, पावै शिव दर हाल।

ॐ ह्रीँ जम्बूभरतस्य भावितीर्थंकर–महापद्मदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धातकी-विदेह-भाविजिनवरपूजा

(अडिल्ल छंद)

धातकीखंड महान सुसुंदर जानिये,
बत्तीस क्षेत्र विदेह जहां परमानिये;
भावीके भगवान विराजत है तहां,
आह्वानन तिन करूं, प्रभु तिष्ठो यहाँ।

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इत्याह्वानम्; अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गझल)

हिमानिका लिया पानी, समानी चंद सीतानी,
दिया धारा जु हित सानी, निशानी सौख्य अमलानी;
भविष्यत् धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण निधि ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्–देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ चरणकमलपूजनार्थें जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन कदलिनंदन, घसो आताप हरि फंदन,
चढाउं पद्म जगवंदन, लहौ निर्वाण निर्फंदन।
भविष्यत् धातकी केरे, विदेही जिन अति प्यारे,
सुगुण-निधि-ज्ञान उजियारे, करो भवपार प्रभु मेरे।

(चंदनं)

धरे अक्षत चरण आगे, निशापति-किरण लज भागे,
किधौं जो पुण्य तुम त्यागे, परो यह रस अति जागे; भवि०

(अक्षतान्)

सुमन अति सुमनसे ल्याऊं, सुमन के सुमन से ध्याऊं,
सु मनमथको हरो पाऊं, निजानंदात्म गुण गाऊं; भवि०

(पुष्पं)

ये अक्षक पक्षको लक्षक, सुलक्षक स्वक्ष क्षुधनक्षक,
धरो नैवेद्य है दक्षक, निकक्षक कर्म चित्तरक्षक; भवि०

(नैवेद्यम्)

चढाऊं दीप तम नाशै, उडै कज्जल रु परकाशै,
जो आये नाथके पासे, उरघ तत्काल ही जासै; भवि०

(दीपं)

तगर कृष्णागुरु लेउं, वरंगी वह्निमें खेऊं,
उडै जो धूम्र इम बेऊं, भगे अघ चरण तुम सेऊं; भवि०

(धूपं)

फल सु दाडिम नारंगी, अभंगी पुंगी बहु रंगी,
धरे ढिग चरण मनरंगी, लहे पद अचल निरसंगी; भवि०

(फलं)

जलादिक द्रव्य सब लीने, अर्घ्य जुत आरती कीने,
हरो आरत कृपाभीने, कटै जंजाल दुख दीने; भवि०

(अर्घं)

जयमाला

वज्रधर अरु चक्रधर, अरु धरणिधर विद्याधरा,
तिरशूलधर अरु काम हलधर सीस चरणनि तलधरा,
उन धातकी द्वीपस्थ आगामी जिनेश्वर पदकमल,
पूजो सद मन वचन तन करि, हरहु मेरे कर्ममल।

(चाल मंगलकी)

जयवंतौ जगमें रहो जगसार हो, भाविके जिनराज;
जिनके धर्म प्रभावसे जगसार हो, पावै सुखके साज।

सुखसाज पावै सकल जगके सुर असुर सेवा करैं,
तीर्थेश पदकी अतुल महिमा सुनत कोटिक अघ टरैं;
जिन गर्भ अरु अवतार तपमें सकल सुरनर आईयो,
अति हर्षयुत करि हरि महोत्सव पुण्य भाव बढाईयौ।

घाति कर्म चउ घातिके जगसार हो, पायौ केवलज्ञान;
समवसरन रचना करी जगसार हो, हर्षित इन्द्र महान।

हर्षित इन्द्र महान सुरगण सहित चउविध आईयो,
जयवंत जिनवर देखि सुरपति आय निज सिर नाईयो;
लखि मानथंभ उतंग प्रथमहिं मान तजी पूजा करी,
अनुराग रंजित हरि हृदयमें भक्तियुत बहु थुति करी।

समोसरन के मध्यमें जगसार हो, श्री मंडप सुखरास;
तिहिं बिच सिंहासन बन्यो जगसार हो, तापरि कमल प्रकाश।

परकाश करन उद्यौत चहुंदिश रत्न अनुपम लगि रहे,
तिहिं करनिका पर अंतरीक्ष जिनेश पद्मासन ठये;
जगभूप चतुरानन विराजै, कोटि रवि शशि लाज ही,
वसु प्रातिहारज द्रव्य मंगळ अष्टविध तहां राज ही।

दिव्यध्वनि जिनकी खिरै जगसार हो, वरणी गणधर देव;
सुरनर पशु हर्षित सुने जगसार हो, सुख पावै स्वयमेव।

स्वयमेव निजपर भेद जानें, कर्म अरिको क्षय करैं,
उर धारि संयम करो बहु तप, मुक्तितिय सहजै वरैं;
इत्यादि अतुल अनंत महिमा, कहत पार न पाव ही,
निजकाज जिनवर आज हमहू, भक्तियुत सिर नावही;

हे धातकी द्वीपस्थ भगवन्! यह अरज सुन लीजिये,
विधिबंध फंद निकंद कारण, शक्ति प्रभु वर दीजिये।

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्–देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ चरणकमलपूजनार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस असार संसारमें, तारणतरण जिहाज;
सो मेरे हिरदे बसौ, भाविके जिनराज।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

सहज चिदानंद

त्रीस चौबीसी-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

पांच भरत शुभक्षेत्र पांच ऐरावते,
आगत, नागत, वर्तमान जिन शाश्वते;
सो चौवीसी तीस जजौं मन लायकें,
आह्वानन विध करौं बार त्रय गायकें।

ॐ ह्रीँ पांचमेरुके दशक्षेत्रसंबंधी तीसचौबीसीके सातसौबीस जिनेन्द्राः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।–अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणं।

(चाल रेखता)

नीर दधि क्षीर सम लायो, कनक भृंगार भरवायो,
जरा-मृतु रोग सतायो, अबै तुम चर्ण ढिग आयो;
द्वीप अढाई सरस राजै, क्षेत्र दस ता विषै छाजै,
सात शत वीस जिन राजै, पूजतां पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ पांचमेरुके दशक्षेत्रसंबंधी तीसचौवीसीके सातसौबीस जिनेन्द्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

सुरभिजुत चंदन लायो, संग करपूर घिसवायो,
तुम्हारे चरण चढवायौ, भव आताप नसवायो। द्वीप०

(चंदनं)

चंदसम तुंदुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं,
पुंज तुम चरन ढिग धारं, अक्षत पद काजके कारं। द्वीप०

(अक्षतं)

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

पुष्प शुभ सुगंध जुत सोहै, सुगंधित तास मन मोहे,
जजत तुम मदन क्षय होवै, मुक्तिपुर पलकमें जोवे।
द्वीप अढाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषैं छाजे,
सात शत वीस जिन राजै, पूजतां पाप सब भाजे।

(पुष्पं)

सरस विंजन लिया ताजा, तुरत बनवाईया खाजा,
चरम तुम जजों महाराजा, क्षुधादुख पलकमें भाजा। द्वीप०

(नैवेद्यं)

दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ ज्योति धारी है,
होत दश दिश उजियारी है, धूम मिस पाप जारी है। द्वीप०

(दीपं)

सरस शुभ धूप दशअंगी, जरावत अग्नि के संगी,
करमकी सैन चतुरंगी, पूजता पाप सब भंगी। द्वीप०

(धूपं)

मिष्ट उत्कृष्ट फल लायो, अष्ट अरि दुष्ट नसवायो,
चरण तुम पूजने आयो, मोक्षपुर पलकमें पायो। द्वीप०

(फलं)

दरब आठौं जु लीना है, अरध कर में नवीना है,
पूजतां पाप छीना है, भानमल जोड कीना है। द्वीप०

ॐ ह्रीँ पांचमेरुके दशक्षेत्रसंबंधी तीसचौबीसीके सातसौबीस जिनेन्द्रेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छंद)

आदि सुदर्शन मेरुतनी दक्षिण दिशा,
भरतक्षेत्र सुखदाय सरस सुंदर लसा;
जहां चौवीसी तीन तनी जिनरायजी,
बहत्तर जिन सर्वज्ञ नमों शिरनायजी।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

ॐ ह्रीँ सुदर्शनमेरु दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि०

ताहि मेरुके उत्तर ऐरावत सोहनो,
आगत नागत वर्तमान मनमोहनो;
जहां चौवीसी तीन तनी जिनरायजी,
बहत्तर जिन सर्वज्ञ नमों शिरनायजी।

ॐ ह्रीँ सुदर्शनमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

(कुसुमलता छंद)

खंड धातुकी विजयमेरुकी दक्षिण दिशा भरत शुभ जान,
तहां चौवीसी तीन विराजै, आगत नागत अरु वर्तमान।
तिनके चरणकमलको निशदिन अरघ चढाय करूं उर ध्यान,
या संसार समुद्रतें काढौं, अहो जिनेश्वर करुणावान।

ॐ ह्रीँ धातुकीखंडद्वीपकी पूर्वदिशा विजयमेरुकी दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

याहि द्वीपकी प्रथम शिखरकी उत्तर ऐरावत हे मान;
आगत नागत वर्तमान जिन बहत्तर सदा शाश्वते जान। तिनके०

ॐ ह्रीँ धातुकीखंडद्वीपकी पूर्वदिशा विजयमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

धातुखंड गिरि अचल सुमेरु, दक्षिण तास भरत बहु घेर,
तामें तोवीसी त्रय जान, आगत नागत अरु वर्तमान। तिनके०

ॐ ह्रीँ धातुकीखंडद्वीपकी पश्चिमदिशा अचलमेरुकी दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

अचलमेरु उत्तरदिशि जाय, ऐरावत शुभ क्षेत्र बताय,
तामें चौवीसी त्रय जान, आगत नागत अरु वर्तमान। तिनके०

ॐ ह्रीँ धातुकीखंडद्वीपकी पश्चिमदिशा अचलमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावततक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

(सुंदरी छंद)

द्वीप पुष्करकी पूरव दिशा, मेरु मंदिर दक्षिण भरत सा,
ता विषे चौवीसी तीन जू, अरघ लेय जजों परवीन जू।

ॐ ह्रीँ पुष्करार्द्धद्वीपकी पूर्वदिशा मंदिरमेरुकी दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

गिर सु मंदिर उत्तर जानियो, क्षेत्र ऐरावत सु बखानियो,
ता विषैं चोवीसी तीन जू, अरघ लेय जजों परवीन जू।

ॐ ह्रीँ पुष्करार्द्धद्वीपकी पूर्वदिशा मंदिरमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावतक्षेत्रसंबंधी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

(पद्धरी छंद)

पश्चिम पुष्करार्द्ध गिर विद्युन्माल, तहां दक्षिण भरत बनौं रसाल,
तामें चौवीसी है जु तीन, वसु द्रव्य लेय पूजौं प्रवीन।

ॐ ह्रीँ पुष्करार्द्धद्वीपकी पश्चिमदिशा विद्युन्मालीमेरुकी दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

याही गिरकी उत्तर जु और, ऐरावत क्षेत्र तनी सु ठौर,
तामें चौवीसी है जु तीन, वसु द्रव्य लेय पूजों प्रवीन।

ॐ ह्रीँ पुष्करार्द्धद्वीपकी पश्चिमदिशा विद्युन्मालीमेरुकी उत्तरदिशा विषैं ऐरावतक्षेत्रसंबंधी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं नि०

(कुंडलिया छंद)

द्वीप अढाईके विषैं पंचमेरु हितदाय,
दक्षिण उत्तर तासके भरत ऐरावत भाय;
भरत ऐरावत भाय अेक क्षेत्रके मांहि,
चौवीसी है तीस दिसों दश दिशके ठांही।
दशो क्षेत्रके बीच सातसौ वीस जिनेश्वर,
अरघ लाय करजोर जजैं, 'रविमल' मन सुध कर।

ॐ ह्रीँ पांचमेरुसंबंधी दशक्षेत्रकेविषैं तीसचौबीसीके, सातसौबीस जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

चौवीसी तीसों तनी, पूजा परम रसाल;
मन वच तनसे शुद्ध कर, अब वरनों जयमाल।

(पद्धरी छंद)

जय द्वीप अढाईमें जु सार, गिर पांच मेरु उन्नत अपार;
ता गिर पूरव पश्चिम जु और, शुभ क्षेत्र विदेह वसे जु ठौर। १

ता दक्षिण क्षेत्र भरत सु जान, है उत्तर अैरावत महान;
गिर पांच तने दश क्षेत्र जोय, ताको वर्णन अब सुनो लोय। २

जो भरत तनों वर्णन विशाल, तैसो ही अैरावत रसाल;
इक क्षेत्र बीच विजयार्ध अेक, ता उपर विद्याधर अनेक। ३

इक क्षेत्र तने षट खंड जान, तहां छहों काल वरतें समान;
जो तीन कालमें भोगभूमि, दश जाति कल्पतरु रहे झूमि। ४

जब चोथो काल लगै जु आय, तब कर्मभूमि वरते सुआय;
जब तीर्थंकरको जनम होय, सुर लेय जजैं गिरमेरु जोय। ५

बहु भक्ति करैं सब देव आय, ता थेई थेई थेई थेई तान लाय;
हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनंदकार। ६

इत्यादि भक्ति करकै सुरेन्द्र, निज थान जाय जुत देववृंद;
या विधि पांचौं कल्याण जोय, हरि भक्ति करे अति हरष होय। ७

या काल विषैं पुण्यवंत जीव, नरजन्म धार शिव लहै अतीव;
अब त्रेसठ पुरुष प्रवीन जोय, सब याही काल विषै जु होय। ८

जब पंचम काल करै प्रवेश, मुनि धर्म रहे कहुं कहुं प्रदेश;
विरले कोई दक्षिण देशमांहि, जिनधर्मी जन बहुते जु नाहिं। ९

जब आवत है षष्टम जु काल, दुःखमें दुःख प्रगटे अति कराल;
तब मांसभक्षि नर सर्व होय, जहां धर्म नामनहिं सुनै कोय। १०

याही विधिसे षटकाल जोय, दश क्षेत्रनमें इकसार होय;
सब क्षेत्रनमें रचना समान, जिनवानी भाख्यो सो प्रमान। ११

चौवीसी है इक क्षेत्र तीन, दश क्षेत्र तीस जानों प्रवीन;
आगत नागत जिन वर्तमान, सब सात शतक अरु बीस जान। १२

सबही जिनराज नमौं त्रिकाल, मोहि भवसागरतें ल्यो निकाल;
यह वचन हियेमें धारि लेव, मम रक्षा करो जिनेन्द्रदेव। १३

रविमलकी विनती सुनो नाथ, मैं पाय पडूं जुग जोरि हाथ;
मनवांछित कारज करो पूर, यह अरज हियामें धरि हजूर। १४

(धत्ता)

शत सात जु वीसं श्री जगदीशं, आगत नागत वरततु हैं;
मन वच तन पूजे शुद्ध मन हूजे, सुरग मुक्ति पद धारत हैं।

ॐ ह्रीं पांचभरत पांचऐरावत दशक्षेत्रके विषैं तीसचोबीसीके सातसौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः महार्घं नि०

श्री बाहुबली स्वामीकी पूजा

कर्म अरिगण जीतीके, दरशायो शिवपंथ,
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो, भोगभूमिके अंत।
समर दृष्टि जल जीत लही, मल्लयुद्ध जय पाय,
वीर अग्रणी बाहुबली, वंदो मन वच काय॥

ॐ ह्रीँ श्रीगोम्मटेश्वर बाहुबली अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथ अष्टक–चाल जोगीरासा)

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुःख पावै,
तिहि दुःख दूर करन जिनपदको, पूजन जल ले आवै;
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
जिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह संसार मरुस्थल अटवी, तृष्णा दाह भरी है,
तिहि दुःखवारन चंदन लेके, जिनपद पूज करी है। परम पूज्य०

(चंदनं)

स्वच्छ सालि शुचि नीरज रजसम, गंध अखंड प्रचारी,
अक्षयपदके पावन कारन, पूजै भवि जगतारी। परम पूज्य०

(अक्षतान्)

हरिहर चक्रवर्ती सुर दानव, मानव पशु बस याके,
तिहि मकरध्वजनाशक जिनको, पूजो पुष्प चढाके। परम पूज्य०

(पुष्पं)

दुःखद त्रिजग जीवनको अति ही, दोष क्षुधा अनिवारी,
तिहि दुःख दूर करनको चरुवर ले जिन पूज प्रचारी।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
जिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

(नैवेद्यम्)

मोह महातममें जग जीवन, शिव मग नाहीं लखावे,
तिहि निरवारन दीपक कर ले, जिनपद पूजन आवे। परम पूज्य०

(दीपं)

उत्तम धूप सुगंध बनाकर, दश दिशमें महकावे,
दशविध बंध निवारन कारण जिनवर पूज रचावे। परम पूज्य०

(धूपं)

सरस सुवरण सुगंध अनूपम, स्वच्छ महाशुचि लावे,
शिवफल कारण जिनवर पदकी, फल सों पूज रचावे। परम पूज्य०

(फलं)

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे। परम पूज्य०

(अर्घम्)

जयमाला

(दोहा)

आठ कर्म हनि आठ गुण, प्रगट करे जिनरूप,
सो जयवंतो भुजबलि, प्रथम भये शिवरूप।

(कुसुमलता छंद)

जै जै जै जगतार शिरोमणी, क्षत्रिय वंश असंस महान,
जै जै जै जग जनहितकारी, दीनो जिन उपदेश प्रमाण;

जै जै चक्रपति सुत जिनके, सत सुत जेष्ठ भरत पहिचान,
जै जै जै श्री ऋषभदेव तिनसों जयवंत सदा जग जान। १

जिनके द्वितीय महादेवी सुचि नाम सुनंदा गुण की खान,
रूप शील संपन्न मनोहर, तिनके सुत भुजबलि महान;
सवा पंच शत धनुष उन्नत तनु, हरित वरण शोभा असमान,
वैडूर्यजमणि पर्वत मानो, नील कुलाचल सम थिर जान। २

तेजवंत परमाणु जगतमें, तिन करी रच्यो शरीर प्रमाण,
सत वीरत्व गुणाकर जाको, नीरखत हरि हरषे उर आन;
धीरज अतुल वज्रसम नीरज सम वीराग्रणी अति बलवान,
जनछबी लखी मनु शशीछबी लाजे, कुसुमायुध लीनों सुप्रमान। ३

बालसमै जिन बाल चंद्रमा, शशीसे अधिक धरे द्युतिसार,
जो गुरुदेव पढाई विद्या शस्त्र शास्त्र सब पढी अपार;
ऋषभदेवने पोदनपुरके नृप कीने भुजबली कुमार,
दइ अयोध्या भरतेश्वरको आप बने प्रभुजी अनगार। ४

राजकाज षट्खंड महीपति सब दल लई चढी आये आप,
बाहुबली भी सन्मुख आये, मंत्रीन तीन युद्ध दिये थाप;
दृष्टि, नीर अरू मल्ल युद्धमें दोनों नृप कीजो बल धाप,
वृथा हानी रूक जाय सैनकी, यातै लडीये आपो आप। ५

भरत भुजबली भूपति भाई, उतरे समरभूमिमें जाय,
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति, मल्लयुद्ध तब करो अध्याय;
पग तल चतल चलत अचला तब, कंपत अचल शिखर ठहराय,
निषध नील अचलाधर मानो, भये चलाचल क्रोध बसाय। ६

भुज विक्रमबलबाहुबलीने लये चक्रपति अधर उठाय;
चक्र चलायो चक्रपति तब तो भी विफल भये तिहि ठाय,
अति प्रचंड भुजदंड सुंड सम नृप शार्दूल बाहुबली राय,
सिंहासन मंगवाय जासपै अग्रजको दीनों पधराय। ७

राज्यरमा रामासुर धुनमें जोवन दमक दामिनी जान,
भोग भुजंग जंग सम जगको, जान त्याग कीनो तिहि थान;
अष्टापदपर जाय वीर नृप वीर वृत्ति धर कीनों ध्यान,
अचल अंक निरभंग संग तज, संवतसरलों अेक स्थान। ८

विषधर बंबी कटि चरणतल, उपर बेल चढी अनिवार,
युगजंधा कटी बाहुवेढी कर पहुंची वृक्षस्थल परसार,
सिरके केश बढे जिस मांही नभचर पक्षी बसे अपार,
धन्य धन्य इस अचल ध्यानको महिमा सुर गावे उरधार। ९

कर्मनाशी शिव जाय बसे प्रभु, ऋषभेश्वरसे पहले जान,
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि, जगदीश्वर पद लयो पुमान;
वीरवृत्ति वीराग्रगण्य प्रभु बाहुबली जगधन्य महान,
वीरवृत्तिके काज जिनेश्वर नमैं सदा जिनबिंब प्रमान। १०

(दोहा)

श्रवणबेलगोल विंध्यगिरि जिनवर बिंब प्रधान,
छप्पन फूट उत्तंग तनु खड्गासन अमलान;
अतिशयवंत अनंत बल–धारक बिंब अनूप,
अर्घ चढाय नमों सदा जय जय जिनवर भूप।

ॐ ह्रीं वर्तमान अवसर्पिणी समये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मारिविजयी वीराधिवीर वीराग्रण्य श्री बाहुबलीस्वामीने अनर्घ्यपदप्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय-जिनालय पूजा

(चौपाई)

आठ किरोड रु छप्पन लाख, सहस सत्याणव चतुशत भाख;
जोड इक्यासी जिनवर थान, तीन लोक आह्वान करान।

ॐ ह्रीँ तीनलोक संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्,–अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी)

क्षीरोदधिनीरं उज्ज्वल सीरं, छान सुचीरं भरि झारी;
अति मधुर लखावन परम सुपावन, तृषा बुझावन गुणभारी।
वसु कोटि सु छप्पन लाख सत्ताणव, सहस चार सत इक्यासी;
जिनगेह अकीर्तिम तिहुं जग भीतर, पूजत पद ले अविनाशी।

ॐ ह्रीँ तीनलोक–संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यः जल नि०

मलयागिर पावन चंदन बावन, ताप बुझावन धसि लीनो;
धरि कनक कटोरी द्वै कर जोरी, तुम पद ओरी चित दीनो।–वसु०

(चंदनं)

बहुभांति अनोखे तन्दुल चोखे, लखि निरदोखे हम लीने;
धर कंचनथाली तुम गुणमाली, पुंज विशाली कर दीने।–वसु०

(अक्षतान्)

शुभ पुष्प सुजाती है बहुभांती, अलि लिपटाती लेय वरं;
धरि कनक रकेबी कर गह लेवी, तुम पद जुगकी भेट धरं।–वसु०

(पुष्पं)

खुरमा जु गिदोडा बरफी पेडा, घेवर मोदक भरी थारी;
विधि पूर्वक कीने धृतपय भीने, खंड में लीने सुखकारी।
वसु कोटि सु छप्पन लाख सत्ताणव, सहस चार सत इक्यासी;
जिनगेह अकीर्तिम तिहुं जग भीतर, पूजत पद ले अविनाशी।

(नैवेद्यम्)

मिथ्यात महातम छायो रह्यो हम, निजपरपरिणति नहि सूझे;
ईह कारण पाकैं दीप सजाकैं, थाल धराकैं हम पूजे।–वसु०

(दीपं)

दशगन्ध कुटाके धूप बनाके, निजकर लेके धरि ज्वाला;
तसु धूम उडाई दशदिश छाई, बहु महकारी अति आला।–वसु०

(धूपं)

बादाम छुहारे श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे द्राखवरं;
इन आदि अनोखे लखि मिरदोखे, थाल पजोखे, भेट धरं।–वसु०

(फलं)

जल चंदन तंदुल कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल अर्घ रचौं,
जयघोष कराउं, बीन बजाउं, अश्ध चढाउं खूब नचौं।–वसु०

ॐ ह्रीँ तीनलोक–संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घं नि०

(चौपाई)

अघोलोक जिन आगम साख, सात कोडि अरु बहत्तर लाख;
श्री जिनभवन महा छवि देई, ते सब पूजौं वसु विध लेई।

ॐ ह्रीँ अधोलोक संबंधी सात करोड बहत्तरलाख अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक जिनमंदिर ठाठ, साढे चार शतक अरु आठ;
ते सब पूजौं अर्घ चढाय, मन वच तन त्रय जोग मिलाय।

ॐ ह्रीँ मध्यलोकसंबंधी चारसौअठावन अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घं०

(अडिल्ल)

ऊर्ध्वलोकके मांहि भवन जिन जानिये,
लख चौरासी सहस सत्याणवे मानिये;
तापै धरि तेईस जजौं शिर नायके,
कंचनथाल मझार जलादिक लायकै।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकसंबंधी चौरासी लाख सत्याणवे हजार तेईस अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकोटि छप्पन लाख उपर, सहस सत्याणव मानिये,
शत चारपै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये;
तिहुं लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करैं;
तिन भवनको हम अर्घ लेकैं पूजिहैं जगदुख हरैं।

ॐ ह्रीं तीनलोक संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

अब वरणों जयमालिका, सुनो भव्य चित लाय;
जिनमंदिर तिहुं लोकके, देहुं सकल दरसाय।

(पद्धरि छंद)

जय अमल अनादि अनंत जान, अनिर्मित जु अकीर्त अचल थान;
जय अजय अखंड अरूप धार, षट् द्रव्य नहीं दीसै लगार।

जय निराकार अविकार होय, राजत अनंत परदेश सोय;
जै शुद्ध सुगुण अवगाह पाय, दश दिशमांहि ईह विधि लखाय।

यह भेद अलोकाकाश जान, ता मध्य लोक नभ तीन मान;
स्वयमेव बन्यो अविचल अनंत, अविनाशी अनादि जु कहत संत।

पुरुषाकार ठाडो निहार, कटि हाथ धारि द्वै पग पसार;
दक्षिन उत्त दिशि सर्व ठौर, राजु जु सात भाख्यो निचोर।

जय पूर्व अपर दिश घाट बांधि, सुन कथन कहूं ताको जु साधि;
लखि श्वभ्रतलैं राजु जु सात, मधिलोक अेक राजू रहात।

फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच, भूसिद्ध अेक राजू जु सांच;
दश चार ऊंच राजू गिनाय, षट् द्रव्य लये चतु कोण पाय।

तसु वात वलय लपटाय तीन, ईह निराधार लखियो प्रवीन;
त्रस नाडी तामधि जान खास, चतु कोन अेक राजू जु व्यास।

राजू उतंग चौदह प्रमान, लखि स्वयंसिद्ध रचना महान;
ता मध्य जीव त्रस आदि देय, निज थान पाय तिष्ठै भलेय।

लखि अधो भागमैं श्वभ्र थान, गिन सात कहे आगम प्रमान;
षट् थानमांहि नारकि बसेय, इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय।

तसु अधो भाग नारकि रहाय, फुनि ऊर्ध्व भाग द्वय थान पाय;
बस रहे भवन व्यंतर जु देव, पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेव।

तिहंथान गेह जिनराज भाख, गिन सात कोटि बहत्तरि जु लाख;
ते भवन नमों मन वचन काय, गति श्वभ्र हरनहारे लखाय।

पुनि मध्यलोक गोलाअकार, लखि दीप उदधिरचना विचार;
गिन असंख्यात भाखे जु संत, लखि स्वयंभूरमन सबके जु अंत।

इक राजुव्यासमें सर्वजान, मधि लोक तनो इह कथन मान;
सब मध्य द्वीप जंबू गिनेय, त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय।

ईन तेरहमैं जिनधाम जान, शत चार अठावन है प्रमान;
खग देव असुर नर आय आय, पद पूज जाय शिर नाय नाय।

जय ऊर्ध्व लोक सुर कल्पवास, तिहंथान छजै जिनभवन खास;
जय लाख चौरासी पै लखेय, जय सहस सत्याणव और टेय।

जय वीसतीन फुनि जोड देय, जिन भवन अकीर्तम जान लेय;
प्रति भवन अेक रचना कहाय, जिनबिंब अेक सत आठ पाय।

शतपंच धनुष उन्नत लसाय, पद्मासनजुत वरध्यान लाय;
शिर तीन छत्र शोभित विशाल, त्रय पादपीठ मणिजडित लाल।

भामंडलकी छबि कौन गाय, फुनि चंवर ढुरत चौसठि लखाय;
जय दुंदुभि रव अद्भुत सुनाय, जय पुष्पवृष्टि गंधोदकाय।

जय तरु अशोक शोभा भलेय, मंगलविभूति राजत अमेय;
घट तूप छजै मणिमाल पाय, घटधूम्र धूम्र दिग सर्व छाय।

जय केतु पंक्ति सोहै महान, गंधर्वदेव गन करत गान;
सुर जनम लेत लखि अवधि पाय, तिह थान प्रथम पूजन कराय।

जिनगेह तणो वरनन अपार, हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार,
जय देव जिनेश्वर जगत भूप, नमि नेम मंगे निज देह रूप।

ॐ ह्रीँ तीनलोक संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्याणवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः महार्घं नि०

(दोहा)

तीन लोकमें शाश्वते श्री जिनभवन विचार;
मन वच तन करि शुद्धता पूजों अरघ उतार।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

२१

श्री पंचमेरु-जिनपूजा

(गीता छंद)

तीर्थंकरोंके न्हवनजलतें भये तीरथ शर्मदा,
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन पंचमेरुनकी सदा,
दो जलधि ढाई द्वीपमें सह गनत मूल विराजहीं,
पूजों असी जिनधानप्रतिमा, होहि सुख दुख भाजहीं।

ॐ ह्रीँ पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई आंचलीबद्ध १५ मात्रा)

सीतल मिष्ट सुवास मिलाय, जलसों पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।

ॐ ह्रीँ पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः जलं नि०

जल केशन करपूर मिलाय, गंधसों पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचों०

ॐ ह्रीँ पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः चंदनं नि०

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अक्षतसों पूजों जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचों०

ॐ ह्रीँ पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं नि०

वरन अनेक रहे महकाय, फूलनसौं पूजों जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचों०

ॐ ह्रीँ पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं नि०

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसों पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं नि०

तमहर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचों०

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः दीपं नि०

खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचो०

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः धूपं नि०

सुरस सुवर्ण सुगंध सुहाय, फलसौं पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचों०

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं नि०

आठ दरवमय अर्घ बनाय, द्यानत पूजों श्री जिनराय;
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;–पांचों०

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घं नि०

जयमाला

(सोरठा)

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मंदर कहा,
विद्युन्माली नाम पंचमेरु जगमें प्रगट। १

(चौपाई)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै;
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। २

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

उपर पांच शतक पर सोहै, नंदनवन देखत मन मोहै;
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ३

साढे बासठ सहस ऊंचाई, वन सुमनस सोभे अधिकाई;
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ४

ऊंचा योजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरिसीसं;
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ५

चारों मेरु समान बखानै, भूपर भद्रशाल चहुं जानै;
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ६

ऊंचे पांच शतक पर भाखै, चारों नंदनवन अभिलाखै;
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ७

साढे पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा;
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ८

उच्च अठाईस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये;
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। ९

सुर नर चारन वंदन आवै, सो शोभा हम किह मुख गावैं,
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन–वच–तन वंदना हमारी। १०

(दोहा)

पंचमेरुकी आरती, पढै सुनै जो कोय;
''द्यानत'' फल जाने प्रभु, तुरत महासुख होय।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी जिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यः महार्घं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री नंदीश्वरद्वीप-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

अष्टम दीप नंदीश्वर बहु विस्तार है,
ताके चव दिश बावन गिर मनि धार है;
तिन सबपै जिनथान कहे बावन सही,
सो इहां थापन थाप जजौं पुन्यकी मही।

ॐ ह्रीँ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिशु द्विपंचाशतजिनालयानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे .....अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे ....अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीत)

शुभ नीर निरमल त्रस सुजिय बिन गंग धाराकौ सही,
धर पात्र सुंदर हाथ अपने वचन करि मुख थुति कही;
तहां इन्द्र सुर ही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहां,
इम जान नंदीश्वर तने जिनथान जल जजहों इहां।

ॐ ह्रीँ नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

लै बावनौं गंध खानि चंदन नीरतैं घसि लाईयौ,
कर कनक पातर धार लीनो महा उर हरषाईयौ। तहां०

ॐ ह्रीँ नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

बिन खंड अक्षत धवल उज्ज्वल बीन नव शुभ लाय जी;
कर सुभग जल भर घोय नीके, बीनती मुख गाय जी। तहां०

ॐ ह्रीँ नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सुखदाय पहुप सुगंध राशी वरन नाना जानिये,
बहु घाटि धारी लाय करतैं माल कर हित मानिये।
तहां इन्द्र सुर ही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहां,
इम जान नंदीश्वर तने जिनथान पुष्प जजो इहां।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०

नैवेद षट्रस तुरत लाकै सुभग मोदक हम लये;
भर थाल कंचन धार करमें भावको निरमल ठये। तहां०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणि दीपिका तम नाश करता जोतके धारक सही;
लै आरती गुन गाय जिनके भावना इन उर लही। तहां०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

कर धूप दश विध गंध लेकै, महा परिमलदाय जी;
लै आपने कर माहिं थुति कर अगनिमें धरवाय जी। तहां०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल बदाम अनार खारक और पुंगीफल भले;
इन आदि निरमल लाय फल हों देव जिन पूजन चले। तहां०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

लै नीर चंदन तंदुला पुष्प और चरु दीपक कहे;
धर धूप फल कर अर्घ कर लै भावना भावत भऐ। तहां०

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्जिनालयेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

जयमाला

(सोरठा)

नंदीश्वर शुभ थान, अष्टम ताकी चौदिसा;
बावन जिन थल मान सो पूजौं कर आरती।

(वेसरी छंद)

याही अष्टम दीप मझारा, जिन पूजन आवे सुर सारा;
ईम उतकृष्टी प्रतिमा जानौं, धनुष पांचसौ त्वंग बखानौ। १

रूप महा कौलों कवि गावे, जिन तनसे सब लच्छन पावे;
मुद्रा शांति घ्राण दिठ देखैं, पद्मासन कायोत्सर्ग पेखैं। २

पूरव दिशा वा उत्तर भाई, श्रीजिनबिंब तने मुख पाई;
सो सब बिंब रतनमय होई, दीखैं ईम परतक्ष जिन जोई। ३

बहु विस्तार धरें जिनगेहा, ताके लखत होय बहु नेहा;
कटक बाग वन शोभा धारी, लगे शिखर नभ मिलन पधारी। ४

धुजा कलपवृक्ष तोरण धारे, रतन तूप मंगल द्रव्य सारे;
प्रातिहार्य वसु शोभ अपारा, मणिमंडल नभ मांहि सिधारा। ५

नाट साल तहां भक्त करावें, देव तहां नटि सुर धर गावें;
सुर मंदिर पंकति सुखकारा, तहां अमर धर्मकी उतसारा। ६

महिमा तिनकी कबलौं गावैं, जिन जानै के जिन धुनि पावे;
वा सुर इन्द्र जाय सो जानैं, बाकी तो सामान्य बखानैं। ७

जे जिनमंदिर सुमरत भाई, पाप कटें पुन्यबंध कराई;
तौ दरशन की महिमा सारी, कहै कौन फलकी विधि भारी। ८

(दोहा)

तातैं नंदीश्वर विषैं जे हैं जिनके थान,
सो भव सुमरों थुति करों पूजों शुभ फल धाम।

ॐ ह्रीँ श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालयेभ्य: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नंदीश्वरद्वीप-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

सरव परवमें बडौ अठाई परव है,
नंदीश्वर सुर जाहिं लिये वसु दरव है;
हमें शक्ति सो नाहिं इहां करि थापना,
पूजौं जिनगृह प्रतिमा है हित आपना।

ॐ ह्रीँ श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट इति आह्वाननम्,–अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्,–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

कंचन मणिमय भृंगार तीरथ नीर भरा,
तिहुं धार दई निरवार जामन मरन जरा;
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों,
वसु दिन प्रतिमा अभिराम आनंदभाव धरों।

ॐ ह्रीँ श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

भवतपहर शीतल वास, सो चंदन नाहीं;
प्रभु यह गुन कीजै सांच, आयो तुम ठांहीं। नंदी०

(चंदनं)

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहै;
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है। नंदी०

(अक्षतान्)

तुम कामविनाशक देव, ध्याऊं फूलनसौं;
लहुं शीललच्छमी एव, छूटूं सूलनसौं। नंदी०

(पुष्पं)

नेवज इन्द्रिय बलकार, सो तुमने चूरा;
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा।
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों,
वसु दिन प्रतिमा अभिराम आनंदभाव धरों।

(नैवेद्यम्)

दीपककी ज्योति प्रकाश, तुम तनमांहि लसै;
टूटै करमनकी राश, ज्ञानकणी दरसै। नंदी०

(दीपं)

कृष्णागरु धूप सुवास, दश दिशि–नारि वरैं;
अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करैं। नंदी०

(धूपं)

बहुविध फल ले तिहुं काल, आनंद राचत हैं;
तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जाचत हैं। नंदी०

(फलं)

यह अर्घ कियो निज हेत, तुमको अरपत हों;
'द्यानत' कीनो शिवखेत, भूमि समरपत हों। नंदी०

(अर्घं)

जयमाला

(दोहा)

कार्तिक फागुन साढके,[1] अंत आठ दिन माहिं;
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं। १

१. कार्तिक, फाल्गुन तथा अषाढ़ मासकी शुक्ल अष्टमीसे पूर्णिमा तकके आठ दिनको नंदीश्वर--अष्टाह्निका कहा जाता है।

अेकसौ त्रेषठ कोडि जोजन महा,
लाख चौरासिया अेक दिशमें लहा;
आठमों द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं। भौन० २

चारदिशि चार अंजनगिरि राजहीं,
सहस चौरासिया अेकदिश छाजहीं;
ढोलसम गोल उपर तलें सुंदरं। भौन० ३

अेक इक चार दिशि चार शुभ बावरी,
अेक इक लाख जोजन अमल जलभरी;
चहु दिशा चार वन लाख जोजन वरं। भौन० ४

सोल वापीनमधि सोल गिरि दधिमुखं,
सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं;
बावरी कौन दोमाहिं दो रतिकरं। भौन० ५

शैल बत्तीस इक सरस जोजन कहे,
चार सोलै मिले सर्व बावन लहे;
अेक इक सीस पर अेक जिनमंदिरं। भौन० ६

बिंब अठ अेकसौ रतनमय सोहहीं;
देव देवी सरव नयन मन मोहहीं;
पांचसै धनुष तन पद्म आसन परं। भौन० ७

लाल नख मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं,
श्याम रंग भोंह सिर केश छबि देत हैं;
वचन बोलत मनों हँसत कालुष हरं। भौन० ८

कोटि शशि भानु दुति तेज छिप जात है,
महा वैराग परिणाम ठहरात है;
बयन नहि कहै लखि होत सम्यक्धरं। भौन० ९

(सोरठा)

नंदीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै;
'द्यानत' लीनों नाम, यही भगति शिवसुख करै। १०

ॐ ह्रीँ नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्य: महार्घं नि०

श्री सिद्धचक्रपूजा

(अडिल्ल छंद)

अष्ट करम करि नष्ट अष्ट गुण पायकैं,
अष्टम वसुधा मांहि विराजे जायकैं;
ऐसे सिद्ध अनंत महंत मनायकैं,
संवौषट् आह्वान करूं हरषायकैं।

ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। –अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्। –अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

हिमवनगत गंगा, आदि अभंगा, तीर्थ उतंगा सरवंगा,
आनिय सुरसंगा, सलिल सुरंगा, करि मन चंगा भरि भृंगा;
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

हरिचंदन लायो, कपूर मिलायो, बहु महकायो, मन भायो;
जल संग घसायो, रंग सुहायो, चरन चढायो हरषायो।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निज निधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

(चंदनं)

तंदुल उजियारे शशि–दुति टारे, कोमल प्यापे अनियारे;
तुषखंड निकारे जलसु पखारे, पुंज तुम्हारे ढिंग धारे। त्रिभुवन०

(अक्षतान्)

सुरतरुकी बारी प्रीति विहारी, किरिया प्यारी गुलझारी;
भरि कंचन थारी माल संवारी, तुम पदधारी अतिसारी। त्रिभुवन०

(पुष्पं)

पकवान निवाजे स्वाद विराजे, अमृत लाजे क्षुत भाजे;
बहु मोदक छाजे घेवर खाजे, पूजन काजे करि ताजे। त्रिभुवन०

(नैवेद्यं)

आपा–पर भासै ज्ञान प्रकासे, चित्त विकासे तम नासै;
ऐसे विधि खासे दीप उजासे, धरि तुम पासे उल्लासे। त्रिभुवन०

(दीपं)

चुंबत अलिमाला गंध विशाला, चंदन कालागरु वाला;
तसु चूर्ण रसाला करि ततकाला, अगनी ज्वालामें डाला। त्रिभुवन०

(धूपं)

श्रीफल अतिभारा, पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा;
रितुरितुका न्यारा सत्फल सारा, अपरंपारा ले धारा। त्रिभुवन०

(फलं)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं पामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

ध्यानदहन विधिदारु दहि, पायो पद निरवान;
पंचभावजुत थिर भये, नमौं सिद्ध भगवान। १

(त्रोटक छंद)

सुख सम्यक्‌दर्शन–ज्ञान लहा, अगुरुलघु सूक्षम वीर्य महा;
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। २

असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जजैं, भूचरेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजैं;
जय जामन मर्ण मिटायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ३

अमलं अचलं अकलं अकुलं, अछलं असलं अरलं अतुलं;
अरवं अरहं शिवनायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ४

अजरं अमरं अघरं सुघरं, अडरं अहरं अमरं अघरं;
अपरं असरं सब लायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ५

वृषवृंद अमंद न निंद लहो, निरद्वंद अफंद सुछंद रहो;
नित आनंदवृंद विधायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ६

भगवंत सुसंत अनंतगुणी, जयवंत महंत नमंत मुनी;
जग जंतुतणो अघघायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ७

अकलंक अटंक शुभंकर हो, निरडंक निःशंक शिवंकर हो;
अभयंकर शंकर क्षायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ८

अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अनंत उत्तंग सदा;
सरवंग अनंग नसायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ९

ब्रह्मांड जु मंडलमंडन हो, तिहुं दंड प्रचंड विहंडन हो;
चिदपिंड अखंड अकायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १०

निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरे;
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। ११

जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्षक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षक हो;
पण अक्ष प्रतक्ष खपायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १२

अप्रमाद अनाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता;
समता रमता अकषायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १३

निरभेद अखंद अछेद सही, निरवेद निवेदन वेद नहीं;
सब लोक अलोकके ज्ञायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १४

अमलीन अदीन अरीन हने, निजलीन अधीन अछीन बने;
जमको घनघात बचायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १५

न अहार निहार विहार कबै, अविकार अपार उदार सबै;
जगजीवनके मन भायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १६

असमंध अधंध अरंध भये, निरबंध अखंड अगंध ठये;
अमनं अतनं निरवायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १७

निरवर्ण अकर्ण उघर्ण बली, दुखहर्ण अशर्ण सुशर्ण भली;
बलि मोहकी फौज भगायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १८

अविरुद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभू, अति शुद्ध प्रबुद्ध समृद्ध विभू;
परमातम पूरन पायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। १९

विररूप चिद्रूप स्वरूप द्युति, जसकूप अनूपम भूप भुती;
कृतकृत्य जगत्रय नायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। २०

सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितू, उतकिष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू;
शिवतिष्ठत सर्वसहायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। २१

जय श्रीधर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीझर हो;
जय रिद्धि सुसिद्धि बढायक हो, सब सिद्ध नमौं सुखदायक हो। २२

(दोहा)

सिद्ध सुगुण को कहि सकै, ज्यों विलस्त नभ मान;
'हीराचन्द' तातैं जजै, करहु सकल कल्याण। २३

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धपूजा

(छप्पय राग)

मंगलमय मंगलकरन, शिवपददायक जानिकै;
आह्वानन करके जजौं, सिद्ध सकल उर आनिके।

ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर इति संवौषट् आह्वाननम्।—अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।—अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नंदीश्वर श्री जिनधाम—राग)

उज्ज्वल जल शीतल लाय, जिनगुण गावत हैं,
सब सिद्धन कों सु चढाय पुण्य बढावत हैं;
सम्यक् सुक्षायक जान यह गुण गावतु हैं,
पूजौं श्री सिद्ध महान बलि बलि जावतु हैं।

ॐ ह्रीँ सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

करपूर सुकेसर सार चंदन सुखकारी,
पूजौं श्री सिद्ध निहार आनंद मन धारी;
सब लोकालोकप्रकाश केवलज्ञान जग्यो,
यह ज्ञान सुगुण मनभास, निज रस माहि पग्यो।

(चंदनं)

मुक्ताफल की उनहार अक्षत धोय धरे,
अक्षयपद प्रापति जान पुन्य भंडार भरे;
जगमें सुपदारथ सार ते सब दरसावे,
सो सम्यक् दरशन सार इह गुण मन भावै।

(अक्षतान्)

सुंदर सु गुलाब अनूप फूल अनेक कहै,
श्री सिद्धकुं पूजत भूप बहु विधि पुन्य लहै,
तहां वीर्य अनंतो सार यह गुन मन आनो,
संसारसमुद्र तैं पार कारक प्रभु जानो।

(पुष्पं)

फेणी गोजा पकवान मोदक सरस बने,
पूजों श्री सिद्ध महान भूख विथा जु हने;
झलके सब अेकहि वार ज्ञेय कहे जितनै,
ये सूक्षमता गुणसार, सिद्धन के तितनै।

(नैवेद्यम्)

दीपक की ज्योति जगाय सिद्धन को पूजे,
करि आरती सन्मुख जाय निरमल पद हूजे;
कहुं घाटि न बाढि प्रमाण अगुरुलघु गुण राख्यो,
हम शीस नमावत आन तुम गुण मुख भाख्यो।

(दीपं)

वर धूप सु दसविधि ल्याय दस दिसि गंध वरै,
वसु कर्म जलावत जाय मानों नृत्यकरै;
इक सिद्ध में सिद्ध अनंत सत्ता सब पावै,
यह अवगाहन गुण संत सिद्धनके गावै।

(धूपं)

ले फल उत्कृष्ट महान सिद्धन को पूजौं,
लहि मोक्ष परम शुभ थान प्रभु सम नहि दूजो;
यह गुण बाधा करी हीन बाधा नास भई,
सुख अव्याबाध सुचीन शिवसुंदर सु लही।

(फलं)

जल फल भरि कंचन थाल अरचत कर जोरी,
प्रभु सुनियो दीनदयाल विनती है मोरी;
करमादिक दुष्ट महान इनको दूर करो,
तुम सिद्ध सदा सुखदान भव भव दुःख हरो।

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

સહજ સુખસાધન

जयमाला

(दोहा)

नमों सिद्ध परमातमा, अद्भुत परम विशाल;
तिन गुण महिमा अगम है, सरस रची जयमाल।

(पद्धरी छंद)

जय जय श्री सिद्धनकूं प्रणाम, जय शिवसुख सागर के सुधाम;
जय बलि बलि जात सुरेश जान, जय पूजत तन मन हरष आन। १

जय क्षायिक गुण सम्यक्त्वलीन, जय केवलज्ञान सुगुन नवीन;
जय लोकालोक प्रकाशवान, यह केवल अतिशय हिये आन। २

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

जय सर्व तत्त्व दरशे महान, सोई दरशन गुन तीजो सुजान;
जय वीर्य अनंतो है अपार, जाकी पटतर दूजो न सार। ३

जय सूक्षमता गुण हिये धार, सब ज्ञेय लख्यो अेक हि सुवार;
इक सिद्धमें सिद्ध अनंत जान, अपनी अपनी सत्ता प्रमान। ४

अवगाहन गुण अतिशय विशाल, तिनके पद वंदूं नमत भाल;
कछु घाटि न बाढि कहे प्रमाण, गुण अगुरुलघु धारे महान। ५

जय बाधा रहित बिराजमान, सोई अव्याबाध कह्यो बखान;
अे वसु गुण हैं विवहार संत, निश्चय जिनवर भाखे अनंत। ६

सब सिद्धनके गुण कहे गाय, इन गुण करि शोभित है जिनाय;
तिनको भविजन मन वचन काय, पूजत वसु विधि अति हर्ष लाय। ७

सुरपति फणपति चक्री महान, बलिहरि प्रतिहरि मनमथ सुजान;
गणपति मुनिपति मिल धरत ध्यान, जय सिद्धशिरोमणि जगप्रधान। ८

(सोरठा)

अैसे सिद्ध महान, तुम गुण महिमा अगम है;
वरणन कह्यो बखान, तुच्छ बुद्धि कवि लालजी।

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, सिद्धपरमेष्ठिभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करता की यह विनती, सुनो सिद्ध भगवान;
मोहि बुलाओ आप ढिंग, यह अरजी उर आन।

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

श्री सिद्धपूजा

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं,
वर्गापूरित–दिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम्।
अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं,
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निजमनोमणिभाजनभारया, शमरसैकसुधारसधारया।
सकलबोधकलारमणीयकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥१॥

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभु;
जलसे पूजूं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजकर्मकलंकविनाशनैरमलभावसुवासितचंदनैः।
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥२॥

हम भव आतप मांहि, तुम न्यारे संसार से;
कीज्यो शीतल छांह, चन्दन से पूजा करूं।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजभावसुनिर्मलतंदुलैःसकलदोषविशालविशोधनैः।
अनुपरोधसुबोधनिधानकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥३॥

हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षय गुणके भरे;
पूजूं अक्षत ल्याय; दोष नाश गुण कीजियो।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

समयसारसुपुष्पसुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया।
परमयोगबलेन वशीकृतं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥४॥

काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम;
फूल चढाउं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो।

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहितजातिजरामरणांतकैः।
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥५॥

मोहि क्षुधा दुख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती;
मेरी बाधा चूर, नेवज से पूजा करू।

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः।
निरवधि–स्वविकासविकासनं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥६॥

मोह तिमिर हम पास, तुम पै चेतन ज्योति है;
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो।

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने दीपम्।

निजगुणाक्षयरूपधूपनैः स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥७॥

अष्टकर्म वन जाल, मुक्ति मांहि स्वामि सुख करो;
खेऊं धूप रसाल, अष्ट कर्म निवारियो।

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

परमभावफलावलिसम्पदा सहजभावकुभावविशोधया।
निजगुणस्फुरणात्मनिरंजनं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥८॥

अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लही;
पूजुं फल दरशाय, विघन टाल शिव फल करो।

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रोन्मीलिविकाशभावनिवहैरत्यंतबोधाय वै।
वर्गंघाक्षतपुष्पदामचरुकै सद्दीपधूपैः फलैः॥
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमं ज्ञानात्मकैरर्चयेत्।
सिद्धं स्वादुमगाधबोधमचलं संचर्ययामो वयम्॥९॥

हममें आठों हि दोष, जजहुं अर्घ ले सिद्धजी,
दीज्यो वसु गुण मोय, कर जोड्या 'द्यानत' खडो।

ॐ ह्रीँ श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(शार्दुलविक्रीडित)

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापु श्रियं शाश्वतीं,
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः सन्तोपि तीर्थंकराः।
सत्सम्यकत्वविबोधवीर्य्यविशदाऽव्यावाघताद्यैर्गुणै–ः
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान विशुद्धोदयान्॥

(मोतीयादाम छंद)

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधाम विबोधनिधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥१॥

विदूरितसंसृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग।
अबंध कषायविहीन विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥२॥

निवारितदुष्कृत कर्मविपाश, सदामलकेवलकेलिनिवास।
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥३॥

अनंत सुखामृतसागरधीर, कलंक रजोमल भूरिसमीर।
विखण्डितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥४॥

विकार विवर्जित तर्जित शोक, विबोधसुनेत्रविलोकितलोक।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥५॥

रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतर नित्य सुखामृतपात्र।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥६॥

नरामरवंदित निर्मलभाव, अनंतमुनीश्वरपूज्य विहाव।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥७॥

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकर सार वितंद्र।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥८॥

जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार।
अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥९॥

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्वविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०॥

(मालिनी)

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं,
परपरिणतिमुक्तं पद्मनंदीन्द्रवन्द्यम्।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो;
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगतशिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो। १

ध्यानअग्निकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजन देव स्वरूपी ह्वै रहे;
ज्ञायक के आकार ममत्व निवारिकैं,
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायकैं। २

(दोहा)

अविचल ज्ञान प्रकाशतें, गुण अनन्त की खान,
ध्यान धरै सो पाईअे, परम सिद्ध भगवान। ३

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

मानस्तंभ–विराजमान
श्री सीमंधर-जिनपूजा

(गीता छंद)

महा पावन बहु सुहावन विदेह भूमि जानिये,
तहां मानस्तंभ लखते मान मानिन हानिये;
तासु मूल जिनेश प्रतिमा देखि हरि पूजा करी,
करतो आह्वानन दास प्रभु इत आय अब तो पग धरी।

(दोहा)

चौदिश मानस्थंभ की, जिन प्रतिमा शिर नाय;
करत आह्वानन जोरि कर, तिष्ठ तिष्ठ इत आय।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्! (इत्याह्वाननम्)–अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः! (इति स्थापनम्)–अत्र मम सन्निहितो भव भव! वषट्! (इति सन्निधिकरणम्)

(त्रोटक छंद)

शुचि निरहि गंग नदी भरिये, भरु कुंभन प्रासुक के करियो;
चतुर दिश मानस्थंभ कहा, हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा।

ॐ ह्रीं मानस्तंभमध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन लेहु खरो, घसि कुंकुम मिश्रित कुंभ भरो,
चतुर दिश मानस्थंभ कहा, हरि पूजि जिनेश्वर हर्ष लहा।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय चंदनं नि०

शुभ जीरक श्याम अखंड लियो, परछालित थारहि हेम कियो। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अक्षतान् नि०

बर बेल चमेलि जुही नवरी, कमलादिक लै भरु थाल भरी। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय पुष्पं नि०

खुरमा खुझला वर मोदक जू, रसपूर क्षुधागद खोदक जू। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय नैवेद्यम् नि०

कदलीसुत औ धृत के दियरा, जिन होत उदोत तमा विदरा। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय दीपं नि०

वर धूप लई दशगंध खरी, जसु गंध लहे अलि नृत्य करी। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय धूपं नि०

सहकार अनार छुहार खरे, नरियार बदामहि थार भरे। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय फलं नि०

जल आदिक आठहु द्रव्य लिया, इकठी भरिथारहि अर्घ किया। च०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमान श्री सीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अर्घं नि०

जयमाला

(छंद त्रिभंगी)

दिश चारि सुहावन अतिही पावन मन हुलसावन जान कही,
लखि मानस्थंभा होत अचम्भा तहं जिनबिंबा पूज चहीं;
सुरपति सुर हूजे जिन पद पूजे आनंद हूजै मोद लही,
खग नर मुनि आवै पूज रचावैं जिनगुण गावैं दास तहीं। १

(पद्धरी छंद)

जै मानस्तंभ कह्यो बखान, तिन नमन करौं जुग जोरि पान;
है ताको वर्णन अति विशाल, जिहि सुनत कालिमा जात काल। २

जै पहिली गलि के बीच मांहि, दरवाजे चारि तहां बतांहि;
तहं तीन कोट कीन्हे बखान, तिनपाहि ध्वजा लहरैं महान। ३

पहिला दूजा शुभ कोट जान, सुन कोट तीसरे का बयान;
है कोट बीच में भूमि थान, तहं बने सु वन शोभायमान। ४

तिनमें पिक कोकिल रह अलाप, जिन शब्द सुनत छूटैं कलाप;
तहं लोकपाल के नगर जान, रमणिक महा शोभायमान। ५

आभ्यंतर तीजे कोट जान, तहं तीन पीठ कीन्हीं बखान;
सो त्रै कटनी युत शोभकार, वैडूर्य मणिन की कांति धार। ६

ता उपर मानस्तंभ जान है मूल मांहि चौकोर वान;
हे उपर गोलाकार रूप, दैदीप्यमान शोभित अनूप। ७

द्वै सहस पहल तामें गनाय, अरु वज्र मई नीचे बताय;
तसु मध्य फटिकमय कह्यो गाय, मणि वैडूरज सम उर्ध्व जाय। ८

है तापर कमलाकार रूप, शोभै कलशा तापर अनूप;
धुज दंड तासु उपर बताय, जा पवन लगे जगमग कराय। ९

शुभ छत्र चमर घन्टा बखान, मणिमाला माला सुभग जान;
सो मणि अनेकमय शोभधार, अैसा मानस्थंभ कह विचार। १०

प्रति मानस्थंभ की दिशन चारि, है चारि बावरी पूरि वारि;
दिश पूरव मानस्थंभ तीर, नंदा नंदोत्तर कही धीर। ११

हैं नंदवती नंदघोष जान, दिश चारहु में क्रम सों बखान;
दक्षिण दिश मानस्थंभ पास, विजया वैजयंती नाम जास। १२

कह जयंति अपराजिता जान, दिश चारहु में क्रम सों बखान;
पश्चिम मानस्थंभ चहूं ओर, अशोक सुप्रतिबुद्धाहि जोर। १३

हे कुमुदा पुंडरिका सुजान, दिश चारहुं में क्रम सों बखान;
उत्तर मानस्थंभ चहूं ओर, हृदया नंदा महनंद जोर। १४

सुप्रबुद्धा परभंकरी सुजान, दिश चारहु में क्रम सों बखान;
इमि सोरह वापी कही सार, चारहु मानस्थंभ ओर चार। १५

है नीर मांहि नीरज कुलान, मानहु निज नैना भू खुलान;
जिनराज विभव देखन अपार, बहु नैन धारि कीन्हों शिंगार। १६

तिन कमलन पर जो अलि गुंजेत, नैनांजनवत बहु शोभ देत;
मणिमय पैंडी युत शोभदाय, तहँ हंस चकव क्रीडा कराय। १७

तिन पार्श्व मांहि जुग कुंड गाय, कंचन मणिमय दीन्हों बताय;
जो पूजन श्री जिनदेव जाय, ते धोवत तिन जल लेय पाय। १८

इक वापी के संग कह्यो गाय, द्वै कुंड जडित मणि शोभदाय;
है शोभा वैभव जो महान, तिहि कौन सकैं कवि करि बखान। १९

मानस्थंभ मूलहि दिशन चार, प्रतिमा श्री जिनवर की निहार;
तिन पूज्यो सुरपति हर्षधार, करि नृत्य ताल स्वर को सम्हार। २०

सननं सननं बाजै सितार, घननं घननं ध्वनि घंट धार;
द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग, करताल तबल अरु मूहचंग। २१

छम छम छम छम नूपुर बजाय, क्षण भूमि क्षणक आकाश जाय;
जहँ नाचत मघवा आप जान, तिहि शोभा को वरणै महान। २२

इमि नृत्य गान उत्सव महान, करि पूजा किय आगे पयान;
लैपंच रतनमय रंग महान, किय मानस्थंभहि दीप्तमान। २३

जा लखतैं मानिन मान जात, जुग हाथ जोर शिर को नवात,
तासों मानस्थंभ जान नाम, सार्थक कीन्हो शोभाभिराम। २४

विस्तार मूल सूचि प्रमान, नव शत नब्बे वसु धनुष जान;
छः सहस धनुष उंचा सुजान, बारह जोजन सों लखै मान। २५

जिमि पूरवदिश को है कहाहि, तिमि दक्षिण पश्चिम उत्तराहि;
तिन कन्हईलाल सुत जोरि हाथ, भगवानदास नमै नाय माथ। २६

(धत्तानंद छंद)

मानस्थंभ माला अतिहि विशाला जे भवि निज कंठै धरई,
ते होय खुशाला लहि शिवबाला फेरि न या जगमें भ्रमई।

ॐ ह्रीं मानस्थंभ मध्ये विराजमान श्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभविराजमान

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(अडिल्ल छंद)

फिर सिवान पर चढ सुरपति तहां पेखिये,
धूलीशाल सु कोट नयन भरि देखिये,
विजै नाम दरवाजै भीतर जाय के,
मानस्थंभ जिनेश जजै हरखाय के।

(दोहा)

मानस्थंभ सु मूलमें प्रतिमा श्री भगवान;
दे प्रदक्षिणा तीन जो पूजत इन्द्र सुजान।

पूर्व दिशामें विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(अडिल्ल छंद)

मानस्थंभ अनुपम सुंदर सोहनो,
मान रहित सब होय देख मन मोहनो,
पूरव दिशको जान परमसुखदाय जू,
पूजत मन वच काय भविक सुख पाय जू।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्। (इति सन्निधिकरणम्)

(अडिल्ल)

पद्मद्रहको नीर सु उज्ज्वल लीजिये,
सनमुख ह्वै जिनराज धार शुभ दीजिये।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये,
नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर गारि कपूर मिलाईये,
श्री जिन चरण चढाय परम सुख पाईये, ...पूरव०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद किरन सम उज्ज्वल तंदुल पावने,
पुंज धरों जिन आगे परम मन भावने।
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये,
नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमलकेतु की बेल चमेली वास है,
श्री जिन के पद पूजि काम सब नाश है....पूरव०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूंझा फैनी सुहाल सुमोदक साजही,
पूजि जिनेश्वर पाय क्षुधा दुख भाजहि....पूरव०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनिमय दीप अनूप सु जगमग जोत है,
मोह अंध भयो नाश जय जय होत है....पूरव०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंध सु लेकर जिनपद सेईये,
अष्ट कर्म हो नाश सु अग्निमें खेईये....पूरव०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग सुपारी पिस्ता लावही,
प्रभु चरण चढाय सु शिव फल पावही....पूरव०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन इत्यादि सु अर्घ संजोय के,
जिन पूजत भविलाल सु हरखित होय के,
पूरव मानस्थंभ जिनेश्वर पूजिये,
नाचत गाय बजाय सु हरखित हूजिये।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पूर्वदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशामां विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(अडिल्ल)

मानस्थंभ अनूपम सुंदर देखिये,
सुर नर मुनि मन हरत सुनैननि पेखिये,
समवसरणमें दक्षिण दिशा सुहावनी,
पूजत भविजन लोग सु जिन गुन गावनौ।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (इति सन्निधिकरणम्)

(सुंदरी छंद)

सरस उज्ज्वल नीर सु लीजिये,
धार श्री जिन चरण सु दीजिये,
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये,
मानस्थंभ जिनालय पूजिये।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय सारस केशरि गारिये,
पूजि जिमवदाह निवारिये ....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद जोत समान सु अक्षतं,
पुंज देत अक्षैनिधि गछतं ....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल कुंद गुलाब सु लाइये,
मदन नाशि सु हर्ष उपाइये....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदक व्यंजन साजही,
क्षुधा रोग सु देखत भाजही ....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मणिमय जगमग जोत है,
मोह नाश सु जय जय होत है,
त्रिविध जोग सु दक्षिण हूजिये,
मानस्थंभ जिनालय पूजिये।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कुमकुम गंध मिलावही,
खेय कर्म सु दुष्ट जरावही....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सु उत्तम सुंदर लै धरो,
जिन सु पूजत शिव नारी वरौ....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धरत अर्घ सु भव्य बनाय के,
सफल करत सु नर भव पाय के....त्रिविध०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये दक्षिणदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशामां विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(सुंदरी छंद)

परम पावन सुंदर देखिये,
सरस सुंदरता कर पेखिये,
लसत मानस्थंभ सुहावनो,
दिश सु पश्चिममें मन भावनो।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । (इति सन्निधिकरणम्)

(सोरठा)

उज्ज्वल नीर सु आनि रतन कटोरी में धरो,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर जान जन पूजत भवदुख हरो,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल चंद समान पुंज सु जिन आगे धरों,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी आन देखत काम सु थरहरौ,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत भांति पकवान क्षुधा रोग देखत डरों,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनिमय दीप प्रमान मोह देख आपु हि डरौ,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग सु जान खेवत आठ कर्म जरैं,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल सुखदाय पूज जिनेश्वर शिव वरौ,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरव सुआन अर्घ चढाय सु जग तरों,
मानस्तंभ महान पश्चिम दिश पूजा करों।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये पश्चिमदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिशामां विराजमान श्री सीमंधर भगवानकी पूजा

(दोहा)

श्रीजिनमानस्थंभ को पूजत मन वच काय,
उत्तर दिशा सुहावनी जय जय जय जिनराय।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । (इति सन्निधिकरणम्)

(जोगीरासा)

कंचन झारी उज्ज्वल जल ले श्रीजिन चरण चढाई,
भाव सहित श्रीजिन पूज जनम जनम सुख पाऊं,
मानस्थंभ सोहनो सुंदर उत्तर दिशा सुहावे,
पूजत हरष होत भवि जीवन सुर शिव लक्ष्मी पावे।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

कुमकुम केशर सरस सुवासी खासी लेकर धारो,
भव आताप विनाशन कारन श्रीजिन पद पर वारो;....मान०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल उनहार सु तंदुल क्रान्त चंदकी धारै,
पुंज करो जिनवर पद आगे आछे पद विस्तारौ;....मान०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतुकी बेल चमेली भंवर गुंजारे जापै,
पूजत श्रीजिन चरन मनोहर काम न आवै तापै;
मानस्थंभ सोहनो सुंदर उत्तर दिशा सुहावे,
पूजत हरष होत भवि जीवन सुर शिव लक्ष्मी पावै।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फैनी घेवर तुरत सुधीके लाडू गुंझा लावे,
क्षुधारोग निरवारन कारन श्रीजिन चरन चढावै; ....मान०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनिमय दीप अमोलक ले करि कनक रकेबी धरिये,
मोह अंध के नाशन कारन जगमग जोत उजारे; ....मान०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप सुगंध समूह अनूपम खेय अग्निमें डालो,
अष्ट कर्म ये दुष्ट भयानक इनको तुरतई जालो; ....मान०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग लाईची सुंदर पिस्ता जाति घनेरा,
पूजि जिनेश्वर शिवफल पइये सुरगादिक सुख केरा; ....मान०

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

आठ दर्व ले अर्घ संजोयो पूजो श्रीजिन भाई,
भवसागरतें पार उतारो जै जै जै जिनराई;
मानस्तंभ सोहनो सुंदर उत्तर दिशा सुहावे,
पूजत हरष होत भवि जीवन सुर शिव लक्ष्मी पावे।

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये उत्तरदिशायां विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(दोहा)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत;
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अन्त। १

(छंद पद्धडी)

जय जय सीमंधर जिन गुन महान,
तुम पदको मैं नित धरों ध्यान;
जय गरभ जनम तप ज्ञानजुक्त,
वर आत्म सुमंगल शर्म भुक्त। २

जय चिदानन्द आनन्दकन्द,
गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमन्द;
तुम जीवनिके विनु हेत मित्त,
तुम ही हो जगमें जिन पवित्त। ३

तुम समवसरणमें तत्त्वसार,
उपदेश दियो है अति उदार;
ताकों जे भवि निजहेत चित्त,
धारें ते पावै मोच्छवित्त। ४

मैं तुम मुख देखत आज पर्म,
पायो निज आतमरूप धर्म;

मोकों अब भौभयतें निकार,
निरभयपद दीजे परम सार। ५

तुम सम मेरो जगमें न कोय,
तुमहीतैं सब विधि काज होय;
तुम दयाधुरंधर धीर वीर,
मेटी जगजनकी सकल पीर। ६

तुम नीतनिपुन विन रागदोष,
शिवमग दरसावतु हो अदोष;
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव,
जगजीव लहैं शिव-दिव-सुराव। ७

तातैं मैं तुमरी शरण आय,
यह अरज करतु हों शीश नाय;
भवबाधा मेरी मेट मेट,
शिवरतियसों करि भेट भेट। ८

जंजाल जगतको चूर चूर,
आनंद अनूपम पूर पूर;
मति देर करो सुनि अरज अेव,
हे दीनदयाल जिनेश देव। ९

मोंको शरना नहिं और ठौर,
यह निहश्चै जानों सुगुन–मोर;
वृंदावन वंदत प्रीति लाय,
सब विघन मेट हे धरमराय। १०

(छंद धत्तानंद)

जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं, श्रीजिनधर्मं उपदेशा,
तुम दयाधुरंधर विनतपुरंदर, कर उरमंदर परवेशा। ११

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(सवैया इकतीसा)

सीमंधर आदि जिन राजत विदेहमांही,
पांचसै धनुष वपु धारे भगवंत हैं;
कोटि पूर्व आयु जान अनंत ज्ञान दर्शवान,
सुख है अनंत जाके वीरज अनंत हैं।

सिंहासन आसन पै आप श्री विराजमान,
खिरैं तिहुं काल वाणी सुने सब संत हैं;
अब हैं वरतमान ध्यावें नित इन्द्र आन,
मैं हूं बंदूं बीस जिन शिव तिय कंत हैं। १

(पद्धरी छंद)

जय परनिमित्त व्यवहार त्याग,
पायो निज शुद्धस्वरूप भाग;
जय जगपालन विन जगतदेव,
जय दयाभाव विन शांतिमेव। २

परसुख दुखकरण कुरीतिटार,
परसुख दुख कारण शक्तिधार;
फुनिफुनि नवनव नित जन्मरीत,
बिन सर्वलोक थापी पुनीत। ३

जय लीलारासविलास नाश,
स्वाभाविक निजपद रमणवास;
शयनासन आदि क्रियाकलाप,
तज सुखी सदा शिवरूप आप। ४

बिन कामदाह नहीं नार भोग,
निरद्वन्द निजानंद मगन योग;
वरमाल आदि शृंगार रूप,
बिन शुद्ध निरंजन पद अनूप। ५

जय धर्म मर्म वन हन कुठार,
परकाश पुंज चिद्रूप सार;
उपकरण हरण दव सलिलधार,
स्वैशक्ति प्रभावउ पय अपार। ६

नभसीम नहीं अरु होतहोउ,
नहीं कालअंत लहो अंतसोउ;
पर तुम गुणरास अनंतभाग,
अक्षयविधि राजत अवधि त्याग। ७

आनंद जलधि धारा प्रवाह,
विज्ञानसुरी मुखद्रह अथाह;
निज शांति सुधारस परम खान,
समभाव बीज उत्पत्ति थान। ८

निज आत्मलीन विकलप विनाश,
शुद्धोपयोग परिणतिप्रकाश;
दृगज्ञान असाधारण स्वभाव,
स्पर्श आदि परगुण अभाव। ९

निज गुणपर्यय समुदाय स्वामि,
पायो अखंड पद परम धाम;
अव्यय अबाध पद स्वयं सिद्ध,
उपलब्धि रूप धर्मी प्रसिद्ध। १०

अेकाग्ररूप चिंता निरोध,
जे ध्यावें पावें स्वयं बोध;

गुण मात्र संत अनुराग रूप,
यह भाव देहु तुम पद अनूप। ११

ॐ ह्रीँ मानस्तंभमध्ये विराजमानश्रीसीमंधरजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री निर्वाणक्षेत्रपूजा

(सोरठा)

परमपूज्य चौवीस, जिहं जिहं थानक शिव गये;
सिद्धभूमि निशदीश, मनवचतन पूजा करौं।

ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।–अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं,–अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल कनक झारीमें भरौं,
संसार पार उतार स्वामी जोर कर विनती करौं।
सम्मेद गढ गिरनार चंपा पावापुरी कैलाशकों,
पूजौं सदा चौवीस जिन निर्वाणभूमि निवासकों।

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

केशर कपूर सुगंध चंदन सलिल शीतल विस्तरौं,
भवतापको संताप मेटो, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं०

मोती समान अखंड तंदुल, अमल आनंद धरि तरौं,
औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोर कर विनती करौं।
सम्मेद गढ गिरनार चंपा पावापुरी कैलाशकों,
पूजौं सदा चौवीस जिन निर्वाणभूमि निवासकों।

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं,
दुःखधाम काम विनाश मेरो, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं,
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं०

दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिर सेती नहि डरौं,
संशय विमोह विभरम तमहर, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो मोहांधकारविनाशाय दीपं०

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौं,
सब करमपुंज जलाय दीज्यौ, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं०

बहु फल मंगाय चढाय उत्तम, चार गतिसो निरवरौं,
निहचै मुक्ति फल देहु मोकौं, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं,
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं। सम्मेद०

ॐ ह्रीँ श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रसम्मेदशिखरआदिभ्य: अर्घं निर्व० स्वाहा।

जयमाला

(सोरठा)

श्री चौवीस जिनेश, गिरि कैलासादिक नमों;
तीरथ महा प्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं।

(चौपाई)

नमों ऋषभ कैलास पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं;
वासुपूज्य चंपापुर वंदौ, सन्मति पावापुर अभिनंदौं।

वंदौं अजित अजित पद दाता, वंदौं संभव भवदुःख घाता;
वंदौं अभिनंदन गणनायक, वंदौं सुमति सुमतिके दायक।

वंदौं पद्म मुक्तिपद्माकर, वंदौं सुपास आशपासाहर;
वंदौं चंद्रप्रभ प्रभुचंदा, वंदौं सुविधि सुविधिनिधि कंदा।

वंदौं शीतल अघतपशीतल, वंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल;
वंदौं विमल विमल उपयोगी, वंदौं अनंत अनंत सुखभोगी।

वंदौं धर्म धर्म विस्तारा, वंदौं शांति शांति मन धारा;
वंदौं कुंथु कुंथु रखवालं, वंदौं अर अरिहंत गुणमालं।

वंदौं मल्लि काममल्लचूरन, वंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन;
वंदौं नमि जिन नमित सुरासुर, वंदौं पास पास भ्रम जगहर।

बीसों सिद्धभूमि जा उपर, शिखर सम्मेद महागिर भूपर;
अेक बार वंदै जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहि होई।

नरपति नृप सुर शक्र कहावे, तिहुं जग–भोग भोगि शिव पावे;
विघन–विनाशन मंगळकारी, गुणविलास वंदौं भवतारी।

(धत्ता)

जो तीरथ जावै पाप मिटावे, ध्यावै गावै भक्ति करै;
ताको जस कहिये संपत्ति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखरआदिभ्यः महार्घं नि०

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

श्री जिनवाणी-सरस्वतीपूजा

(दोहा)

जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जडरीति;
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवच प्रीति।

ॐ ह्रीँ श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनी! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ! ठः ठः स्थापनम्,–अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

छीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा,
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हितचंगा;
तीर्थंकर की धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई,
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई।

ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं नि०

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया, रंग भरी;
शारदपद वंदों, मन अभिनंदों, पापनिकंदो, दाह हरी। तीर्थं०

ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चंदनं नि०

सुखदास कमोदं, धारकमोदं अति अनुमोदं, चंदसमं;
बहु भक्ति बढाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं। तीर्थं०

ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षतान् नि०

बहु फूल सुवासं, विमलप्रकाशं, आनंदरासं, लाय धरे;
मम काम मिटायो, शील बढायो, सुख उपजायो, दोष हरे। तीर्थं०

ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पुष्पं नि०

पकवान बनाया, बहु धृत लाया, सब विध भाया, मिष्ट महा,
पूजुं थुति गाऊं, प्रीति बढाऊं, क्षुधा नशाऊं, हर्ष लहा। तीर्थं०

ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

करी दीपक जोतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं, तुमहिं चढै;
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भासक, ज्ञान बढै।
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई,
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई।
ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं नि०

शुभ गंध दशों कर, पावकमें धर, धूप मनोहर, खेवत हैं;
सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवत हैं। तीर्थं०
ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं नि०

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं,
मनवांछित दाता मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हैं। तीर्थं०
ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं नि०

नयननसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरैं;
शुभगंधसम्हारा, वसन निहारा, तुम–तन–धारा, ज्ञान करैं। तीर्थं०
ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं नि०

जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत, दीप धूप अति, फल लावें;
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं। तीर्थं०
ॐ ह्रीँ श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं नि०

जयमाला

(सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल;
नमौं भक्ति उर धार, ज्ञान करै जडता हरै।

(भुजंगप्रयात)

जिनादेशजाता जिनेन्द्रा विख्याता, विशुद्धप्रबुद्धा नमों लोकमाता;
दुराचार दुर्नैहरा शंकरानी, नमो देवी [1]वागेश्वरी जैनवानी। १

१. वागेश्वरी (वाक्-ईश्वरी)—वचनोंमें श्रेष्ठ अर्थात् जिनवाणी।

सुधाधर्मसंसाधनी धर्मशाला, मुधाताप निर्नाशनी मेघमाला;
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। २

अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा, कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा;
चिदानन्द–भूपालकी राजधानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। ३

समाधानरूपा अनूपा अछुद्रा[१], अनेकान्तधा स्यादवादांकमुद्रा;
त्रिधा[२] सप्तधा[३] द्वादशांगी बखानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। ४

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा, श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञान शोभा;
महापावनी भावना भव्यमानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। ५

अतीता अजीता सदा निर्विकारा, विषैवाटिकाखंडिनी खड्गधारा;
पुरापापविक्षेपकर्तृकृपाणी[४], नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। ६

अगाधा अबाधा निरंघ्रा[५] निराशा, अनंता अनादीश्वरी कर्मनाशा;
निशंका निरंका चिदंका भवानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। ७

अशोकामुदेका[६] विवेका विधानी, जगज्जंतुमित्रा विचित्रावसानी[७];
समस्तावलोका निरस्तानिदानी[८], नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी। ८

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घं नि०

---

१ अछुद्रा–शुद्ध,
२ उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य त्रिपदी।
३ सप्तभंगी।
४ तरवार जेवी मोटी छरी,
५ वर्णशंकर विनानी,
६ खुशी उत्पन्न करनारी,
७ विचित्र परिणाम लावनारी,
८ निदानने दूर करनारी।

श्री शास्त्रपूजा

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम्;
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वंदे तद्गुणलब्धये।

ॐ ह्रीँ परमागमजिनसूत्रेभ्यः पुष्पांजलिं०

(द्रुतविलंबित)

उदधिक्षीरसुनीरसुनिर्मलैः, कलशकांचनपूरितशीतलैः;
परम-पावन-श्रीश्रुतपूजनैः, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः जलं नि०

मलय-चंदन-गंध-सुकुंकुमैः, विमल-श्रीघनसार-विमिश्रितैः,
सुपथ-मोक्ष-प्रकाशनमर्चितैः, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः चंदनं नि०

धवल अक्षतजोतिरखंडितैः, चतुरपुंज-अनुपममंडितैः,
विविधबीजमुपार्जितपुण्यजैः, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः अक्षतान् नि०

कमलकुंदगुलाबसुचंपकैः, ललितवेल-चमेलि-सुगंधजैः;
प्रचुरपुष्पितपुष्पमनोहरै, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः पुष्पं नि०

मधुर-आमिलत्यक्तसुव्यंजनैः वृकटघेवरखज्ञकमोदकैः,
कनकभाजनपूरितनिर्मितैः, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः नैवेद्यं नि०

विमलजोतिप्रकाशनदीपकैः, धृतवरैर्घनसारमहोज्ज्वलैः,
रवमुदारसुवादितनृत्यकैः जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः दीपं नि०

अगरचंदनधूपसुगंधजैः दहनकर्मदवानलखंडितैः,
अलितगुंजनवासमहोत्तमै, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः धूपं नि०

फलसुदाडिमआम्रसुश्रीफलैः कदलिनारंगनिंबुजद्राक्षकेः,
हरितमिष्टफलादिकसंयुतै, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः फलं नि०

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैः, चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः,
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः अर्घं नि०

जयमाला

(मालिनी छंद)

विमल विमल वाणी देवदेवेन्द्र वाणी,
हरषि हरषि गानी भव्य जीवेन प्राणी;
कुरु कुरु निज पाठे श्री समयसा सूत्रे,
भज भज निजरूपं तत्त्व तत्त्वार्थदीपं। १

(त्रोटक छंद)

घनमोह–महातम–विश्वभरं, तसु नासन भानु प्रकाशकरं;
तिरलोक उद्योतक दीपलहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। २

करुणाजलपूरित–मानसरं, दसधर्म–विभूषित–हंसवरं;
कल्पद्रुमवृक्ष–समानरुहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ३

सुरत्नत्रय–पुष्पित–पद्मदलं, शुभ–दर्शनज्ञानचरित्रनलं;
गुणतत्त्वपदारथ–पत्रवहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ४

रिपुक्रोधकषाय–विनाशकरं, समता पिमता सब जीव परं;
भवसागर–तारक–पोतवहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ५

विधि षोडसकारणभावधरं, षट्काय सुरक्षण ज्ञानवरं;
मद अष्ट–विमर्दन मानसहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ६

सुनिरूपित वस्तु विकासपदं, निज ध्यानपरायण–योदपदं;
जडचेतनभाव–विभिन्नलहं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ७

जिनभाषित सौख्य समाधिकरं, शिवमार्ग-प्रकाशन धर्मजवं;
दुरितापहरं परमोदजनं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ८

जनजाड्यहरं परमार्थबलं, परिपूर्ण भवोदधिपारकरं;
तव रूप स्वरूप सुमूर्तिधरं, प्रणमामि सदा जिनसूत्रमहं। ९

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(मालिनी छंद)

अनुपम सुखदाता भव्यजीवेन साता,
कुगतिकुमतिभानी जैनवाणी विख्याता;
सुर नर मुनिजेता ध्यान ध्यायंति तेता,
स जयति जिनसूत्रं मोक्षमार्गस्य भानुः

ॐ ह्रीँ श्रीपरमागमजिनसूत्रेपूजापरिपूर्णार्थे पुष्पांजलिं नि०

श्री जिनवाणी-जयमाला

जिनवाणी माता दर्शनकी बलिहारियां।
प्रथम देव अरिहंत मनाऊं, गणधरजीको ध्याऊं;
कुन्दकुन्द आचाराज स्वामी, नितप्रति शीश नमाऊं.....ए० १

योनि लाख चौरासी मांही, घोर महादुःख पायो;
तेरी महिमा सुनकर माता, शरण तिहारी आयो.....ए० २

जाने थारो शरणो लीनो, अष्टकरम क्षय कीनो;
जामन मरण मेटके माता, मोक्ष महाफल लीनो.....ए० ३

वार-वार मैं विनवुं माता, महर जु मो पर कीजे;
पार्श्वदास की अरज यही है, चरण शरण मोही दीजे....
ए जिनवाणी माता दर्शनकी बलिहारियां। ४

श्री जिनवाणी-स्तुति

(शिखरिणी छंद)

अकेला ही हूं मैं करम सब आये सिमटिके,
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटिक कें;
भ्रमावत है मोकों करम दुख देता जनमका,
करुं भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमनका। १

दुखी हुआ भारी भ्रमत फिरता हूं जगतमें,
सहा जाता नाहीं अकल घबरानी भ्रमनमें;
करुं क्या मा मेरी चलत वश नाही मिटनका,
करू भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमनका। २

सुनो माता मोरी अरज करता हूं दरदमें,
दुखी जानों मोकों डरप कर आयो शरनमें;

कृपा ऐसी कीजे दरद मिट जावे मरनका,
करूं भक्ति तेरी हरो दुख माता भ्रमनका। ३

पिलावे जो मोकों सुबिधकर प्याला अमृतका,
मिटावे जो मेरा सरव दुख सारा फिरनका;
परों पावां तेरे हरो दुःख सारा फिकरका,
करूं भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमनका। ४

(सवैया)

मिथ्या–तम नाशवे को ज्ञानके प्रकाशवे को,
आपा–पर भासवे को भानुसी बखानी है;
छहों द्रव्य जानवे को बंध विधि भानवे को,
स्व–पर पिछानवे को परम प्रमानी है। ५

अनुभौ बतायवे को जीवके जतायवे को,
काहू न सतायवे को भव्य उर आनी है;
जहां तहां तारवे को पारके उतारवे को,
सुख विसतारवे को येही जिनवानी है। ६

(दोहा)

यह जिनवानी की थुती, अल्पबुद्धि परमान,
हम सेवक विनती करें, दे माता मोहि ज्ञान। ७

हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों दिन रैन,
जो तेरा शरना गहै, सो पावे सुख चैन। ८

जा वानी के ज्ञान तैं, सूझे लोकालोक,
सो वानी मस्तक चढो, सदा देत हों धोक। ९

श्री गुरुपूजा

(दोहा)

चहुं गति दुःखसागर विषें, तारणतरण जिहाज;
रत्नत्रयनिधि नगन तन, धन्य महा मुनिराज।

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।–अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्;–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

शुचि नीर निरमल क्षीरदधिसम, सुगुचरण चढाईयो,
तिहुं धार तिहुं गद टारि स्वामि, अति उछाह बढाईयो;
भव भोग तन–वैराग धार, निहार शिव तप तपत हैं,
तिहुं जगतनाथ अराध साधु, सुपूज नित गुण जपत हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

करपूर चंदन सलिलसौं घिसि, सुगुरूपद पूजा करौं;
सब पाप–ताप मिटाव स्वामी, धर्म शीतल विस्तरौं। भवभोग०

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

तंदुल कमोद सुवास उज्ज्वल, सुगुरुपदतर धरत हैं;
गुणकार औगुणहार स्वामी, वंदना हम करत हैं। भवभोग०

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

शुभ फूलराश सुवास उत्तम, सुगुर पांयनि परत हौं;
निरवार मार उपाधि स्वामी, शील दिढ उर धरत हौं। भवभोग०

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

पकवान मिष्ट सलौन सुंदर, सुगुरु पांयनि प्रीतसौं;
कर क्षुधारोग विनाश स्वामी, सुथिर कीजे रीतिसौं। भवभोग०

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक उदोत सजोत जगमग, सुगुरु पद पूजौ सदा;
तमनाश ज्ञान उजास स्वामी, मोहि मोह न हो कदा।
भवभोग तन–वैराग धार, निहार शिव तप तपत हैं,
तिहुं जगतनाथ अराध साधु, सुपूज नित गुण जपत हैं।

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

बहु अगर आदि सुगंध खेऊं, सुगुरु पद पद्महिं खरे;
दुख पुंज काठ जलाय स्वामी, गुण अखय चितमें धरे। भवभोग०

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

भर थार पूंग बदाम बहुविधि सुगुरु क्रम[1] आगे धरों;
मंगल महाफल करो स्वामी, जोर कर विनती करों। भवभोग०

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल गन्ध अक्षत फूल नेवज, दीप धूप फलावली,
'द्यानत' सुगुरुपद देहु स्वामी, हमहिं तार उतावली।

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

कनक–कामिनी–विषयवश, दीसै सब संसार;
त्यागी वैरागी महा, साधु–सुगुन–भंडार। १

तीन घाटि नव कोडि सब, बंदौं शीस नवाय;
गुन तिन अट्ठाईस लों, कहूं आरती गाय। २

(वेसरी छंद)

अेक दया पालैं मुनिराजा, रागद्वेष द्वै हरनपरं,
तीनों लोक प्रगट सब देखै, चारों आराधन निकरं;

१. क्रम=पग

पंच महाव्रत दुद्धर धारैं, छहों दरव जानै सुहितं,
सात भंग वानी मन लावैं, पावैं आठ रिद्धि उचितं। ३

नवों पदारथ विधिसौं भाखं, बंध दशौं चूरन करनं,
ग्यारह शंकर जानैं मानैं, उत्तम बारह व्रत धरनं;
तेरह भेद काठिया चूरैं, चौदह गुनथानक लखियं,
महाप्रमाद पंचदश नाशैं, सोल कषाय सबै नशियं। ४

बंधादिक सत्रह सब चूरैं, ठारह जन्मन मरन मुनं,
अेक समय उनइस परीसह, बीस प्ररूपनिमें निपुणं;
भाव उदीक इकीसों जानै, बाईस अभखन त्याग करं,
अहिमिंदर तेईसों बंदैं, इन्द्र सुरग चौबीस वरं। ५

पच्चीसौं भावन नित भावैं, छब्बिस अंग उपंग पढैं,
सत्ताईसों विषय विनाशैं, अट्ठाईसों गुण सु बढै,
शीत समय सर चोपथवासी, ग्रीषम गिरिसिर जोग धरं,
वर्षा वृक्षतरैं थिर ठांडे, आठ करम हनि सिद्धि वरं। ६

(दोहा)

कहों कहां लों भेद मैं, बुध थोरी गुण भूर;
'हेमराज' सेवक हृदय भक्ति करौं भरपूर। ७

ॐ ह्रीँ श्रीआचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवपूजा

(छप्पय)

श्री कुंदकुंद आचार्यवर, करूं तास पद थापना;
मैं पूजुं मन वच काय करि, जो सुख चाहूं आपना।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदाचार्यादि मुनिराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्;–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

शुभ–तीर्थ–उद्भव–जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं,
भव–तृषा–कंद–निकंद–कारण शुद्ध–घट भरवायकैं;
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक मुनिन की पूजा करूं,
ता करें पातिक हरें सारे सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे जलं०

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं;
तसु गंध प्रसरित दिग-दिगंतर, भर कटोरी लायकैं। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे चंदनं०

अति धवल अक्षत खंड वर्जित, मिष्ट राजन भोगके;
कलधौत–थारा भरत सुंदर, चुनित शुभ उपयोगके। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अक्षतान्०

बहु-वर्ण सुवरण-सुमन आछे, अमल कमल गुलाबके;
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निजकर चावके। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे पुष्पं०

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये;
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरटके थारा लये। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे नैवेद्यं०

कलधौत–दीपक जडित नाना, भरित गोधृत–सारसों,
अतिज्वलित जगमगज्योति जाकी, तिमिरनाशनहारसों।
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे दीपं०

दीकूचक्र गंधित होत जाकर, धूप दश–अंगी कही;
सो लाय मनवचकाय शुद्ध, लगाय कर खेऊं अहीं। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे धूपं०

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं;
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे फलं०

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना; कुंदकुंद०

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जयमाला

(छंद त्रिभंगी)

वंदूं ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निज–पर–काजा करत भले,
करुणा के धारी, गगन–विहारी, दुख–अपहारी, भरम दले;
काटत जम–फंदा भविजन–वृंदा, करत अनंदा चरणनमें,
जो पूजैं ध्यावैं, मंगल गावैं, फेर न आवैं भव–वनमें।

(पद्धरी छंद)

जय कुंदकुंद मुनिराज महंत, त्रस–थावरकी रक्षा करंत,
जय मिथ्यातम–नाशक पतंग, करुणा रस–पूरित–अंग अंग।

जय श्री मुनिराज अकलंकरूप, पद–सेव करत नित अमर–भूप,
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन समान।

जय निश्चय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप–रमातनो तनमें प्रकाश;
जय विषयरोध संबोध भान, परपरणतिनाशन अचल ध्यान।

जय जयहि सर्व सुंदर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगतजाल;
जय तृष्णाहारी रमणराम, निजपरपरिणतिमें पायो विराम।

जय मुनिराज कल्याणरूप, कल्याण करत सबकौ अनूप;
जय मदनाशन जयवान देव; निरमद विचरत सब करत सेव।

जय कुंददेव लालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान;
जय कृषितकाय तप के प्रभाव, छवि–छटा उडति आनंददाय।

जय जय तिन चरणनि के प्रसाद, तीर्थ भये हैं जगमें अनूप;
जय सर्व मुनिवर कल्याणरूप, हम नमत सदा नित जोरि हस्त।

जय ग्रीष्मऋतु पर्वत मंझार, नित करत अतापन योगसार;
जय तृषा परिषह करत जेर, कहुं रंच चलत नहिं मन-सुमेर।

जय मूल अठाइस गुणन धार, तप उग्र तपत आनंदकार;
जय वर्षाऋतुमें वृक्षतीर, तहं अतिशीतल झेलत समीर।

जय शीतकाल चौपट मंझार, कई नदी सरोवर तट विचार;
जय निवसत ध्यानारूढ होय, रंचक नहि मटकत रोम कोय।

जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय;
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहित ममता निवार।

जय चोर अग्नि डाकिन पिचाश, अरु इति भीति सब नसत साच;
जय सुमरत मुक्ति लहत लोक, सुर असुर नमत पद देत धोक।

(दोहा)

नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज,
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज।

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकंपनाचार्यादि ७०० मुनिपूजा

(सलूनो पूजा)

(श्रावण सुद पूर्णिमाके दिन करनेकी पूजा)

(अडिल्ल छंद)

श्री अकंपन मुनि आदि सब सातसै,
कर विहार हस्थनापुर आये सातसै;
तहाँ भयो उपसर्ग बडौ दुःखकार जू,
शांति भावसे सहन कियौ मुनिराजजु।

मिती सु पंद्रस सावन शुक्ल प्रमानिये,
ध्यानारूढ सु तिष्ट सर्व मुनि मानिये;
हुओ उपसर्ग जु दूर धन्य घडी आज जी,
तिन प्रति शीश नवाय पूज्य मुनिराजजी।

तिनकी पूजा रचूं भाव अरु भक्ति से,
दिवस सलूनो भयो इसी यह युक्तिसे;
आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण जी,
तिष्ठ गुरु सब आय करूं पद सेव जी।

ॐ ह्रीँ श्रीअकंपनआचार्यआदि सातसौ मुनिभ्यः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।–अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्,–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा–चाल)

शीतल प्रासुक उज्ज्वल जल ले कंचन झारी लाऊं,
जन्म जरा मृत्यु नाश करनको तुम्हरे चरण चढाऊं;
श्री अकंपन गुरु आदि दे मुनि सातसैं जानो,
तिनकी पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघ हानो।

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः जलं नि०

चंदन केशर मिश्रित लेकर नीको चंदन लाऊं;
भव आताप जु दूर करनको गुरुके चरन चढाऊं।
श्री अकंपन गुरु आदि दे मुनि सातसै जानो,
तिनकी पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघ हानो।

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः चंदनं नि०

चंद किरण सम उजज्वल अक्षत भाव भक्तिसे लीने;
पुंज मनोहर श्रीगुरु सन्मुख सरधाकर जु करीने। श्री अकंपन०

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः अक्षतान् नि०

बेल चमेली श्री गुलाबके ताजे पुष्प सु लाऊं;
कामबाणके नाश करन को श्री गुरु चरण चढाऊं। श्री अकंपन०

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः पुष्पं नि०

गूंझा फैनी मोदक लाडू ताजे तुरत बनाऊं;
श्री गुरुवर के चरण चढाकर हर्ष हर्ष गुण गाऊं। श्री अकंपन०

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः नैवेद्यं नि०

धृत कपूर री उत्तम ज्योति स्वर्ण कटोरी धारूं;
श्री मुनिवर की करू आरती मोहकर्म को जारूं। श्री अकंपन०

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः दीपं नि०

धूप सुगंध सुवासित लेकर धूपायनमें खेऊं;
अष्ट करमके नाश करनको आनंदमंगल देऊं। श्री अकंपन०

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः धूपं नि०

लोंग इलायची श्रीफल पिस्ता अरु बादाम मंगाऊं;
सेव सन्तरा खट्टा मीठा श्रीगुरु चरण चढाऊं। श्री अकंपन०

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः फलं नि०

जल फल आठों दरव मिलाकर भावभक्ति से लाया,
हे गुरु हमको भवसे तारो तातैं चरण चढाया।
श्री अकंपन गुरु आदि दे मुनि सातसै जानो,
तिनकी पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघ हानो।

ॐ ह्रीँ श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

श्री अकंपन मुनि आदि सब, सप्त सैकडा जान;
तिनकी य जयमाल सुन, भाषा करूं बखान। १

(चौपाई)

जीवदया पालें गुरु स्वामी, दे धर्मोपदेश बहुनामी;
छहों कायकी रक्षा पालें, तप कर आठों कर्मको टाले। २

झूठ न रंचमात्र मुख बोलों, जो मन होय वचन सो खोलें;
महा सत्यव्रत के मुनि धारी, तिनके पायन धोक हमारी। ३

तृण जल भी अदत्त नहिं लेवें, धन कंचन सब तृण सम जोवें;
महा अचौर्यव्रत गुरु धारी, तिनके पायन धोक हमारी। ४

अठारह सहस शीलके भेदा, निर्भय धारत हो सु अखेदा;
शील महाव्रतके मुनि धारी, तिनके पायन धोक हमारी। ५

चौबीस भेद परिग्रह गाये, सर्व त्याग वनवास कहाये;
परिग्रह–त्याग महाव्रत धारी, तिनके पायन धोक हमारी। ६

(पद्धरी छंद)

सु भावत भावन बारह नित्त, विचारत धर्म सदा सु पवित्त;
जय ग्यारह अंग सु पढत पाठ, संसार भोगका त्याग सु ठाठ। ७

पंचेन्द्री दमन करैं महान, मन वचन काय कर शुद्ध ध्यान,
जय मुनिवर वंदूं शांत चित्त, संसार देह भोगन विरक्त। ८

जय मौन धार मुनि तप करंत, जय कर्म काठ सब ही जरंत;
जय आनंदकंद विधानरूप, जय ध्यावत गुरु आतमस्वरूप। ९

संसार कष्ट काटो मुनींद्र, तुम चर्ण नमः सब देव इन्द्र,
जय मुनिवर वंदूं कर्म काट, शिवनारि वरन को करत ठाठ। १०

मैं अल्प मती अज्ञान बुद्धि, प्रभु क्षमा करो जो हो अशुद्धि;
रघुवर सुत वंदत शीश नाय, श्रीगुरु के गुण गाये बनाय। ११

(धत्ता छंद)

मुनि सह गुणधारं, जग–उपकारं, कर भवपारं, सुखकारं;
कर कर्म जु नाशा, आतमशासा, सुख परकाशा, दातारं।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि सातसौ मुनिभ्यः महार्घं नि०

(दोहा)

भक्तिभाव मन लायकर, पूजे वांचे जोय;
बाबुलाल सु स्वर्ग पद, निश्चय ताको होय।

॥ इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री विष्णुकुमार महामुनिपूजा

(श्रावण सुद पूर्णिमाना दिवसे करवानी पूजा)

(अडिल्ल छंद)

विष्णुकुमार महामुनिको ऋद्धि भई,
नाम विक्रिया तास सकल आनंद ठई;
श्री मुनि आये हस्थनापुर के बीचमें,
मुनि बचाये रक्षा कर वन बीचमें।
तहां भयो आनंद सर्व जीवनको घनो,
जिमि चिंतामणि रत्न रंक पायो मनो;
सब पुर जयकार शब्द उचरत भये,
मुनिको देय अहार हरष करते भये।

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।–अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।–अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणं।

(दशविशुद्धि भावना भाय–राग)

गंगाजल सम उज्ज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर,
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय;
सप्त सैकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान,
दयानिधि होय, जय जगबंधु दयानिधि होय।

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०

मलियागिर चंदन लै सार, पूजों श्री गुरुवर निधिधार;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वेत अखंडित अक्षत लाय, पूजों श्री मुनिवरके पाय;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

कमल केतकी पुष्प चढाय, मेटो कामबाण दुखदाय;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय।
सप्त सैकडा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान,
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय।

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू फैनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरण चढाय;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धृत कपूरका दीपक जोय, मोह तिमिर सब जावै खोय;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुधूप बनाय, जारै अष्ट करम दुखदाय;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोंग इलायची श्रीफलसार, पूजौं श्री मुनि सुख दातार;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों दरव संजोय, श्री मुनिवर पद पूजौं दोय;
दयानिधि होय जय जगबंधु दयानिधि होय। सप्त सैकडा०

ॐ ह्रीँ श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सावन सुदी सु पूर्णिमा, मुनिरक्षा दिन जान;
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(भुजंगप्रयात)

श्री विष्णु देवा करूं चर्णसेवा, हरो जगकी बाधा सुनो टेर देवा;
गजपुर पधारे महासुखकारी, धरो रूप वामन सु मनमें विचारी।

गये पास बलिके हुआ वो प्रसन्ना, जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना,
मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै, दयी तीन ततक्षिण सु नहि ढील थापै।

करी विक्रिया मुनि सु काया बनाई, जगह सारी लेली सु डग दोके मांही,
धरी तीसरी डग बली पीठ मांगी, सु मांगी क्षमा तब बलिने बनाई।

जलकी सुवृष्टि करी सुखकारी, सर्व अग्नि क्षणमें भई भस्म सारी;
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से, भई जय जयकार सर्व नग्र ही से।

(चोपाई)

फिर राजाके हुकम प्रमाण, रक्षाबंधन बंधी सुजान;
मुनिवर घर घर किये विहार, श्रावक जन तिन दियो अहार।

जा घर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सु लोय;
स्थापन कर सो दियो अहार, फिर सब भोजन कियो सम्हार।

तबसे नाम सलूनो सार, जैनधर्मका है त्योहार;
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म बढे सु अतीव।

धर्म पदारथ जगमें सार, धर्म बिना झूठो संसार;
सावन सुदी जब पूनम होय, यह दो पूजा कीजो लोय।

सब भाईयन को दो समझाय, रक्षाबंधन कथा सुनाय;
मुनिका निजघर करो अहार, मुनि समान तिन देवो अहार।

सबके रक्षा बंधन बांध, जैन मुनिकी रक्षा साध;
इस विधिसे मानों त्योहार, नाम सलूनो है संसार।

(धत्ता)

मुनि दीनदयाला, सब दुख टाला, आनंदमाला, सुखकारी;
रघुसुत नित वंदे, आनंद कंदै, सुकखकरवास दे, हितकारी।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमहामुनिभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

विष्णुकुमार मुनि चरणको, जो पूजै धर प्रीत;
रघुसुत पावे स्वर्गपद, पुण्य बढे नवनीत।

।। इत्याशीर्वाद : परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

यज्ञोपवीत (जनोई) बदलवानो मंत्र

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तितीर्थंकराय स्वाहा अहं रत्नत्रयस्वरूप यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु।

अथवा

अतिनिर्मलमुक्ताफलललितं यज्ञोपवीतमतिपूतम्;
रत्नत्रयमिति मत्वा करोमि,कलुषापहरणमाभरणम्

।। इति यज्ञोपवीतसंधारणम् ।।

सप्त-ऋषिपूजा

(छप्पय)

प्रथम नाथ श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर,
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुंदर चौथो वर।
पंचम श्री जयवान विनयलालस षष्टम भनि,
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि।
ये सातों चारणऋद्धिधर, करूं तास पद थापना,
मैं पूजुं मनवचकाय करि, जो सुख चाहूं आपना।

ॐ ह्रीँ चारणऋद्धिधरश्रीसप्तर्षीश्वरा ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् संन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

(गीता छंद)

शुभतीर्थ उद्भव जल अनूपम मिष्ट सीतल लायकैं,
भवतृषा-कंदनिकंदकारण, शुद्ध घट भरवायकैं;
मन्वादि चारणऋद्धिधारक मुनिनकी पूजा करूं;
ता करे पातिक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीमनु, स्वरमनु, निचय, सर्वसुंदर, जयवान, विनयलालस, जयमित्र सप्तऋषिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंड कलदीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं;
तस गंध प्रसरित दिगदिंगतर, भर कटोरी लायकैं। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अति धवल अक्षत खंड वर्जित मिष्ट राजन भोगके;
कलधौत थारा भरत सुंदर चुनित शुभ उपयोगके। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहुवर्ण सुवरण सुमन आछे, अमल कमल गुलाबके,
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके,
मन्वादि चारणऋद्धिधारक मुनिनकी पूजा करूं,
ता करे पातिक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये;
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु पुरटके थारा लये। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलधौत दीपक जडित नाना भरित गोधृतसार सों;
अति ज्वलित जगमगज्योति जाकी तिमिरनाशनहार सों। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश अंगी कही;
सो लाय मनवचकाय शुद्ध, लगाय कर खेऊं सही। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं;
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना;
फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना। मन्वादि०

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद त्रिभंगी)

वंदूं ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा, करत भले,
करुणाके धारी, गगनविहारी, दुखअपहारी भरम दले;

काटत जमफंदा, भविजन वृंदा, करत अनंदा चरणनमें,
जो पूजैं ध्यावैं मंगल गावैं, फेर न आवैं भववनमें। १

(पद्धरी छंद)

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावरकी रक्षा करंत;
जय मिथ्यातमनाशक पतंग, करुणारसपूरित अंग अंग। २

जय श्रीस्वर मनु अकलंकरूप, पदसेव करत नित अमर भूप;
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचनसमान। ३

जय निचय सप्त तत्त्वार्थभास, तप–रमातनों तनमें प्रकाश;
जय विषयरोध संबोध भान, परणतिके नाशन अचल ध्यान। ४

जय जयहिं सर्वसुंदर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगतजाल;
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणतिमें पायो विराम। ५

जय आनंदघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबकौ अनूप;
जय मदनाशन जयवान देव, निरमद विरचित सब करत सेव। ६

जय जयहिं विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान;
जय कृशितकाय तपके प्रभाव, छवि छटा उडति आनंददाय। ७

जयमित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र;
जग चंद्रवदन राजीव–नैन, कबहूं विकथा बोलत न बैन। ८

जय सातौं मुनिवर अेकसंग, नित गगन–गमन करते अभंग;
जय आये मथुरापुर मँझार, तहं मरी रोगको अति प्रचार। ९

जय जय तिन चरणनिके प्रसाद, सब मरी देवकृत भई बाद;
जय लोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड हस्त। १०

जय ग्रीषमऋतु परवत मँझार, नित करत अतापन योगसार;
जय तृषापरीषह करत जेर, कहुं चलत नहिं मनसुमेर। ११

जय मूल अठाईस गुणनधार, तप उग्र तपत आनंदकार;
जय वर्षाऋतुमें वृक्षतीर, तहं अति शीतल झेलत समीर। १२

जय शीतकाल चौपट मँझार, कै नदी सरोवर तट विचार;
जय निवसत ध्यानारूढ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय। १३

जय मृतकासन, वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय;
जय आसन नानाभांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार। १४

जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्रपौत्र कुलवृद्धि होय;
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्र तनो दुख होय छार। १५

जय चोर अग्निडाकिन पिशाच, अरु इति भीति सब नसत सांच;
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नमत पद देत धोक। १६

(रोला छंद)

ये सातों मुनिराज महातप लछमी धारी,
परम पूज्य पद धरैं, सकल जगके हितकारी;
जो मन वच तन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावे,
सो जन 'मनरंगलाल' अष्ट रिद्धिनकौं पावै। १७

(दोहा)

नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज;
पंच परावर्तननिते, निरवारो ऋषिराज। १८

ॐ ह्रीँ श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमावणी पूजा

(क्षमावणीना दिवसे–भादरवा वद अेकमना दिवसे करवानी पूजा)

(छप्पय)

अंग क्षमा जिन–धर्मतनो दृढ–मूल वखानो;
सम्यक् रतन संभाल हृदयमें निश्चय जानो,
तज मिथ्या–विष–मूल और चित निर्मल ठानो,
जिनधर्मीसों प्रीत करो सब पातक भानो;
रत्नत्रय गह भविकजन जिन–आज्ञा सम चालिये,
निश्चय कर आराधना करम–रासको जालिये।

ॐ ह्रीँ सम्यक्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ सम्यक्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ सम्यक्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

नीर सुगंध सुहावनो, पद्म–द्रहको लाय,
जन्म–रोग निरवारिये, सम्यक् रतन लहाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चंदन लीजिये, संग करपूर घसाय,
अलि पंकति आवत घनी, वास सुगंध सहाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि अखंडित लीजिये, कंचन–थाल भराय,
जिनपद पूजों भावसौं, अक्षत पदको पाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगंध गुलाब,
श्रीजिन–चरण–सरोजकुं, पूज हर्ष चित–चाव;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर धृत सुरभीतना, व्यंजन षट्रस स्वाद,
जिनके निकट चढायकर, हिरदे धरि आह्लाद;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हाटकमय दीपक रचो, वाति कपूर सुधार,
शोधित धृत कर पूजिये, मोह–तिमिर निरवार;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर करपूर हो, अथवा दशविधि जान,
जिन–चरणन ढिग खेईये, अष्ट–कर्मकी हान;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंब अनार ही, नारिकेल ले दाख,
अग्र धरो जिनपदतने, मोक्ष होय जिन भाख;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जल फव आदि मिलायके, अशघ करो हरषाय,
दुःख–जलांजलि दीजिये, श्रीजिन होय सहाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

उनतिस अंगकी आरती, सुनो भविक चित लाय;
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर–भव पाय।

(चौपाई)

जैनधर्ममें शंक न आनै, सो निःशंकति गुण चित ठानै;
जप तप कर फल वांछै नाहीं, निःकांक्षित गुण हो जिस मांहीं।

परको देख गिलानी न आनै, सो तीजा सम्यक् गुण ठानै;
आन देवको रंच न मानै, सो निर्मूढता गुण पहिचानै।

परको औगुण देख जु ढांकै, सो उपगूहन श्रीजिन भाखै;
जैनधर्मतैं डिगता देखै, थापे बहुरि स्थिति कर लेखै।

जिन-धरमीसों प्रीत निवहिये, गउ–वच्छवत वच्छल कहिये;
ज्यों त्यों करि उद्योत बढावे, सो प्रभावना अंग कहावे।

अष्ट अंग यह पाले जोई, सम्यग्दृष्टि कहीअे सोई;
अब गुण आठ ज्ञानके कहिये, भाखे श्री जिन मनमें गहिये।

व्यंजन अक्षर सहित पढीजै, व्यंजन–व्यंजित अंग कहीजै;
अर्थ सहित शुद्ध शब्द उचारै, दूजा अर्थ समग्रह धारै।

तदुभव तीजा अंग लखीजै, अक्षर-अर्थ सहित जु पढीजै;
चौथा कालाध्ययन विचारै, काल समय लखि सुमरण धारै।

पंचम अंग उपधान बतावै, पाठसहित तब बहु फल पावै;
षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजै, वाणी बहुत विनय सु पढीजै।

जापै पढै न लोपै जाई, अंग सप्तम गुरुवाद कहाई;
गुरुकी बहुत विनय जु करीजै, सो अष्टम अंग धर सुख लीजै।

यह आठों अंग–ज्ञान पढावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै;
अब आगे चारित्र सुनीजे, तेरह–विधि धर शिव–सुख लीजे।

छहों कायकी रक्षा कर हैं, सोई अहिंसा व्रत चित धर हैं;
हित मित सत्य वचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल लहिये।

मन वच काय न चोरी करिये, सोई अचौर्य–व्रत चित धरिये,
मनमथ–भय रंच न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य–व्रत ठानै।

परिग्रह देख न मूर्छित होय, पंच महाव्रत–धारक सोई;
महाव्रत ये पांचो खरे हैं, सब तीर्थंकर ईनको करे हैं।

मनमें विकलप रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई;
वचन अलीक रंच नहि भाखैं, वचनगुप्ति सो मुनिवर राखैं।

कायोत्सर्ग परीषह सहि है, ता मुनि कायगुप्ति जिन कहि है;
पंच समिति अब सुनिये भाई, अर्थ सहित भाखे जिनराई।

हाथ चार जब भूमि निहारे, तब मुनि ईर्यापथ पद धारें;
मिष्ट वचन मुख बोलें सोई, भाषा–समिति तास मुनि होई।

भोजन छ्यालिस दूषण टारें, सो मुनि अेषण शुद्ध विचारें;
देखकर पोथी लें अरु धर हैं,सो आदान–निक्षेपण वर हैं।

मल–मूत्र अेकांत जु डारें, प्रतिष्ठापन समिति संभारें;
यह सब अंग उनतीस कहे हैं, जिन भाखे गणधरने गहे हैं।

आठ–आठ–तेरहविधि जानों, दर्शन–ज्ञान–चारित्र सुठानों;
तातें शिवपुर पहुंचो जाई, रत्नत्रयकी यह विधि भाई।

रत्नत्रय पूरण जब होई, क्षमा क्षमा करियो सब कोई;
चैत माघ भादों त्रय वारा, क्षमा क्षमा हम उरमें धारा।

(दोहा)

यह क्षमावणी आरती, पढै सुनै जो कोय;
कहे 'मल्ल' सरधा करो, मुक्ति–श्री–फल होय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

दोष न गहियो कोय, गुण गह पढिये भावसौं;
भूलचूक जो होय, अर्थ विचारि जु शोधियो।

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

સહજ ચિદાનંદ

सोलहकारणपूजा

(अडिल्ल छंद)

सोलह कारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरुपै ले गये;
पूजा करि निज धन्य लख्यौ बहु चावसौं,
हम हू षोडशकारन भावें भावसौं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ! ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम्।

कंचनझारी निरमल नीर, पूजों जिनवर गुनगम्बीर,
परमगुरु हो; जय जय नाथ परमगुरु हो।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवरके पाय;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं०

तंदुल धवल सुगन्ध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुं जग भूप,
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यःअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार, पूजौं जिनवर जगआधार;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वसंनाय पुष्पं०

सद नेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्रीजिनवर गुणखान;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

दीपकज्योति तिमिर छयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं०

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्रीजिनवर आगे महकेय;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं०

श्रीफल आदि बहुत फलसार, पूजौं जिन वांछितदातार;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जल फल आठों दरब चढाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय;
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो। दरश०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

जयमाला

षोडशकारण गुण करैं, हरै चतुरगतिवास;
पापपुण्य सब नाशकैं, ज्ञानभान परकास। १

(चौपाई १६ मात्रा)

दरशविशुद्ध धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई;
विनय महा धारै जो प्रानी, शिववनिताकी सखी बखानी। २

शील सदा दिढ जो नर पालैं, सो औरनकी आपद टालैं,
ज्ञानाभ्यास करैं मनमांही, ताकें मोहमहातम नाहीं। ३

जो संवेगभाव विसतारे, सुरगमुक्तिपद आप निहारे;
दान गेय मन हरष विसेखै, इह भव जस परभव सुख देखै। ४

जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे करमशिखर गुरु भाषा;
साधुसमाधि सदा मन लावे, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावे। ५

निशदिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भवनीर तिरैया;
जो अरहंतभगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै। ६

जो आचारज भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है;
बहुश्रुतवन्त भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई। ७

प्रवचनभगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्ददाता;
षट्आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै। ८

धरमप्रभाव करै जो ज्ञानी, तिन शिवमारग रीति पिछानी;
वत्सल अंग सजा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै। ९

(दोहा)

अेही सोलहभावना, सहित धरै व्रत जोय,
देव–इन्द्र–नरवंद्यपद, 'द्यानत' शिवपद होय। १०

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी,
भवआताप निवार, दसलच्छन पूजूं सदा।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूजा

(सोरठा)

पीडैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करैं;
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा।

(चौपाई मिश्रित गीता छंद)

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस परभव सुखदाई,
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो।

कहि है अयानो वस्तु छीनै, बांध मार बहुविधि करै,
धरतैं निकारैं तन विदारैं, वैर जो न तहाँ धरैं;
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा,
अतिक्रोधअगनि बुझाय प्राणी, साम्यजलसै सीयरा।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीचगति जगतमें,
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।

उत्तम मार्दव गुन मनमाना, मान करनको कौन ठिकाना,
वस्यो निगोदमांहितैं आया, दमरी रूंकन भाग बिकाया।

रूंकन बिकाया भागवशतैं, देव इकइन्द्री भया,
उत्तम मुआ चांडाल हुआ, भूप कीडोंमें गया;
जीतव्य–जोबन–धन–गुमान, कहा करे जल बुदबुदा,
करि विनय बहुगुन बडे जनकी, ज्ञानका पावे उदा।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजे कोय, चोरनके पुर ना बसै;
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा।

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी;
मनमें हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये।

करिये सरल तिहुं जोग अपने, देख निरमल आरसी,
मुख करै जैसा लखै तैसा कपटप्रीति अंगारसी;
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि, करमबंध विशेषता,
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहि देखता।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, परनिन्दा अरु झूठ तज;
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी।

उत्तम सत्यवरत पा लीजे, परविश्वासघात नहीं कीजे;
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।

पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये,
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांच गुन लख लीजिये;
ऊंचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरमका भूपति भया,
वच झूठसेती नरक पहुंचा, सुरगमें नारद गया।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसौं,
शौच सदा निरदोष, धरम बडो संसारमें।

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पापको बाप बखाना;
आशा–पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।

प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञानध्यानप्रभावतैं,
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये, अशुचि दोष सुभावतैं;
उपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विध घट शुचि कहै;
बहु देह मैली सुगुन थैली, शौचगुन साधु लहै।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो;
संयम–रतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं।

उत्तम संयम गहु मन मेरे, भव भवके भाजे अघ तेरे;
सुरग नरक पशुगति में नाहीं, आलस हरन करन सुख ठाहीं।

ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो,
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो;
जिस बिना नहि जिनराज सीझे, तू रुल्यो जगकीचमें,
इक धरी मत विसरो नित, आयु जममुख बीचमें।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय, करमशिखरको वज्र है,
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम।

उत्तम तप सबमाहिं बखाना, करमशिखरको वज्र समाना,
वस्यो अनादि निगोद मझारा, भू–विकलत्रय पशुतन धारा।

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता,
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगता।

अति महादुर्लभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै,
नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरैं।

ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघको दीजिये,
धन विजुली उनहार, नरभव लाहो लीजिये।

उत्तम त्याग कह्यो जगसारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा,
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै।

दोनों संभारै कूपजल सम, दरब घरमें परनिया,
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।
धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोधकों,
बिन दान श्रावक साध दोनों, लहैं नाहीं बोधकों।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करें मुनिराजजी;
तिसनाभाव उछेद, घटती जान घटाईये।

उत्तम आकिंचन गुण जानौ, परिग्रहचिंता दुख ही मानौ;
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटीकी दुख भालै।

भालै न समता सुख कभी नर, विना मुनिमुद्रा धरें,
धनि नगनपर तन नगन ठांडे, सुर असुर पायनि परें।
घरमांहि तिसना जो घटावै, रुचि नहीं संसारसौं;
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसौं।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलबाजि नौ राख, ब्रह्मभाव अंतर लखो;
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नरभव सदा।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानो;
सहैं बाणवर्षा बहु सूरे, टिकैंन नैन बान लखि कूरे।

कूरे तियाके अशुचि तनमें, कामरोगी रति करैं,
बहु मृतक सडहिं मसानमांही, काक ज्यों चोंचै भरें;
संसारमें विषवेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा,
'द्यानत' धरम दश पैडि चढिकैं, शिवमहलमें पग धरा।

ॐ ह्रीँ उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २

उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३

उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५

उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनपूजा

(दोहा)

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्त जीव सोपान;
जिह विन ज्ञानचरित अफल, सम्यकदर्श प्रधान।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करै,
सम्यक्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप घ्रानसुखकार, रोग विधन जडता हरै। सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिव फल करै,
सम्यक्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु, सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीत व्योहार;
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुण सार। १

सम्यक्दरसन रतन गहीजे, जिनवचमें संदेह न कीजे,
इह भव विभवचाह दुखदानी; परभव भोग चहै मत प्रानी।

प्रानी गिलान करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये,
परदोष ढकिये धरम डिगतेको सुथिर कर हरखिये।
चउसंघ को वात्सल्य कीजे, धरमकी परभावना,
गुण आठसों गुन आठ लहिकैं, इहां फेर न आवना। २

ॐ ह्रीँ अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान पूजा

(दोहा)

पंच भेद जाके प्रगट, ज्ञेयप्रकाशन भान;
मोह–तपन–हर–चन्द्रमा; सोई सम्यक्ज्ञान।

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करै,
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ अंग पूजौं सदा।

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा; सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जडता हरै। सम्य०

ॐ ह्रीँ अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिव फल करै,
सम्यक्‌ज्ञान विचार, आठ अंग पूजौं सदा।

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु, सम्य०

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपटन व्योहार;
संशय विभ्रम मोह विन, अष्टअंग गुनकार। १

(चोपाई मिश्रित गीता छंद)

सम्यक्‌ज्ञानरतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया;
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानौ, अच्छर अरथ उभय संग जानौ।

जानौ सुकाल पटन जिनागम, नाम गुरु न छिपाईअे,
तप रीति गहि बहुमान देकैं, विनयगुन चित लाईअे;
अे आठ भेद करम उछेदक, ज्ञानदर्पन देखना,
इस ज्ञानहीसों भरत सीझा, और सब पट पेखना। २

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्चारित्रपूजा

(दोहा)

विषयरोग औषध महा, दवकषाय जलधार;
तीर्थंकर जाको धरें, सम्यक्चारित सार।

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करै,
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै; सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै; सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा; सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप घ्रानसुखकार, रोग विधन जडता हरै। सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिव फल करै,
सम्यक्चारित धार, तेरहविध पूजौं सदा।

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु, सम्य०

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार;
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार। १

(चोपाई मिश्रित छंद)

सम्यक्चारित रतन संभालो, पांच पाप तजिकै व्रत पालो;
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजे, नरभव सफल करहु तन छीजै।

छीजे सदा तनको जतन यह, अेक संजम पालिये,
बहु रुल्यो नरक–निगोद माहीं, कषाय विषयनि टालिये;
शुभ करमजोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है,
'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है। २

ॐ ह्रीँ त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयपूजा

(दोहा)

चहुं–गति–फणिविषहरन–मणि, दुखपावक जलधार;
शिवसुखसुधासरोवरी, सम्यकत्रयी निहार।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो;
जनमरोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदन केसर गारि, परिमल महा सुगंधमय; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदासके; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

महकैं फूल अपार, अलि गुंजें ज्यों थुति करें; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि०

दीप रतनमय सार, ज्योत प्रकाशै जगतमें; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूरकी; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल;
जनमरोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

आठ दरब निरधार, उत्तमसौं उत्तम लियो; जनमरोग०

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यक् दरशन ज्ञान व्रत, ईन बिन मुक्ति न होय;
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव–लोय। १

(चोपाई १६ मात्रा)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबंध कट जावैं;
तासौं शिवतिय प्रीति बढावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै। २

ताकों चहुं गतिके दुख नाहीं, सो न परै भवसागरमाहीं;
जनम जरा मृतु दोष मिटावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै। ३

सोई दशलच्छनको साधै, सो सोलहकारण आराधै;
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै। ४

सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीनलोकके सुख विलसेई;
सो रागादिक भाव वहावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै। ५

सोई लोकालोक निहारै, परमानंददशा विसतारै;
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै। ६

(दोहा)

अेक स्वरूपप्रकाश, निज वचन कह्यो नहिं जाय;
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' कों सुखदाय। ७

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दरसन ज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी;
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजौं व्रतसहित। ८

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंचपरमेष्ठी पूजा

(स्थापना; चाल-पंच मंगलकी)

पंच परमगुरु सब सुखदाई, पूजो भविजन हरष बढ़ाई,
तिनके पद सुर हरि नित्य सेबैं, पूरव अघ-वन कों धो दैवैं;
दैवें जु वहनी सकल बनकूं, और कहो कहा गाइये,
ताके सुफल भव छांडि भवि, जन मुकति रमणी पाइये ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्माण: पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्रावतरावतरत संवौषट् आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माण: पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माण: पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

(चाल–जोगीरासेकी)

झारी कनक सुघाट मनोहर निर्मल नीर भराई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्य: जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।

चंदन बावन निर्मल पानी घसिकर लेकर आई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्य: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ।

अक्षत नख सिख सुगंध सुभ नैननको सुख दाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व० ।

सुरद्रुम पहुप सुगंध मनोहर, मोहत भृंग-चित भाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ।

षट् रस जुत नैवेद्य पवित्तर, क्षुधा नासन लाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।

रतन दीप धरि थाल आरती हरषित चित ले भाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ।

दसधा धूप मिलाय अगिन मधि खेऊं अति उमगाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ।

श्रीफल लौंग सुपारी खारक सुर-सिव-फलदा भाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व० ।

जल चंदन अक्षत पुह चरु ले दीप धूप फल दाई,
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अडिल्ल छंद)

अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु जी,
येही पंच भव तार भव्य अघ मादजी;

पूजत सुर नर खगा मुक्ति-फल कारनै,
तातें मैं भी जजों पाप हठ टारने ॥१०॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हंतादिपंचपरमेष्ठिभ्य: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(कवित्त छन्द)

जनमत दस दस केवल उपजे, चौदह देव करै थुति लाय,
अनंत चतुष्टय प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुन छयालीस सुथाय।
इनको धरै देव सो मोकों भौ भौ सरन होहु सुखदाय,
सुर नर हरि पूजत अरहंत पद अपनो आतम सुफल कराय।

समंत णाण दंसण वीरज गुण सुहमत गुण अवगहन सुजान,
अगुरुलघु सप्तम गुण जानौ अष्टम अव्याबाध बखान।
यह गुण आठ धरै बिन मूरति चेतन अंक सदा सुखदान,
ऐसे सिद्ध लोक सिर राजै तिन पद ''टेक'' नमो उर आन।

दस लक्षन सुभ धर्म तनें हैं द्वादस भेद कहे तप सार,
षट् आवसि सुभ गुपति तीन लखि पांच भेद जानौ आचार।
इह सुभ छत्तीसों गुण धारे आचारज सब जिय हितकार,
तिनके पद मन वचन काय सुध पूजों भवि सब 'टेक' निवार।

एकादस अंग ज्ञान धरै उर तिनकी रहस सकल पहिचानै,
चौदह पूरव लही रिद्धि तिन करुना करि उपदेश बखानै।
आप पढै शिष्यन पढ़वावै समता भाव राग पद भानै,
ऐसे गुणको धरै उपाध्याय तिन पद 'टेक' भजै सिव जानै।

पंच महाव्रत समिति पांच गिन इन्द्री पांच करैं वसि धीर,
षट् आवस्य करैं नित ही मुनि ता करि पाप हरै वर वीर।
भूमिसयन आदिक गुण सात जु और मिलावो इनके तीर,
अष्टाविंशति होय सकल मिलि इन धर साधु करै सिव सीर।

येही पंच गुरु परमेष्ठी येही सकल हितू सुखकार,
येही मंगल दायक जगमैं येही करै भवोदधि पार।
येही पांचों पंचम गति मय ये ही पंच मुक्ति करतार,
इनके पदको भव भव सरनों मागो उर की ''टेक'' निवार।

(दोहा)

अरहंत सिध आचारके, पाँय उपाध्याय पाय।
साधु सहित पांचों चरन, पूजों ''टेक'' लगाय॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतपंचमी पूजा

(त्रिभंगी)

नयद्वयरूपम्, भगवन वीरम्, भावसु सुत्तम्, उपदेशम्,
विपुलाचलशैलम्, गौतम रचियम्, बारह अंगम् मुहूर्तम्,
वह ज्ञान परंपर, सूरिधरसेनम्, चंद्रगुफासुं गिरिनगरम्,
पुष्पदंत व भूतम् षट्खंडागम्, जिनपालित हेतु रचियम्।
ज्येष्ठ सु पंचम्, बहुहर्षितम्, चतुर्विधसंघम् श्रुतपूजम्,
अध्यात्म सुशास्त्रम् अरु सिद्धातम्, चतुःअनुयोगम्, स्थापकरम्,
भगवती मातम्, श्रुत शणगारम्, गुरुजी सहितं षुष्पार्घम्,
बहु भक्ति रचियम्, गुणगण गावम्, शिवसुखधामम् पूज रचम्।

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणी माताः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणी माताः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणी माताः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल मुनियानंद)

लाय शुभ नीर निरमल, घनो सुखकरा, कनकझारी विषे मेलि निज करधरा,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी, वीरवाणी प्रति, विनय सह ज्ञान-आराधना खूब रुचि,
हम भी स्वर्णधाममें, पूज जलतें करें, जन्म-मृत दुःख हरें, वीर का'न वाणीसे।

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बावनो गंध घसि, नीर ले निरमला, सुभग वासन धरयो ठान मन अति भला,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व०

अक्ष उज्ज्वल भला, खंड बिन लाईयो, हरष धर मन वचन काय गुण गाईयो,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

फूल शुभ रंग गंध, सहित शोभा मई, गूंथ कर माल सुं आपने कर लई,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व०

विविध नैवेद्य शुभ रसमयी हितकरा, कनकथाली विषें लाय मैं दुखहरा,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

दीप मणिमयी तम, नाशकर जानिये, थाल भर कनककी भक्ति कर आनिये,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

धूप दशविध तनी, गंधकर लाईयो, अगनि महिं खेवने चित उमगाईयो,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी, वीरवाणी प्रति, विनय सह ज्ञान-आराधना खूब रुचि,
हम भी स्वर्णधाममें, पूज धूपतें करें, जन्म-मृत दुःख हरें, वीर का’न वाणीसे।

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

श्रीफल लोंग बादाम, खारक सही, आदि इनको भले और फल ले सभी,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

विनय बहु धारके, वस्त्र उत्तम लिये, रत्न-स्वर्ण रजतके विविध शणगारजी,
श्रुत रु ज्ञान प्रति, विनय आराधना, करतीं इस भांतिसे, भगवती मातजी,
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जल गंधाक्षता, पुष्प चरु दीप ले, धूप फल अर्घ कर धर्म बुद्धि लीजिये,
श्रुतपञ्चमी दिना, वीरवाणी अहा, षट् खंड आगम, रचना हुई महा;
गुरु अरु मातकी०

ॐ ह्रीं श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जयमाला

(भुजंगप्रयात)

प्रभु वीर वाणी, बहुरूपधारम्, सिद्धान्त-अध्यात्म मुख्य आधारम्,
उपदेश है चार अनुयोगरूपम्, पूजा तेरी माता बहु सुखदायम्।

(तोटक)

भगवन् श्री वीर की ॐ ध्वनि, इक चित्त हो गौतम विप्र सुनी,
वाणी सुन द्वादश अंग रचे, भवी जीवोंको जो खूब रुचे। १
मूल ग्रंथ रचयिता वीर भये, उत्तर कर्ता गौतमजी भये,
फिर [1]लोहार्य जम्बूस्वामी हुए, पंच बारह अंग के धारी हुए। २

१. लोहार्य=सुधर्मास्वामीका दूसरा नाम।

२७

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

कई अंग अंशके धारी हुए, कई पूर्व, अंशके धारी हुए,
ऐसे गुणधर भगवंत हुए, ज्ञानप्रवाद पूर्वांश ज्ञाता हुए। ३
तिन कषाय पाहुड सूत्र रचा, टीका जयधवला ग्रंथ बना,
कुछ वर्ष बाद धरसेन भए, सूरि चन्द्रगुफा गिरिनगर बसे। ४
अष्टांग निमित्त के धारि मुनि, अरु प्रवचन वत्सल धारि मुनि,
पंच-वर्षीय प्रतिक्रम प्रक्रम बना, महिमा नगरी मुनि आये घना। ५
अंग श्रुत विच्छेदके भयसे भरे, धरसेन मुनि संदेश भेजे,
अरहदबली भाव को समझ गये, भेजे समरथ मुनि गुफा विषे। ६
स्वप्न-युगल वृषभ सूरि देखे, 'श्रुतदेवता जयवंत' बोल उठे,
मुनि युगल गुफामें पहुँच गये, तिन विनय सहित प्रदक्षिणा करे। ७
मुनि द्वय की कसौटी सूरि करे, द्वय मंत्र साधना हेतु दिये,
मुनि मंत्र शुद्धि में सफल हुए, सूरि धरसेन प्रसन्न हुए। ८
अग्रायणी पूर्वांश शुरू किया, शुभ तिथि वार नक्षत्र विषे,
शुक्ल एकाषाढ को पूर्ण भई, धरसेन देशना धन्य हुई। ९
भूतदेवोंने इक मुनि पूज किया, गुरुने भूतबलि तब नाम दिया,
दन्त पंक्ति समान की देवोंने, पुष्पदंत नाम दिया श्री गुरुने। १०
गुरु आज्ञा को शिरोधार्य किया, तत्क्षण द्वय मुनि प्रस्थान किया,
अंकलेश्वर चातुरमास हुआ, भवि जीवका जीवन धन्य हुआ। ११
दोनों मुनि दक्षिण देश गये, जिनपालित 'पुष्प'सुं दीक्षा ग्रहे,
सत् प्ररूपणा पुष्पदंत रचा, यों षट्खंडागम शुरू हुआ। १२
वह जिनपालितजी मुनिवरसे, भेजा भूतबलिजी सूरि पै,
सूत्र देख बलिजी भांप लिया, पुष्पदंतका आयु अल्प रहा। १३
फिर ग्रंथ शेष भूतबलि रचा, यों षट्खण्डागम् पूर्ण भया,
वह ग्रंथ पूर्णतः प्राप्त हुआ, पुष्पदंत सूरि तब हर्ष हुआ। १४
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमीके दिना, चतुर्विध संघ उत्सव कीना,
श्रुतपंचमी दिन विख्यात भया, ज्ञानाराधनका पर्व भया। १५

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

टीका परथम मुनि कुंद रची, परिकर्म नामसे ख्यात भयी,
फिर टीका श्री वीरसेन रची, कर्म अष्ट नष्टके हेतु रची। १६
वह टीका श्री गुरुदेव पढे, सर्वज्ञ विरहको भूल गये,
भगवती माता श्रुत शृंगारे, गुरु कहान महिमा खूब करे। १७
आज रचा गया षट्खंडागम, जिससे श्रुत पर्व मनाये हम,
श्रुत मर्म सिखायें श्री गुरुवर, जयवंत रहो श्रुत अरु गुरुवर। १८

ॐ ह्रीँ श्रुतपंचमी दिने जिनवाणीमाताभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्व०

(दोहा)

श्री धरसेनाचार्यने, कीनी कृपा महान,
भूतबलि पुष्पदन्तको, दिया श्रुतामृत ज्ञान,
षट्खण्डागम् रच दिया, युगल श्री मुनिराज,
गुरु-माता अरु हम सभी, पूजें श्री श्रुतराज।

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा

(राग-सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान सुमंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
'तू परमातमा है', ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, इति सन्निधिकरणम्।

उज्ज्वल जल शीतल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व०

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व०

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्व०

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यम् निर्व०

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्व०

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व०

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः फलं०।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अर्घं निर्व०

जयमाला

(राग–जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है ।।

स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा ।।

सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं॥
विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं॥
परमागम मंदिर अद्भूत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें॥
पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं॥
स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया॥
अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु–वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली॥
प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे॥
जंबूद्वीप रचना न्यारी है, शाश्वत जिन प्रतिमा प्यारी है।
गजदंत, कुलाचल, मेरुगिरि, विजयार्ध, वक्षार सुसुंदर है॥
विदेही सीमंधर युगमंधर, बाहु-सुबाहु जिन सोहे हैं।
भरतैरावतके शाश्वत जिन, सुवर्णपुरीमें पधारे हैं॥
दिव्यमूर्ति बाहुबली जिनकी, अति सुंदर अचरजकारी है।
गुरुकृपा मेघामृत बरसे, गाजत जय जय जयकारी है॥
प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है॥
जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान

श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु–नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसी मंगलमाल यह, जिन-गुरु-मात प्रताप,
भव-भव पाऊँ साथ तुम, स्वर्ग-मुक्ति दो आप।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जंबूद्वीप सम्बन्धित समस्त जिन चैत्यालयस्थ जिनबिंब-पूजा

(छंद हरिगीतिका)

द्वीप जंबू विषै जिनथल, कृत्रिम अकृत्रिम है सही।
तिन मांहि 'जिन'के बिंब विलसहि, तिष्ठ है पुनकी मही।
ते सकल प्रतिमा भक्ति करी, मैं जजों मन-वच-कायतैं।
वसु द्रव्यतैं तिन पांय पूजो अंग आठ नमायके।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब ! अत्रावतरावतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंब ! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल वीरजिनचंद)

निरमल नीर सुहावनोजी, कनकझारी धरि लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, जनम जरा मिट जाय।।
भाई जिन पूजों मन वच लाय।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन घसु शुभ भावनोजी, निरमल नीर मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, जगत-ताप मिट जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत नख शिख सुध सही जी, उज्ज्वल सुगंध सुलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अक्षयपद करतार।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

फूल सुगंध सुहावनेजी, अलि गुञ्जत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, कामभाव नशि जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

षट् रस जुत नैवेद्य ले जी, मन वच काय लगाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, क्षुधारोग मिट जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

रतनमई दीपक कियोजी, कनक थाल धर लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, मोह तिमिर नशि जाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्य: मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप भेलि दश विधि करीजी, परिमल जुत शुभ लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्य: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल लौंग बिदाम लेजी, और भले फल लाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अष्ट करम क्षय थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जल चन्दनको आदि देजी, वसु द्रव अर्घ मिलाय।
जंबूद्वीप तने सकलजी, जिनथल पूजों भाय।।भाई जिन०।।
'जिन' पूजे सुख थल मिलेजी, अजर अमर तन थाय।।भाई जिन०।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्०

(छंद जोगीरासा)

जंबू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेहा।
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा।।
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही।
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्य: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी॥
षोडश वनके थान चार गजदंत हैं।
ह्यां इक इक जिनभवन जजौं ते संत हैं॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंध्यष्टसप्ततिअकृत्रिमजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छंद वेसरी)

जंबू द्वीप विषै जिन गेहा, तिनकी माल सुनो करि नेहा।
सुनते ज्ञान होय सुख पावै, पुण्य बधै अद्भुत जस ल्यावै॥१॥

(छंद पद्धरि)

जिनथान दीप जंबू मँझार, लख मेरु सुदर्शन तीर्थ सार।
तिस ऊपर जिनके थान जोय, सो पूजों मन वच कर्म धोय॥२॥

गजदंतों पे जिनगेह जान, बिन किये रतनमय शुभ निधान।
तहां रतनबिंब अति शुभ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥३॥

तरु शाल्मली जंबू सुजान, तिनपे जिनमंदिर अचल मान।
तिन मांहि रतनमय बिंब जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥४॥

षट जानि कुलाचल गिरि सु सार, तिनपे जिनमंदिर पाप जार।
तिनपे जिनमंदिर सुभग सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥५॥

भरत ऐरावत [1]बैताड़ जानि, तिनपै जिनमंदिर अचल मानि।
प्रतिमा तिनमें मणिरूप जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥६॥

पूरब विदेह वैताड़ मांहि, जिनमंदिर मणिमय अचल टांहिं।
है अचल बिंब जिन माँहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥७॥

पश्चिम विदेह वैताड़ थाय, जिनगेह तिनोंके शीश ठांय।
जिनबिंब तिनोंमें जान सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥८॥

वक्षार शिखरके शीश पांय, पूरब विदेहके मांहि थाय।
तिनमें जिनमंदिर तीर्थ सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥९॥

पश्चिम विदेह वक्षार जान, तिन शीश गेह जिनके सु मान।
प्रतिमा मणिमय तिन माँहि सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१०॥

जे नंदी परवत माँहि थाय, जिनगेह और विन किये पाय।
तिनमें प्रतिमा जिन शीश सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥११॥

जे किये थान कैलास माँहि, मंदिर तिनके अति सुभग थाहि।
तहां प्रतिमा विनय स्वरूप सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१२॥

भरत ऐरावत माँहि पाय, भवि करवाये जिनथान थाय।
तहां विनय सहित जिनबिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१३॥

जे होय विदेह सु पूर्व माँहि, जिनभवन भव्य कृति सुभग ठाँहि।
तिन मांहि विनयजुत बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१४॥

जो पछिम विदेह मँझार जानि, चैत्यालय भवि कृति जोग मानि।
जुत विनय तिनोंमें बिंब सोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१५॥

जे तीर्थस्थान सुकृत निधान, है सिद्धक्षेत्र महिमा सुथान।
तहां सुर नर पूजे दीन होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१६॥

जे अतिशय क्षेत्र सु पूज्य थाय, ते विनय सहित जिनबिंब पाय।
पूजैतैं सुकृत लाभ होय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१७॥

इत्यादिक जम्बू दीप माँहि, जिनथान बिंब जिन विनय ठाँहि।
सिद्धक्षेत्र अतिशयक्षेत्र जोय, ते पूजों मन वच हर्ष होय॥१८॥

(दोहा)

क्षेतर जंबूद्वीपके, हो संबंध जिनथान।
तिन पूजै सुख थल मिले, ते पूजों हठ टान॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधि समस्त जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति तीर्थ स्वर्णमें छाया हर्ष अपार,
मेरु जम्बूद्वीपकी रचना मंगलकार।
गुरुवर कहान प्रतापसे, श्री जिनवृंद महान,
मंगल मंगल सर्वदा, मंगलमय गुरुराज।
सुधाशीष बरसा रही, भगवती चंपा मात,
मुक्तिपथ गामी बनूँ, मुझ अंतर अभिलाष॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

धातकीखण्डे विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर

भावी मुख्य गणधर पूजा

(गीता)

गणधर बिना खिरती नहीं, है वाणी श्री जिनदेवकी,
बनते हैं वे गणनाथ, जो दीक्षा लहे उन जिन थकी,
जो बीज पदके श्रवणसे, द्वादशांगकी रचना करें,
उन प्रमुख गणधर भावीको, हम पुष्पसे थापन करें।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र अवतर अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेव ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा)

निर्मल जलसे कनकझारी भर गुरुके चरण चढाऊँ,
चरण पूजतें गणधरजीके भव समुद्र तिर जाऊँ,

समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

अगर चंदन भर भर लाऊँ, शीतल गंध सुरंग भर्यो,
जग उत्तम की करी वंदना आकुल दाह अपार हर्यो।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

श्वेत अखंडित अक्षत लेकर, धरूँ पुँज तुम चरणोंमें,
अक्षयपदकी प्राप्ति हेतु मैं, ही आयो प्रभु तुम चरणोंमें।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

जुही केतकी पुष्प माल ले, चरणा तुमरे मैं ध्याऊँ,
धारत चरण लहे समतासर, मदन शांत मैं कर पाऊँ।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सरस मिष्ट पकवान सुधासम, ले आयो भर-भर थारी,
परम तृप्तिके हेतु चढाऊँ, क्षुधावेदनी क्षय कारी।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

शिखा दीपकी जगमग ज्योति, घन अंधियार मिटाती है,
मोह महातम दूर करनको, ज्ञायक ज्योति जगाती है।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

अगुरु धूपको खेवें, नभमें दशोदिशामें धुम्र उड़े,
दुरित कर्म जल जाएँ हमारे, अष्ट करमकी धूम उडै।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल दाडिम केला पिकवल्लभ खारिक मिष्ट अति लायो,
मोक्ष परमपद पावन कारण अति उत्साह सहित आयो।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

अष्ट द्रव्यका थाल सजाया, साथमें है भक्ति भारी,
गुरु अर्चना नित-नित करते, वांछित फल सुखकारी।
समवसरणमें भावी प्रभुकी ॐध्वनि सुखकारी,
ता सुन द्वादश अंग रचें तिन गणधर धोक हमारी।

ॐ ह्रीँ धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

जयमाला

(दोहा)

पूर्व विदेही धातुकी, भावीके भगवंत,
उनके गणधर प्रमुख जो, उन्हें नम्हें नित संत।
बारह सभाके नाथ हो द्वादश अंग करतार,
तिनको पूजूँ भक्तिसे भवदधि पार उतार।

(राग : श्री नेमि जिनेश्वरदेव)

नमूं नमूं गणनाथ, सर्व हितंकर हो,
वंदन क्रोड़ो वार, सर्व शुभंकर हो।
श्रीभावी तीर्थेशके, तुम गणधर हो,
धर्म धुरंधर नाथ, ध्वनि तुम झेलत हो।
त्रय गुप्ति, समिति पांच, मदसे रहित ही हो,
सातों भयसे मुक्त, महाव्रतधारी हो।
चौसठ ऋद्धि निधान, आनंद कंदहि हो,
दीप्त तप्त ऋद्धि धार, महा द्युतिवंतहि हो।
अक्षीण महानस ऋद्धि, के प्रभु धारक हो,
अमृतस्रावी ऋद्धि, धारी मुनिवर हो।
अस्ति नास्ति पूर्व-ज्ञानके धारी हो,
चार ज्ञानके धारी, अचरजकारी हो।
धातकी विदेही नाथ, के सुत प्यारे हो,
प्रमुख हो गणनाथ, भवदधि तारक हो।
राजकुंवरके मित्र, थे तुम पूरवमें,
श्रेष्ठीपुत्र देवराज, आए भारतमें।
गुरु का'नका अवतार, भवीके भाग्य अहो,
गाती प्रभु गुणगान, चंपा मात अहो।
धातुकी विदेही देव, के गणनाथ विभो,
मेटो मेरे दुःख, भवदधि तार प्रभो।

चक्षु हुए मुझ धन्य, तुझ दर्शन पायो,
धन्य अहो! अवतार, तुम ढ़िग मैं आयो।
धन्य मेरी रसना, तुम गुणगान करुँ,
शिवपद मागूं नाथ, अंतर आश धरूं।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डस्य विदेहक्षेत्रस्य भावीतीर्थंकरस्य पादभ्रमर भावी मुख्य गणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं नि०

भावी गणधरदेवकी, भक्ति करें मन लाय,
रिद्धि सिद्धि सब प्राप्त हो, शीघ्र मोक्षसुख पाय।

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री भावि तीर्थंकरनो अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लइ दीप धूप फल अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू–भरते जयवंत शिव मंगलकारी।
(—स्वर्णे वर्ते जयवंत शिव मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

(राग–दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

अक्षय तृतीया पर्व पर
ऋषभ मुनीद्र पूजा

(हरिगीत)

षट्मासका करि योग पूर्ण, महामुनि श्री ऋषभजी।
मुनिमार्गके निर्वहन हित, किया नगर गाँव विहारजी।।
षट्मास कीना विहार पर आहारकी विधि ना मिली।
श्रेयांसनृपके घर अहो! आहार विधि भई भली।।
'अहो दानम्,' 'महा दानम्' गूँजी नभमें यह ध्वनि।
अक्षय तृतीया पर्व पर, तिष्ठो अहो! श्री महामुनि।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(गीतिका)

लाय निरमल नीर सुखदा, क्षीरोदधि सम जानिये।
कनकझारी हरषजुत, ले आपने कर आनिये।।
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

घसी नीर निरमल मांहि चन्दन, घ्राणको सुखदायजी।
फिर कनक थाली आप कर ले, भक्ति बहु उर लायजी।।

२८

श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय संसारतापविनाशनाय चंदनं०

शुभ लेय अक्षत जान मुक्ता, फल समा उज्ज्वल सही।
विन खंड नख शिख शुद्ध जानो, गंध जुत तंदुल कही।।
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

फूल सुर तरु गंध दायक वरण नाना जानिये।
तिस गंध वसि हो, भ्रमर आवै, पहुप ऐसे आनिये।।
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

नैवेद्य षट रस पूर वांछित, मिष्ट रस सुखदा सही।
ले तुरत कीनों आप कर ले, महा उज्ज्वल शुभ मही।।
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

दीप तमहर रतन कारी घटपटा परकाशियो।
धर थाल कंचन आप करले, भक्ति बहु मुख भाषियो।।
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको।।

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

अगर आदि मिलाय दश विधि, धूप मन मानी धरों।
बिन धूम अगनि माह धर करि, भाव निरमल निज करों।।

श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको॥

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

लाय श्रीफल लोंग पिस्ता, सुभग पुंगी फल सही।
खारक बिदाम सु आदि दे के, फल लिये बहु सुख मही॥
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको॥

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

नीर, चन्दन, सुभग अक्षत, फूल, चरु, दीपक सही।
वर धूप, दसधा, फूल मनोहर मौलि के वसु अर्घ ही॥
जस आदि द्रव्य मिलाय आगे, अरघ सुखदा लायजी।
ले आपने कर आरती शुभ, जिन तने गुण गायजी॥
श्री हस्तिनापुर ग्राममें आहार रिषभ मुनिनको।
श्री स्वर्णपुर के भक्तजन, अनुमोदते इस दानको॥

ॐ ह्रीँ श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव मुनिवराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जयमाला

(दोहा)

अक्षय तृतीया पर्व पर, नमूं ऋषभ मुनिराज।
परम दिगम्बर जिनदशा, धारण की शिवकाज॥

(पद्धरी)

जय जय श्री ऋषभ महा मुनीश, तव चरणोंमें नित नमूं शीश;
जय मोक्षमार्ग पर चलनहार, जय कर्म शत्रु क्षय करनहार॥१॥

जय पंच महाव्रत धरनहार, जय शिवरमणीके वरणहार;
है आप स्वयंभू स्वयंबुद्ध, अविरुद्ध शुद्ध अति प्रतिबुद्ध॥२॥

षट् मास योग निश्चल धराय, प्रचूर स्वसंवेदन लहाय;
निःतरंग स्वरूपे प्रतप आप, करें कर्म निर्जरा बहु अमाप।।३।।

षट् मास बाद करने अहार, किया नगर गाँव मुनि विहार;
आहार विधि जाने न कोय, षट् मास गये इस विधि सोय।।४।।

दिखे श्रेयांस नृपको स्वप्न सात, फल मुनिदर्शन जाना प्रभात;
अति हर्षाये श्रेयांस राज, अहो! धन्य भाग्य! धन्य दिन आज।।५।।

आये हस्तिनापुर मुनिराज, 'श्रेयांस', 'सोम' गये दर्श काज;
दर्शनसे जातिस्मृतिज्ञान, श्रेयांस नृपको हुआ भान।।६।।

पूरव भवमें था दिया दान, आहार विधि वे गये जान;
दाता के सातों गुण अशेष, श्रद्धादि धारे श्री नरेश।।७।।

मुनि ऋषभजीको सन्मान, नवधा भक्ति से दिया दान;
इक्षुरसका आहार शुद्ध, दिया महामुनिको हो प्रबुद्ध।।८।।

तब पंचाश्चर्य हुए महान, धनि धन्य हुए जन नगर जान;
दुन्दुभि बाजोंका हुआ शोर, वायु सुगंधित चहूँ ओर।।९।।

देवन पुष्पवृष्टि की अपार, हुई रत्नवृष्टि जिसका न पार;
'अहो धन्य पात्र' 'अहो धन्य दान', धनि 'धन्य अहो दाता' सुजान।।१०।।

'अहो दान' 'महा दानम्' महान सुरगण करते हैं भक्ति गान;
यह दान तीर्थ की शुरूआत, हस्तिनापुर से हुई भ्रात।।११।।

अक्षयतृतीया का महापर्व, श्री स्वर्णपुरीके मुमुक्षु जन;
गुरु-मातकृपासे भक्त सभी, अर्चन भक्ति कर हर्ष मान।।१२।।

आराध्य-आराधक भेद जाय, प्रगटे इस भाँति आत्मज्ञान;
पाते हैं वे फिर दिव्यज्ञान, अनुक्रमसे पाते है निर्वाण।।१३।।

ॐ ह्रीं श्री अक्षयतृतीया पर्वे श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घावली

सामान्य अर्घ

उदक–चन्दन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।

ॐ ह्रीं.............................. अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

*

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

(गीता छंद)

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वीस विहरमान तीर्थंकरका अर्घ

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनिहूतै, थुति पूरी न करी है;
'द्यानत' सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, (स्वामी) वीस विदेह मझार,
श्री जिनराज हो, भव तारणतरण जिहाज।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चोवीस जिनेन्द्रका अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों;
चौवीसौं श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणक्षेत्रका अर्घ

जल गंध अक्षत फूल चरु फल दीप धूपायन धरौं,
'द्यानत' करो निरभय जगततैं, जोर कर विनती करौं;
सम्मेदगढ गिरनार चंपा पावापुरी कैलासको,
पूजों सदा चौवीस जिन निर्वाणभूमि निवासको।

ॐ ह्रीं ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति तीर्थंकरका अर्घ

(नंदीश्वर श्री जिनधाम-राग)

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसु कर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं;
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन-वच-तन धरि प्रेम, पांचो बल यति।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरस्वामी पंच बालयति-तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवानका अर्घ

हममें आठों ही दोष, जजहुं अर्घ ले सिद्धजी;
दीज्यो वसु गुण मोहि, कर जोड्यां 'द्यानत' खडो।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठीका अर्घ

मनमांही भक्ति अनादि नमि हों देव अरहंत को सही,
श्री सिद्ध पूजूं अष्य गुणमय सूरि गुण छत्तीस ही;
अंग–पूर्वधारी जजौं उपाध्याय साधु गुण अठबीस जी,
ये पंच गुरु निरग्रंथ सुमंगलदायी जगदीशजी।

ॐ ह्रीँ श्री अरहंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधु–पंचपरमेष्ठिभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन चौबीसीका अर्घ

(गीता छंद)

जल गंध तंदुल सुमन चरुवर दीप धूप फलौध ही,
करि अर्घ द्रव्य अनर्घ लेके नसैं भव–अघ औघ ही;
भरत जंबूद्वीपके त्रय काल त्रय चौवीस का,
पूजुं सदा मन–वचन–तनतैं, दाय पद जगदीश का।

ॐ ह्रीँ जंबूद्वीप–भरतक्षेत्रोत्पन्न–अतीत–वर्तमान–अनागत–चतुर्विंशतिजिनेभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस चौबीसीका अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है,
पूजतें पाप छीना है, भानमल जोर कीना है;
दीप अढाई सरस राजे, क्षेत्र दश ता विषैं छाजे,
सात शत बीस जिन राजै, पूजतां पाप सब भाजै।

ॐ ह्रीँ पांच भरत पांच ऐरावत दशक्षेत्रसंबंधी तीस चौवीसीके सातसौ बीस जिनेन्द्रेभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरुका अर्घ

आठ दरवमय अर्घ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;
पांचों मेरु अस्सी जिनधाम, सब प्रतिमाको करूं प्रणाम,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीपका अर्घ

यह अर्घ कियो निज हेत, तुमको अरपत हों,
'द्यानत' कीनों शिवखेत, भूमि समरपत हों;
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों,
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयका अर्घ

जंबू द्वीप सु खेतर मांही, है जेते जिनगेहा,
रतनमई वो बिगर किये हैं, ध्रुव सदा सिध जेहा;
कीर्तम कनकमई इत्यादिक, सहित विनय तिस मांही,
तिन सबको मैं मन वच तन करि, जजों चरण हित लाही।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधी जिनचैत्यालयजिनप्रतिमाभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीं वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

भगवान श्री कुंदकुंदाचार्यका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

जिनवाणी माताका अर्घ

जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत, दीप धूप अति, फल लावें;
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावें।
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई,
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयका अर्घ

आठों द्रव्य निरधार, उत्तम से उत्तम लिये;
जन्म रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजों।

ॐ ह्रीं अष्टांग–सम्यग्दर्शनाय, अष्टविध–सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदशविधसम्यक्‌चारित्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मका अर्घ

आठों द्रव्य सम्हार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों;
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह कारणका अर्घ

जल फल आठों द्रव्य मिलाय; 'द्यानत' वरत करों मन लाय,
परमगुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो;

दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु होय।

ॐ ह्रीँ दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तऋषिका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित अर्घ कीजे पावना,
मन्वादि चारणऋद्धिधारक मुनिनकी पूजा करूं,
ता करें पातिक हरें सारे सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीमनु–सुरमनु–श्रीनिचय–सर्वसुंदर–जयवान–विनयलालस–जयमित्र सप्तऋषिभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयोंका अर्घ

वसु कोटि सु छप्पन लाख ऊपर सहस सत्याणवे मानिये,
सत चार पै गिन ले इक्यासी भवन जिनवर जानिये;
तिहुं लोक भीतर सासते सुर असुर नर पूजा करें,
तिन भवनको हम अर्घ लेकै पूजिहैं जग दुख हरें।

ॐ ह्रीँ तीनलोक संबंधी आठ करोड छप्पन लाख सत्तानवे हजार चारसौ इक्यासी अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयोंका अर्घ

कृत्याऽकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वंदे भावनव्यंतरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्;
सद्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलै–
र्द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्मणां शांतये। १

ॐ ह्रीँ कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु;
यावंति चैत्यायतानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम्।

अवनितलहतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमाणाम्,
वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम्;
इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानाम्,
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि। २

जम्बू–धातकी–पुष्करार्धवसुक्षेत्रत्रये ये भवा–
श्चन्द्राम्भोज–शिखंडिकण्ठ–कनक–प्रावृड्घनाभा जिनाः,
सम्यग्ज्ञानचारित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः,
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ३

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बूवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुण्डले मानुषांके;
इष्वाकारेंऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भवनमहितले यानि चैत्यालयानि। ४

द्वौ कुन्देन्दु–तुषार–हारधवलौ द्वौइन्द्रनीलप्रभौ;
द्वौ बंधुकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ;
शेषाः षोडश जन्म–मृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभा–
स्ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ५

णव कोडिसया पणवीसा तेपण लक्खाण सहस सगवीसा,
णवसयसहियडदाला जिणपडिमाकिट्टिमा वंदे। ६

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्ध्यकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छामि भंते ! चेइयभत्तिं–काउसग्गो कओ तस्सालोचेउं। अहलोय–तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिण–चेईयाणि ताणि सव्वाणि तीसु वि लोएसु भवणवासिय–वाणविंतर जोइसिय–कप्पवासिय–त्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण णहाणेण णिच्चकालं अच्चंति पूज्जंति वंदंति णमस्संति अहमिव इह संतो तत्थ संताई णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणँ समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

अथ पोर्वाह्निक–मध्याह्निक–अपराह्निकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्तिसहितं कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(कायोत्सर्ग करना और णमोकार मंत्रका नौ बार जाप करना)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकर भगवानके स्तुति-अर्घ

१. श्री आदिनाथ भगवान

स्तुति – जेणे कीधी सकल जनता नीतिने जाणनारी
त्यागी राज्यादिक विभवने जे थया मौनधारी;
वे'तो कीधो सुगम सबळो मोक्षनो मार्ग जेणे;
वंदुं छुं ते ऋषभजिनने धर्मधोरी प्रभुने.

अर्घ – जलफलादिक द्रव्य मिलायके, कनकथाल सु अर्घ बनायके;
निज स्वभाव अरी विधिको हरुं, रिषभदेव चरनपूजा करुं.

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२. श्री अजितनाथ भगवान

स्तुति – देखी मूर्ति अजितजिननी नेत्र मारा ठरे छे,
ने हैयुं आ फरीफरी प्रभु ध्यान तेनुं धरे छे;
आत्मा मारो प्रभु तुज कने आववा उल्लसे छे,
आपो एवुं बळ हृदयमां माहरी आश ए छे.

अर्घ – शुभ निरमल नीरं, गंधगहीरं, तंदुल पहुप सु चरु ल्यावें,
पुनि दीपं धूपं, फलसु अनूपं, अरघ "राम" करी गुण गावें;
श्री अजित जिनेश्वर, पुहमिनरेश्वर, सुरनरखगवंदित चरनं,
मैं पूजुं ध्याउं, गुणगण गाउं, शीस नवाउं अघहरनं.

ॐ ह्रीँ श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

३. श्री संभवनाथ भगवान

स्तुति – जे शान्तिना सुख सदनमां मुक्तिमां नित्य राजे,
जेनी वाणी भविक जनना चित्तमां नित्य गाजे;
देवेन्द्रोनी प्रणयभरनी भक्ति जेने ज छाजे,
वंदुं ते संभव जिनतणां पादपद्मो हुं आजे.

अर्घ – वसु विधि अर्घ बनाय गाय गुन जिनवर चरन चढावै;
पुण्यवंत वह जीव जगतमें नाना विधि सुख पावै.
तारन तरन विरद सुनि जगमें लीनों शरणो आई,
संभवजी जगतार शिरोमणी हूजौ शरन सहाई.

ॐ ह्रीँ श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

४. श्री अभिनंदन भगवान

स्तुति – चोथा आरारूप नभ विषे दीपतां सूर्य जेवा,
घाती कर्मोरूप मृग विषे केशरी सिंह जेवा;
साचे भावे भविक जनने आपता मोक्ष मेवा,
चोथा स्वामी चरणयुगले हुं चहुं नित्य रहेवा.

अर्घ – करी अर्घ महा जल गंध सु लेकरी, तंदुल पुष्प सु चरु मेवा,
मणि दीप सुधूपं फल जु अनूपं "रामचंद" फल शिवसेवा;
अभिनंदन स्वामी, अंतरजामी, अरज सुनो अति दुःख पाउं,
भव–वास–वसेरा, हर प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाउं.

ॐ ह्रीँ श्री अभिनंदनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

५. श्री सुमतिनाथ भगवान

स्तुति – आ संसारे भ्रमण करतां शान्ति माटे जिनेन्द्र,
देवो सेव्या कुमति वशथी में बहुये मुनीन्द्र;
तो ये ना'व्यो भवभ्रमणथी छूटकारो लगारे;
शान्तिदाता सुमतिजिनजी देव छे तुं ज मारे.

अर्घ – जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय,
नाचि नाचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय,
हरि हर वंदित पाप निकंदित सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय;
तुम पदपद्म सद्म शिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय.

ॐ ह्रीँ श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

६. श्री पद्मप्रभु भगवान

स्तुति – सोना केरी सुरविरचिता पद्मनी पंकित सारी,
पद्मो जेवां प्रभु चरणना संगथी दीप्ति धारी;
देखी भव्यो अति उलटथी हर्षनां आंसु लावे,
ते श्री पद्मप्रभु चरणमां हुं नमुं पूर्ण भावे.

अर्घ – चिंतामणि सम शुद्धभाव, आठों द्रव्य लिये,
पूजत अरिगण जु नसाव, निज गुण प्रगट किये;
श्री पद्मप्रभु भगवंत गुणातम शुद्ध सही,
तुम ध्यावत मुनिजन–संत पावत मोक्ष–मही.

ॐ ह्रीँ श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

७. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

स्तुति – आखी पृथ्वी सुखमय बनी आपना दर्श काळे,
भव्यो पूजे भय रहित थई आपने पूर्ण व्हाले;
पामे मुक्ति भवभव थकी जे स्मरे नित्यमेव,
नित्य वंदुं तुम चरणमां श्री सुपार्श्वेष्ट देव.

अर्घ – कर्मचक्र विकराल जगतमें बहुविधि जीव भ्रमाया है,
भवभ्रम हरण करन थिरतापद यातैं अर्घ चढाया है;
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं,
सो नर सुरपति पद लहि जगमें मनवांछित फल पाते हैं.

ॐ ह्रीँ श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

८. श्री चंद्रप्रभु भगवान

स्तुति – जेवी रीते शशीकिरणथी चंद्रकांत द्रवे छे,
तेवी रीते कठीण हृदये हर्षनो धोध व्हे छे;
देखी मूर्ति अमृतझरती मुक्तिदाता तमारी,
प्रीते चंद्रप्रभजिन मने आपजो सेव सारी.

अर्घ – वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

९. श्री पुष्पदंत भगवान (सुविधिनाथ भगवान)

स्तुति – सेवा माटे सुरनगरथी देवनो संघ आवे,
भक्ति भावे सुरगिरि परे अष्ट पूजा रचावे;
नाटयारंगे नमन करीने पूर्ण आनंद पावे,
सेवा सारी पुष्पदंत जिनने कोणने चित्त नावे!

अर्घ – जल फल सकल मिलाय मनोहर, मन वच तन हुलसाय,
तुम पद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय;
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदंत जिनरायजी.

ॐ ह्रीँ श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१०. श्री शीतलनाथ भगवान

स्तुति – आधि व्याधि प्रमुख बहुये तापथी तप्त प्राणी,
शीळी छाया शीतल जिननी जाणीने हर्षे आणी;
नित्ये सेवे मन वचन ने कायथी पूर्ण भावे,
कापी खंते दुरित गणने पूर्ण आनंद पावे.

अर्घ – नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अति दीप ही,
करी अर्घ धूप समेत फल ले, ''रामचंद्र'' अनूप ही;
भवि पूजि शीतलनाथ जिनवर, नशें भवके ताप ही,
आतंक जाय पलाय शिवतिय, होय सनमुख आप ही.

ॐ ह्रीँ श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

११. श्री श्रेयांसनाथ भगवान

स्तुति – जे हेतु विण विश्वनां दुःख हरे, न्हाया विना निर्मळा,
जीते आंतर शत्रुने स्वबळथी, दोषादिथी वेगळा;
वाणी जे मधुरी वदे भवतरी गंभीर अर्थे भरी,
ते श्रेयांस जिणंदनां चरणनी चाहुं सदा चाकरी.

अर्घ – जल फल वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ बनावत हैं,
पद पूजत श्री जिनराय, दिव शिव पावत हैं;
जिन श्रेयांसनाथ महाराज जगमें श्रेय करो,
प्रभु दीजै निज निधि साज मम उर आस भरो.

ॐ ह्रीँ श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१२. श्री वासुपूज्य भगवान

स्तुति – जे भेदाय न चक्रथी, न असिथी के इन्द्रना वज्रथी,
अेवां गाढ कुकर्म हे जिनपते, छेदाय छे आपथी;
जे शांति नव थाय चंदन थकी ते शांति आपो मने,
वासुपूज्य जिनेश हुं प्रणयथी नित्य नमुं आपने.

अर्घ – करो पूजा चित्त दै अर्घ कर लैके सुजिनजी,
हरो बाधा मेरी अरज यह मानो सुप्रभुजी;
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको,
सुनों वासंपूजै हरो दुःख स्वामी मरनको.

ॐ ह्रीँ श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१३. श्री विमलनाथ भगवान

स्तुति – जेवी रीते विमल जळथी वस्त्रनो मेल जाय,
तेवी रीते विमल जिनना ध्यानथी नष्ट थाय;
पापो जूनां बहु भव तणां अज्ञताथी करेलां,
ते माटे हे जिन तुज पदे पंडितो छे नमेला.

अर्घ – सलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं, चरु सुदीप सुधूप फलौघकं,
परम मुक्ति सुथान विधायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं.

ॐ ह्रीँ श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१४. श्री अनंतनाथ भगवान

स्तुति – जेओ मुक्तिनगरी वसता काळ सादि अनंत;
भावे ध्यावे अविचळपणे जेहने साधु-संत;
जेनी सेवा सुरमणि परे सौख्य आपे अनंत,
नित्ये मारा हृदयकमले आवजो श्री अनंत.

अर्घ – शुचि नीर चंदन शालिचंदन, सुमन चरु दीवाधरों,
अरु धूपजुत फल अर्घ करि, करजोर जुग विनती करों;
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों,
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रंततन्त नशावनों.

ॐ ह्रीँ श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१५. श्री धर्मनाथ भगवान

स्तुति – संसारांभोनिधि जळ विषे बूडतो हुं जिनेन्द्र,
तारो सारो सुखकर भलो धर्म पाम्यो मुनिन्द्र;
लाखो यत्नो यदि जन करे तोय ना तेह छोडुं,
नित्य धर्मप्रभु तुज कने भक्तिथी हाथ जोडुं.

अर्घ – आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाइ;
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेइ थाइ,
परमधरम–शम–रमन धरम–जिन, अशरनशरन निहारी,
पूजौं पाय गाय गुन सुंदर, नाचौं दै दै तारी.

ॐ ह्रीँ श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१६. श्री शांतिनाथ भगवान

स्तुति – जाण्या जाये शिशु सकळनां लक्षणो पारणाथी,
शांति कीधी पण प्रभु तमे सर्व आ लोकमांही;
षट् खंडो ने नव निधि तथा चौद रत्नो तजीने,
पाम्या छो जे परम पदने आपजो ते अमोने.

अर्घ – आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१७. श्री कुंथुनाथ भगवान

स्तुति – जेनी मूर्ति अमृत झरती धर्मनो बोध आपे,
जाणे मीठुं वचन वदती शोक संताप कापे;
जेनी सेवा प्रणयभरथी सर्व देवो करे छे,
ते श्री कुंथु जिनचरणमां चित्त मारुं ठरे छे.

अर्घ – वसु द्रव्य मिलावो, अर्घ बनावो, आगे लावो जिनजीके,
प्रभु पूज रचावो, जिन गुण गावो, वांछित पावो सबजीके;
श्री कुंथु कृपाला, हर अघ जाला, ज्ञान त्रिकाला मम दीजौ,
में तुमपद ध्याउं, गुणगण गाउं, पूज रचाउं जस लीजों.

ॐ ह्रीँ श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१८. श्री अरहनाथ भगवान

स्तुति – जे दुःखोना विषम गिरिओ, वज्रनी जेम भेदे,
भव्यात्मानी निबिड जडता, सूर्यनी जेम छेदे;
जेनी पासे तृण सम गणे स्वर्गने इन्द्र जेवा,
एेवी सारी अरजिन मने आपजो आप सेवा.

अर्घ – जलादिक द्रव्य शुचि लीजे, अरघ उत्तम बनाया है,
सभी विधि बंध नासनको, प्रभु पदमें चढाया है;
अरह महाराज भवतारी चरणको शीरा नाता हूं,
हमें प्रभु धाम शिव दीजे, सुगुन निसि द्यौस गाता हूं.

ॐ ह्रीँ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१९. श्री मल्लिनाथ भगवान

स्तुति – तार्या भव्यो अति प्रभावे, ज्ञानना दिव्य तेजे,
सर्वज्ञ छो! सर्वदर्शी प्रभु! त्रैलोक्यना नाथ गाजे;
सच्चारित्रे जन–मन–हरी बाळथी ब्रह्मचारी,
नित्ये मल्लि जिनपति! मने आपजो सेव सारी.

अर्घ – सलिल सुच्छ सुभ गंध मलयतैं मधु झंकारै.
तंदुल शितें स्वेत कुसुम परिमल विस्तारै;
छुधा हरन नैवेद रतन दीपक तम नासै,
धूप दहे वसु कर्म मोखमग फल परकासै.
इम अर्घ करैं शुभ द्रव्य ले, रामचंद कन थाल भरि,
श्री मल्लिनाथके चरण जुग, वसु विधि अरचैं, भाव धरि.

ॐ ह्रीँ श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२० श्री मुनिसुव्रत भगवान

स्तुति – अज्ञानांध कृति विनाश करवा जे सूर्य जेवा कह्या,
जेणे अष्ट प्रकारनां कठिन जे कर्मो बधां ते दह्यां;
जेनी आत्मस्वभावमां रमणता जे मुक्तिदाता सदा,
एवा ते मुनिसुव्रतेश नमिए जेथी टळे आपदा.

अर्घ – जलफल आदिक द्रव्य मिलाकर, अर्घ करो सुखकारी,
वलि वलि जाय जिनेश्वर पदकी, पूजा करि हितकारी;
श्री मुनिसुव्रतके पदपंकज, सरन गही सुखकारी,
सरनागत प्रतिपाल तुम्हीं हो, करुनानिधि जगतारी.

ॐ ह्रीँ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२१. श्री नमिनाथ भगवान

स्तुति – वैरी कर्म नम्या प्रभुश्री जिनने आत्मप्रभावे करी,
कीर्तिचंद्र करोजजवला दिशि दिशि आ विश्वमां विस्तरी;
आपी बोध अपूर्व आ जगतने पाम्या प्रभु शर्मने,
पुण्ये श्री नमिनाथ आप चरणे पाम्यो खरा धर्मने.

अर्घ – जलफल आठों दरब मिलाकर, उत्तम अर्घ बनाया है,
कर्म महा अरिदल भंजनको, जिनवर चरन चढाया है.
श्री नमिनाथ चरनको नमिके, जिन पदपंकज ध्यान धरों,
अव्याबाध अनंत गुणातम, मुक्तिरमानिधि आप वरों.

ॐ ह्रीँ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२२. श्री नेमिनाथ भगवान

स्तुति – लोभावे ललना तणां ललित शुं त्रिलोकना नाथने?
कंपावे गिरिभेदी वायु–लहरी शुं स्वर्णना शैलने?
शुं स्वार्थे जिनदेव ए पशु तणा पोकरने सांभळे?
श्रीमन्नेमिजिनेन्द्र सेवन थकी शुं शुं जगे ना मळे?

अर्घ – सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२३. श्री पारसनाथ भगवान

स्तुति – धूणिमां बळतो दयानिधि तमे ज्ञाने करी सर्पने
जाणी सर्व जनो समक्ष क्षणमां आपी महा मंत्रने;
कीधो श्री धरणेन्द्र ने भव थकी तार्या घणा भव्यने,
आपो पार्श्व जिनेन्द्र! नाशरहिता सेवा तमारी मने.

अर्घ – शुचि जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ उत्तम कीजिये,
भवभ्रमण भंजन हेत प्रभुकों पूजि शिवसुख लीजिये;
संसार विषम विदेशवत, कलिकाल वन विकराल है,
तहां भ्रमत भविको सुखद, पारस नाम धाम कृपाल है.

ॐ ह्रीं श्रीपारसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२४. श्री महावीर भगवान

स्तुति – श्री सिद्धार्थ नरेन्द्रना कुलनभे भानु समा छो विभु,
मारा चित्तचकोरने जिन तमे छो पूर्ण चंद्र प्रभु;
पाम्यो छुं पशुता तजी सुरपणुं हुं आपना धर्मथी,
रक्षो श्री महावीरदेव मुजने पापी महा कर्मथी.

अर्घ – जलफल वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ बनाय महा,
जिनवरपद पूजौं जाय, शिवसुखदाय कहा;
श्रीवीर हरो भव पीर, शिवसुखदायक हो,
मम अरज सुनों गुणधीर, तुम जगनायक हो.

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ श्री अर्हंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधु; देव-शास्त्र-गुरु; उत्तमक्षमादि दशधर्म; दर्शनविशुद्धिआदि षोडशभावना, त्रैलोक्यसंबंधि-कृत्रिम-अकृत्रिम समस्त चैत्य-चैत्यालय; पंचमेरु–संबंधि–चैत्य–चैत्यालय; नंदीश्वरसंबंधि–जिन–जिनालय; निर्वाणक्षेत्र श्री कैलास–सम्मेदगिरि–गिरनारगिरि–चंपापुरी–पावापुरी आदि तीर्थक्षेत्र; श्री ऋषभआदि चतुर्विंशति जिनेन्द्रदेव; श्री सीमंधर आदि विंशति जिनेन्द्रदेव; आदि समस्त–पूज्यपदेभ्यो अर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी करावावी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्‌चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर–नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती–संग्रह

श्री सीमंधरजिन–आरती

आरती सीमंधरजी तुमारी, करमदलन संतन हितकारी–टेक
सुर नर असुर करत तुम सेवा, तुमही सब देवनके देवा। आरती०
भवभयभीत शरन जे आये, ते परमारथ पंथ लगाये। आरती०
जो तुम नाम जपे मनमांही, जनम मरन भय ताके नाहीं। आरती०
समवसरन संपूरन शोभा, विचरे सीमंधरजिन देवा। आरती०
तुम गुण हम कैसे करि गावैं, गणधर कहत पार नहि पावें। आरती०
करुणासागर करुणा कीजे, 'द्यानत' सेवक को सुख दीजे। आरती०

श्री सीमंधरजिन आरती

आरती उतारुं हुं तो सीमंधरजिननी, वारी वारी मुखडुं निहाळ;
वीतरागी देख्यो देदार.

पद्मासन दृढ धारी नासिका दृष्टि, सोहे सोहे वीतरागी भाव;
नाथ तारो देख्यो देदार.

अंतर बाहिर शुद्ध स्फटिक चंदलो, अखंडज्ञान ज्योति अमाप;
वीतरागी देख्यो देदार.

समवसरण मध्य गंधकूटी सोहे, बिराजे सीमंधर देव;
जिन तारो देख्यो देदार.

भामंडल तेज सोहे त्रिजगधिराजने, वृक्ष अशोके सोहे नाथ;
वीतरागी देख्यो देदार.

अनंत गुणाकर जिनवरजी सोहे, सोहे सोहे विदेही नाथ. जिन०
आपना दर्शने प्रभु आतमा जगाड्यो, रत्नत्रयी प्रगटाव. जिन०

श्री सीमंधरजिन आरती

हुं तो आरती उतारुं सीमंधरनाथनी रे;
सीमंधरनाथनी रे त्रिजगराजनी रे. हुं तो०१

पिता श्रेयांस कुळ दीपक देव छो रे,
माता सत्यदेवीना नंदन अहो रे. हुं तो०२

प्रभु वीतरागी शुद्ध ज्ञानघन छो रे;
नाथ हरखे नीरखुं हुं दिव्य चंदलो रे. हुं तो०३

मुज आत्म चकोर ने चंद्र सांपड्यो रे;
प्रभु उदधि आनंदनो गृह वस्यो रे. हुं तो०४

नाथ! महिमा न थाय मुज मुख थकी रे;
पूरण कैवल्य ज्ञानघन जिनपति रे. हुं तो०५

जन्म सफळ मुज कृत्य दिन आजनो रे;
देव देख्यो त्रिलोकीनाथ जगतनो रे. हुं तो०६

श्री सीमंधर जिन आरती

जय सीमंधर जय सीमंधर जय सीमंधर देवा,

माता तोरी सत्यवती ने पिता श्रेयांस राया;
पुंडरगिरिमें जन्म लिया प्रभु, साक्षात् अरहंतदेवा; जय०१

आप विदेह के हो तीर्थंकर, दिव्यध्वनि के दाता,
भरतक्षेत्रमें धर्मवृद्धि प्रभु! तारा नंदन द्वारा. जय०२

भरतक्षेत्रना भक्तो तारी करें हृदयसें सेवा;
भव भव होजो भक्ति तुमारी ओ देवनके देवा. जय०३

सुवर्णपुरीमें नाथ पधार्या, दरशन दासने देवा;
भव भवमें प्रभु प्रीत तुमारी, चाहू चरणमें रहेवा. जय०४

श्री सीमंधरजिन आरती

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
सीमंधर दरबार लगा सीमंधर दरबार है.

खुशियां अपार आज हर दिलपे छांई हैं,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है. सीमंधर०१

भक्तिसे नृत्य–गान कोई हैं कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है. सीमंधर०२

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो ‘सौभाग्य’ खुला आज मुक्तिद्वार है. सीमंधर०३

चौवीस तीर्थंकरोकी आरती

अघहर श्री जिनबिंब मनोहर चौवीस जिनका करो भजन।
आज दिवस कंचन सम उगियो, जिनमंदिरमें चलो सजन। टेक

न्हवन थापना सहस्त्रनाम पढ, अष्टविधार्चन पूज रचन,
आरति अरु जयमाल स्तुति, स्वाध्याय त्रयकाल पठन;
जय जय आरति सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभि बाजे बजन;
रत्नजडित कर थाल मनोहर, ज्योति अनुपम धूम्रतजन। अघ० १

ऋषभ, अजित, संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमूं चरन,
सुमति, पद्मप्रभ, देव सुपारस, चन्द्रनाथ वपु शुभ्रवरन;
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस अरु, वासुपूज्य भव तारनतरन,
विमल, अनंत, धर्मजिन शांति, कुंथु, अरह हर जन्ममरण। अघ० २

मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिजिन, नेमि, पार्श्व हर अष्ट करम,
नाथवंश है उन्नत कर सत, अंतिम सन्मति देव शरन;
समवसरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन,
जिन उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राव–रंकको है जु शरन। अघ० ३

तीर्थंकर गुण–माल कंठकर, जाप जपो तिन करो कथन;
देव-शास्त्र-गुरु विनय करो, इन तीन रतनका करो जतन। अघ० ४

श्री पार्श्वनाथजिन आरती

जय पारस जय पारस जय पारस देवा...
माता तोरी वामा देवी पिता अश्वसेना,
काशीजीमें जन्म लिया प्रभु हो देवनके देवा...जय.१

आप तेईसवें हो तीर्थंकर, भक्तों को सुखमेवा;
पांचों पाप मिटाकर हमरे शरण देओ जिन देवा...जय.२

नागिन–नाग बचाकर तुमने भवसें किया पारा;
वैरागी हो मुनिपद धारे वंदन आज अमारा...जय.३

आतमध्यान लगाकर प्रभुजी केवलज्ञान जगाया,
संमेदशिखरकी सुवर्ण टूंकसे सिद्धातम पद पाया...जय.४
दूजा और कोई ना दीखे पार लगाओ खेवा;
आनंदमंगल वृद्धि होवे जो करे आपकी सेवा...जय.५

श्री वर्द्धमान जिनकी आरती

करौं आरती वर्धमानकी, पावापुर निरवान थानकी.....करौं०
राग विना सब जगजन तारे, द्वेष विना सब करम विदारे;
शील धुरंधर शिवतिय भोगी, मन-वच-कायन कहिये जोगी। करौं०
रतनत्रयनिधि, परिग्रह हारी, ज्ञान–सुधा–भोजनव्रतधारी;
लोक अलोक व्याप निजमांही, सुखमय इन्द्रियसुख दुःख नांही। करौं०
पंचकल्याणक पूज्य विरागी, विमल दिगंबर अंबर–त्यागी;
गुणमणि भूषण, भूषणस्वामी, जगत–उदास जगंतरजामी। करौं०
कहैं कहांलौं तुम सब जानों, 'द्यानत'की अभिलाष प्रमानौं। करौं०

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवकी आरती

हुं तो आरती उतारूं प्रभु कुंदनी रे;
प्रभु कुंदनी रे आचार्यदेवनी रे. हुं तो.
विदेह क्षेत्र जई भरतमां पधारीया रे;
सीमंधर देवना संदेशा रूडा लावीया रे. हुं तो.
चौद पूर्वना रहस्ये शास्त्र गूंथीया रे;
श्रुतज्ञाननी तें नहेरो वहेवडावीयुं रे. हुं तो.
अचल ज्योति अखंड अनूपम अछे रे;
आत्म ख्याति खजाना अणमूल्य छे रे. हुं तो.

निज स्वरूपमांहे कुंदमुनि झूलता रे;
धन्य धन्य वनवासी अे मुनिवरा रे. हुं तो.
तुज शासनना नूर भरत भूमिअे रे;
दिव्य वाणीना दातार कानगुरु अछे रे. हुं तो.

श्री शास्त्रकी आरती

महामांगलिक सत्य ज्ञानदाता रे,
सत्य शास्त्रनी उतारूं हुं तो आरती रे.
प्रभु! साक्षात् दिव्यध्वनि दाता रे. सत्य शास्त्र–१
कंचन पत्रमां रत्नाक्षरोथी, हीराना साथीया पुरावुं;
अष्टप्रकारी शास्त्रपूजा रचावुं, थाळ भरी मोतीडे वधावुं रे. सत्य–२
निरपेक्ष तत्त्व शास्त्र तुमे प्रकाशो, निरालंबन मंत्र मीठा,
निज रसभारना स्वभावे भरेला, वीतरागी शांत रस दीठा रे. सत्य–३
अक्षर परब्रह्म स्याद्वादांक मुद्रा, स्वरूपानंद राज्यधानी,
चौद ब्रह्मांड भाव भेदे भरेली, कैवल्यज्ञान गुणखाणी रे. सत्य–४

पंच परमेष्ठीकी आरती

ईह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे. टेक
पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा. इह० १
दूसरी आरती सिद्धनकेरी, सुमरन करत मिटे भवफेरी. इह० २
तीजी आरती सूर मुनिंदा, जनम मरन दुःख दूर करिंदा. इह० ३
चौथी आरती श्रीउवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया. इह० ४
पांचमी आरती साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी. इह० ५
छट्ठी आरती श्रीजिनवाणी, 'द्यानत' सुरग मुक्ति सुखदानी. इह० ६

मुनिराजकी आरती

आरती कीजे श्री मुनिराज की, अधम उधारन आतम काजकी. टेक
जा लच्छीके सब अभिलाखी, सो साधन करदमवत भाखी. आ०–१
सब जग जीत लियो जिन नारी, सो साधन नागनिवत छारी. आ०–२
विषयन सब जगजिय वश कीने, ते साधन विषवत तज दीने. आ०–३
भुविको राज चहत सब प्रानी, जीरन तृणवत त्यागत ध्यानी. आ०–४
शत्रुमित्र दुःखसुख सम मानै, लाभ अलाभ बराबर जानै. आ०–५
छहों काय पीहरव्रत धारें, सबको आप समान निहारें. आ०–६
इह आरती पढै जो गावै, 'द्यानत' सुरगमुक्ति सुख पावै. आ०–७

ॐ जय जिनवरदेवा

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ

दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि–सिद्धि–सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ

आज अमारे आंगणे पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी–महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ

पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक–तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ! आतमना आधार!.....ॐ

कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

महापद्मजिनकी आरती

आरती करौं महापद्म तेरी, अमल अबाधित प्रभु गुण केरी. टेक

अचल अखंड अतुल अविनाशी, लोकालोक सकल परकाशी. आरती. १

ज्ञानदरससुखबल गुणधारी, परमातम अविकल अविकारी. आरती. २

क्रोधआदि रागादि न तेरे, जनम जरामृत कर्मन नेरे; आरती. ३

अवपु अबंध करणसुखनासी, अभय अनाकुल शिवपदवासी, आरती. ४

रूप न रेख न भेद न कोई, चिन्मूरति प्रभु तुम ही होई; आरती. ५

अलख अनादि अनंत अरोगी, सिद्ध विशुद्ध सुआतम भोगी. आरती. ६

गुन अनंत किम वचन बतावैं, दीपचंद भवि भावन भावैं. आरती. ७

पंच परमेष्ठीकी आरती

(राग–आरती)

आनंदमंगळ करूं आरती, संतचरणनी सेवा. टेक०
शिवसुखकारण विघ्न निवारण, पंचपरमेष्ठि देवा. आनंद०

प्रथम आरती अरिहंत देवा, कर्म खपे तत्खेवा;
सो इन्द्र करे तुम सेवा, वाणी अमृत मेवा. आनंद०

बीजी आरती सिद्ध निरंजन, भंजन भवभयकेरा;
चिदानंद सुखकंद अखंड, मिटे भवोभव फेरा. आनंद०

त्रीजी आरती श्री आचार्यजी, पंचाचार पाळे रूडा;
संघशिरोमणि शोभे दिनमणि, दाता बोध अनेरा. आनंद०

चोथी आरती उपाध्यायजी, भणे भणावे एवा;
सूत्र अर्थ करे तत्खेवा, सेवा करे तस देवा. आनंद०

पंचमी आरती सर्व साधुजी, भारंड पंखी जेवा;
आत्मस्वरूप साधे दूषण टाळे, अविचळ शिवसुख लेवा. आनंद०

गाय शीखे ने सूणे आरती, भविजन भावे अेवा;
तेहतणा पातक दूर जाअे, नित्य नित्य मंगळ मेवा. आनंद०
भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्ठी देवा;
भक्तजन भावे गुण गावे, लेवा शिवसुख मेवा. आनंद०

ऋषभजिन आरती

(वीरकुंवरनी वातडी कोने कहीअे–देशी)

अप्सरा करती आरती जिन आगे, हां रे जिन आगे रे जिन आगे,
हां..रे अे तो अविचळ सुखडां मागे, हां..रे नाभिनंदन पास. अप्सरा०
ताथ नाटक नाचती पाय ठमके, हां रे देय चरणे झांझर झमके;
हां..रे सोवन घुघरीया घमके, हां..रे लेती फूदडी बाल. अप्सरा०
ताल मृदंग ने वांसळी डफ वेणा, हां रे रूडां गावती स्वर झीणा,
हां..रे मधुर सुरासुर नयणां, हां..रे जोती मुखडां निहाळ. अप्सरा०
धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया, हां रे तोरी कंचनवरणी काया;
हां..रे में तो पुण्ये पूरन पाया, हां..रे देख्यो तारो देदार. अप्सरा०
प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हां रे प्रभु सेवक हुं छुं तारो;
हां..रे भवोभवना दुःखडां वारो, हां..रे तमे दीनदयाळ. अप्सरा०
सेवक जाणी आपनो चित्त धरजो, हां रे मोरी आपदा सघळी हरजो;
हां..रे भक्तजनोने सुखिया करजो, हां..रे जाणी पोतानो बाळ. अप्सरा०

निश्चय आत्माकी आरती

(चौपाई)

मंगल आरती आतमराम, तनमंदिर मन उत्तम ठाम. मंगल० टेक.
समरस जलचंदन आनंद, तंदुल तत्त्वस्वरूप अमंद. मंगल०१
समयसार फूलनकी माल, अनुभव सुखनेवज भरि थाल. मंगल०२

दीपकज्ञान ध्यानकी धूप, निरमलभाव महाफलरूप. मंगल०३
सुगुण भविकजन इकरंगलीन, निहचै नवधा भक्ति प्रवीन. मंगल०४
धुनि उतसाह सु अनहद गान, परम समाधि निरत परधान. मंगल०५
बाहिज आतमभाव बहावै, अंतर ह्वै परमातम ध्यावै. मंगल०६
साहब सैवक भेद मिटाय, 'द्यानत' अेकमेक हो जाय. मंगल०७

श्री शांतिजिनकी आरती

जय जय आरती शांति तुमारी, चरणकमलकी मैं जाउं बलिहारी. १
विश्वसेन अचिराजीको नंदा, शांतिनाथ मुख पूनम चंदा. जय० २
चालीस धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभुचरण सुहाया. जय० ३
चक्रवर्ती प्रभु पांचमा सोहे, सोळमा जिनवर जग सहु मोहे. जय० ४
मंगळ आरती तोरी कीजे, जन्मजन्मनो लाहो लीजे. जय० ५
कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नरनारि अमर पद पावे. जय० ६

आदि जिणंदकी आरती

जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवी को नंदा;
पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे. जय. १
दुसरी आरती दीनदयाळा, सुवर्ण नगरमां जग अजवाळ्यां. जय. २
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुरनर इद्र करे तोरी सेवा. जय. ३
चोथी आरती चौगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे. जय. ४
पंचम आरती पुन्य उपाया, भक्तजने ऋषभ गुण गाया. जय. ५

भावी जिनवरकी आरती

(आगमनी आसातना नव करीअे–अे राग)

भावि जिननी आरती करुं मन भावे, हां रे जेथी अजरामर पद पावे;
हां रे तेथी जन्म मरण दूर जावे, हां रे आपे शिवपुर वास. भावि० १

आरती पहेली ज्ञानकी सुखकारी, हां रे मति श्रुत अवधि भारी;
हां रे मनःपर्यय केवल धारी, हां रे थाय अज्ञान दूर. भावि० २

आरती बीजी दर्शन अघहारी, हां रे पांच भेद कह्या छे भारी;
हां रे ते तो सेवो श्रद्धा धारी, हां रे जगमांही सार. भावि० ३

आरती त्रीजी चरणनी चितआणुं, हां रे पांच भेदे शुद्ध वखाणुं;
हां रे रोके आस्रव आवतुं जाणुं, हां रे गुण अनंतनी माळ. भावि० ४

आरती चोथी तपथी धरे प्यार, हां रे तप तपीअे बार प्रकार;
हां रे क्षय करे कर्म चार चार, हां रे जेथी अविचल सुख. भावि० ५

पंच परमेष्ठीकी आरती

जय जय आरती पंच परमेष्ठी, चेतनरामी नमुं तुज स्वामी,
पहेली आरती मिथ्या टाळे, सम्यग्ज्ञान प्रकाश निहाळे. जयजय०
बीजी आरती बीज उगाडे, द्वंद्वातीतपणाने पमाडे. जयजय०
त्रीजी आरती त्रिरत्न शुद्धि, थाअे सहेजे आत्मस्वरूपी. जयजय०
चोथी आरती अनंत चतुष्टय, परिणामे कृतकृत्यस्वरूप. जयजय०
पंचमी आरती पंच परमेष्ठी, शुद्ध स्वभाव सहज लहे अरथी. जयजय०

आरती

लाख लाख दीवडानी आरती उतारजो,
लाख लाख तोरण बंधाय;
आंगणिये अवसर आनंदना.......(टेक)

लाख लाख द्रव्योनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय. आंगणिये...लाख० १

खोबे खोबे रंग उडे गुलालना,
लाखो वधामणां जिनवरना आवतां;
लाखेणी भक्ति कराय. आंगणिये....लाख० २

गावो गावो गीत गाजो गवरावजो,
ताने ताने नाच नाची नचावजो;
लाखेणा ल्हावा लेवाय. आंगणिये...लाख० ३

लाख लाख गुरुजीना गुण गवरावजो;
लाख लाख (जीवोना) उद्धार करनार. आंगणिये....लाख० ४
जयकार जगतमां फेलाय आंगणिये...लाख लाख०

श्री नंदीश्वरद्वीपके जिनबिंबकी आरती

जय बावन जिनदेवा, प्रभु बावन जिन देवा;
आरती करुं तुम चरणे (२)
भव जल नदी नावा, जयदेव जयदेव....टेक.

अष्टम शोभे द्वीप नंदीश्वर नामा(२)
प्रतिदिश तेरह तेरह, अकृत्रिम जिनधामा....जयदेव. १

अंजन भूधर अेक, दधिमुख नग चार(२)
गजमति रतिकर पर्वत, तेरह गिरि सार...जयदेव. २

अेवं चौदिशि बावन, पृथ्वीवर लंबा(२)
गिरिपति ज्येष्ठ जिनालय, मणिमय जिनबिंबा...जयदेव. ३

शुभ अषाडे कार्तिक, फाल्गुन सुदी पक्षा(२)
इन्द्रादिक करे पूजा, अष्टाह्निक दक्षा...जयदेव. ४

अष्टम दिनथी मंडित, पूनम पर्यंता(२)
जिन गुण सागर गावे, पावे सुरकान्ता...जयदेव. ५

श्री सीमंधरजिनकी आरती

(राग-अबोलडा शाने लीधा छे)

आरती उतारूं हुं तो सीमंधरनाथनी;
वारी वारी मुखडुं निहाळ....हो देव जय जिनराया. १
उपशम रसभरी मुद्रा निहाळी;
तुज पर जाउं बलिहारी....हो देव जय जिनराया. २
रत्नमणिना दीपक प्रगटावी;
आरती उतारुं नाथ तारी....हो देव जय जिनराया. ३
शुक्ल ध्याननी श्रेणीऐ चढिया;
केवळज्ञान उपजाया....हो देव जय जिनराया. ४
जगमग जगमग ज्योति प्रकाशी;
झळके छे ब्रह्मांडमांही....हो देव जय जिनराया. ५
ईन्द्रो नरेन्द्रो आरती उतारे;
भक्तिनी धून मचावे....हो देव जय जिनराया. ६
दिव्यध्वनिनो नाद ज छूट्यो;
झील्यो छे कहान गुरुदेवे....हो देव जय जिनराया. ७
जय जय आरती नाथ तुमारी;
भक्तोने आनंदकारी....हो देव जय जिनराया. ८

श्री महावीरजिन आरती

ॐ जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा;
वीर महा अति वीर प्रभुजी, वर्धमान देवा. ॐ० १
त्रिशला उर अवतार लियो प्रभु सुरनर हर्षाये;
पंद्रह मास रतन कुंडलपुर, धनपति वर्षाये. ॐ० २
शुक्ल त्रयोदशि चैतमासकी, प्रभु आनंद करतारी;
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाठ रचे भारी. ॐ० ३

त्रीस वर्ष लों रहे गृहमें, प्रभु बाल ब्रह्मचारी;
राज त्याग कर भर यौवनमें, मुनिदीक्षा धारी. ॐ० ४

बारह वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया;
झलके लोकालोक ज्ञानमें, यश भरपूर लिया. ॐ० ५

कार्तिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष बसे;
पर्व दिवाली चला तभीसे घर-घर दीप जले. ॐ० ६

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, शिवमग परकाशी;
हरिहर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो, जयजय अविनाशी. ॐ० ७

दीनदयाला जगप्रतिपाला सुरनरनाथ जजे;
सुमरत विघ्न टरे इक छिनमें, पातक दूर भजे. ॐ० ८

चोर भील चान्डाल उबारे, भवदुःख हर तुही;
पतित जान शिवराम उच्चारे, हे जिन शरण गही. ॐ० ९

श्री सीमंधरजिन आरती (मानस्तंभजी)

आवो पधारो हे जिनवरजी (मानस्तंभजी)
शा करीअे सन्मान, हां रे प्रभु शा करीअे सन्मान.

सौराष्ट्रे प्रभु प्रथम पधार्या,
मानस्तंभ देव मनोहार;
गगने अडंता शिखर अहो आ,
त्रिभुवनना शणगार—हां रे प्रभु त्रिभुवनना शणगार....आवो.

प्रथम आरती ज्ञानस्वरूपी, ज्ञानेश्वर भगवान,
केवळ ज्योति प्रकाशे प्रभुजी, ज्ञानखजाना अमाप;
हां रे प्रभु ज्ञानखजाना अमाप....आवो.

दूसरी आरती दर्शन गुणनी, क्षायिक दर्शन नाथ,
अभेद अंतर अवलंबनमां, रमी रह्या छो नाथ;
हां रे प्रभु रमी रह्या छो नाथ....आवो.

तीसरी आरती चारित्र गुणनी, पूर्णानंद स्वभाव,
आनंदसागर ऊछळे प्रभुजी, शांत शीतळ सुखधाम;
हां रे प्रभु शांत शीतळ सुखधाम....आवो.

चोथी आरती अनंत वीर्य, स्वभावी दीसो छो देव,
सर्व प्रदेशे स्वरूप बळ अहो, खीली गयुं अगाध;
हां रे प्रभु खीली गयुं अगाध....आवो.

पांचमी आरती अनंत गुणधारी, छो हे भगवान,
अनंत महिमावंत प्रभुनो, बोलो जय जयकार;
हां रे सहु बोलो जय जयकार.

आवो पधारो मानस्तंभप्रभुजी शा करीअे सन्मान, हां रे०

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवकी आरती

अहो आरती उतारूं भगवान, आचार्य कुंदकुंद प्रभुनी,
मारा जीवनना साचा सुकान...जय०
प्रभु सीमंधर देवना शरणे रही,
साक्षात् दिव्यध्वनिना धोधने ग्रही;
श्रुतसागर ऊछळ्या महान, जय कुंदकुंद प्रभुनी.

आज रत्न मणिना हुं दीपक करुं;
भक्तिभावे हे गुरु तारुं पूजन करुं;
तुज चरणोमां वारी वारी जाउं...जय कुंदकुंद प्रभुनी.

मोक्षमार्ग दातार कहान भरते दीठा,
महा निरपेक्ष तत्त्वनी वही गंगा;
प्रभु ज्ञान खजाना अखूट...जय कुंदकुंद प्रभुनी.

महा दिव्य रहस्य आ भरते खोल्या,
खरी स्वतंत्रतानां स्वराज स्थाप्या;
शिरताज अेक भरते गुरु कहान....जय कुंदकुंद प्रभुनी.

आरती (मानस्तंभजी)

भरते मानस्तंभजी पधारीया जीरे.
आवो सहु आरति उतारीअे.
मंगळ महोत्सव मारे आंगणे जी रे...आवो० १

सौराष्ट्र देशना सुवर्ण नगरमां,
मानस्तंभ बन्या छे रळियामणा जी रे...आवो० २

रत्नोनां थाळ भर्या लाख लाख दिवडे,
आरती उतारूं मारा नाथनी जी रे...आवो० ३

नाथ तारा चरणोमां गणधरो नमी रह्या,
मुकुट झुकावे इन्द्रो चरणमां जी रे...आवो० ४

साक्षात् विदेही मानस्तंभ अहो आंगणे,
मोतीडे वधावुं मारा नाथने जी रे...आवो० ५

वीणा मृदंग करताल सूर झांझना,
झणकार गगन मांही गूंजता जी रे...आवो० ६

इन्द्र धरणेन्द्र नृत्य गान करे भावथी,
घननन घुघर माळ ठमकती जी रे...आवो० ७

भरते अजोड संत अेक गुरु कहान छे,
सत्य शासनने थंभावीया जी रे...आवो० ८

श्री सीमंधरजिनकी आरती

सुवर्णे सीमंधर भगवान...आरती उतारुं प्रभुनी;
मारा जीवनना साचा सुकान...आरती०

ज्ञान दरशन अनंत गुणधारी प्रभु,
दिसे लोक अलोक अेक बिंदु समुं;
अेवी ज्ञानज्योति झळके अगाध...आरती०

महावीर्य चारित्र गुण पूर्ण अहा,
नाथ आनंद सागरमां म्हाली रह्या;
प्रभु अचळ अखंड अकंप...आरती०

शांत शांत शीतळ देव मुद्रा अहो,
जगे झळहळती ज्ञानज्योत तारी प्रभो;
प्रभु सागर समान गंभीर....आरती०

श्री सीमंधरजिन आरती

आरती उतारुं हुं सीमंधर देवनी;
सीमंधर देवनी सर्वे जिणंदनी...आरती०

रत्ने जडित थाळ मणिरत्न दीवडे,
आरती उतारुं हुं तो सर्वे जिणंदनी...आरती०

श्रेयांस कुळचंद सत्यदेवी जाया,
वृषभ लंछन सोहे सीमंधर राया;
हरख धारीने में तो प्रभु गुण गाया,
भक्ति भावे में तो प्रभु गुण गाया...आरती०

इन्द्र नरेन्द्र तारी आरती उतारे,
जिनचरणोमां मुकुट झुकावे;
नूपुरना नादे झननन नाचे...आरती०

हे जिनवर तुम पवित्र चरणथी,
भरतभूमि बनी छे उजियारी;

जिनचरणोमां जाउं वारी वारी,
वीर शासन पर जाउं बलिहारी....आरती

जम्बूद्वीपकी आरती

(आओ सहु आरती उतारीए)

जम्बूद्वीप सुवर्णे पधारिया जी रे,
आवो सहु आरती उतारीए.
सुदर्शन मेरुना सोळ सोळ मंदिरो,
रत्नमणिना बिंब सोहता जी रे....आवो सहु...
गजदंत शिखरे जिनालय बहु शोभतां,
पूजन रचावीए भावथी जी रे....आवो सहु...
विजयार्द्ध पर्वत ने वक्षारगिरि पर,
मंदिरो अकृत्रिम सोहता जी रे...आवो सहु...
कुलगिरि पर्वतना मंदिरोनी दिव्यता,
शी शी करुं तुझ सेवना जी रे....आवो सहु...
रत्नमणिना दीपको लईने,
भावे प्रभुने पूजीए जी रे....आवो सहु...

बाहुबली आरती

(ॐ जय जिनवरदेवा–राग)

ॐ जय बाहुबली देवा स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०
बार बार मास तपस्या करते, अंतरमें लवलीन,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०
भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीअे श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०
महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०
स्वर्णपुरीमें बाहुबली देवा, स्वागत मंगलकार,
आवो आवो अम आंगणिये, रत्ने वधावुं आज....ॐ जय०

शान्तिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करनी)

(दोधक छंद)

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तमम्बुजनेत्रम्; ॥१॥
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः, दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ,
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः, ॥३॥
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं सिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च ॥४॥

(वसंततिलका छंद)

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः;
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः;
तीर्थंकराः सतत शान्तिकरा भवन्तु ॥५॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानाम्;
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्ति भगवान् जिनेन्द्रः ॥६॥

(स्रग्धरावृत्तम्)

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मधवा व्याधयो यान्तु नाशम्;
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

(अनुष्टुप)

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वरा ॥८॥

॥ प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ॥

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ-३६४२५०

(अथेष्ट प्रार्थना–मंदाक्रान्ता)

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः;
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्;
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः॥९॥

(आर्यावृत्तम्)

तव पादौ मम हृदये, ममहृदयं तव पदद्वये लीनम्;
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावत् यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः॥१०॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मअे भणियं;
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खकखयं दिंतु॥११॥
दुःक्ख-खओ कम्म-खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य;
मम होउ जगद-बंधव तव जिणवर चरणसरणेण॥१२॥

(प्रार्थना–आर्या)

त्रिभुवनगुरो! जिनेश्वर परमानन्दैककारणं कुरुष्व;
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः॥१३॥
निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या;
अपुनर्भवाय भवहर कुरु करुणामत्र मयि दीने॥१४॥
उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा;
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि॥१५॥
त्व कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश! तेनाहं;
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे॥१६॥
ग्रामपतेरपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि;
जगतां प्रभो! न किं तव, जिन! मयि खलु कर्मभिःप्रहते॥१७॥
अपहर मम जन्म दयां, कृत्वा चेत्येकवचसि वक्तव्यं;
तेनातिदग्ध इति मे देव! बभूव प्रलापित्वं॥१८॥
तव जिन चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत्;
संसारतापतप्त करोमि हृदि तावदेव सुखी॥१९॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जगदेकशरणभगवन्! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौध;
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ।।२०।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।।१।।

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।२।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।३।।

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ।।४।।

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।५।।

शांतिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते वक्त दोंनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करना)

(चोपाई १६ मात्रा)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन अेक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांति विद्यायक।

दिव्य विटप पहुपनकी वरषा, दुन्दुभी आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।

शांति जिनेश शांति सुखदाइ, जगतपूज्य पूजौं शिर नाइ;
परम शांति दीजैं हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको।

(वसंततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।
संपूजकोंको, प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको;
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे।

(स्त्रग्धरा छंद)

होवै सारी प्रजाको, सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा,
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहै, व्याधियोंका अन्देशा;
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृषको, जो सदा सौख्यकारी।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका,
सद्वृत्तोंका सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका;
बोलुं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं,
तौलौं सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊं।

(आर्या)

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणोंमें;
तबलौं लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति-पद मैंने।
अक्षर पद मात्रासे दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे;
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःखसे।

हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊं तव चरणशरण बलिहारी;
मरण–समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी।

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(यहाँ पर नौ बार णमोकारमंत्रका जाप देना)

विसर्जन

(दोहा)

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय;
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।

पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान;
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान।

मंत्रहीन धनहीन हुं, क्रियाहीन जिनदेव;
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव।

आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान;
अपने स्थान बिराजहु, कृपा करो भगवान।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

विसर्जन

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;
ते ज्ञानीनां चरणमां, हो वंदन अगणित.

अेह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगर ने हाल मनोरथरूप जो;

तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभु–आज्ञाअे थाशुं ते ज स्वरूप जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे?

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

शांतिपाठ

(चौपाई)

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करूं मन लाय;
जनम जनम प्रभु पाउं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि। १

कृपा तिहारी अैसी होय, जामन मरन मिटावो मोय;
वार वार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं। २

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय;
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण तव सेव। ३

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज;
जो मुझ सेवककी अरदास, सो सब रही ज्ञानमें भास। ४

यातें नहि कुछ कहनी परे, तुमही तें सब कारज सरे;
तुमरे गुणोंको स्वामी अंत न पार, तुम बिन कौन लगावे पार। ५

''तार तार'' विल मत कर देव, अेहि विरद सुन तारन अेव;
पूजा करके नवाउं निज शीश, मुज अपराध क्षमहु जगदीश। ६

शांतिपाठ

शांतिजिनेश्वर साचो साहेब, शांतिकरण अनुकूलमें हो जिनजी;
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें साहेबजी;
तुं. मेरा० १

भवमां भमतां मैं दरिशन पायो, आशा पूरो अेक पलमें हो जिनजी
तुं. मेरा० २

निरमल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद वादळ में जिनजी
तुं. मेरा० ३

जिन रंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर, दीठोजी देव सकळमें हो जिनजी.
तुं. मेरा० ५

विसर्जन

परमेश्वर परमात्मा, पावन तू परमिट्ठ;
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिट्ठ। १

अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु;
जगति जन आधार अेक, निष्कारण बंधु। २

गुण अनंत प्रभु ताहरा अे, किमही कळ्या न जाय;
भक्ति धरुं जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय। ३

विसर्जन

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो। १

सकल भक्त तुमे घणी, जो होवे अम नाथ;
भवो भव हुं छुं ताहरो नहीं मेलुं हवे साथ। २

सकल संग छंडी करी, चारित्र लईशुं;
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरशुं। ३

अे अळजो मुजने घणो, पूरो सीमंधर देव;
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव। ४

जिन-स्तवन

(प्रदक्षिणा देते समय बोलना)

(जिनवर केरी सुपूजना—राग)

जिनवर दर्शन अद्भुत लागे छे, अद्भुत लागे छे, प्रभु धाम रे,
जिनवर पूजुं आनंदथी० १

रत्नत्रयीनी प्राप्ति काजे, दर्शन करुं वीतराग रे. जिनवर० २

जिनवर दर्शनथी हर्ष उभराय छे, प्रदक्षिणा देवुं प्रभु द्वार रे. जिनवर० ३

क्षीर उदधिना उज्ज्वल जलथी, इंद्र करावे अभिषेक रे. जिनवर० ४
हुं रे प्रभुजी पवित्र नीरथी, भावे करुं अभिषेक रे. जिनवर० ५
कल्पवृक्ष ने मुक्ताफलथी, इन्द्रपूजे जिनराज रे. जिनवर० ६
सेवक तंदुल बदाम लईने, भावे चरण पूजे आज रे. जिनवर० ७
अभिषेक पूजा ने प्रदक्षिणा करतां, रोमांच उल्लसित थाय रे. जिनवर० ८
वीतराग भावनी स्फूरणा थाता, जन्म मरण दुःख जाय रे. जिनवर० ९
धन्य दिवस ने धन्य घडी आज, जीवन मारुं धन्य थाय रे. जिनवर० १०

भजन

नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरे यों निश्चय अब आयो. टेक

मेंढक कमल पांखडी मुखमें, वीर जिनेश्वर धायो;
श्रेणिक गजके पगतल मूवो, तुरत स्वर्गपद पायो. नाथ० १

मैनासुंदरी शुभ मन सेती, सिद्धचक्र गुण गायो;
अपने पतिको कोढ गमायो, गंधोदक फल पायो. नाथ० २

अष्टापदमें भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो;
अष्ट द्रव्यसे पूजा प्रभुजी, अवधिज्ञान दरशायो. नाथ० ३

अंजनसे सब पापी तारे, मेरो मन हुलसायो;
महिमा मोटी नाथ तुमारी, मुक्तिपुरी सुख पायो. नाथ० ४

थकी थकी हारे सुर नरपति, आगम सीख जतायो;
देव-आगम-गुरु ज्ञान मनोहर, पूजा ज्ञान बतायो. नाथ० ५

आरती

श्री भाविजिनवरकी आरती

जय अंतरयामी भाविजिन जय अंतरयामी;
दुःखहारी सुखकारी प्रभु तू, त्रिभुवनके स्वामी....जय०

नाथ निरंजन सब दुःख भंजन संतन आधारा;
पाप निकंदन भवदुःखभंजन संपति दातारा....जय०

करुणासिंधु दयालु दयानिधि, जय जय गुणधारी;
वांछित पूरण श्रीजिन सब जन, सब जन हितकारी....जय०

ज्ञानप्रकाशी शिवपुरवासी, अविनाशी अविकार;
अलख अगोचर त्रिभूमें अविचल, शिवरमणी भरतार....जय०

विमल कृतारथ कलमलहारक, तुम हो दीनदयाल,
जय जय कारक तारक स्वामी, षट जीवन रक्षपाल....जय०

जिन गुण गावे, पाप नशावे, चरनन शिर नावे;
पुनि पुनि अरज सुनावे सेवक शिवकमला पावे....जय०

*

श्री जिन आरती

ॐ जय जिन अविकारी, स्वामी जय जिन अविकारी. टेक

काम क्रोध मद लोभ न माया, समरस सुखधारी;
ध्यान तुम्हारा भव्य जनोंके, सकल क्लेशहारी. ॐ०

हे स्वभावमय जिन तुम चीना, भवसंतति टारी;
तुं भूलत भव-भवमें भटकत, सहत विपति भारी. ॐ०

पर संबंध बंध दुःखकारण करत अहित भारी;
हे निज ब्रह्म लीनता तेरी, चहुं गति दुःखहारी. ॐ०

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनि मन संचारी;
निर्विकल्प ज्ञायक परमातम, शुचि गुण भंडारी. ॐ०

बसो बसो हे सहज ज्ञानघन, सहज शांतिचारी;
टलैं टलैं सब मोह उपद्रव परबल बलबारी. ॐ०

आराधना पाठ

(हरिगीत)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमिरन करौं;
मैं सूर गुरु मुनि तीनि पद मैं, साधुपद हृदये धरौं;
मैं धर्म करुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना;
मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंच ना।।१।।

चौबीस श्री जिनदेव चाहूं, और देव न मन बसैं;
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातिक नशै;
गिरनार शिखर संमेद चाहूं, चम्पापुरी पावापुरी;
कैलास श्री जिनधाम चाहूं, भजत भांजें भ्रमजुरी।।२।।

नवतत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं;
षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं, ठीकतासों भय हरौं;
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न हूं सदा;
तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहि लागै कदा।।३।।

सम्यक्त्व दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं, भावसों;
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हर्ष उछावसों;
सोलह जु कारण दुःखनिवारण सदा चाहूं, प्रीतिसों;
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों।।४।।

मैं वेद चारों सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसों,
पाअे धरमके चार चाहूं, अधिक चित्त उछाहसों;
मैं दान चारों सदा चाहूं, भुवन वशि लाहो लहूं,
आराधना मैं चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं।।५।।

भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत हैं;

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्मतें मैं छुटा चाहूं, शिव लहूं जहुं मोह ना।।६।।

मैं साधुजनको संघ चाहूं, प्रीति तिन ही सों करौ,
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अरम्भै मैं परिहरौं;
इस दुःख पंचमकाल माहीं, कुल शरावक मैं लहौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गहो।।७।।

आराधना उत्तम सदा चाहूं, सुनो जिनरायजी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्यायजी;
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजीऐ,
करि सुगतिगमन समाधिमरन सुभक्ति चरनन दीजिऐ।।८।।